'श्री जी साहिब जी'

श्री परमधाम पटदर्शन

एवम्

चर्चनी

Nijanand App

'श्री जी साहिब जी'

श्री परमधाम पटदर्शन

एवम्

चर्चनी

संयोजक : 'धर्मवीर' 'जागनी रत्न'
श्री जगदीश चन्द्र जी

संरक्षक : श्री निजानन्द आश्रम
रतनपुरी (उ० प्र०) एवम् बड़ोदरा (गुजरात)

प्रकाशक : श्री निजानन्द आश्रम ट्रस्ट (रजिस्टर्ड) रतनपुरी
ग्राम + पोस्ट - रतनपुरी
जिला - मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

Nijanand App

''भूमिका''

''प्रीतम मेरे प्राण के, आतम के आधार।
सर्व सुख देने योग्य हो, लीला नित्य विहार॥''

प्राणों के प्रीतम, आतम के आधार, श्री राजजी महाराज के अति लाडले प्यारे श्री सुन्दरसाथ जी ! आपके श्री चरणों में साक्षात् दण्डवत प्रणाम।

धाम के धनी श्री राजजी महाराज, अक्षरातीत, पूर्ण ब्रह्म, सच्चिदानन्द, विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप आखरूल जमां ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी की अपार मेहर भरी प्रेरणा से चर्चनी सहित परमधाम का यह पट-दर्शन तैयार हुआ है।

इस पट दर्शन में परमधाम का वह अनमोल ज्ञान है, जो आज तक ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं इनके स्वामी आदि नारायण को भी पता नही था, किन्तु स्वयं अक्षरातीत अपनी आत्माओं के लिए इस नश्वर जगत में आये तथा यह ज्ञान उनके वास्ते जाहेर हुआ है, जो इस पट दर्शन में प्रस्तुत किया गया है।

''चौदे तबक की दुनी में, बका तरफ न पाई किन।
ढूंढ़ थके सब त्रैगुन, नेत नेत कहे वेदों वचन॥''

महामति कृत बड़ी वृत्त ९१/१

इस पट दर्शन में प्रस्तुत नक्शे श्रीमुखवाणी (श्री कुलजम स्वरूप साहिब), महामति (स्वामी लालदास जी) कृत बड़ी वृत्त, एवं परमहंस महाराज श्री जवाहर दास जी की वृत्त के आधार पर तैयार किए गए हैं। इसकी चर्चनी भी उसी आधार पर लिखी गयी है। यह सम्पूर्ण सेवा ''श्री धर्मवीर'', ''जागनी रत्न'' श्री जगदीश चन्द्र जी तथा श्री विन्ध्याचल जी महाराज के निर्देश अनुसार राजन स्वामी जी ने की है। नश्वर जगत में धनी के सुख की लज्जत पाने के लिये परमधाम की चितवनी के सिवाय अन्य कोई भी साधन नहीं है, जिसके विषय में स्वयं धाम धनी अपनी वाणी में कहते हैं -

''महामत कहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अरस के।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे॥''

परिकरमा, १६/१८

महामत कहें ए मोमिनों, तुम देखो अपना सुख।
और सब धन्धा छोड़ के, देखो नूर जमाल का मुख॥

महामति कृत वृत्त ११/४३

Nijanand App

''ज्यों ज्यों होवे अरस नजीक, खेल त्यों त्यों होवे दूर ।
यों करते छूटया खेल नजरों, तो रूहें कदम तले हजूर ॥''

सिनगार, २४/१३

''चौकस कर चित्त दीजिए, आतम को एह धन ।
निमख एक ना छोड़िए, कर मन वाचा करमन ॥''

परिकरमा, ४/६

''तुम आये तिन घर से, तुम देखो अपना ठौर ।
याद करो एक गुन को, कहूं नजर ना करो और ॥

महामति कृत बड़ी वृत्त २९/१०८

सर्व सुन्दरसाथ जी के चरणों में यह विनम्र प्रार्थना है कि धाम धनी की मेहर से प्रस्तुत इस पट दर्शन रूपी पुष्पहार को अंगीकार करें एवं जाने-अनजाने होने वाली त्रुटियों को सूचित करने की कृपा करें ।

निवेदक -
श्री निजानन्द आश्रम, रतनपुरी
पो० - रतनपुरी
जिला - मुजफ्फरनगर
उत्तर प्रदेश

Nijanand App

श्री परमधाम पटदर्शन एवं चर्चनी — सूची पत्र

क्रम संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या	क्रम संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
१.	श्री रंग मोहोल का खड़ा दृश्य	१	१८.	पांचवीं भोम के रंग परवाली मंदिर का दृश्य	२८
२.	हवेलियों के नव फिरावे	३	१९.	छठीं भोम-सुखपाल	३१
३.	दस मन्दिर के हांस की तीन भोम की बाहरी शोभा	६	२०.	सातवीं भोम के दो हिंडोलों की ताली	३३
४.	मूल दरवाजे से तीसरी भोम तक का चित्र	८	२१.	आठवीं भोम के चार हिंडोलों की ताली	३४
५.	बाहरी हार मन्दिरों की बाहरी दीवाल की शोभा	९	२२.	नवीं भोम के दो सौ एक छज्जों की शोभा	३५
६.	गुर्जों की बाहरी दीवाल का दृश्य	१०	२३.	दसवीं चांदनी पर बाग बगीचे	३६
७.	मन्दिरों की भीतरी दीवाल का चित्र	११	२४.	दसवीं चांदनी पर देहेलान	३८
८.	चांदनी चौक से मूल मिलावे तक की शोभा	१२	२५.	दसवीं चांदनी पर गुमटियां	४०
९.	मूल मिलावे का दृश्य	१४	२६.	अमृत वन का दृश्य	४२
१०.	चार गोल हवेली का चित्र	१६	२७.	श्री रंग मोहोल की नजदीकी परिकरमा की शोभा	४४
११.	पंच मोहोल की चार हार हवेली का दृश्य	१७	२८.	सोलह हांस का चेहेबच्चा	४६
१२.	दूसरी भोम के दस मदिर का हांस	१८	२९.	वट पीपल की चौकी	४९
१३.	दूसरी भोम-भुल भुलवनी	१९	३०.	फूल बाग के सौ बगीचे	५१
१४.	खड़ोकली	२०	३१.	फूल बाग का एक बगीचा (सम्पूर्ण दृश्य)	५३
१५.	तीसरी भोम के दस मंदिरों की हांस	२२	३२.	फूल बाग के एक बगीचे की शोभा	५५
१६.	चौथी भोम निरत की हवेली	२४	३३.	नूर बाग के सौ बगीचे	५७
१७.	पांचवीं भोम के नौ चौक	२६	३४.	नूरबाग के एक बगीचे की शोभा	५९

Nijanand App

क्रम संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या	क्रम संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
३५.	अन्न वन	६०	५४.	आकाशी मोहोल की चांदनी	८८
३६.	दूब-दूलीचा	६२	५५.	घाटी की तरहटी एवं मोहोलात	८९
३७.	कुंज-निकुंज तथा पश्चिम की चौगान	६३	५६.	बंगला तथा चेहेबच्चा	९१
३८.	लाल चबूतरा	६४	५७.	एक बंगला	९२
३९.	ताड़वन	६६	५८.	पुखराज पहाड़ का खड़ा दृश्य	९३
४०.	ताड़वन का एक बगीचा	६८	५९.	श्री जमुना जी तथा सातों घाट, केल व वट का पुल	९५
४१.	बड़ोवन, मधुवन तथा महावन का दृश्य	६९	६०.	वट का घाट	९७
४२.	पुखराज, बंगला, घाटी, बड़ोवन, मधुवन तथा महावन	७०	६१.	हौज-कौसर तालाब	९८
४३.	पुखराज पर्वत तथा बंगले की तरहटी	७१	६२.	पाल अन्दर की मोहोलात	१००
४४.	अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा एवं मूल कुण्ड की तरहटी	७३	६३.	सोलह देहुरी का घाट	१०१
४५.	पुखराज एवं बंगलों का चबूतरा	७५	६४.	तेरह देहुरी का घाट, झुण्ड का घाट तथा नवदेहुरी का घाट	१०२
४६.	अधबीच का कुण्ड ढंपो चबूतरा तथा मूलकुण्ड का चबूतरा	७७	६५.	चौरस पाल के ऊपर देहुरी एवं वृक्ष	१०४
४७.	पुखराज की चौदह मेहराबें ताल और अधबीच के कुण्ड की छठीं भोम	७८	६६.	टापू मोहोल	१०५
४८.	हजार हांस की मोहोलात, जवेरों के मोहोल तथा खास मोहोल	८१	६७.	टापू मोहोल की चांदनी	१०६
४९.	हजार हांस की हवेली की चांदनी	८३	६८.	चौबीस हांस का मोहोल	१०७
५०.	हजार हांस के मोहोल का एक बड़ा दरवाजा	८४	६९.	बड़ा दरवाजा तथा जमीन पर बगीचों का द्रश्य	१०८
५१.	आकाशी मोहोल	८५	७०.	छठीं चांदनी	१०९
५२.	आकाशी मोहोल के दो दिशा की बड़ी हवेलियां	८६	७१.	चौबीस हांस के मोहोल का खड़ा चित्र	११०
५३.	मध्य की बड़ी हवेली	८७	७२.	जवेरों की नहरों के नौ फिरावे	१११

Nijanand App

क्रम संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या	क्रम संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
७३.	चार पहल की हवेली	११२	९२.	माणिक पहाड़ के बाहर जमीन पर बड़ोवन, मधुवन एवं महावन	१३२
७४.	एक मोहोल का दृश्य	११३	९३.	माणिक पहाड़ के बाहर ताल, मोहोल तथा बगीचों की चांदनी	१३३
७५.	आठ पहल की हवेली	११४	९४.	माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य	१३५
७६.	सोलह पहल की हवेली	११५	९५.	वन की नहरें (मोहलातें)	१३६
७७.	बत्तीस पहल की हवेली	११६	९६.	छोटी रांग (चार हार हवेली)	१३७
७८.	चौंसठ पहल की हवेली	११७	९७.	एक मोहोल का चित्र	१३९
७९.	जवेरों के मोहोल की चांदनी	११८	९८.	बड़ी रांग	१४१
८०.	माणिक पहाड़	११९	९९.	बड़ी रांग की हवेली	१४२
८१.	माणिक पहाड़ का बड़ा दरवाजा तथा हवेलियां	१२०	१००.	हवेलियों की त्रिपोलियों के मध्य की हवेली	१४३
८२.	एक हवेली का दृश्य	१२१	१०१.	एक सागर की हवेली की चांदनी पर टापू, मोहोल एवं ताल तथा देहेलान	१४४
८३.	एक मोहोल की शोभा	१२२	१०२.	हवेली के टापू मोहोल की चांदनी	१४५
८४.	एक मंदिर का चित्र	१२३	१०३.	एक सागर के चारों तरफ का दृश्य	१४६
८५.	एक मंदिर के अन्दर कोठरियों का दृश्य	१२४	१०४.	हवेली की चांदनी पर ताल, बगीचों एवं गुमटियों का चित्र	१४७
८६.	माणिक पहाड़ की एक हवेली के बाहर का चित्र	१२५	१०५.	चांदनी पर एक बगीचे का दृश्य	१४८
८७.	माणिक पहाड़ के भीतर माणिक मोहोल का दृश्य	१२६	१०६.	एक जिमी की शोभा	१४९
८८.	माणिक पहाड़ पर टापू मोहोल तथा देहेलान	१२७	१०७.	टापू मोहोल, जिमी तथा मोहोलाइत की चांदनी का दृश्य	१५०
८९.	टापू मोहोल की चांदनी	१२८	१०८.	पच्चीस पक्ष का चित्र	१५१
९०.	माणिक पहाड़ की चांदनी	१२९			
९१.	माणिक पहाड़ की चांदनी तथा जमीन पर बगीचे, नहरें और महानद	१३०			

Nijanand App

१. श्री रंग मोहोल का खड़ा दृश्य

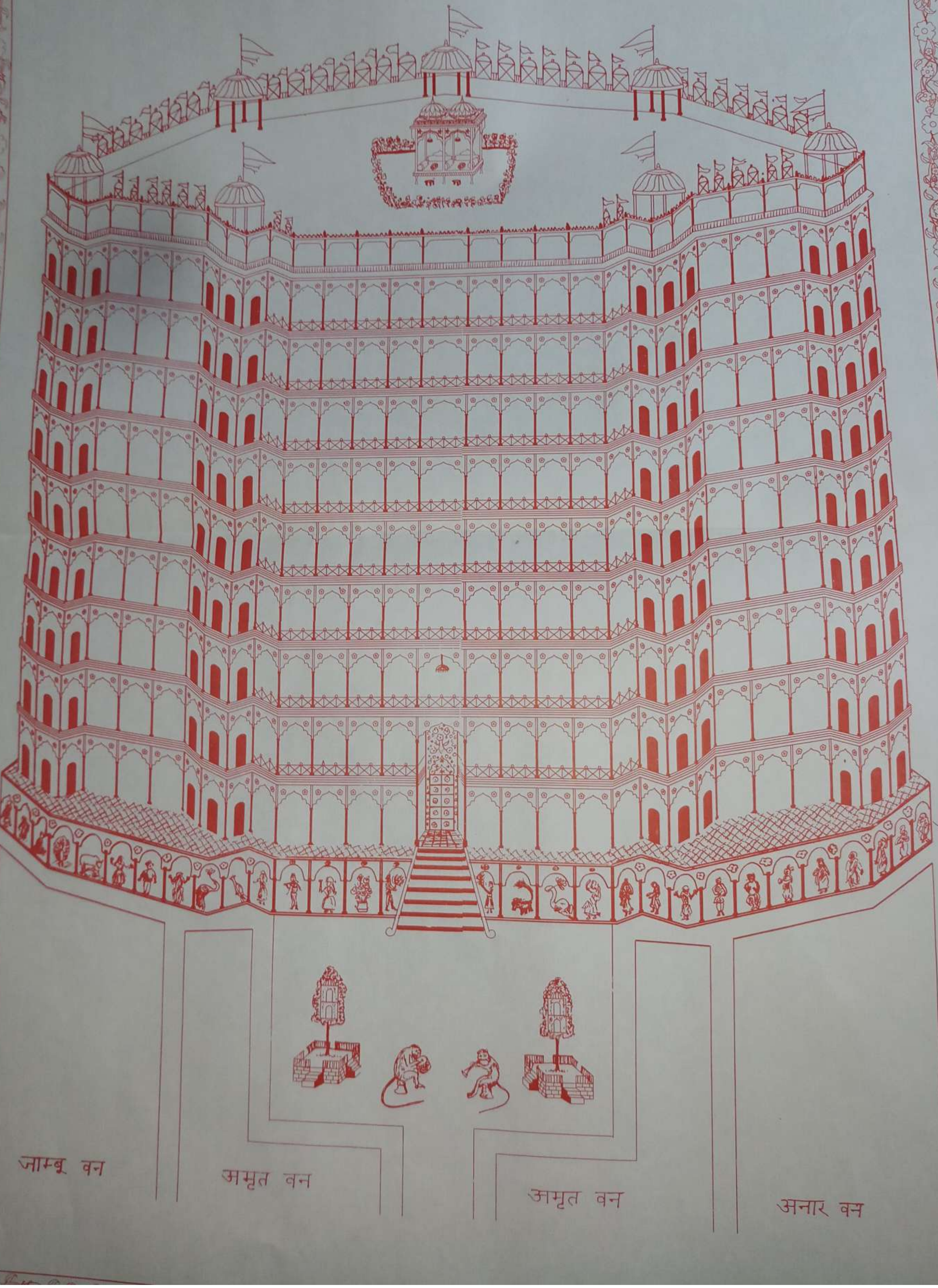

Nijanand App

१ - श्री रंग मोहोल का खड़ा दृश्य

अखण्ड श्री परमधाम की भूमिका का तो पारावार ही नहीं है, लेकिन उसमें से केवल पच्चीस पक्षों का ब्यान यहां सूक्ष्म रूप में किया जा रहा है। सर्वरस सागर से दधिसागर तक और नीरसागर से मधुसागर तक इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५० करोड़ योजन की है और डेढ़ अरब योजन की गृद आयी है। इस भूमि के मध्य भाग में भोम भर ऊंचा चबूतरा है, जिसमें २०१ हांस आये हैं। रंगभवन की छः हजार मन्दिर की गृद आयी है और दो हजार मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई आयी है और किनारे पर चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है। कठेड़े के भीतरी तरफ एक मन्दिर की चौड़ी रौंस (रास्ता) है। रौंस की जगह छोड़कर छः हजार मन्दिरों की एक हार चारों तरफ है। इन मन्दिरों के २०१ हांस आये हैं। एक-एक हांस ३०-३० मन्दिर का है और दो हांसों के कोने पर ६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा गुर्ज रौंस पर आया है। यदि रंगमहल को चांदनी चौक में खड़े होकर देखें तो इसकी ऊंचाई ग्यारह भोम की दिखाई देती है।

रंग भवन के चारों कोनों पर रौंस के साथ लगकर बगीचों की जमीन पर चार-चेहेबच्चे सोलह-सोलह हांस के आये हैं। अग्नि कोने, नैरित्य कोने के बीच में दक्षिण तरफ ५० हांस आये हैं। ईशान कोना और अग्नि कोना के बीच पूर्व तरफ ५१ हांस आये हैं और नैरित्य कोना और वायव्य कोना के बीच पश्चिम तरफ ५० हांस आये हैं। पूर्व तरफ ५१ हांस आये हैं जिसमें से २४ हांस दक्षिण तरफ और २४ हांस उत्तर तरफ रहे, और मध्य भाग में जो दो हांस आये हैं उन दो हांसों के तीन हांस बने हैं। इन दो हांसों के ६० मन्दिर हुए। मध्य भाग में १० मन्दिर का हांस दरवाजे के वास्ते बनाया गया है और दाएं-बाएं के हांस २५-२५ मन्दिर के आये हैं। बाकी चारों तरफ के हांस ३०-३० मन्दिर के हैं। हर एक मन्दिर १०० हाथ का लंबा-चौड़ा आया है। इस प्रकार से २०० हांसों की जगह में २०१ हांस आये हैं और २०१ गुर्ज भी आये हैं।

रंग भवन के पूर्व की ओर तीन घाट आये हैं। वे घाट उत्तर से दक्षिण तरफ ५०० मन्दिर के चौड़े, पूर्व से पश्चिम दो हजार दो मन्दिर के लम्बे हैं। मध्य में अमृत वन आया है। उत्तर तरफ अनार का घाट और दक्षिण तरफ जाम्बू वन आया है। अमृत वन के तीसरे हिस्से में रंगभवन के साथ लगकर १६६ मन्दिर का लंबा-चौड़ा चांदनी चौक आया है। चांदनी चौक के मध्य भाग में पश्चिम तरफ भोम भर की सीढ़ी चबूतरे पर गयी है। सीढ़ियों का उतार-चढ़ाव दो मंदिर का आया है। शूरू में सीढ़ी चालू होती है। एक-एक सीढ़ी एक-एक हाथ की चौड़ी तथा एक हाथ की ऊंची और दो-दो मंदिर की लंबी आयी है।

इस प्रकार पांच सीढ़ियां आयी हैं। इस पांचवीं सीढ़ी के पश्चिम तरफ साथ लगकर पांच हाथ का चौड़ा और दो मंदिर का लंबा चांदा आया है। पांचवीं सीढ़ी और चांदे की जमीन बराबर आयी है लेकिन इनकी बनावट अलग-अलग आयी है, इसलिए इनको अलग-अलग ब्यान किया है। इस चांदे के पश्चिम तरफ एक हाथ की ऊंचाई में छठी सीढ़ी आयी है और दसवीं सीढ़ी के पश्चिम तरफ दूसरा चांदा आया है। इस प्रकार से १०० सीढ़ियां और २० चांदे आये हैं। इन सीढ़ियों और चांदों पर अति सुन्दर गलीचा बिछा हुआ है। गलीचे

Nijanand App

पर कई प्रकार से चित्रकारी, बेल-बूटे, नक्शकारी नगों से की हुई है। सीढ़ियों और चांदों के स्थान पर गलीचे का रंग अलग-अलग आया है। यह गलीचा दो मंदिर का चौड़ा और तीन मंदिर का लंबा सीढ़ियों पर बिछा है, जिसमें से एक मंदिर सीढ़ियों की चौड़ाई और एक मंदिर की ऊंचाई और एक मंदिर चांदों पर बिछा है।

इन सब सीढ़ियों तथा चांदों के किनारे उत्तर-दक्षिण की दीवाल पर कांगरी बनी है। एक-एक सीढ़ी पर कमर भर ऊंची और एक हाथ की लंबी दीवाल बनी है, जिस पर अति सुन्दर नगों से जड़ित कांगरी बनी है। इस प्रकार चांदों पर भी कमर भर ऊंची ६ हाथ लंबी दीवाल आयी है, जिस पर सुन्दर कांगरी बनी है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर चढ़ती दिखाई देती है। अन्त में बीसवें चांदे से एक सीढ़ी और चढ़ के दो मंदिर के लंबे-चौड़े चौक में आये। इस चौक के दाएं-बाएं एक-एक चबूतरा चार-चार मंदिर का लंबा और दो मंदिर का चौड़ा, एक सीढ़ी ऊंचा शोभा ले रहा है।

रंगभवन का जो चबूतरा जमीन से एक भोम ऊंचा है, उसकी बाहरी किनार पर कठेड़ा आया है। आगे अंदर की ओर एक मंदिर की रौंस छोड़कर ५९९९ मंदिरों की हार चारों तरफ घूमी है। ६ हजार मंदिरों की जगह तो पूरी है, परन्तु पूर्व की तरफ १० मंदिर के हांस के मध्य भाग में बड़े मुख्य दरवाजे के वास्ते दो मंदिर का लंबा और एक मंदिर का चौड़ा एक ही मंदिर आया है।

श्री परमधाम की हर वस्तु में चार-चार गुण पाये जाते हैं। नरमाई, चेतनता, प्रकाश और सुगन्धि। इस वास्ते परमधाम के मोहल, मंदिर, थंभ, दीवाल, दरवाजे, बाग-बगीचे श्री श्यामा जी तथा सखियों के आशिक हैं। इन को सुख देने के वास्ते अनेक रूप धारण करते है। उनके विचार मात्र से ही लंबाई, चौड़ाई और ऊंचाई कम-ज्यादा होती रहती है। इस वास्ते निश्चय करके हिसाब के अनुसार हर वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई जानना।

Nijanand App

२. हवेलियों के नव फिरावे

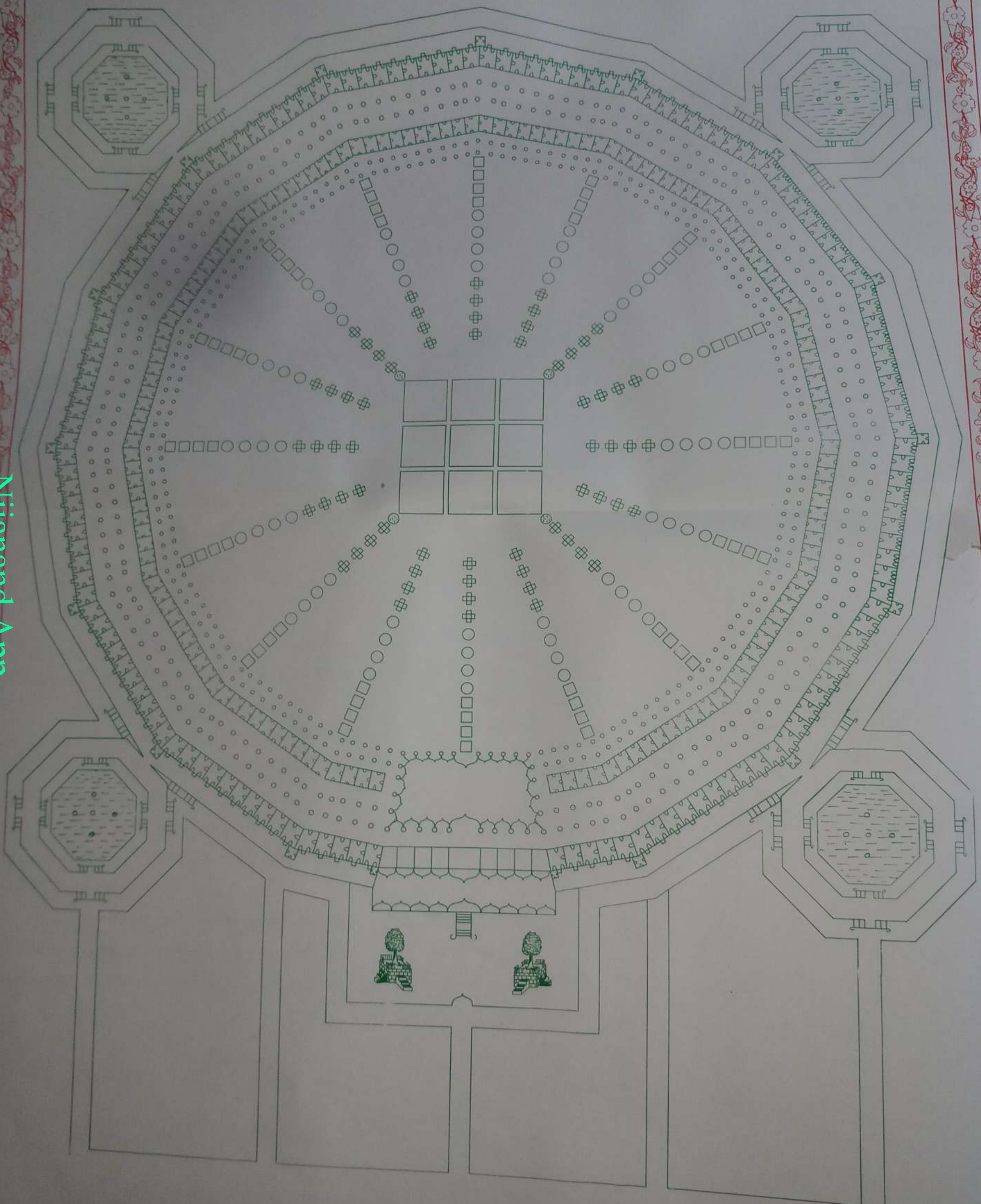

Nijanand App

२ - हवेलियों के नव फिरावे

श्री रंगभवन के ६००० मंदिर की गृद, लंबाई-चौड़ाई २००० मंदिर की आयी है। एक मंदिर सौ हाथ का है। कोस के हिसाब से एक मंदिर सौ कोस का लंबा-चौड़ा आया है। इस हिसाब से श्री रंग भवन ६ लाख कोस की गृद और दो लाख कोस का लंबा-चौड़ा आया है।

बाहरी मंदिरों की हार से रसोई की हवेली की हद तक साढ़े ६ मंदिर होते हैं। दो मंदिर की जगह में दो मंदिरों की हार और दो हार मंदिरों के बीच में तीन मंदिर की तीन गली और रसोई की हवेली के पूर्व तरफ जो तीन गली आयी हैं, उसमें से डेढ़ गली ली जायेगी और डेढ़ गली हवेली में ली जायेगी। इस प्रकार साढ़े ६ मंदिर हुए।

१. पहला फिरावा चौरस हवेलियों का है, जिसकी लंबाई-चौड़ाई २३ मंदिर, गृद ८८ मंदिर की है थंभों की तीन हारें, सौ थंभ मंदिरों के बाहरी तरफ, ७६ थंभ मंदिरों के भीतरी तरफ और ६८ थंभ चबूतरे के किनारे पर आये हैं सब थंभ २४४ हुए। चारों हवेलियों के मंदिर ९२ हुए। १२ मंदिर गलियों के, सब मिलाकर १०४ मंदिर का पहला फिरावा हुआ। परिकरमा ६००६ मंदिर की आयी है।

२. यह फिरावा गोल हवेली का आया है। हवेली की गिर्द ६४ मंदिर की है। लंबाई-चौड़ाई सवा २१ मंदिर की है। ६४-६४ थंभों की तीन हारें हैं। कुल थंभ १९२ हुए। चारों हवेलियों की लंबाई ८५ मंदिर की हुई और १२ मंदिर गलियों के, कुल ९७ मंदिर हुए। हवेली छोटी होने से परिकरमा ५६०२ मंदिर की आयी है।

३. यह फिरावा चौरस हवेलियों का आया है। एक हवेली की लंबाई-चौड़ाई १९ मंदिर की, गिर्द ७६ मंदिर की है। हवेली के बाहर के थंभ ८४, भीतर के ६० तथा चबूतरे पर ५२ आये हैं। कुल थंभ १९६ हुए। चारों हवेलियों की जगह ७६ मंदिर की आयी है। १२ मंदिर गलियों के, कुल ८८ मंदिर हुए। बाहर की परिकरमा ५०८२ मंदिर की आयी है।

४. यह फिरावा गोल हवेलियों का है। एक हवेली की लंबाई-चौड़ाई साढ़े १८ मंदिर की, तीनों हारों के कुल थंभ १६८ हुए। तब चारों हवेलियों की जगह ७४ मंदिर की हुई। १२ मंदिर गलियों के, तब यह चौथा फिरावा ८६ मंदिर का हुआ। बाहरी परिकरमा ४९६६ मंदिर की हुई।

५. पांचवां फिरावा चौरस हवेलियों का आया है। लंबाई-चौड़ाई १५ मंदिर की, गिर्द ५६ मंदिर की, बाहरी हार ६८ थंभों की, भीतरी हार ४४ थंभों की और चबूतरे पर ३६ थंभ, कुल १४८ थंभ हुए। चारों हवेली की जगह ६० मंदिर की, १२ मंदिर गलियों के, तब पांचवां फिरावा ७२ मंदिर का हुआ। बाहरी परिकरमा ४१५८ मंदिर की आयी है।

६. यह फिरावा गोल हवेली का आया है। एक हवेली की गिर्द ४४ मंदिर की, लंबाई-चौड़ाई साढ़े १४ मंदिर की हुई। ४४-४४ थंभों की तीन हारें, कुल थंभ १३२ आये हैं। चारों हवेलियों की जगह ७० मंदिर की हुई। बाहरी परिकरमा ४०४२ मंदिर की आयी है।

७. यह फिरावा चौरस हवेलियों का है। हर एक हवेली की लंबाई-चौड़ाई ११ मंदिर की आयी है। गिर्द ४० मंदिर की हुई। बाहरी हार में ५२ थंभ, भीतरी हार में २८ थंभ और चबूतरे

Nijanand App

पर २० थंभ आये हैं। कुल १०० थंभ हुए। चारों हवेलियों की लंबाई ४४ मंदिर की तथा १२ मंदिर गलियों को मिलाकर ५६ मंदिर हुए हैं। बाहर की परिकरमा ३२३४ मंदिर की हुई।

८. यह फिरावा गोल हवेली का आया है। एक हवेली की लंबाई-चौड़ाई साढ़े १० मंदिर की, गिर्द ३२ मंदिर की, तीनों हारों के ९६ थंभ हुए। चारों हवेलियों की जगह ४२ मंदिर की हुई। १२ मंदिर गलियों के मिलाकर ५४ मंदिर हुए। बाहरी परिकरमा तीन हजार एक सौ साढ़े १८ मंदिर की हुई।

९. यह फिरावा पंच मोहलों का है। यह हवेली चौपट की भांति आयी है। इस हवेली में पांच मंदिर आये हैं। एक हवेली की लंबाई-चौड़ाई तीन मंदिर की आयी है, जिसके सब दरवाजे १६ आये हैं। जिसमें चार दिशाओं के चार मंदिरों के दरवाजे १२, मध्य मंदिर में दरवाजे ४ आये हैं। मध्य मंदिर के दरवाजे से निकलकर दिशाओं के मंदिरों में जा सकते हैं। एक पंच मोहोल के चारों तरफ २० थंभ आये हैं। चार थंभ चारों कोनों के आने से कुल २४ थंभ हुए। तब पंच मोहलों के चारों मोहलों के मंदिरों की जगह १२ मंदिर हुई और साढ़े ११ मंदिर गलियों के आये हैं। कुल मिलाकर साढ़े २३ मंदिर हुए। साढ़े ११ मंदिर गलियों का कारण यह है कि पंच मोहोल की हवेलियों के बाद भीतरी तरफ डेढ़ गली की आवश्यकता नहीं है। यहां से फिरावे खत्म हो जाते हैं। इस फिरावा की बाहरी परिकरमा १३८६ मंदिर की हुई। तीन मंदिर की एक हवेली और तीन मदिर की गली, तब एक हवेली ६ मंदिर की हुई। इस प्रकार से २३१ हवेलियां चारों तरफ आयी हैं। इस प्रकार बाहरी मंदिरों की हार से ३६ हारों तक ६५६ मंदिर की जगह हुई।

भीतर के पंच मोहलों के भीतरी तरफ २८ मंदिर की जगह का चौक रमने के वास्ते आया है। इस चौक के भीतरी तरफ चौरस जगह में नौ चौक आये हैं। सो लंबाई-चौड़ाई में तीन-तीन आये हैं। एक चौक २१० मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। तब तीनों चौकों की लंबाई-चौड़ाई ६३० मंदिर की हुई। इसकी परिकरमा २५२० मंदिर की है।

दो चौक के मध्य में एक ही दीवाल आयी है, जिससे मध्य भाग में गली या रास्ता कुछ भी नहीं है। हर एक चौक में १२ हजार मंदिर आये हैं। एक चौक में ६४-६४ हवेली आयी हैं। हर एक हवेली के मध्य भाग में केवल एक ही रास्ता अन्दर जाने के वास्ते आया है। इस प्रकार से एक चौक की एक दिशा में २४ रास्ते हुए और चारों दिशाओं के ९६ रास्ते हुए।

मध्य के नौ चौकों के चारों कोनों पर चार थंभ अर्थात् कोट दिवाल (पाईप) आठ मंदिर के लंबे-चौड़े और २४ मंदिर की गृद आयी है। जिसके १६ हांस चारों तरफ आए हैं। एक-एक हांस डेढ़-डेढ़ मंदिर का आया है। कोट की दीवाल एक दिशा में एक मंदिर की चौड़ी आयी है। ६ मंदिर में जल आया है। यह कोट दशवी चांदनी पर कमर भर ऊंचे चबूतरे के साथ जाकर लगा है। जल का दर्शन यहीं पर होता है। इस कोट की दीवाल से दो मंदिर की दूरी पर पंच मोहोल के भीतर के थंभों की हार आयी है। इसी प्रकार नवों चौकों के कोनों पर चार स्तून आये हैं।

इन्हीं चारों स्तूनों से रंगभवन की हर भोम में गुप्ता-गुप्त नलों द्वारा पानी जाता है। ठंडा और गर्म जिस प्रकार का चाहिए, उसी प्रकार का मिलता है। पानी की कहीं पर

Nijanand App

कमी नहीं है। पानी दूध से उज्जवल और मिश्री से मीठा हर प्रकार की सुगन्धि से युक्त है।

इस मंदिर के चौक के आगे पश्चिम तरफ तीनों चौकों में से डेढ़ चौक रंग परवाली मंदिर के मध्य तक निकलता है। तब डेढ़ चौक के मंदिर ३१५ हुए। तब बाहरी मंदिर की किनार से लेकर मध्य परवाली मंदिर के मध्य भाग तक सब जगह एक हजार मंदिर की हुई, जिसका बेवरा इस प्रकार है। ६-१/२+१०४+९७+८८+८६+७२+७०+५६+५४+२३-१/२+२८+३१५=१००० मंदिर हुए। इसी प्रकार पश्चिम तरफ भी जगह आयी है। रंग परवाली मंदिर से दक्षिण और उत्तर भी इसी प्रकार जगह आयी है। इसलिए पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण रंगभवन की लंबाई-चौड़ाई २००० मंदिर की आयी है।

श्री रंगभवन की हर एक भोम में सखियों के सिनगार तथा शयन का एक-एक मंदिर आया है। शयन के मंदिर तो मध्य के चौक में जो बारह हजार मंदिर आये हैं वहां पर हर एक सखी का एक-एक मंदिर आया है और जो सिनगार का मंदिर है, वह बाहर और अन्दर की ओर जो दो हारें मंदिरों की है, वह सिनगार के मंदिर हैं। परन्तु सिनगार तीसरी भोम में होता है। बाहरी हार तो ५९९९ मंदिरों की आयी है। एक मंदिर कम हो गया है और भीतरी तरफ मंदिरों की दूसरी हार से बारह मंदिर २८ थंभ के चौक में आये हैं। यह तेरह मंदिर कम हो गये हैं। तो एक-एक सखी का मंदिर कैसे बना, यह शंका अति भारी है। इस शंका को दूर करने के लिए श्री राज जी के बेशक इलम से हम शंका रहित हो सकते हैं। उनके हुकम द्वारा वहां सखियों की इच्छानुसार थंभों में जालीदार दरवाजे बन जाते हैं अर्थात् तेरह मंदिर कम होने पर भी वह मंदिर बारह हजार हो जाते हैं। तो एक-एक सखी मंदिर में सिनगार करती है।

६-६ हजार मंदिरों की दो हारें तथा सम्पूर्ण थम्भों की हार, २८ थम्भ का चौक, सम्पूर्ण चौक, गोल हवेलियों तथा नौ चौक इन सब दो हजार मंदिर की जगह पर एक ही छत आयी है। खाली चार जो स्तून पानी के आये हैं। इनमें छत नहीं आयी है। इस प्रकार प्रथम भोम का ब्यान जानना।

मंदिर पर मंदिर, २८ थंभ के चौक पर २८ थंभ का चौक, हवेली के ऊपर हवेली, दरवाजों पर दरवाजे, छज्जों पर छज्जें, झरोखों पर झरोखें, इसी प्रकार उपरा-ऊपर दश भोम तक चले गये हैं। परन्तु हर भोम में कहीं-कहीं पर थोड़ा-थोड़ा अन्तर आता है सो ब्यान किया जा रहा है।

Nijanand App

३. दस मन्दिर के हांस की तीन भोम की बाहरी शोभा

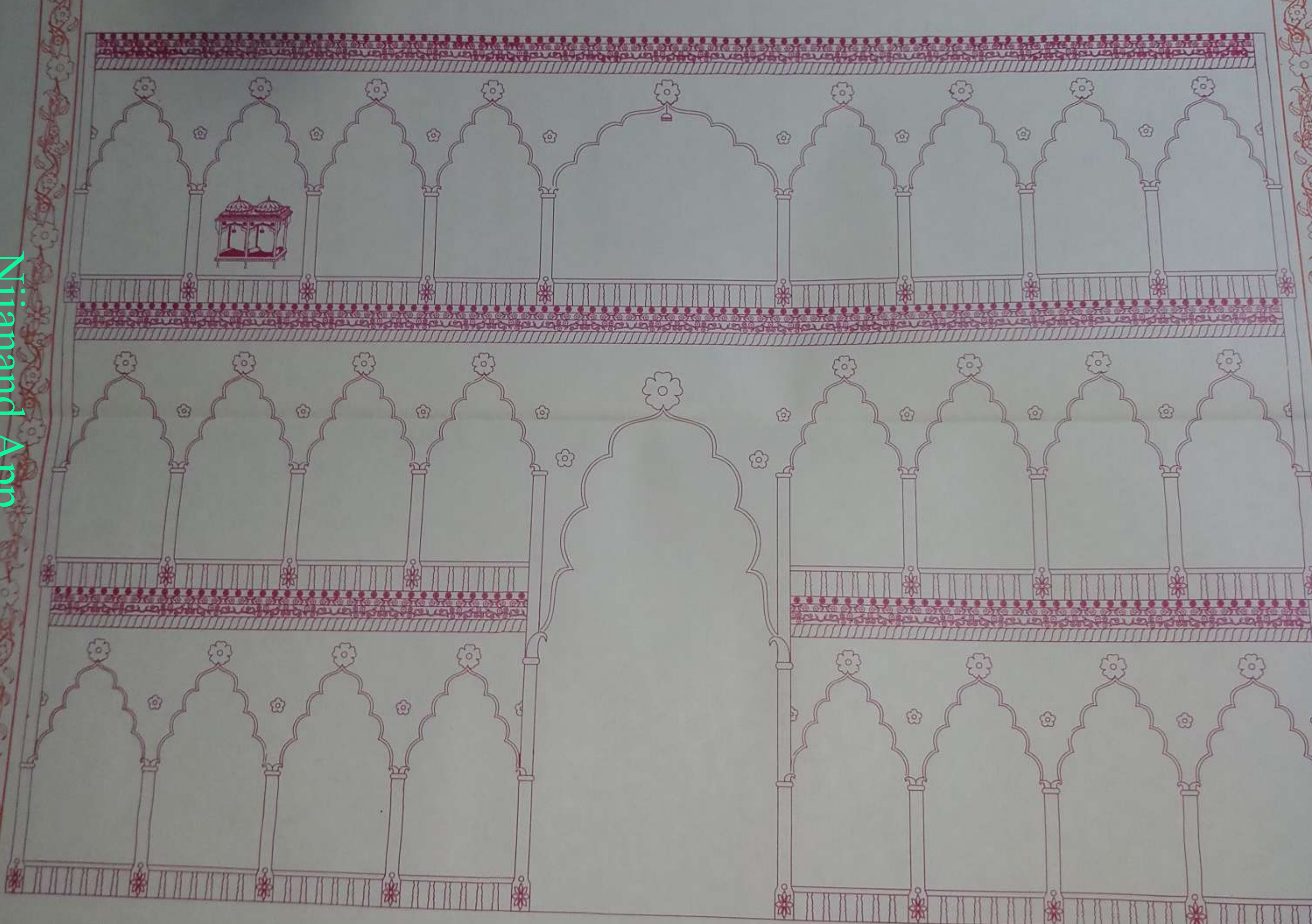

Nijanand App

३ - दस मंदिर के हांस की तीन भोम की बाहरी शोभा

पूर्व तरफ के दस मंदिर के हांस के दाएं-बाएं की खूबी देखकर फिर दस मंदिर के हांस के सामने की खूबी को आत्मा देखने लगी। दाएं-बाएं तरफ सब हांसों के सामने एक-एक मंदिर की रौंस की जगह थी परन्तु दस मंदिर के हांस के सामने दो मंदिर की चौड़ी रौंस आयी है। यह एक मंदिर की चौड़ी पूर्व से पश्चिम और दस मंदिर की लम्बी उत्तर से दक्षिण ज्यादा जगह चांदनी चौक से ली है। इस प्रकार से दस मंदिर की लंबी और दो मंदिर की चौड़ी जगह हो गयी है। मध्य में दो मंदिर का लंबा-चौड़ा चौक आया है और दाएं-बाएं एक-एक सीढ़ी ऊंचे चार-चार मंदिर के लंबे और दो मंदिर के चौड़े दोनों तरफ दो चबूतरे आये हैं। दक्षिण तरफ के चबूतरे का ब्यान किया जाता है। इसी तरह उत्तर तरफ के चबूतरे का ब्यान जानना।

यह चबूतरे चार मंदिर के लंबे उत्तर से दक्षिण और दो मंदिर के चौड़े पूर्व से पश्चिम एक सीढ़ी ऊंचे आये हैं। इस चबूतरे पर पांच थंभ खुले मंदिर-मंदिर के अन्तर पर पूर्व तरफ आये हैं। ये थंभ ४३ हाथ के ऊंचे आये हैं, क्योंकि एक हाथ की जगह नीचे चबूतरे में आयी है। इस प्रकार ४४ हाथ की ऊंचाई हुई। दो मंदिर के चौक के साथ लगता हुआ पहला थंभ हीरे का (सफेद), दूसरा माणिक (लाल), तीसरा पुखराज (पीला), चौथा पाच का (हरा), पांचवां नीलवी (नीला) रंग का आया है। इन थंभों के ऊपर ४४ हाथ की ऊंची मेहराब आयी है। एक-एक मेहराब पर तीन-तीन फूल आये हैं। इसके ऊपर सोलह हाथ की जगह में अनेक प्रकार की चित्रकारी आयी है। १२ हाथ की जगह मंदिर की बाकी थी परन्तु इस चबूतरे पर दूसरे भोम की छत कमर भर ऊंची आयी है। मंदिरों की जमीन कमर भर इस चबूतरे से नीची आयी है। एक हाथ की जगह इस छज्जे में आने से चार हाथ की जगह बढ़ गयी है। इस प्रकार सोलह हाथ की जगह में चित्रकारी आयी है। हर एक मेहराब दो-दो रंग की आयी है। आधी मेहराब एक थंभ के रंग की तथा आधी मेहराब दूसरे थंभ के रंग की आयी है। इन थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। इन्हीं पांच थंभों के सामने पश्चिम तरफ दो मंदिर की दूरी पर दीवाल में पांच थंभ अक्सी आये हैं, जिन पर चार मेहराबें अक्सी आयी हैं। यह मेहराबें भी दो-दो रंग की आयी हैं। पूर्व तरफ की मेहराब व थंभ खुले आये हैं।

चबूतरे के दक्षिण तरफ के कोने वाले नीलवी के थंभ से पश्चिम तरफ एक मंदिर की जगह में सुन्दर कठेड़ा है। इसके आगे ३३ हाथ की जगह में कठेड़ा नहीं आया है क्योंकि यहां से एक सीढ़ी नीचे रौंस पर चढ़ने-उतरने की जगह है। इसके आगे ६६ हाथ की जगह गुर्ज ने घेर ली है। इस गुर्ज के पूर्व तरफ के दरवाजे के मध्य भाग पर नीलवी के थंभ का अक्स आया है। यदि दरवाजा खुल जाये तो २२ हाथ का ऊंचा थंभ नहीं दिखायी देगा। अगर दरवाजा बन्द हो जाये तो पूरा थंभ दिखायी देगा, इन दोनों नीलवी के थंभों के ऊपर १३३ हाथ की लंबी पश्चिम से पूर्व तक एक मेहराब सर्व जोगबाई सहित नीलवी रगं की आयी हैं।

चबूतरे के उत्तर तरफ जो दो मंदिर की जगह है, उसके मध्य भाग में ५० हाथ की जगह में दो मंदिर के लंबे-चौड़े चौक में आने-जाने का रास्ता है। इसके दाएं-बाएं ७५-

Nijanand App

७५ हाथ में सुन्दर कठेड़ा आया है। दो मंदिर की दूरी पर दाएं-बाएं दो थंभ हीरे के आये हैं। सो ये मेहराब हीरे की दो मंदिर की चौड़ी पश्चिम से पूर्व और चबूतरे की जमीन से ८८ हाथ की ऊंची सर्व जोगबाई सहित आयी है।

चबूतरे के पश्चिम तरफ चार मेहराबें अक्सी जो पांच अक्सी थंभों पर आयी हैं। वे सब मेहराबें दो-दो रंग की आयी हैं। फिर एक-एक मेहराब में अक्सी थंभों पर तीन-तीन अक्सी मेहराबें आयी हैं। फिर एक-एक मेहराब में तीन-तीन मेहराबें आने से एक बड़ी मेहराब में नौ मेहराबें आयी हैं। एक मंदिर में दो दरवाजे खुले और ६ दरवाजे जालीदार हैं, तथा मध्य में अक्स पहले ब्यान के मुताबिक आया है। इन दरवाजों से निकलकर दीवाल की मोटाई में होकर आगे एक सीढ़ी नीचे उतरकर मंदिर की जमीन पर जाइए। इन सभी मेहराबों का रंग लाल है। सो इसी प्रकार से चारों मंदिर जानना। पाच और नीलवी की जो अक्सी मेहराब आयी है, सो ३३ हाथ गुर्ज पर और ६६ हाथ मंदिर पर आयी है। दोनों मिलाने से एक मेहराब एक मंदिर की बनती है। सो इस मेहराब में दो मेहराब एक ३३, एक ६६ हाथ की चौड़ी दीवाल में आयी है और तीसरी दक्षिण तरफ की मेहराब जो ३३ हाथ की है, गुर्ज ने दबा ली है। गुर्ज का दरवाजा २२ हाथ ऊंचा आया है। सो आधा दरवाजा खुला और २२ हाथ का जालीदार दरवाजा इस चबूतरे के सामने आया है। बाकी ग्यारह हाथ का आधा दरवाजा खुला, २२ हाथ का जालीदार दरवाजा रौंस पर आया। चबूतरे की छत १०४ हाथ की ऊंची आयी है। इस पर नूरमयी चन्द्रवा तना है। जिसके चारों तरफ मोतियों की झालर लटक रही है। नीचे चबूतरे के फर्श पर सुन्दर नूरमयी गिलम बिछी है। इस गिलम पर सिंहासन, कुर्सियां रखी हैं। श्री राजश्यामा जी पूर्व मुंह करके सिंहासन पर विराजमान होकर और सखियां दाएं-बाएं बैठकर जो पशु, पक्षी, जानवर खेल तमाशा करते हैं उसको देखते हैं। इस चबूतरे की दो भोम आयी है। दूसरी भोम को झरोखा करके कहा गया है। इसी प्रकार से उत्तर वाले चबूतरे का ब्यान जानना। इन दोनों चबूतरों के बीच में दूसरी भोम की जगह में छत नहीं आयी है। तीसरी भोम में दोनों चबूतरों पर तथा बीच के चौक पर एक ही छत आयी है। दोनों चबूतरों के बीच में दो मंदिर का लंबा-चौड़ा एक सीढ़ी नीचा २०४ हाथ का ऊंचा ये चौक आया है। इस चौक के उत्तर तरफ तथा दक्षिण तरफ एक-एक चबूतरा आया है। सो इस चबूतरे के दूसरी भोम तक जो एक-एक अक्सी थंभ हीरे के ८७ हाथ के ऊंचे गये हैं, यही थंभ नीचे की भोम के हैं। ये चौक दो मंदिर का लंबा-चौड़ा है। इस कारण से इसकी जोगबाई दूसरे मंदिर से दुगुनी आयेगी। ये अक्सी थंभ दोनो भोमों में काम करता है। इस कारण इसकी ऊंचाई चाहिए तो ८८ हाथ की, परन्तु एक-एक हाथ की जगह चबूतरे ने घेर ली है। इन दोनो थंभों के ऊपर ८८ हाथ की ऊंची अक्सी मेहराब आयी है।

Nijanand App

४. मूल दरवाजे से तीसरी भोम तक का चित्र

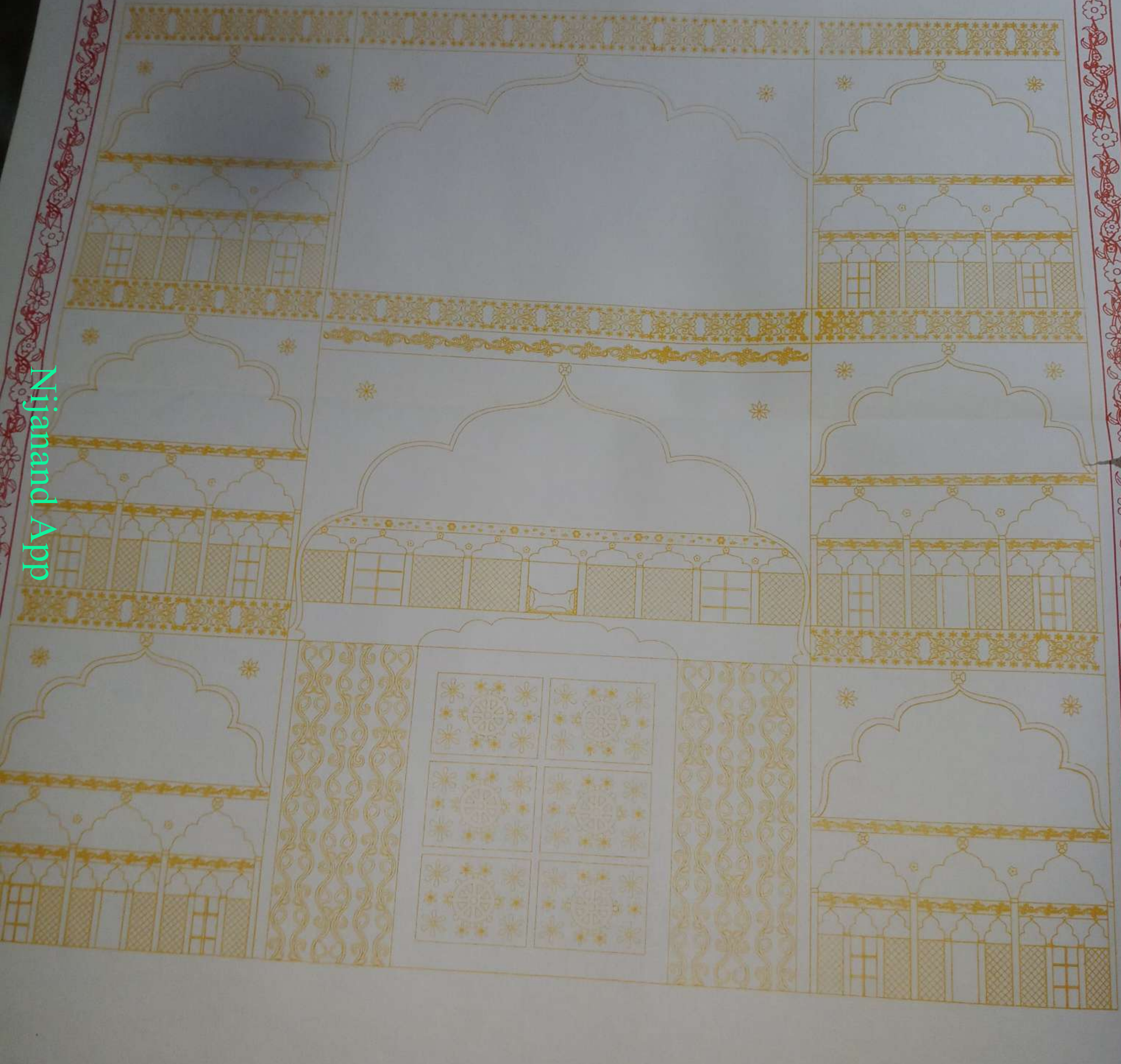

Nijanand App

४ - मूल दरवाजे से तीसरी भोम तक का चित्र

श्री रंगमहल का दरवाजा जमीन से भोम भर की ऊंचाई पर है। सौ सीढ़ियां और बीस चांदे चढ़कर दो मंदिर के चौक से होकर धाम दरवाजे में जाते हैं। वहां दरवाजे के दोनों तरफ एक-एक चबूतरा है। ये दोनों चबूतरे चार-चार मंदिर के लम्बे और दो-दो मंदिर के चौड़े हैं, जिन पर बीस थंभ और बाईस मेहराबें हैं। इनमें से दो दरवाजे की मेहेराबें हैं, एक तो दीवाल पर अक्सी है और दूसरी चबूतरे की किनार (सीढ़ी) पर है। ये दोनों मेहेराबें दो दो मंदिर की चौड़ी और दो-दो मंदिर की ऊंची सुशोभित हैं। इनमें से जो अक्सी मेहेराब है, वह चौक की जमीन से १७६ हाथ की ऊंचाई तक गयी है। ८८ हाथ तो अक्सी थंभ और ८८ हाथ की ऊपर अक्सी मेहेराब गयी है। इसके मध्य भाग में चौक की जमीन से एक सीढ़ी ऊंची लाल रंग की चौखट में दो किवाड़ दर्पण रंग के आए हैं। चौखट ८८ हाथ की लम्बी-चौड़ी है। एक-एक किवाड़ ४३-४३ हाथ का चौड़ा है, क्यों कि एक-एक हाथ की जगह चौखट ने दबा ली है। चौखट सेंदुरिया रंग की है तथा किवाड़ दर्पण रंग का है। दरवाजे के चारों तरफ चौखट पर कई प्रकार की नक्शकारी तथा कई सुन्दर-सुन्दर पत्ते, फूल तथा बेलें शोभायमान हो रही हैं। ये दरवाजे अपने आप ही बंद होते हैं और खुलते हैं, ये सब चीजें शोभा के लिए हैं। दरवाजे के दाएं-बाएं जो ५६-५६ हाथ की जगह अक्सी थंभों तक आयी है, वहां पर अनेक प्रकार की चित्रकारी शोभायमान हो रही है। दरवाजे के ऊपर की मेहेराब बड़े दरवाजे से शुरू होकर केवल १२ हाथ की ऊंचाई तक गयी है। यह अक्सी मेहेराब उत्तर से दक्षिण ८८ हाथ की चौड़ी है। दरवाजे के ऊपर की इस मेहेराब और बड़ी मेहेराब के अन्दर दाएं-बाएं और चबूतरे के पहली भोम तक की ऊंची नोक पर लाल माणिक के फूल हैं और दाएं-बाएं भी लाल माणिक के फूल आये हैं तथा बाकी जगह पर अनेक प्रकार की चित्रकारी आयी है।

बड़ी अक्सी मेहेराब के दो अक्सी थंभों में आठ अक्सी थंभ दूसरी भोम की जमीन पर आये हैं। यह सब थंभ ११-११ हाथ की बजाय २२-२२ हाथ के ऊंचे आए हैं, क्योंकि यह चौक सब मंदिरों से दुगुना आया है। इन थंभों के ऊपर नो मेहराबें आयी हैं। जो २२ हाथ की ऊंची और २२ हाथ की चौड़ी आयी हैं। हर एक पर लाल माणिक के तीन-तीन फूल आए हैं। मध्य की मेहेराब में दीवाल के आगे बाहर पूर्व की तरफ झरोखा निकला हुआ है। यह झरोखा २२ हाथ का लंबा उत्तर से दक्षिण तरफ और ११ हाथ चौड़ा पूर्व से पश्चिम की तरफ दीवाल से बाहर बड़े दरवाजे की छोटी मेहेराब से तीन हाथ ऊपर शोभा ले रहा है, जिसके ऊपर पूर्व, उत्तर और दक्षिण तरफ कठेड़ा आया है। इस झरोखे के पूर्व के दोनों थंभ खुले हैं और उत्तर से दक्षिण तरफ २२ हाथ की दूरी पर आए हैं और दो थंभ अक्सी हैं अर्थात् दीवाल पर आए हैं। यह सब थंभ ११-११ हाथ की ऊंचाई के हैं। उत्तर-दक्षिण की खुली मेहराबें पूर्व से पश्चिम के थंभों पर आयी हैं तथा एक मेहेराब खुली, जो पूर्व के दो थंभ खुले हैं, उन पर २२ हाथ की चौड़ी और २२ हाथ की ऊंची थंभों सहित आयी है। इसी प्रकार एक अक्सी मेहेराब अक्सी थंभों पर आयी है। पश्चिम की तरफ दीवाल में एक दरवाजा ११ हाथ का लंबा-चौड़ा आया है, जिसके दाएं-बाएं साढ़े पांच-२ हाथ की जगह दीवाल पर बाकी मेहराब की रह गयी है। उस दरवाजे से निकल कर दूसरी भोम के मंदिरों में जाते हैं। मंदिर का दरवाजा तथा यह दरवाजा, दोनों दीवाल की मोटाई में ही आए हैं। इस झरोखे के दाएं-बाएं की अक्सी मेहराबों में दो जालीदार दरवाजे २२ हाथ के लम्बे-चौड़े हैं। बाकी जो तीन-तीन मेहराबें दाएं-बाएं रह गयी, उनके मध्य वाली मेहराब में २२ हाथ का दरवाजा आया है, जिसके बाहर पूर्व की तरफ कठेड़ा आया है। दरवाजे के दाएं-बाएं दो जालीदार मेहेराबें २२-२२ हाथ की आयी हैं, इन सभी के ऊपर अक्सी मेहेराबें शोभा ले रही हैं। इस हांस की सब जोगबाई लाल रंग की है।

तीसरी भोम में दोनों चबूतरों तथा बीच के चौक पर एक ही छत आयी है, इस प्रकार पूर्व की तरफ दस मंदिर का लम्बा (उत्तर से दक्षिण तरफ) और दो मंदिर का चौड़ा (पूर्व से पश्चिम तरफ) एक छज्जा आया है, इस छज्जे के पूर्व की तरफ बाहरी किनार पर १० थम्भ खुले आये हैं, जिन पर नौ मेहराबें खुली आयी हैं। इन थंभों में कठेड़ा लगा हुआ है। मध्य की मेहराब दो मंदिर की चौड़ी आयी है। इस मेहेराब के बीच में एक छत्र आया है।

Nijanand App

५. बाहरी हार मन्दिरों की बाहरी दीवाल की शोभा

Nijanand App

५ - बाहरी हार मंदिरों की बाहरी दीवाल की शोभा

पूर्व की ओर के एक मंदिर की बाहरी रौंस वाली दीवाल का वर्णन यहां पर किया जा रहा है। एक मंदिर १०० हाथ का लम्बा-चौड़ा है। एक-एक मन्दिर की हद पर (बगली दीवालों के सामने) बाहरी तरफ अक्सी थम्भ आये हैं, जो चार पहल के आये हैं ये थम्भ सौ-सौ हाथ की दूरी पर ४४-४४ हाथ के ऊंचे आये हैं। इन थम्भों के ऊपर ४४ हाथ की ऊंची अक्सी मेहेराब आयी है। मेहराब के मध्य भाग में नोंक पर लाल माणिक का एक फूल आया है और एक-एक फूल दाएं-बाएं आये हैं, जिनके ऊपर चार हाथ की जगह में पेसानी, इसके ऊपर चार हाथ की जगह में कांगरी और इसके ऊपर दो हाथ की जगह में टुण्डवा और इसके ऊपर एक हाथ की जगह में तख्ता आया है। इसके ऊपर एक हाथ का मोटा, ३३ हाथ का चौड़ा छज्जा है जो चारों तरफ घूमा है, इस प्रकार सौ हाथ की ऊंचाई आयी है और छज्जे के ऊपर एक हाथ की ऊंची दूसरी भोम की जमीन आयी है।

बड़ी अक्सी मेहराब में जो दो अक्सी थम्भ आए हैं, उनके बीच में दो थम्भ २२-२२ हाथ के ऊंचे आये हैं और इनके ऊपर २२-२२ हाथ की ऊंची तीन मेहराबें आयी हैं। इन मेहेराबों की नोंक पर लाल माणिक का फूल आया है और इसके दाएं-बाएं भी एक-एक फूल आये हैं। चौड़ाई में ये थम्भ ३३-३३ हाथ के अन्तर पर आये हैं, फिर इन एक-एक थम्भ में दो-दो थम्भ ११-११ हाथ की चौड़ाई में ११-११ हाथ के ऊंचे आये हैं। इन थम्भों पर ११-११ हाथ की ऊंची अक्सी मेहराबें आयी हैं। इनके मध्य भाग की अक्सी मेहेराब में अक्सी थम्भों के बीच ११-११ हाथ के लम्बे-चौड़े दो दरवाजे आए हैं। इन दो दरवाजों पर ११ हाथ की ऊंची दो अक्सी मेहराबें आयी हैं और दाएं-बाएं चारों मेहराबों में अक्सी थम्भों के बीच में सुन्दर नूर की जालियां हैं। इन जालियों के ऊपर ११-११ हाथ की ऊंची अक्सी मेहेराबें आयी हैं।

मध्य की ३३ हाथ की मेहराब में जो ११-११ हाथ की तीन मेहराबें आयी हैं, उनके मध्य की मेहराब में दीवाल आयी है, जिसके आगे झरोखा बना है। एक मन्दिर की जगह में ११-११ हाथ की नौ मेहराबें आयी हैं, जिसमें से ६ मेहेराबों में जालीदार दरवाजे हैं तथा दो दरवाजे हैं, जो मंदिरों में जाने के लिए हैं। मध्य की मेहराब में दीवाल है, जिसके आगे झरोखा आया है। एक मंदिर की जगह में तीन मेहराबें ३३-३३ हाथ की आयी हैं और एक मेहराब ४४ हाथ की ऊंची आयी है। इस प्रकार कुल १३ मेहराबें एक मन्दिर की बाहरी दीवाल पर आयी हैं। इसी प्रकार सब मंदिरों की बाहरी दीवाल की शोभा आयी है।

Nijanand App

६. गुर्जों की बाहरी दीवाल का दृश्य

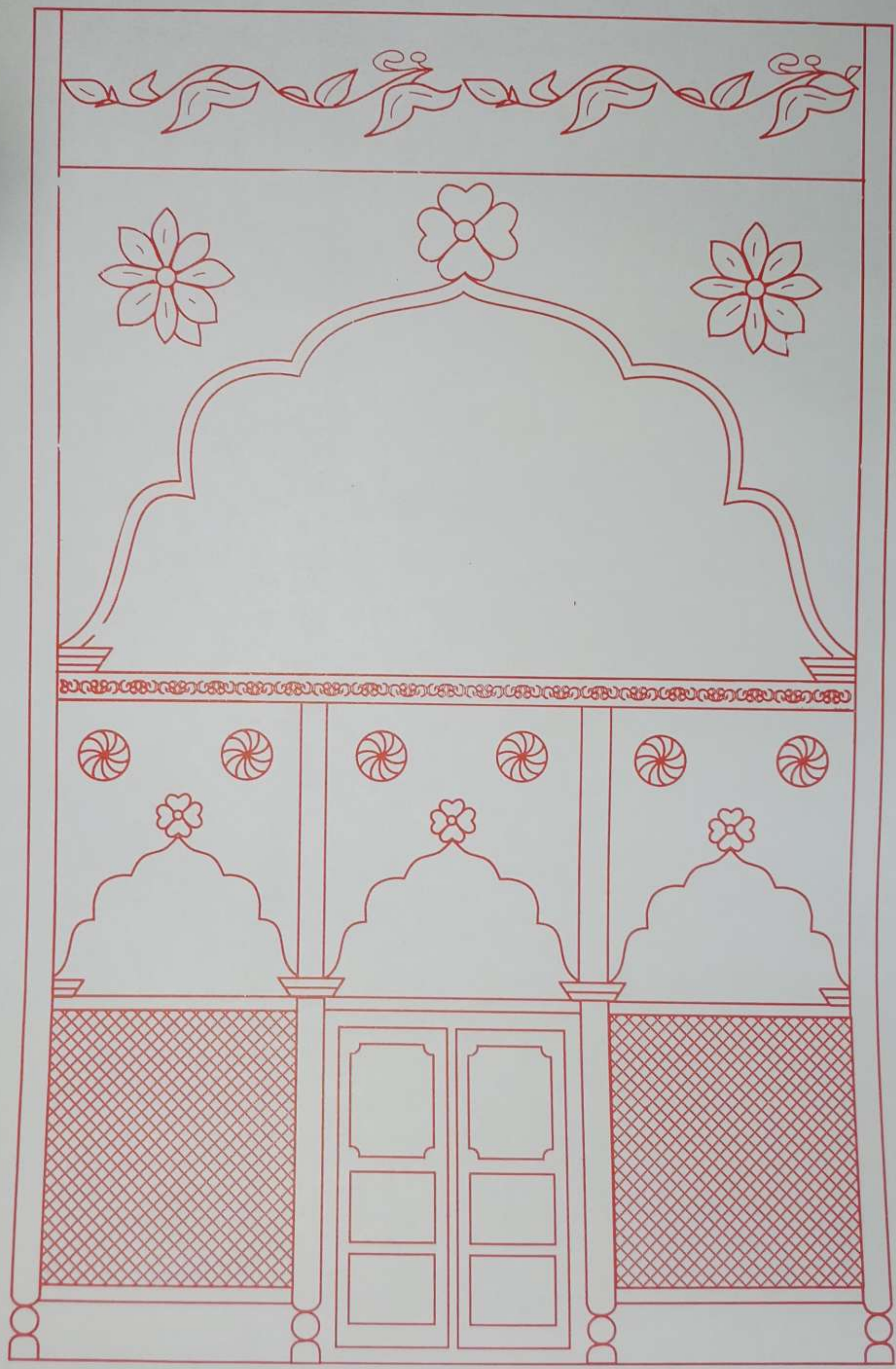

Nijanand App

६ - गुर्जों की बाहरी दीवाल का दृश्य

रंगभवन की दीवाल के साथ लगकर बाहरी रौंस पर २०१ हांसों में २०१ गुर्ज आए हैं। पूर्व तरफ के एक गुर्ज का ब्यान यहां किया जा रहा है, इसी प्रकार सब गुर्जों की शोभा है। दो हांसों के कोने पर ६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा चौरस गुर्ज आया है। दो हांसों के कोने पर ३३-३३ हाथ की दाएं-बाएं जो मेहेराबें आयी हैं, उन मेहराबों में एक मेहेराब एक मन्दिर की और दूसरी मेहेराब दूसरे मन्दिर की लेकर ६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा चौरस गुर्ज आया है। इस गुर्ज में पांच दरवाजे आये हैं। पूर्व तरफ दीवाल में ४४ हाथ के ऊंचे दो अक्सी थम्भ आये हैं। ये ६६ हाथ की दूरी पर आये हैं। इन थम्भों के ऊपर ४४ हाथ की ऊंची एक अक्सी मेहेराब आयी है। इसके ऊपर तीन फूल, पेसानी, टुण्डवा और कांगरी मन्दिरों के बाहरी दिवाल के समान आयी हैं। इन थम्भों के बीच में दो थम्भ २२-२२ हाथ के अक्सी आये हैं। इनके ऊपर २२-२२ हाथ की ऊंची तीन मेहराबें अक्सी आयी हैं। मध्य की मेहराब में २२ हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा आया है और दाएं-बाएं अक्सी थम्भों के बीच में जालीदार दो दरवाजे आये हैं। इसी प्रकार की शोभा उत्तर और दक्षिण की दीवाल में आयी है। इस प्रकार तीनों दिशाओं में तीन दरवाजे हुए। पश्चिम की दीवाल में दो दरवाजे हैं, जो मन्दिरों के दरवाजे हैं। परन्तु गुर्जों के सामने आने से गुर्जों के दरवाजे कहे जाते हैं। गुर्जों की बाहरी तरफ ऊपर ३३-३३ हाथ का छज्जा पूर्व, उत्तर और दक्षिण में तीनों तरफ घूमा है। वन की दूसरी भोम की डालियां गुर्जों के दरवाजे के ऊपर अक्सी मेहेराबों के साथ आकर लगी हैं, इसलिए तीसरी भोम का छज्जा दिखाई नहीं देता। वन की तीसरी चांदनी गुर्जों के छज्जों के साथ आकर लगी हैं। इस छज्जे से एक हाथ ऊंची गुर्जों की छत आयी है। ऊपर के सातों भोम के छज्जे, सहित कठेड़ा वनों की चांदनी से दिखाई देगा। केवल चांदनी चौक की हद के ६ गुर्जों के रौंस से लेकर नवमी भोम के छज्जे तक सब दिखाई देंगे, क्योंकि उन गुर्जों के सामने वन नहीं आया है। यह गुर्ज रंगभवन के साथ-साथ ऊपर तक गये हैं। दस भोम ऊपर जाकर चारों थम्भों पर गुम्मट आये हैं, जिन पर कलश, ध्वजा और पताकायें फहरा रही हैं।

Nijanand App

७. मन्दिरों की भीतरी दीवाल का चित्र

Nijanand App

७ - मंदिरों की भीतरी दीवाल का चित्र

एक मंदिर के दो पाखे के दरवाजे तथा एक भीतरी तरफ का दरवाजा तथा दूसरी हार मंदिरों के सब दरवाजे चौरस और गोल हवेलियों के सब दरवाजे, पंच मोहलों तथा नौ चौकों के दरवाजे इसी प्रकार से आये हैं । ४४ हाथ के ऊंचे दो अक्सी थंभों पर ४४ हाथ की अक्सी मेहराब, जिसकी नोंक पर लाल माणिक का एक फूल आया है । इसके दाएं-बाएं भी एक-एक फूल आया है । इसके ऊपर १२ हाथ की जगह में कांगरी, फूल, बेल-बूटे, पशु-पक्षी सब चित्रकारी बनी है । उस अक्सी मेहराब में दो अक्सी थंभ ३३-३३ हाथ के, जिन पर ११-११ हाथ की तीन मेहेराबें आयी हैं । मध्य की मेहेराब में ३३ हाथ का ऊंचा दरवाजा आया है, जिस पर ११ हाथ की मेहराब आयी है । दाएं-बाएं दीवाल पर थंभों का अक्स आया है, जिसके ऊपर ११-११ हाथ की मेहराबें शोभा ले रही हैं । भीतर तरफ की हवेलियां बाहर की अपेक्षा छोटी होती गयी हैं । इसी प्रकार से दरवाजे भी छोटे होते गए हैं ।

यदि सखियां रंगभवन के अंदर ही अंदर दीवालों, थंभों, दरवाजों पर सब जगह अनेक प्रकार के पशु-पक्षी, जानवर, वृक्ष, फल-फूल आदि सब प्रकार की चित्रकारी बनी है । सखियां उन्हीं पर सवारी सवारी करने का विचार करती हैं, तो चित्रकारी के हाथी, घोड़े, बाघ, शेर आदि जीनों के सहित सुसज्जित होके आते हैं और नए-नए प्रकार की बोली बोलते हैं । सखियां उन्हीं पर सवारी करके अनेक प्रकार के खेल तमाशे करती हैं तथा चित्रकारी के वृक्षों से फल-फूल तोड़कर खाती हैं और सुंदर सुगंधी लेती हैं, परन्तु दीवालों पर ज्यों के त्यों बने रहते हैं । उस परमधाम की लीलाएं विचित्र प्रकार की हैं । ये लीला बेशुमार हैं ।

Nijanand App

८. चांदनी चौक से मूल मिलावे तक की शोभा

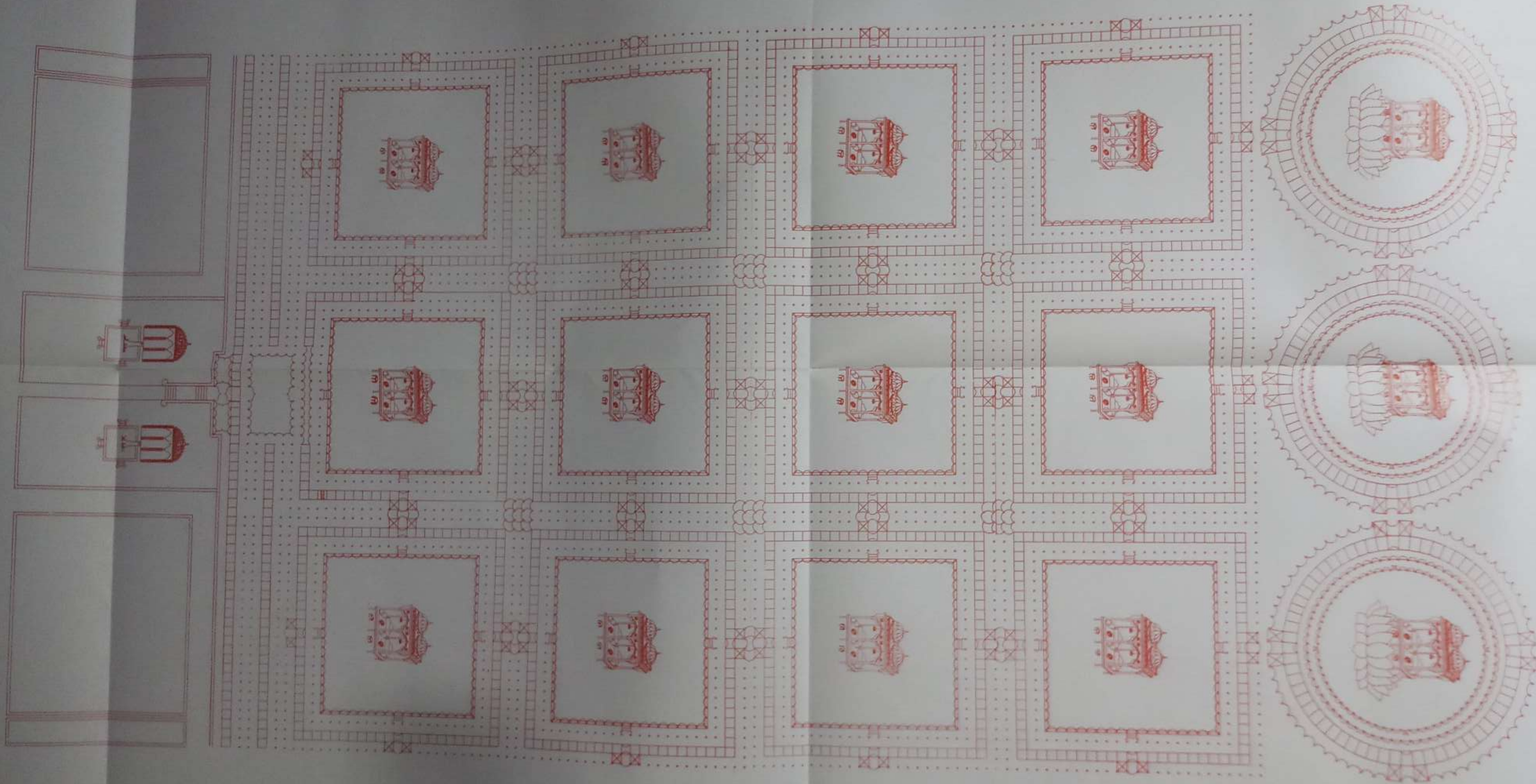

Nijanand App

८ - चांदनी चौक से मूल मिलावे तक की शोभा

चांदनी चौक १६६ मंदिर का लंबा-चौड़ा चौरस मैदान है। उत्तर की तरफ लाल वृक्ष है, जो आम का है और दक्षिण की तरफ हरा वृक्ष है, जो अशोक का है। लाल वृक्ष की उत्तर तरफ ३३ मंदिर की जगह है तथा हरे वृक्ष की दक्षिण तरफ भी ३३ मंदिर की जगह है। जिन चबूतरों पर वृक्ष लगे हैं, वह भी ३३-३३ मंदिर के लंबे-चौड़े हैं। इन दोनों चबूतरों के बीच में ३४ मंदिर की जगह है। चबूतरे की जगह को छोड़कर पश्चिम (धाम) की तरफ ६६-१/२ मंदिर की जगह है, इसी प्रकार पूर्व (यमुना) की तरफ ६६-१/२ मंदिर की जगह है, और ३३-३३ मंदिरों की जगह दोनों चबूतरों में है। ये दोनों चबूतरे चांदनी चौक की भूमि से कमर भर ऊंचे हैं और चारों तरफ ३-३ सीढ़ियां हैं एवं कठेड़ा है। वृक्षों की छाया चबूतरे के बराबर है। इस प्रकार, चांदनी चौक की शोभा आयी है।

रंगमहल का दरवाजा जमीन से भोम भर ऊंचा है। सौ सीढ़ियां और बीस चांदे चढ़कर सामने धाम का मुख्य दरवाजा जमीन से भोम भर ऊंचा है। बीच में दो मंदिर का लंबा-चौड़ा चौक है। पूर्व की तरफ दस मंदिर का लम्बा हांस आया है। इन मंदिरों के पश्चिम तरफ रंगभवन के अंदर एक मंदिर की दूरी पर उत्तर से दक्षिण दस मंदिर की जगह पर १० थंभ आये हैं। इन दस थंभों की ९ मेहराबें आयी हैं। बीच की मेहेराब दो मंदिर की चौड़ी है और एक मंदिर की ऊंची है। यह बड़े दरवाजे के सामने आयी है। दक्षिण और उत्तर की तरफ ४-४ मेहराबें एक-एक मंदिर की चौड़ी और ऊंची है। रसोई की हवेली के पूर्व देहलान के पूर्व तरफ एक मंदिर की दूरी पर इसी देहेलान के थंभों के सामने दस थंभ, २८ थंभ के चौक के आये हैं। इन पर मेहेराबें मंदिर-मंदिर की ऊंचाई पर आयी हैं। इस चौक के दक्षिण तथा उत्तर तरफ चार-चार थंभ आये हैं, जिसमें से दो थंभ दूसरी मंदिर की हार की हद के आये हैं। बाकी एक-एक थंभ दाएं-बाएं थंभों की दूसरी और तीसरी हार के आये हैं। इन २८ थंभों के बीच में दस मंदिर का लंबा उत्तर से दक्षिण और पांच मंदिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम एक चौक बना है। इस चौक पर गिलम बिछी है, मध्य में सिंहासन है।

२८ थंभ के चौक के पश्चिम तरफ एक मंदिर की दूरी पर रसोई की हवेली है। चौक के पश्चिम तरफ नौ मेहराबें आयी हैं। चौक के मध्य की मेहेराब के सामने एक मंदिर की दूरी पर इस हवेली के पूर्व का मध्य भाग आया है। हवेली के बाहर चारों तरफ १०० थंभ आये हैं जिसमें १०० मेहराबें आयी हैं। इन थंभों के भीतर चारों तरफ ८८ मंदिर की जगह है, जिसमें से चार मंदिर चार कोने में आये हैं, इसलिए हर एक दिशा में २१ मंदिर रहे।

हवेली के पूर्व तरफ ११ मंदिर की लम्बी, एक मंदिर की चौड़ी देहेलान आयी है। यहां पर मध्य में दरवाजा नहीं आया है तथा दीवाल की जगह पर दस-दस की दो हारें थंभों की आयी हैं, जिसमें नौ मेहेराबें आयी हैं। एक-एक मेहराब दाएं-बाएं मंदिर पर आयी है। अतः २२ मेहेराबें हुई। इस देहलान के उत्तर-दक्षिण तरफ ५-५ मंदिर आये हैं।

हवेली के दक्षिण तथा उत्तर तरफ मध्य भाग में एक मंदिर का लंबा-चौड़ा दरवाजा आया है। दरवाजे के पूर्व तरफ १० मंदिर कोने के मंदिर तक आये हैं और पश्चिम तरफ

Nijanand App

१० मंदिर की देहेलान कोने के मंदिर तक आयी है। दोनों तरफ भीतर की दीवाल की जगह पर बगली दीवाल के सामने नौ-नौ थंभ आए हैं, जिसके ऊपर ८-८ मेहराबें आयी हैं। इनके पूर्व तरफ के दरवाजे पर १-१ मेहराब आयी है। १-१ मेहराब पश्चिम तरफ के कोने के मंदिर की तरफ आयी है, जिससे दोनों तरफ २० मेहराबें देहलान पर आयी हैं।

हवेली के पश्चिम तरफ मध्य भाग में ८८ हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा आया है। इस दरवाजे के दाएं-बाएं १०-१० मंदिर आये हैं। इस हवेली में कुल ५४ मंदिर आये हैं। ३१ मंदिर की तीन देहलाने आयी हैं। इस हवेली के ईशान कोने के मंदिर के पश्चिम तरफ श्याम रंग का मंदिर आया है। इस मंदिर में मनचाही रसोई तैयार होती है। श्याम रंग वाले मंदिर की पश्चिम तरफ जो मंदिर आया है, उसे सीढ़ियों वाला मंदिर कहा गया है। वैसे तो हर मंदिर व देहेलानों में सीढ़ियां आयी हैं। सीढ़ियों के पश्चिम श्वेत रंग का मंदिर है। हवेली के भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर चारों तरफ ७६ थंभों की एक हार आयी है। रसोई की हवेली के भीतरी थंभ से एक मंदिर की दूरी पर कमर भर ऊंचा चबूतरा १७ मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। एक दिशा में १८ थंभ व १७ मेहराबें हैं। इन मेहराबों के नीचे थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। मध्य की मेहेराब से हर दिशा में कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। चबूतरे पर गिलम बिछी है, जिसके मध्य में कमल के फूल पर श्री राजश्यामाजी के बैठने के लिए रत्नों से जड़ित कंचन रंग का सिंहासन है।

जिस प्रकार रसोई की हवेली का वर्णन किया गया है उसी प्रकार सभी चौरस हवेलियों की शोभा है, लेकिन जैसे रसोई की हवेली में तीन देहेलानें आयी हैं तथा श्याम मंदिर और सीढ़ियों वाला मंदिर आया है, ऐसे और हवेलियों में नहीं आया है। इस चौरस हवेली में ८४ मंदिर और चार दरवाजे तथा बाहर के आठ चबूतरे तथा सौ थंभ हैं। भीतरी तरफ ७६ थंभ और चबूतरे पर ६८ थंभ आदि ज्यों के त्यों हैं। जहां दो हवेलियों के आमने-सामने दो दरवाजे तथा जहां चार हवेलियों के कोने आए हैं वहां पर २४ मेहराबें बनी हैं।

चारों चौरस हवेलियों के बाद पहली गोल हवेली है, इसे ही मूल मिलावा कहते हैं।

Nijanand App

९. मूल मिलावे का दृश्य

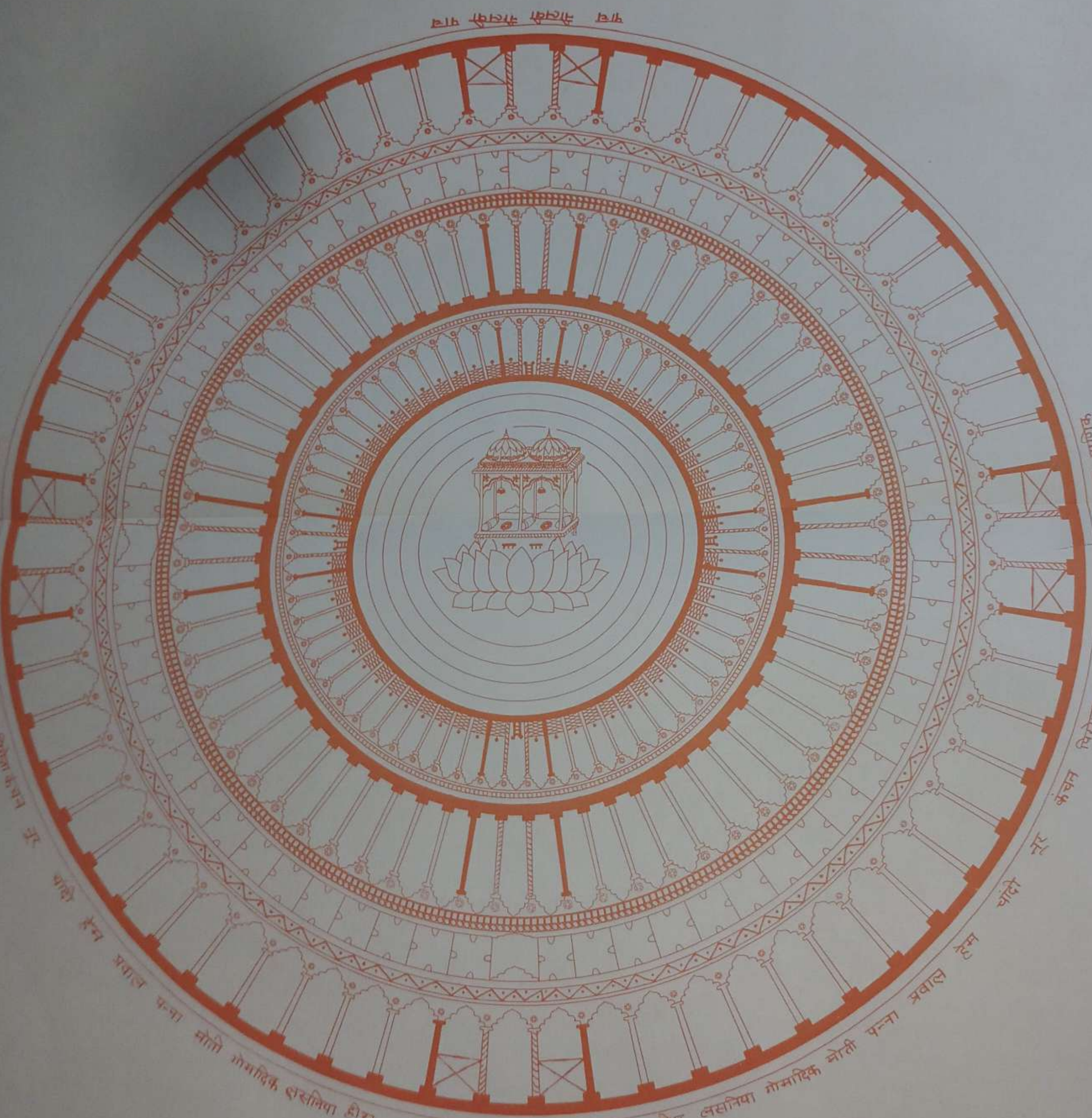

Nijanand App

९ - मूल मिलावे का दृश्य

२८ थंभ के चौक के पश्चिम तरफ पहली रसोई की हवेली के सहित चार चौरस हवेली आयी है जिसके पश्चिम तरफ पांचवी गोल हवेली आयी है जिसे मूल मिलावा कहते हैं। इस हवेली की चौंसठ मंदिरों की गृद आयी है जो २१-१/४ मंदिर की लंबी चौड़ी है। इसके मध्य भाग में चबूतरे के ऊपर श्री राज श्यामा जी तथा सखियों की बैठक होने से इसे मूल मिलावा कहते हैं। इस गोल हवेली की भांति ही अन्य सभी गोल हवेलियां आयी हैं।

इस गोल हवेली के ६४ पहल आये हैं। चारों तरफ बाहिर की ओर ६४ थम्भ आये हैं जिन पर ६४ मेहराबें आयी हैं इन थम्भों के भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर एक मंदिर की हार आयी है।

६४ मंदिरों की जगह चारों तरफ आयी है जिसमे ६० मंदिरों की जगह पर ६० मंदिर आये हैं और ४ मंदिरों की जगह पर ८८-८८ हाथ के चार दरवाजे आये हैं। इनके ऊपर १२-१२ हाथ की छोटी मेहराब शोभायमान हो रही है। ये चारों दिशाओं में आये हैं। इन दरवाजों के दायें-बायें जहां पर ४४ हाथ के थंभ समाप्त होकर अक्शी मेहराबें शुरू होती हैं वहां पर घोड़ों के बने हुए मुख दीवाल पर शोभा दे रहे हैं। ८८ हाथ की लंबी-चौड़ी चौखट के अन्दर दो ताक (पल्ला) आये हैं। ४३-४३ हाथ का चौड़ा और ८६ हाथ का लंबा प्रत्येक पल्ला है। एक-एक हाथ की जगह ऊपर-नीचे चौखट ने घेरी है जिसमें वेनी, सड़ और अदवान से युक्त सुन्दर चौक आये हैं। सांकल और कुण्डा भी अपार शोभा को धारण किये हैं।

इसी प्रकार का दरवाजा भीतरी तरफ आया है। एक एक दरवाजा दायें बायें ३०-३० हाथ का आया है। ऊपर तीन-तीन हाथ की मेहराब आयी है। अब ६० मंदिरों में से एक मंदिर का ब्यान किया जाता है। एक मंदिर १०० हाथ का लंबा-चौड़ा आया है जिसमें देखने के ४-४ और गिनती में ३-३ दरवाजे आये हैं। बाहर की दीवाल में पहले के वर्णन अनुसार दो अक्शी थम्भों पर एक अक्शी मेहराब तथा ऊपर तीन फूल हैं तथा १२ हाथ की जगह में अनेक प्रकार की चित्रकारी आयी है। फिर उन अक्शी थंभों के बीच में दो थंभ आये हैं। मध्य में ३० हाथ का लंबा चौड़ा दरवाजा, ऊपर ३-३ हाथ की मेहराब है तथा दायें बायें घोड़े का मुख बना हुआ है। बाकी तीन मेहराबें तीन दरवाजों के ऊपर पहले के ब्यान अनुसार आयी हैं।

६४ मंदिरों की बाहरी दीवाल पर लाल रंग की दो दोरी आयी है। इसके ऊपर साथ-साथ लगकर कांगरी चली गयी है जिसमें से एक मंदिर की दीवाल का वर्णन किया जाता है। हांस के कोनों के साथ लगकर ऊपर की किनार से दो दोरी लाल रंग की सौ हाथ की अक्शी थंभों के साथ होती हुई नीचे उतरी है। वह जमीन के साथ लगकर दीवाल के उपर ३३ हाथ की लंबी चली गयी है। चौखट के साथ अक्शी थंभ के ऊपर होकर ३३ हाथ की ऊंची छोटी मेहराब से होकर फिर अक्शी थंभ पर होकर ३३ हाथ जाकर फिर हांस के कोने के साथ लगकर फिर दूसरे मंदिर के कोनो के साथ लगकर नीचे की ओर पहले ब्यान अनुसार उतरी है। इस दोरी के साथ-साथ कांगरी की चित्रकारी भी होती चली गयी है।

किनारे दीवालों द्वारने, लाल दोरी दोए दोए।
मंदिर की हद लग, सोभा लेत अति सोए ॥
दोरी लगती कांगरी, सब ठौरों गृदवाए।
चित्रामन तिनके बीच में, जो देखों सो अधिक सोभाए ॥

अब एक मंदिर का ब्यान किया जाता है। इसी प्रकार गोल हवेलियों के और चौरस हवेलियों के तथा दो हार मंदिरों के तथा नव चौको के सब मंदिरो का ब्यान एक समान

Nijanand App

आया है। सेज्या, चौकी, सन्दूक, सिंहासन, हिंडोले, शीशे, प्याले, डिब्बे, तकिये, सीकियां तथा खाने पीने की सामग्री, तथा सोने हीरे के अपार बर्तन, अलमारियां, कपाट, गिलम तथा अनेक प्रकार की जोगबाई विधि सहित, जो जिस जगह चाहिए वहां उसी प्रकार से शोभा दे रही है। सन्दुकों और अलमारियों में अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण तथा श्रृंगार की सब चीजे भरी हुई हैं।

चौपाई : अन्दर कई वस्तां धरी, कई सेज्या, चौकी सन्दूक।
जित सोभा जो लेत है, तित दखिए तिन सलूक ॥
कई सीसे प्याले डब्बे, कई अंदर गृद देखत।
कई तबके छोटी बड़ियां, कई सीकियां लटकत ॥
अंदर की वस्तां क्यों कहूं, और क्यों कहूं चित्रमन।
ज्यों मंदिरों अंदर देखिए, तो दिल होए रोसन ॥

मूल मिलावें के तीनों हारों में थंभ आये हैं। एक-एक हार में ६४-६४ थंभ आये हैं तो कुल थंभ १९२ हुये। मंदिर ६४ आये है। हर एक मंदिर में ३-३ दरवाजे आने से कुल दरवाजे १९२ हुए। मध्य में ६४ पहल का कमर भर ऊँचा चबूतरा आये है जिसके किनारे पर ६४ थंभ आये हैं। छत में सुन्दर चन्द्रवा शोभायमान हो रहा है। चारों तरफ मोतियों की झालर शोभा ले रही है। चबूतरे के ऊपर सेंदुरिया रंग की पशमी गिलम बिछी है जिसकी किनार पर श्याम, श्वेत, हरी, जरद इन चार रंगों की दोरी आयी है। गिलम के मध्य भाग में एक मंदिर की जगह पर हजार पांखुड़ी के कमल के फूल की आकृति शोभा दे रही है। इस फूल के चारों तरफ दोरी, बेली और कांगरी की चित्रकारी आयी हुई है। चारों दिशाओ में सीढ़ियों के सामने चार रास्ते एक-एक मंदिर के चौड़े और सात-सात मंदिर के लम्बे आकर श्याम रंग की कांगरी से मिल गये हैं। चार रास्ते आने से गिलम के चार भाग दिखायी देते हैं।

यह गिलम सवा हाथ की ऊंची पशम की बनी हुई है। जो बैठने से बैठ जाती है तथा उठने से उठ जाती है। इस गिलम की किनार पर श्याम रंग के चार रास्तों को छोड़कर ६० लाल तकिये ६४ थंभों के बीच कठेड़े के साथ लगकर आये हैं कमल के फूल के ऊपर एक कंचन का सिंहासन आया है। उसके तीन पाये पूर्व की तरफ तथा तीन पाये पश्चिम की तरफ आये हैं। तीन पायों के बीच में दो ईस आये हैं और उत्तर-दक्षिण तरफ एक-एक उपले आये हैं। ६ पायों तथा २ उपलों के बीच में जो जगह है, सो पांच रंग की रेशमी नीवार से बुनी हुई है। ६ पायो पर ६ डांडें आये हैं। इन ६ डांडों के ऊपर ६ मेहराबें हैं जिसमें २ मेहराबे पश्चिम तरफ हैं तथा दो पूरब की तरफ हैं। एक-एक उत्तर-दक्षिण की तरफ आयी है। इन ६ मेहराबों के ऊपर छत के बीच में दो गुम्मट आये हैं जो अन्दर से पोले हैं। दो कलश दो गुम्मटों के ऊपर हैं। ६ कलश ६ डांडों के ऊपर सोने के आये हैं। ६ डांडों के चारों तरफ सुन्दर नूर के जवेरो की झालर लटक रही है। इस सिंहासन के मध्य भाग में बिछौना बिछा हुआ है। इसके ऊपर एक गादी दो चाकले कई रंगो के नगों के है तथा उनके ऊपर कई प्रकार की चित्रकारी है। इन दोनों चाकलों के पश्चिम तरफ दो तकिये पशम के हैं। एक-एक तकिये उत्तर तथा दक्षिण तरफ आये हैं और एक तकिया दोनों चाकलों के बीच में आया हुआ है। ये पांच तकिये पशम के हैं और चार तकिये नगों के हैं नगों वाले तकिये उत्तर-दक्षिण-पश्चिम में चार पशमी तकियों के पीछे लगकर आये हैं। सिंहासन के सामने रत्नों से जड़ित दो नूर की चौकी रखी है। गुम्मट के नीचे दो छत्र लाल माणिक के आये हैं। कमल के फूल की तरह छत्री के चारों तरफ पांखुड़ी आयी है।

श्री राज श्यामा जी सब श्रृंगार करके सिंहासन पर सखियों को अक्षर ब्रह्म की माया का खेल दिखाने के वास्ते बैठे हुए हैं।

Nijanand App

१०. चार गोल हवेली का चित्र

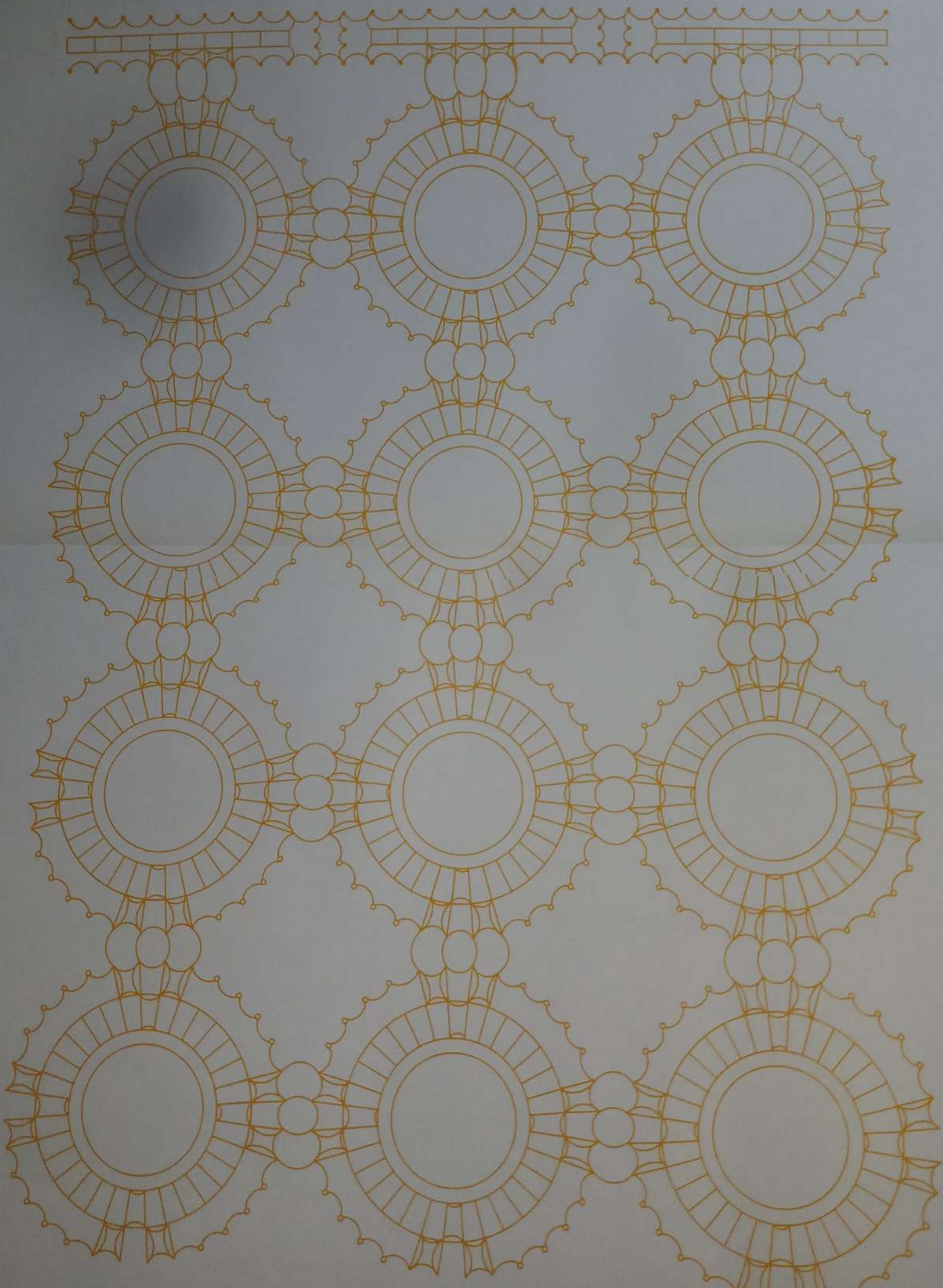

Nijanand App

१० - चार गोल हवेलियों का चित्र

जहां दो हवेलियों के दरवाजे आमने सामने आये हैं वहां चौरस हवेलियों की भांति चौबीस मेहराबें आयी हैं। जहां चार हवेलियों के कोने मिलते हैं वहां पर सुन्दर चौक आये हैं। यहां पर भी चौरस हवेलियों की भांति २४ मेहराबें आयी हैं। यहां पर चौरस चबूतरा नही आया है। कमर भर ऊँचे चबूतरे की चारों दिशा में कमर भर ऊंचाई की ३ सीढ़ियां आयी हैं। एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी तक एक खांचा (भाग) कहलाता है। इसी प्रकार ४ खांचे आये हैं। एक खांचें मे १६ थंभ आये हैं जिसमें १२ थंभ नगो के, चार धातु के आये हैं। दो थंभों के ऊपर जो मेहराबें आयी है वे दो रंग की आयी हैं। परन्तु चारों दिशाओ में जो चार दरवाजे आये हैं उनकी मेहराब एक-एक रंग की आयी है। बाकी दो हारें थंभों की तथा मंदिरों की एक हार की मेहराबें चबूतरो के थंभों जैसी आयी हैं। सभी मंदिर दो-दो रंग के आये हैं।

मंदिरों के भीतर के थंभ की हार से एक मंदिर की दूरी पर भीतरी तरफ एक चबूतरा कमर भर ऊंचा ६४ पहल का आया है। इस चबूतरे के किनारे हांस हांस के कोने पर एक-एक थंभ आने से ६४ थंभ और उनके ऊपर ६४ मेहराबे हुई। चारों दिशाओं में सीढ़ी उतरी है तथा बाकी में कठेड़ा आया है।

चबूतरे के पूर्व तरफ दो थंभ पांच के आये है। इसके दायें बायें दो थंभ नीलवी के आये हैं। पश्चिम की तरफ दो थंभ नीलवी के और इसके दायें बायें दो थंभ पाच के आये हैं। दक्षिण तरफ दो थंभ माणिक के और इसके दायें-बायें दो थंभ पुखराज के हैं। उत्तर तरफ दो थंभ पूखराज के इसके, दायें-बायें दो थंभ माणिक के आये हैं। इस प्रकार चारों दरवाजों के सामने १६ थंभ आये हैं।

एक खांचे में १२ थंभ नगों के तथा ४ धातुओं के आये हैं। इसी प्रकार चारों खांचों में जानना जी। पूर्व दरवाजे के दक्षिण तरफ दो थंभ छोड़कर आगे से १२ थंभ गिनिये। १-हीरा २-लसनिया ३-गोमादिक ४-मोती ५-पन्ना ६-परवाल ७-हेम ८-चांदी ९-नूर १०-कंचन ११-पिरोजा १२-कपूरिया। इसी प्रकार उत्तर तरफ भी दो थंभ छोड़कर १२ थंभ गिनिये। पश्चिम दिशा के उत्तर-दक्षिण तरफ दो-दो थंभ छोड़कर १२ थंभ गिनिये।

चौपाई : हीरा लसनिया, गोमादिक, मोती पाने परवाल।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल॥
पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोय।
गिन छोड़े दो द्वार से, बने हर रंग चार-चार सोय॥

Nijanand App

११. पंच मोहोल की चार हार हवेली का दृश्य

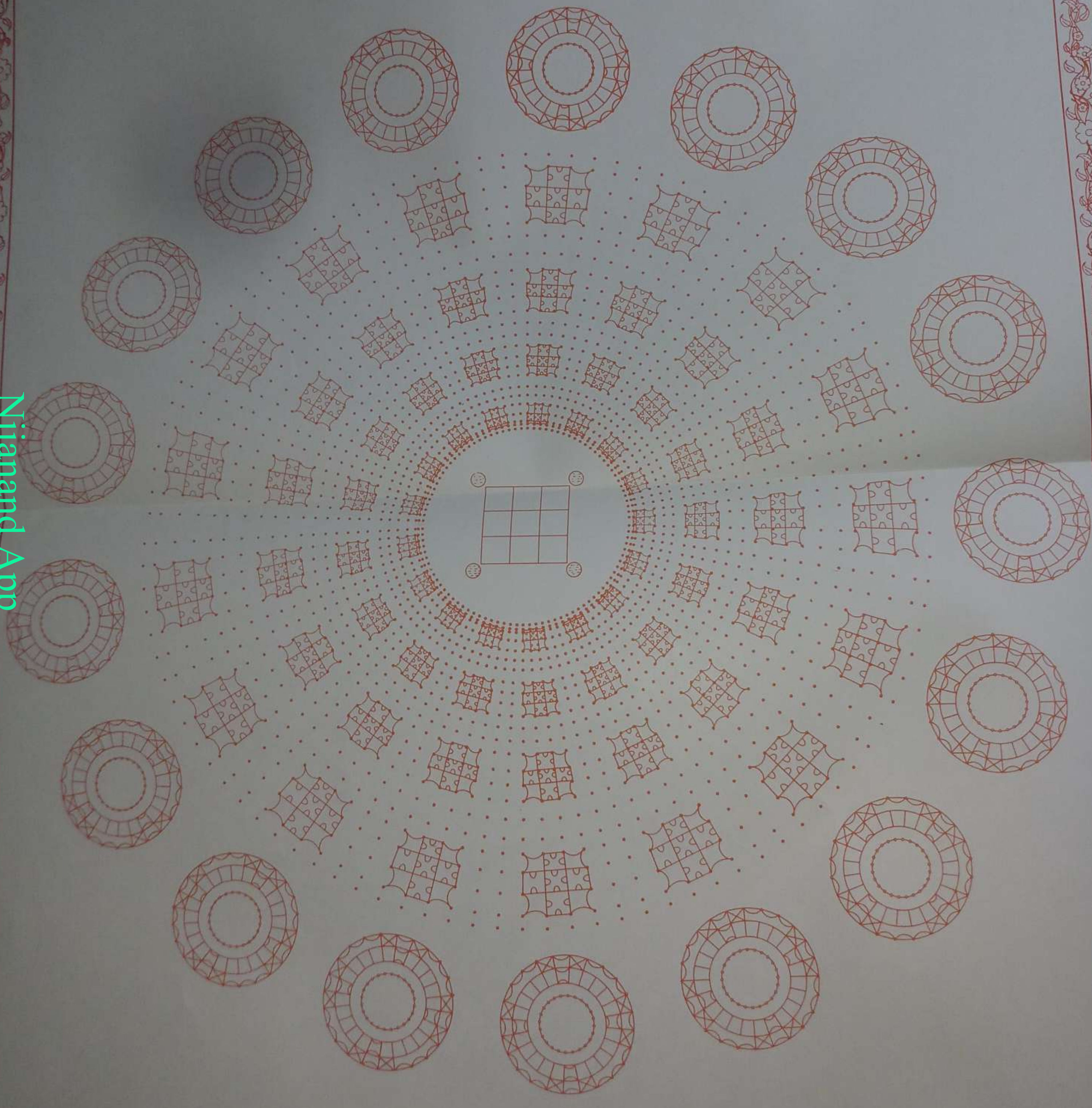

Nijanand App

११ - पंच मोहलों की चार हार हवेली का दृश्य

यह नौवां फिरावा पंच मोहलों का है। यह हवेली चौपट की भांति आयी है। इस हवेली में ५ मंदिर आये हैं। एक हवेली की लंबाई-चौड़ाई ३ मंदिर की आयी है, जिसके सब दरवाजे १६ आये हैं। जिसमें चार दिशाओं के चार मंदिरों के दरवाजे १२ तथा मध्य मंदिर में दरवाजे ४ आये हैं। मध्य मंदिर के दरवाजे से निकलकर दिशाओं के मंदिर में जा सकते हैं। एक पंच मोहोल के चारों तरफ २० थंभ आये हैं। चार थंभ चारों कोनों के आने से कुल २४ थंभ हुए। तब पंच मोहलों के चारों मोहलों के मंदिरों की जगह १२ मंदिर हुई, और साढ़े ११ मंदिर गलियों के आए हैं। कुल मिलाकर साढ़े २३ मंदिर हुए। साढ़े ११ मंदिर गलियों का कारण यह है कि पंच मोहलों की हवेलियों के बाद भीतरी तरफ डेढ़ गली की आवश्यकता नहीं है। यहां से फिरावे खत्म हो जाते हैं। इस फिरावे की बाहरी परिकरमा १३६८ मंदिर की हुई। तीन मंदिर की एक हवेली और ३ मंदिर की एक गली, तब एक हवेली ६ मंदिर की हुई। इस प्रकार से २३१ हवेलियां चारों तरफ आयी हैं। इस प्रकार बाहरी मंदिरों की हार से ३६ हारों तक ६५६ मंदिर की जगह हुई।

Nijanand App

१२. दूसरी भोम के दस मंदिर का हांस

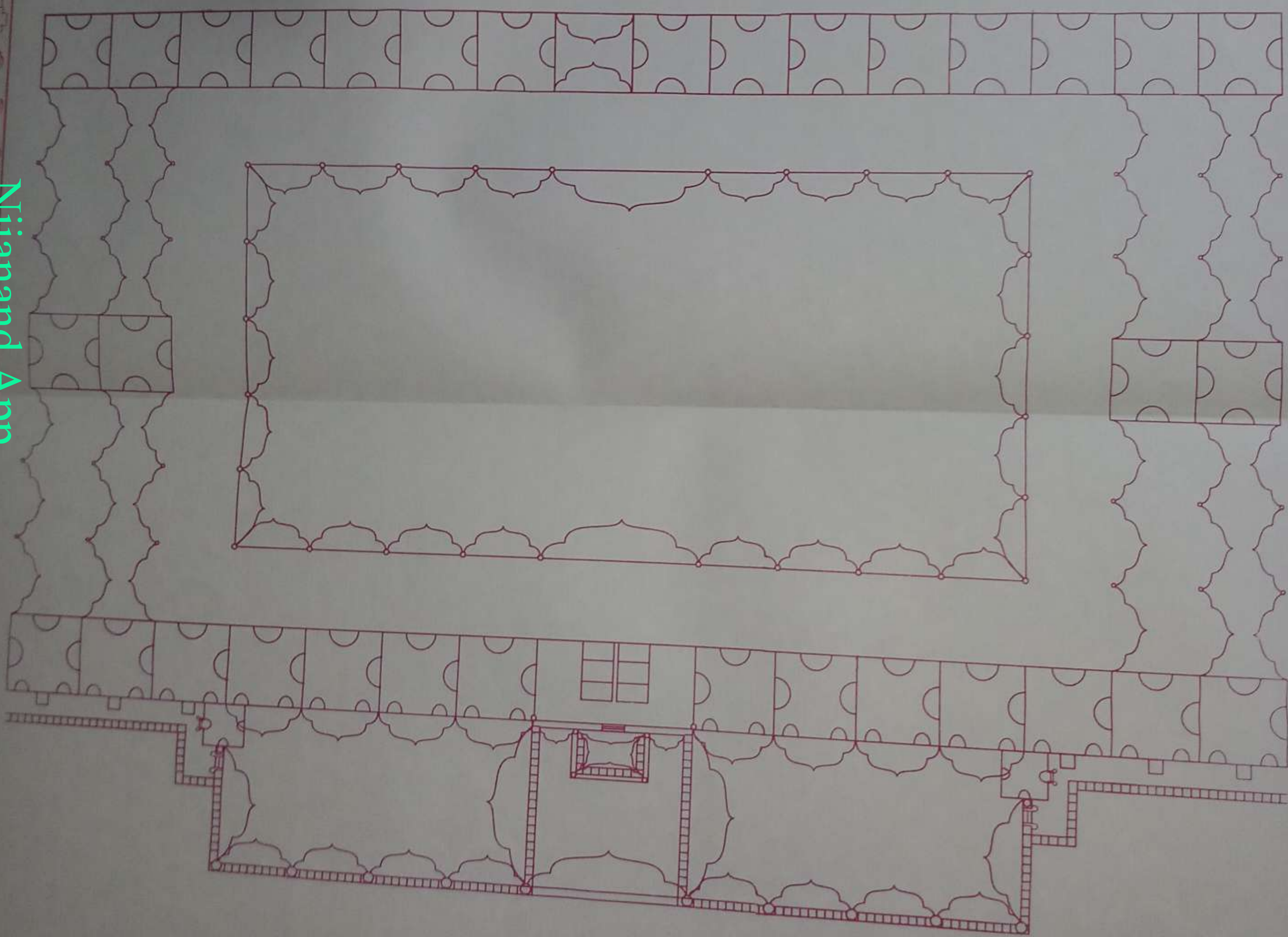

Nijanand App

१२ - दूसरी भोम के दस मंदिर का हांस

दूसरी भोम के मंदिरों की पूर्व की दीवाल के बाहर की तरफ चार मंदिर का लंबा और दो मंदिर का चौड़ा झरोखा आया है। इस प्रकार के दो झरोखे हैं। इन दोनों झरोखों के बीच में छत नहीं आयी है। इस झरोखे के पूर्व तरफ २ थंभ हीरे के, २ माणिक, २ पुखराज, २ पाच और २ नीलवी के आये हैं। ये थंभ ४१-४१ हाथ के ऊंचे हैं। ऊपर ४४ हाथ की मेहराबें है तथा इसके ऊपर १६ हाथ की जगह में अनेकों प्रकार की चित्रकारी आयी है। इन थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। दक्षिण तरफ एक मंदिर की जगह में कठेड़ा आया है और ३० हाथ की जगह में कमर भर की सीढ़ी दूसरी भोम के छज्जे पर उतरी है। इसके आगे ३ हाथ की जगह में कठेड़ा आया है और ६६ हाथ की जगह में चौरस गुर्ज आया है । झरोखे के पश्चिम तरफ जो मंदिर आये हैं, उन पर चार बड़ी अक्सी मेहराबें थंभों सहित ८८ हाथ की ऊंची गयी हैं। जिनके मध्य में तीन-तीन मेहराबें थंभों सहित ४४-४४ हाथ की आयी हैं। फिर एक-एक में तीन-तीन मेहराबें थंभों सहित २२-२२ हाथ की ऊंची हैं, अर्थात् एक बड़ी मेहराब में नौ मेहराबें आयी हैं। मध्य भाग में अक्सी मेहराबे और ६ जालीदार दरवाजे और दो खुले दरवाजे आये हैं। यह झरोखा मंदिरों की जमीन से कमर भर ऊंचा आया है। इसी प्रकार, उत्तर तरफ के झरोखे की भी शोभा है।

मुख्य दरवाजा दो मंदिर का ऊंचा तथा दो मंदिर का चौड़ा है। मुख्य दरवाजे पर बड़ी अक्सी मेहराब १७६ हाथ की ऊंची गई है। ८८ हाथ के अक्सी थंभ और ८८ हाथ की अक्सी मेहराब आयी है। बड़ी अक्सी मेहराब के दो अक्सी थंभों में आठ अक्सी थंभ दूसरी भोम की जमीन पर आये हैं। ये सभी थंभ ११-११ हाथ की बजाय २२-२२ हाथ के चौड़े आये हैं क्योंकि यह चौक सब मंदिरों से दुगुना आया है। इन थंभों के ऊपर नौ मेहराबें आयी हैं, जो २२ हाथ की ऊंची और २२ हाथ की चौड़ी आयी हैं। हर एक पर लाल माणिक के तीन-तीन फूल आये हैं। मध्य की मेहराब में दीवाल के आगे, बाहर पूर्व तरफ झरोखा निकला हुआ है। यह झरोखा २२ हाथ का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ और ११ हाथ चौड़ा पूर्व से पश्चिम की तरफ दीवाल से बाहर बड़े दरवाजे की छोटी मेहराब से, जो १२ हाथ की ऊंचाई तक गई है, तीन हाथ ऊपर शोभा ले रहा है, जिस पर पूर्व, उत्तर और दक्षिण तरफ कठेड़ा आया है। इस झरोखे के पूर्व में दो थंभ खुले उत्तर से दक्षिण तरफ २२ हाथ की दूरी पर आये हैं और दो थंभ अक्सी दीवाल पर आये हैं। ये सब थंभ ११-११ हाथ की ऊंचाई के हैं। उत्तर-दक्षिण की खुली मेहराबें पूर्व से पश्चिम थंभों पर आयी हैं। एक खुली मेहराब, जो पूर्व के दो थंभ खुले हैं, २२ हाथ की चौड़ी और २२ हाथ की ऊंची थंभों सहित आयी है। इस प्रकार, एक अक्सी मेहराब अक्सी थंभों पर आयी है। पश्चिम तरफ दीवाल में एक दरवाजा ११ हाथ का लंबा-चौड़ा आया है, जिसके दाएं-बाएं साढ़े पांच-पांच हाथ की जगह दीवाल पर बाकी मेहराब की रह गई है। इस झरोखे के दाएं-बाएं की अक्सी मेहराबों में दो जालीदार दरवाजे २२ हाथ के आये हैं। बाकी तीन-तीन मेहराबें दाएं-बाएं तरफ रही हैं। उनके मध्य वाली मेहराब में २२ हाथ का दरवाजा आया है, जिसके बाहर पूर्व की तरफ कठेड़ा आया है। दरवाजे के दाएं-बाएं दो जालीदार दरवाजे २२-२२ हाथ के आये हैं। इन सभी के ऊपर अक्सी मेहराबें शोभा ले रही हैं।

Nijanand App

१३. दूसरी भोम-भुल भुलवनी

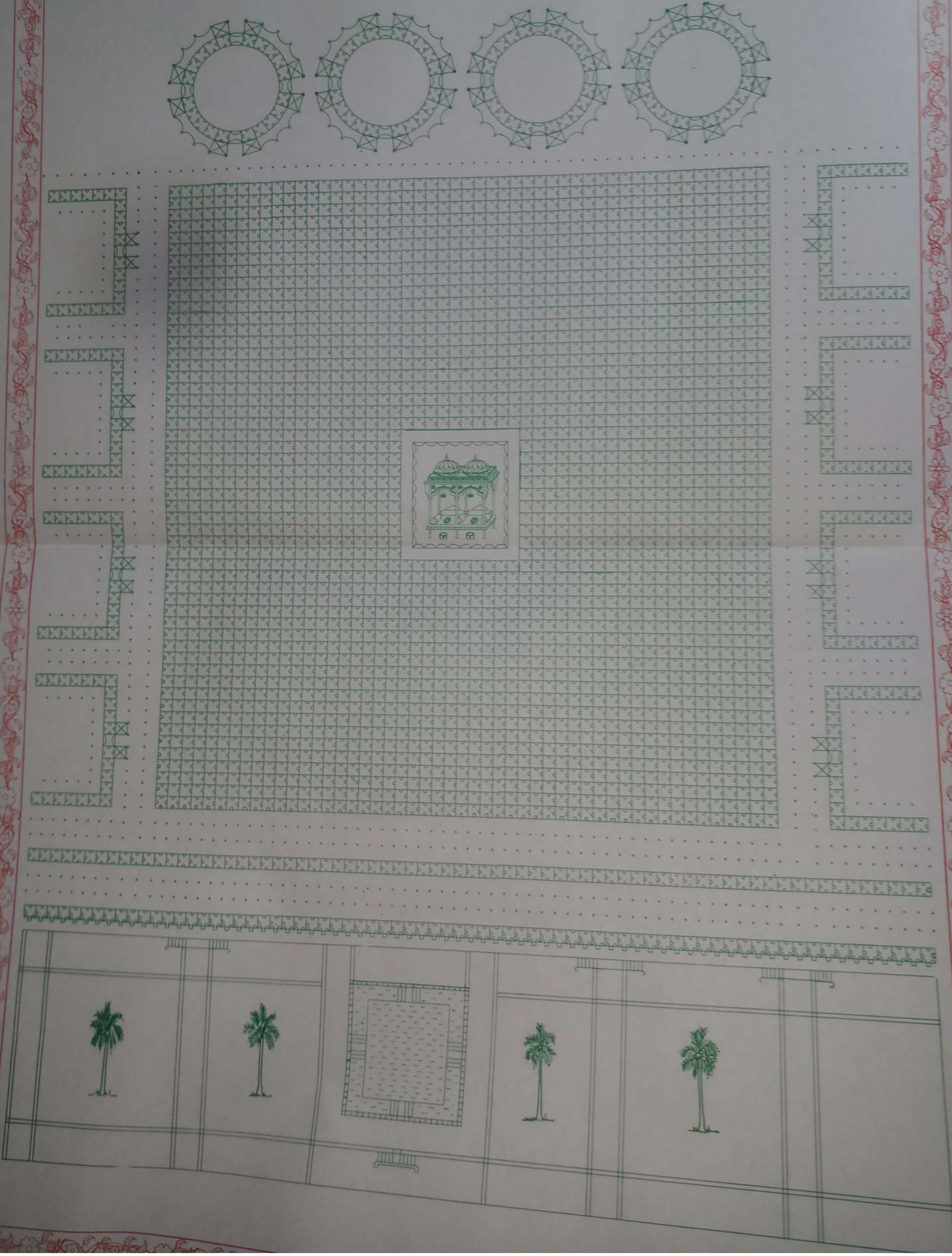

Nijanand App

१३ - दूसरी भोम - भूल - भूलवनी

रंग भवन के उत्तर तरफ ४० हांस लाल चबूतरे के पश्चिम से पूर्व तरफ जहां पर आए हैं। वहां रंग भवन के ईशान कोने की तरफ ११० मंदिर बाहरी मंदिरों की हार के सामने भीतरी तरफ चार चौरस हवेली है जो पहली हार में आयी है। चौड़ाई की तरफ भी चार हवेली हैं। इन १६ हवेलियों की हद में भूलवनी के मंदिर आए हैं। एक हवेली २३ मंदिर की लंबी-चौड़ी आयी है। चारों तरफ हवेलियों की जगह ९२ मंदिरों की हुई। इन चार हवेलियों के बीच में तीन त्रिपोलिया आए हैं अर्थात् ९ गलियां जिनमें ९ मंदिर की जगह है। तब सब जगह १०१ मंदिर की हुई परन्तु १०१ मंदिरों की जगह में ११० मंदिरों की ११० हारें आई हैं। जिसमें लंबाई व चौड़ाई के १२१०० मंदिर हुए। यह सब मंदिर सफेद दर्पण के हैं।

सब ठिकानों के मंदिर १०० हाथ के आए हैं परन्तु इस भूलवनी के मंदिर ९१-९१ हाथ के लंबे-चौड़े आए हैं। इस वास्ते १०१ मंदिर की जगह में ९ मंदिर की जगह बढ़ गई। क्योंकि यह मंदिर छोटे आए हैं इसलिए १०१ मंदिर की जगह में ११० मंदिरों की ११० हारें आई हैं।

भूलवनी के मंदिरों के मध्य भाग में १० मंदिर का लंबा-चौड़ा चौक आया है। इस चौक का क्षेत्रफल १०० मंदिर का आया है। इस चौक के चारों तरफ भूलवनी के मंदिरों की बाहरी किनार ५०-५० मंदिर की दूरी पर आयी है। इस चौक में से एक मंदिर की चौड़ी और नौ मंदिर की लंबी एक रौंस चारों तरफ मंदिरों की दीवाल के साथ आयी है। चारों तरफ ३६ मंदिर की जगह परिकरमा के वास्ते आयी है। इस रौंस की बाहरी तरफ घेर करके चारों ओर ४० दरवाजे आए हैं।

३६ मंदिर की रौंस के भीतरी तरफ ८ मंदिर का लंबा-चौड़ा, ६४ मंदिर का चबूतरा रौंस से एक सीढ़ी ऊंचा आया है। इस चबूतरे के चारों तरफ ३२ थंभ आए हैं। इन ३२ थंभों पर ३२ मेहराबें आयी हैं। एक दिशा में ९ थंभों पर ८ मेहराबें आयी हैं। इस चबूतरे पर कठेड़ा नहीं आया है। इन ३२ थंभों के चौक के बीच में छत से लगकर चन्द्रवा शोभा ले रहा है।

भूलवनी का एक मंदिर ९१ हाथ का लंबा-चौड़ा आया है। एक बड़ी अक्सी मेहराब के बीच में दो अक्सी थंभों पर तीन अक्सी मेहेराबें आयी हैं। मध्य के दो अक्सी थंभों के बीच में ३० हाथ का लंबा-चौड़ा दरवाजा आया है। जिसके ऊपर छोटी तीन हाथ की मेहराब आयी है। इसके दाएं-बाएं अक्सी थंभों में दीवालों पर अक्सी मेहराबें आयी हैं। बाकी वर्णन भीतर के दरवाजे के समान है।

हर एक मंदिर में देखने में ४-४ और गिनती में २-२ दरवाजे आए हैं। चारों दरवाजे दूसरे मंदिरों में भी गिने जाते हैं, तब १२००० मंदिरों के २४००० दरवाजे हुए परन्तु बाहरी किनार पर ११० मंदिर आए हैं। उनके बाहरी दरवाजे पूरे हैं। आधे दरवाजे का हिसाब आ चुका है। आधे दरवाजे का बाकी है। इस कारण से एक दिशा में ५५ दरवाजे अधिक हुए। तब चारों तरफ के दरवाजे २२० ज्यादा हुए और बीच में ३६ मंदिर की रौंस परिकरमा के वास्ते आयी है। उस रौंस के चारों तरफ घेरकर ४० मंदिर आए हैं। उनके दरवाजे भी पूरे हैं। इस प्रकार चारों तरफ के २० दरवाजे ज्यादा हुए। इस हिसाब से सब दरवाजे २४२४० हुए। इस भूलवनी के चारों तरफ मंदिर-मंदिर की दूरी पर २-२ थंभों की हारें आयी हैं। जिस तरह एक-एक हवेली के चारों तरफ आई हैं परन्तु भूलवनी के मंदिरों के आगे चबूतरे नहीं आए हैं।

Nijanand App

१४. खड़ोकली

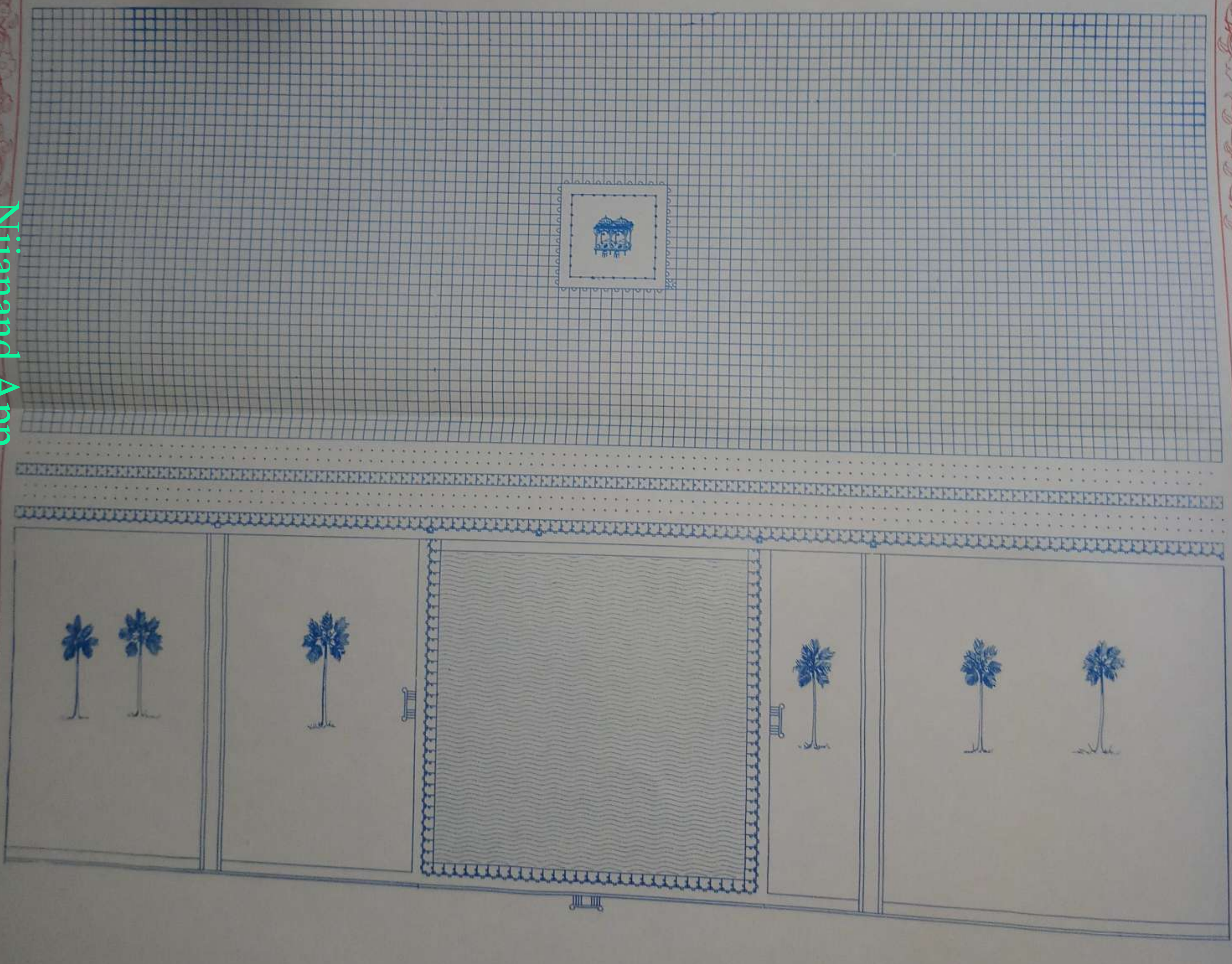

Nijanand App

१४ - खड़ोकली

खड़ोकली ताड़वन की हद में आयी है जो लाल चबूतरे से पूर्व तरफ ४० मंदिर दूरी पर रंगभवन के बाहर एक मंदिर की रौंस के साथ लगकर आयी है। खड़ोकली ३० मंदिर की लंबी-चौड़ी है। ४० मंदिर खड़ोकली के पूर्व तरफ हैं। इन्हीं ११० मंदिरों के भीतरी दक्षिण तरफ भूलवनी के मंदिर आए हैं।

लाल चबूतरे के पूर्व तरफ ३९ मंदिर की दूरी पर रंगभवन से लगता हुआ २ मंदिर का चौड़ा पश्चिम से पूर्व तरफ और दक्षिण से उत्तर तरफ रौंस के साथ लगता हुआ ३१ मंदिर का लंबा ताड़वन की जमीन से एक भोम ऊंचा चबूतरा आया है। फिर चबूतरा घूमकर पूर्व तरफ ३१ मंदिर जाकर फिर दक्षिण तरफ घूमकर फिर सीधा ३० मंदिर जाकर रंगभवन की रौंस के साथ मिल गया है। पश्चिम तरफ जो २ मंदिर का चौड़ा चबूतरा आया है। इस चबूतरे पर वन की तरफ एक मंदिर की चौड़ी रौंस है, जो ३१ मंदिर लंबी है। खड़ोकली के नैरित्य कोने से लेकर उत्तर तरफ १६ वृक्ष छोड़कर चबूतरे के साथ १ मंदिर का लंबा (उत्तर से दक्षिण), १/२ मंदिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम चांदे का चौक आया है। इस चांदे के ठीक मध्य में १७वां वृक्ष आया है। वृक्ष के दाएं-बाएं (उत्तर-दक्षिण) चांदे की १/२-१/२ मंदिर की जगह बचेगी। इस चौक के दोनों तरफ उत्तर-दक्षिण सीढ़ी उतरी है। इस रौंस के बाहरी तरफ चांदे की जगह छोड़कर किनारे पर कठेड़ा आया है। इस रौंस के भीतरी तरफ चबूतरे के ऊपर एक मंदिर की जगह में ३० मंदिर उत्तर-दक्षिण की तरफ आए हैं।

उत्तर तरफ २ मंदिर का चौड़ा चबूतरा है। इस के ऊपर बाहर वन की तरफ एक मंदिर की चौड़ी और पश्चिम से पूर्व तरफ ३२ मंदिर की लंबी रौंस आयी है। रौंस के बाहरी तरफ चबूतरे के किनारे पर ३३ वृक्ष ताड़ के आए हैं, जिसमें १६-१६ वृक्ष दाएं-बाएं तरफ हैं। मध्य में एक मंदिर की जगह (१७वां पेड़ जहां है) के साथ दूसरे बगीचे की किनार पर चबूतरा एक मंदिर का लंबा पश्चिम से पूर्व तरफ और १/२ मंदिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर तरफ भोम भर का ऊंचा खड़ोकली के चबूतरे के बराबर आया है। इस चबूतरे के पूर्व-पश्चिम तरफ भोम भर की सीढ़ियां बगीचे की जमीन पर उतरी हैं। सीढ़ियों के उत्तर तरफ कठेड़ा आया है और दक्षिण तरफ खड़ोकली के चबूतरे की दीवाल आयी है और चांदे के चौक के उत्तर तरफ १ मंदिर का कठेड़ा शोभा ले रहा है और रौंस के बाहर की तरफ चांदे की जगह छोड़कर १५-१/२-१५-१/२ मंदिर का लंबा कठेड़ा आया है। इस चांदे के ठीक बीच में १७वां वृक्ष आया है। इस रौंस के भीतरी तरफ रौंस के साथ लगकर चबूतरे के ऊपर लंबाई में पश्चिम से पूर्व तरफ २८ मंदिर आए हैं।

खड़ोकली के पूर्व तरफ जो २ मंदिर का चबूतरा है, इसके ऊपर बाहर वन तरफ १ मंदिर की चौड़ी और ३१ मंदिर की लंबी उत्तर-दक्षिण एक रौंस आयी है। इसके बाहरी तरफ किनारे पर बगीचे की जमीन में एक चांदा पश्चिम तरफ के चांदे के समान व लंबा-चौड़ा बराबर आया है। चांदे की जगह छोड़कर ३० मंदिर लंबा कठेड़ा उत्तर से दक्षिण आया है। इस रौंस के भीतरी तरफ चबूतरे के अंदर लंबाई में ३० मंदिर उत्तर से दक्षिण आए हैं।

खड़ोकली के अग्नि कोने तथा नैरित्य कोने के जो दो मंदिर आए हैं। इनके बीच में २८ मंदिर की लंबी और १ मंदिर की चौड़ी दक्षिण से उत्तर की जगह में एक दीवाल आयी है, जो रंगभवन की दीवाल की रौंस के साथ लगकर आयी है।

खड़ोकली के पश्चिम-उत्तर और पूर्व तरफ में कुल ८८ मंदिर आये हैं इनकी ऊंचाई एक भोम की आयी है। इन मंदिरों की छत से ३३ हाथ का चौड़ा छज्जा निकलकर रौंस पर आया है। इनके मंदिरों के भीतरी तरफ दरवाजे नहीं आये हैं और दक्षिण तरफ की दीवाल में भी दरवाजे नहीं आये हैं। इन चारों तरफ की भीतरी दीवालों के भीतरी तरफ २८ मंदिर की लंबी-चौड़ी जगह में तीन भोम का गहरा जल भरा है। खड़ोकली के जल का दर्शपर्श दूसरी भोम से होता है। इन ८८ मंदिरों में से एक का वर्णन किया जा रहा है, इसी प्रकार से सब की शोभा है। एक बड़ी अक्सी मेहराब में तीन मेहराबें, फिर एक-एक में तीन-तीन मेहराबें आने से ९ मेहराबें हुईं। जिसमें ६ जालीदार दरवाजे, दो खुले दरवाजे तथा मध्य में अक्सी आया है। रौंस से कमर भर का ऊंचा झरोखा मध्य के अक्स में आया हैं। पश्चिम तरफ पाखे की दीवाल में एक-एक मेहराब, मध्य में दरवाजा दाएं-बाएं अक्स आया है जैसे रंगभवन के मंदिरों में आए हैं।

Nijanand App

इन ८८ मंदिरों में ९० झरोखे आए हैं, क्योंकि वायव्य और ईशान कोने के दोनों मंदिरों में २-२ झरोखे आए हैं। इनकी बनक रंगभवन के झरोखों जैसी आयी है। हर एक मंदिर में देखने के ४-४ तथा गिनती में ३-३ दरवाजे आए हैं, जिससे कुल २६४ दरवाजे हुए। अग्नि और नैरित्य कोने के दक्षिण तरफ की दीवाल में से निकल कर रंगभवन की रौंस पर जा सकते हैं।

लाल चबूतरे के पूर्व तरफ जो ४०वां-४१वां मंदिर आया है। इन दोनों मंदिरों के पाखे की जो दीवाल है, उसके उत्तर तरफ बाहर रौंस पर ६६ हाथ का लंबा-चौड़ा भोम भर का ऊंचा चौरस गुर्ज आया है। इस गुर्ज के आगे पूर्व तरफ जो ३०वां-३१वां मंदिर आया है। इन दोनों मंदिरों के बीच में पांखे की दीवाल है। उसके उत्तर तरफ रौंस के ऊपर ६६ हाथ का लंबा-चौड़ा भोम भर ऊंचा दूसरा गुर्ज आया है। इन दोनों गुर्जों के छज्जे नहीं आये हैं। बाकी बनक रंगभवन के गुर्जों जैसी आयी है। इन दोनों गुर्जों के बीच में ३० मंदिर आये हैं, जो दक्षिण में रंगभवन के हैं और ३० मंदिर की रौंस आयी है रौंस के उत्तर तरफ खड़ोकली के दक्षिण तरफ की दीवाल आयी है।

श्री रंगभवन की ३० मंदिरों की पहली भोम की छत से एक सीढ़ी नीचा १/२ मंदिर चौड़ा छज्जा निकलकर उत्तर तरफ गया है और उत्तर तरफ के ३० मंदिर की लंबी खड़ोकली की दीवाल में से १/२ मंदिर का चौड़ा और ३० मंदिर का लम्बा छज्जा निकलकर दक्षिण तरफ गया है। दोनों छज्जे मिल गये हैं। इस छत को पुल करके कहा है। इस पुल के पूर्व व पश्चिम तरफ ३३-३३ हाथ का छज्जा निकलकर दोनों गुर्जों से मिलकर एक रूप हो गया है। ये दोनों गुर्ज पुल के लिए हैं। यह पुल ३० मंदिर ६६ हाथ का लंबा आया है और एक मंदिर का चौड़ा उत्तर-दक्षिण आया है।

पुल के उत्तर तरफ २८ मंदिर का लंबा-चौड़ा एक ताल आया है, जिसकी ११२ मंदिर की गृद है। यह चेहेबच्चा तीन भोम गहरा आया है। जिसकी एक भोम जमीन के नीचे की और दूसरी भोम एक भोम ऊंचे चबूतरे की और तीसरी भोम में खड़ोकली का मंदिर आया है। इसका जल मिश्री से मीठा, सुगंधित, शीतल तथा सुख देने वाला है। १/२ मंदिर रंग भवन के छज्जे और १/२ मंदिर खड़ोकली की दीवाल के छज्जे की जगह पर ऊपर रौंस आयी है।

खड़ोकली के दक्षिण तरफ ३० मंदिर और ६६ हाथ की लंबी और २ मंदिर की चौड़ी रौंस आयी है, जिसकी एक मंदिर की जगह में ३० मंदिर की लंबी दीवाल छज्जे पर आयी है और एक मंदिर की जगह में ३० मंदिर ६६ हाथ की चौड़ाई, जिसमें १/२ मंदिर रंगभवन का छज्जा और १/२ मंदिर खड़ोकली की दीवाल के छज्जे की जगह के ऊपर रौंस आयी है। ये दोनों रौंसें मिलाने से ३० मंदिर ६६ हाथ लंबी होती है। इन दोनों की छत पर चेहेबच्चे के रौंस की जगह हुई। इस खड़ोकली के पश्चिम, उत्तर और पूर्व तरफ १३३ हाथ की चौड़ी रौंस चारों तरफ आयी है। यह रौंस मंदिरों तथा गुर्जों की छत पर बनी है।

खड़ोकली के पूर्व तरफ की रौंस के पूर्व तरफ बाहरी किनारे पर ३१ मंदिर का लंबा कठेड़ा आया है। यह कठेड़ा ईशान कोने से चलकर अग्नि कोना अर्थात् रंगभवन के मंदिरों से ३३ हाथ दूर रह गया है। फिर यह कठेड़ा श्री रंगभवन के मंदिरों के ३३ हाथ के चौड़े छज्जे के साथ लगकर पूर्व तरफ चला गया है। इसी प्रकार से खड़ोकली के उत्तर तरफ वायव्य कोने से नैरित्य कोने तक ३१ मंदिर का लंबा जाकर श्री रंगभवन के मंदिर के छज्जे के साथ लगकर चला गया है। रौंस के उत्तर तरफ बाहरी किनारे पर ३० मंदिर और ६६ हाथ का लंबा कठेड़ा आया है।

Nijanand App

१५. तीसरी भोम के दस मंदिरों की हांस

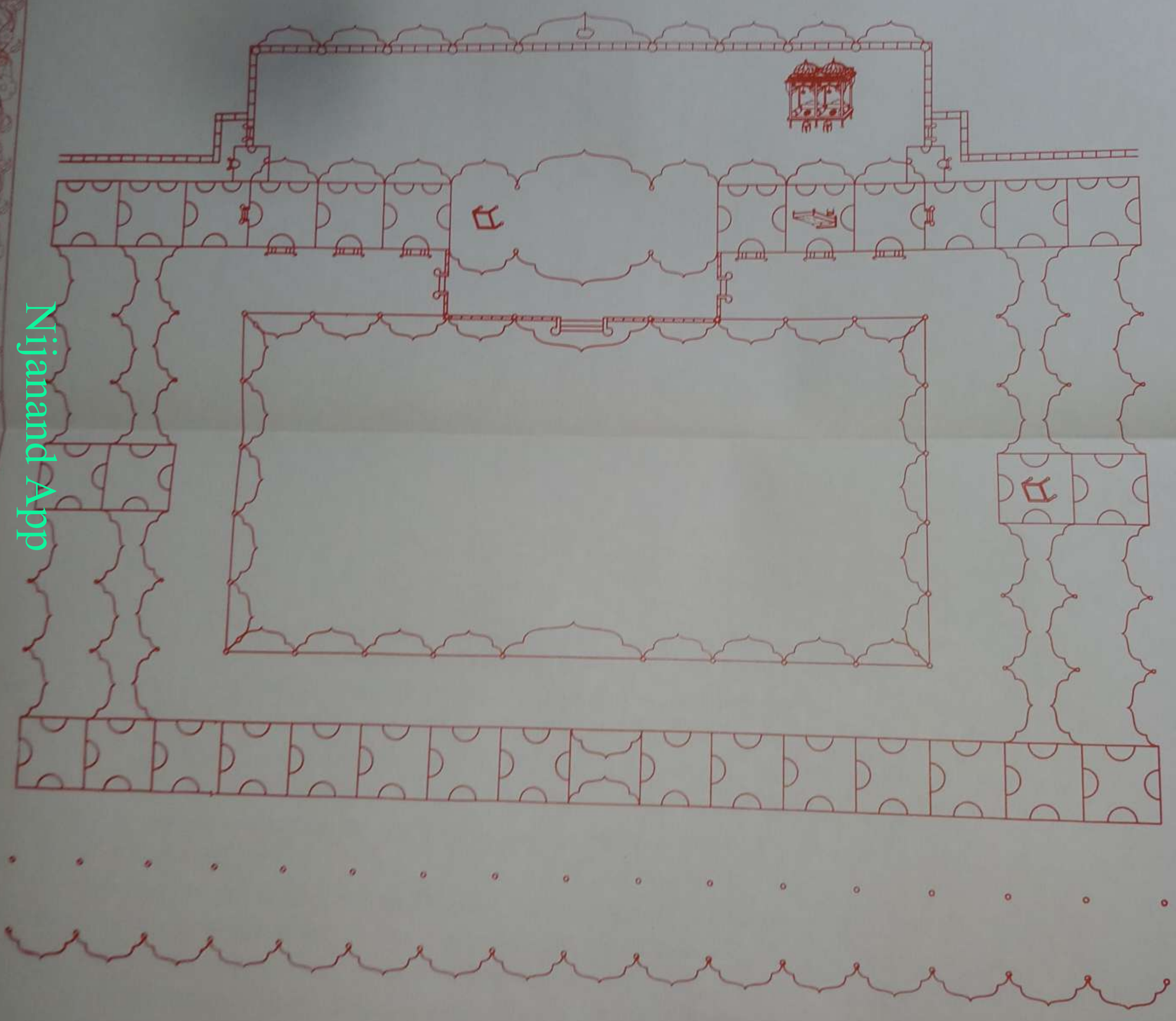

Nijanand App

१५. तीसरी भोम के दस मंदिरों की हांस

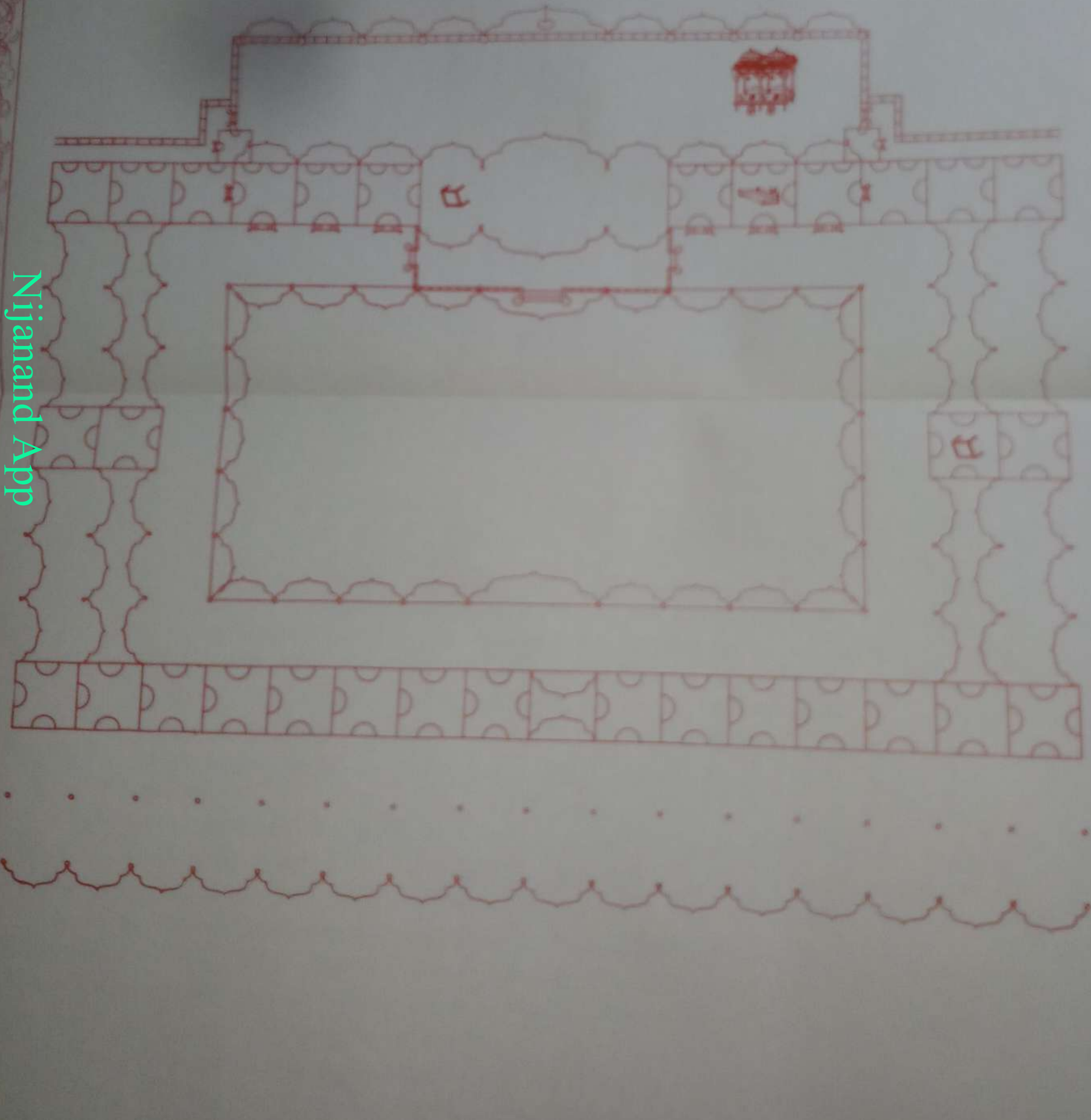

Nijanand App

१५ - तीसरी भोम के दस मंदिरों की हांस

दूसरी भोम में पहली चौरस हवेली के सीढ़ियों वाले मंदिर से भोम भर की सीढ़ियां चढ़कर उत्तर की मेहराब से निकलकर दक्षिण तरफ आकर चबूतरे के साथ चलकर हवेली के दोनों बड़े दरवाजे उलंघ कर आये। एक मंदिर की रौंस छोड़कर २८ थंभ के चौक के ५ मंदिर चलकर २८ थंभ के १० थंभों के पास पूर्व तक पहुँचे। २८ थंभ के चौक के पूर्व तरफ साथ लगकर रौंस की जगह पर एक चबूतरा कमर भर ऊंचा शोभा ले रहा है। इस चबूतरे के पश्चिम तरफ किनार पर ४ थंभ आए हैं। मध्य भाग में २ मंदिर का अंतर थंभों में आया है और दाएं-बाएं एक-एक मंदिर पर आए हैं। मध्य के दो थंभों के बीच में तीन सीढ़ी २८ थंभ के चौक में २ मंदिर की लंबी उत्तर से दक्षिण १-१ हाथ की ऊंची तथा पश्चिम में १ हाथ की चौड़ी आयी है। इन सीढ़ियों के दाएं-बाएं कठेड़ा आया है तथा दाएं-बाएं के थंभों में भी कठेड़ा आया है। इन चार थंभों के दाएं-बाएं ३-३ थंभ २८ थंभ के चौक के आए हैं। इस चबूतरे के दक्षिण तरफ २५ हाथ में मध्य से कमर भर की सीढ़ी रौंस पर उतरी है और दाएं-बाएं तरफ ३७-१/२-३७-१/२ हाथ में कठेड़ा आया है। इसी प्रकार उत्तर तरफ की शोभा है।

चार मंदिर के चबूतरे के पूर्व तरफ दस मंदिर की लंबी उत्तर से दक्षिण तरफ और एक मंदिर की चौड़ी पूर्व से पश्चिम तरफ एक देहलान आयी है। इसके पश्चिम तरफ मध्य की ४ मंदिर की जगह में ४ थंभ आये हैं, जिन पर ३ मेहराबें आयी हैं। मध्य की मेहराब दो मंदिर की चौड़ी और दाएं-बाएं एक-एक मंदिर की चौड़ी आयी हैं। इसके दाएं-बाएं तीन-तीन मंदिर उत्तर-दक्षिण तरफ आए हैं। दक्षिण की दीवाल पर तीन अक्सी मेहराबें, चार अक्सी थंभों पर आयी हैं। एक अक्सी मेहराब में ३ अक्सी मेहराबें, मध्य की मेहराब में ३० हाथ का लंबा-चौड़ा दरवाजा है। दाएं-बाएं दीवाल है। दरवाजे के आगे पश्चिम तरफ ३३ हाथ का लंबा-चौड़ा चांदा (चौक) आया है। इस चौक के उत्तर-दक्षिण में कमर भर सीढ़ियां उतरी हैं। चौक के पश्चिम तरफ कठेड़ा आया है। इस प्रकार की बनक तीनों दरवाजों तथा उत्तर के तीन मंदिरों की आयी है। इस देहलान के पूर्व तरफ १-१ मंदिर की दूरी पर १० थंभ खुले हैं, जिस पर ९ मेहराबें हैं। मध्य की मेहराब २ मंदिर की चौड़ी और बगली १० मेहराबें १-१ मंदिर की चौड़ी आयी हैं। जिसमें ८ मेहराबें खुली हैं और २ मेहराबें अक्सी आयी हैं। दक्षिण की अक्सी मेहराब में ३ मेहराबें आयी हैं। दाएं-बाएं दीवाल और मध्य में एक दरवाजा है। इस दरवाजे के दक्षिण तरफ एक कमर भर की सीढ़ी दीवाल की मोटाई में आयी है। सीढ़ी उतर कर ५वें मंदिर के चौक में जाइए। इस प्रकार की बनक उत्तर तरफ की दसवीं मेहराब (देहलान के उत्तरी सिरे वाली मेहराब) की आयी है।

१० मंदिर की देहलान के पूर्व तरफ १० मंदिर का लंबा दक्षिण से उत्तर तरफ और २ मंदिर का चौड़ा, पश्चिम से पूर्व तरफ इस देहेलान की जमीन के बराबर एक छज्जा आया है। यह छज्जा नीचे के दोनों चबूतरों, ३६ थंभों और ४२ मेहराबों के ऊपर तथा बीच के चौक के ऊपर आया है। इस छज्जे के पूर्व तरफ बाहरी किनार पर १० थंभ खुले और ९ मेहराबें खुली आयी हैं। इन थंभों में कठेड़ा लगा हुआ है। मध्य की मेहराब २ मंदिर की चौड़ी और १ मंदिर की ऊंची आयी है। इस मेहराब के बीच में एक छत्र आया है। इस छज्जे के दक्षिण तरफ १३३ हाथ की चौड़ी और १ मंदिर की ऊंची मेहराब नीलवी की आयी है। इस मेहराब के नीचे मंदिर भर में कठेड़ा और ३० हाथ की जगह में सीढ़ी, ३३ हाथ के छज्जे पर उतरी है। आगे ३ हाथ में कठेड़ा आया है। इसके आगे ६६ हाथ का लंबा-चौड़ा गुर्ज आया है। यह आधा गुर्ज इस छज्जे पर और आधा गुर्ज इस छज्जे से नीचे ३३ हाथ के चौड़े छज्जे पर आया है। छज्जे से तीन सीढ़ी चढ़कर गुर्ज के आधे दरवाजे से होकर गुर्ज के चौक में जाते हैं। इस गुर्ज की जमीन उत्तर तरफ १० मंदिर (जो कमर भर ऊंचे हैं) जिस पर देहलान आयी है, उनको छोड़कर बाकी के मंदिर के साथ छज्जे के बराबर आयी है। अब गुर्ज के मंदिर के पश्चिम तरफ यदि उत्तर दिशा वाले मंदिर में जाएं अर्थात् गुर्ज के पश्चिम

Nijanand App

की दीवाल पर जो ६ मेहराबें आयी हैं। उनमें से तीन जो उत्तर के मंदिर अर्थात् १० मंदिर वाले हांस के हैं, उनमें जाना चाहें तो तीन छोटी मेहराबें ११-११ हाथ की ऊंची अक्सी थंभों पर ११-११ हाथ की आयी हैं। उनके मध्य में खुला दरवाजा है जिसके दाएं-बाएं जालीदार दरवाजे हैं। कमर भर की ऊंची सीढ़ियां चढ़कर पश्चिम तरफ वाली १० मंदिर की देहेलान में जाइए, क्योंकि ये कमर भर ऊंची हैं। यदि गुर्ज की पश्चिम दीवाल के दक्षिण तरफ वाले दरवाजे से मंदिर में जाएं तो एक हाथ की ऊंची चौखट को उलंघ कर मंदिर में जाते हैं। इसी प्रकार की बनक छज्जे के उत्तर तरफ वाले गुर्ज की आयी है। वहां गुर्ज की पश्चिम दीवाल के दरवाजे से ३ सीढ़ी चढ़ना होगा। उत्तर के दरवाजे की जमीन मंदिर की जमीन के बराबर आयी है। इस छज्जे के उत्तर-दक्षिण तरफ ३ सीढ़ी नीचे मंदिरों का तथा गुर्ज का छज्जा यहां तक आकर रह गया। इस बड़े छज्जे के ऊपर सुन्दर गिलम बिछी है। छत से लगकर चन्द्रवा तथा चारों तरफ झालर शोभायमान है।

देहेलान दस मंदिर का, झरोखे दस सामिल।
माहें चौक दस मंदिर का, हुए तीनों मिल कामिल ॥
तीसरा हिस्सा एक हांस का, ये जो दस झरोखे।
द्वार थंभ आगूं इन, ना दीवाल बीच इनके ॥

पश्चिम तरफ दस मंदिर की लंबी तथा एक मंदिर की चौड़ी एक देहेलान आयी है और पूर्व तरफ १० मंदिर का लंबा और १ मंदिर का चौड़ा झरोखा आया है। इन दोनों के बीच में १ मंदिर की चौड़ी जगह बची है। इसे वाणी में चौक कहा है। इन तीनों (झरोखा, चौक, देहेलान) की जमीन बराबर है। ऐसा वाणी में लिखा है ; -

दाहिनी तरफ दूजा जो मंदिर, आए बैठे ताके अंदर।
नीला न पीला रंग, ताकी उठत कई तरंग ॥

मध्य भाग में ४ मंदिर की देहलान आयी है। इसके दाहिनी तरफ ३ मंदिर आए हैं। देहलान के साथ वाला पहला मंदिर नीले रंग का है। इसके साथ वाला आधा नीला, आधा पीले रंग का है और इसके साथ वाला मंदिर पीले रंग का आया है। तीन मंदिर उत्तर में आए हैं। ऐसा एक चौपाई में लिखा है तो एक चौपाई में देहेलान कहा गया। इसका भेद यह है कि काम पड़ने पर पूर्व के थंभों से जालीद्वार निकल जाते हैं, तथा समय पर ६ मंदिर दिखाई देते हैं और मध्य में चार मंदिर की देहलान रह जाती है। इसके दक्षिण तरफ दूसरा मंदिर, जो नीले-पीले रंग का आया है, उसमें सुख-शैय्या है। जिसके चार पाए हैं। ४ पायों पर ४ डान्डे शोभित हैं। शैय्या रेशम की नीवार से बुनी हुई है। चार डान्डों पर छत्री आयी है। ४ कलश ४ डांडों पर आये हैं। एक कलश मध्य छतरी पर आया है। इस सुख शैय्या पर गादी, चादर और दक्षिण तरफ दो तकिए और गाल मसूरे सब जोगबाई है। इस सुख शैय्या के आगे पूर्व तरफ दो सुन्दर नूर की चौकी चढ़ने-उतरने के लिए पड़ी हैं। इस मंदिर के पूर्व तरफ २ मंदिर की दूरी पर मध्य अक्स के सामने कठेड़े के साथ लगता हुआ गिलम पर एक सिंहासन शोभा दे रहा है। इस सिंहासन के पश्चिम तरफ दो सुंदर नूर की चौकी रखी हैं। दूसरी मंदिर की हार में २८ थंभ के चौक के दक्षिण तरफ एक मंदिर की दूरी पर पहला मंदिर आसमानी रंग का है। यह मंदिर श्री श्यामाजी के श्रृंगार के लिए है। बाकी शोभा पहली भोम की भांति है।

Nijanand App

१६. चौथी भोम निरत की हवेली

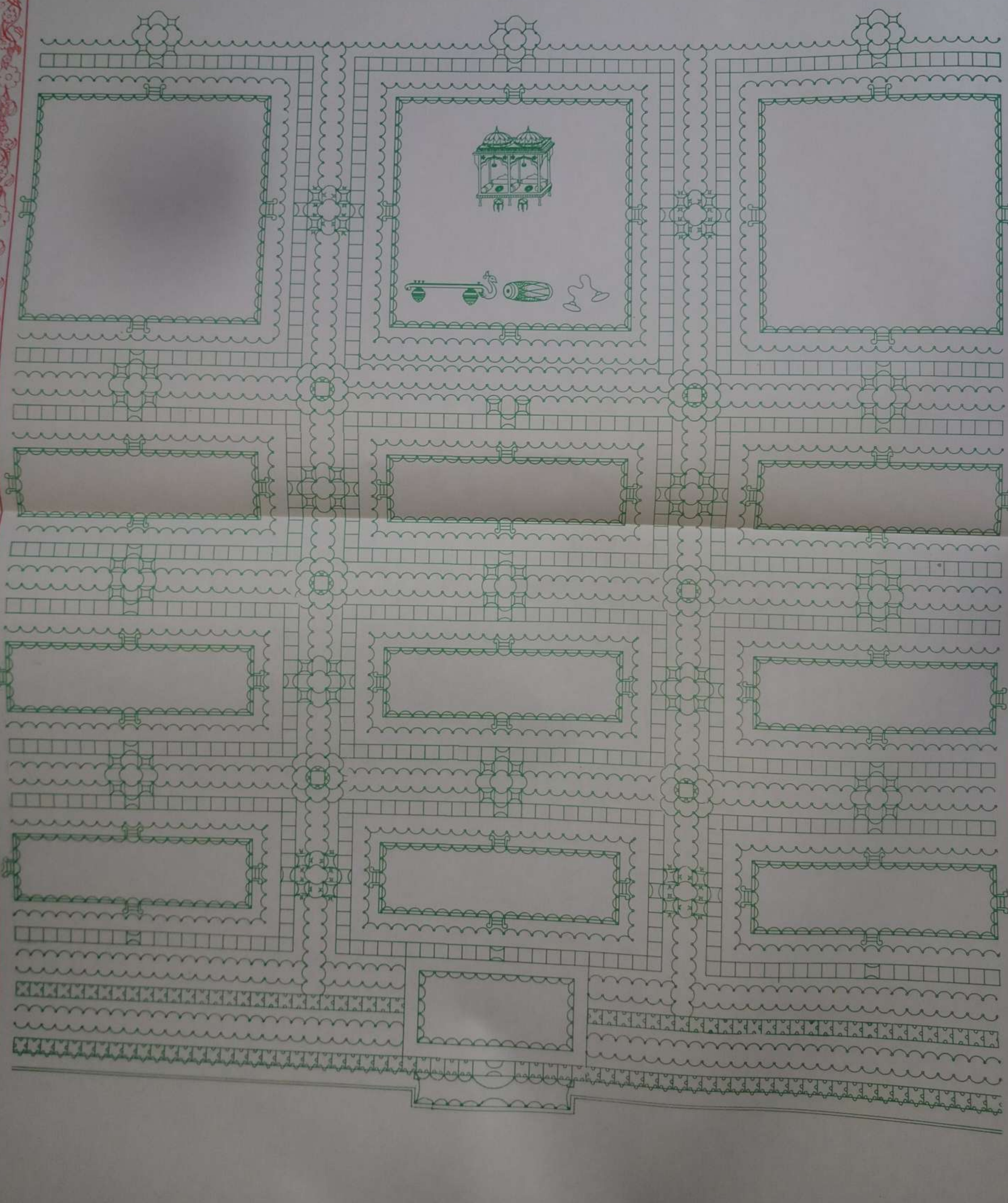

Nijanand App

१६ - चौथी भोम निरत की हवेली

चौथी भोम के १० मंदिर के लम्बे और २ मंदिर के चौड़े बाहर के छज्जे से कमर भर सीढ़ी उतर कर एक मंदिर के चौड़े-दो मंदिर के लंबे मंदिर को उलंघ कर एक मंदिर चौड़ी रौंस छोड़कर आगे ५ मंदिर के चौड़े २८ थंभ के चौक को उलंघ कर और एक मंदिर की चौड़ी रौंस को छोड़कर हवेली के मध्यभाग के दरवाजे से होकर अंदर प्रवेश किया। इसके आगे एक मंदिर चलकर थंभ की हार में से मध्य की मेहराब से होकर आगे एक मंदिर चलकर चबूतरे की पूर्व की किनार पर होकर १७ मंदिर का चबूतरा पार करके पश्चिम तरफ कमर भर की सीढ़ियां उतर कर तीन मंदिर चलकर हवेली से बाहर निकले। फिर तीन मंदिर की त्रिपोलिया की जगह छोड़कर ऐसी-ऐसी दो हवेलियां त्रिपोलियों सहित पार करके चौथी जो निरत की हवेली आयी है, उसकी पूर्व किनार पर पहुंचे।

निरत की हवेली २३ मंदिर की लंबी-चौड़ी है और ८८ मंदिर की गिर्द आयी है। सब जोगबाई चौरस हवेली के अनुसार आयी है। थोड़ा सा अन्तर है, जो लिखा जा रहा है। इस हवेली के बाहरी तरफ १०० थंभ आए हैं। दक्षिण दिशा के मध्य भाग में एक दरवाजा आया है। इसके दाएं-बाएं, पूर्व-पश्चिम तरफ १०-१० मंदिर आए हैं। दरवाजे के बाहर रौंस घर मंदिर की दीवाल से लगते हुए दो चबूतरे कमर भर ऊंचे एक-एक मंदिर के लंबे-चौड़े दोनों तरफ आए हैं। इन मंदिरों में हिसाब के ३-३ दरवाजे आए हैं। यह मंदिर लाखी (लाल) माणिक रंग के आये हैं। पश्चिम तरफ मध्य भाग में दरवाजे के दाएं-बाएं १०-१० मंदिर श्वेत रंग के आये हैं। बड़े दरवाजे के बाहर दो चबूतरे आये हैं। इसी प्रकार उत्तर तरफ दरवाजा तथा मंदिर आए हैं, जो पीले रंग (पुखराज) के आये हैं और पूर्व तरफ २१ मंदिर की जगह पर हरे रंग की २०-२० थंभों की २ हारें आयी हैं।

हरी दीवाल जो मंदिर, सो सामी है नेक दूर ॥

इन थंभों के ऊपर दक्षिण से उत्तर तरफ २१-२१ मेहराबों की २ हारें आयी है। मानो २१ मंदिर की देहेलान शोभा दे रही है। अग्नि कोने वाला मंदिर लाखी रंग का आया है। ईशान कोने वाला मंदिर पुखराज रंग का आया है। नैरित्य कोने वाले मंदिर की पूर्व तथा दक्षिण तरफ की दीवाल लाखी रंग की और पश्चिम और उत्तर वाली श्वेत रंग की आयी है। वायब्य कोने का मंदिर जिसके पश्चिम और दक्षिण की दीवालें श्वेत रंग की और उत्तर-पूर्व की पीले रंग की आयी हैं। इस हवेली में ६४ मंदिर आए हैं। तीन मंदिर की जगह में तीनों दिशा में तीन दरवाजे आए हैं। पूर्व तरफ २१ मंदिर की देहलान आयी है। इस हवेली के चारों कोनों पर २४-२४ मेहराबें आयी हैं। पूर्व तरफ मंदिर-मंदिर के अन्तर पर मध्य के चबूतरे के पूर्व तरफ तीसरी हवेली के पश्चिम तरफ ६ हारें थंभों की शोभा ले रही हैं, जिससे देहलान की शोभा बढ़ रही है।

इस हवेली के २१ मंदिर की जगह पर जो देहेलान बनी है, उसकी मध्य की मेहराब में होकर एक मंदिर की चौड़ी देहेलान को उलंघकर उसके आगे एक मंदिर चलकर एक थंभ की हार छोड़कर आगे एक मंदिर चलकर एक चौरस चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है। इस चबूतरे पर चारों तरफ ६८ थंभ आए हैं जिन पर ६८ मेहराबें आयी हैं। इस चबूतरे की चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ियां रौंस पर उतरी हैं। चबूतरे पर सुन्दर गिलम पशम की बिछी है। चारों दिशा में चबूतरे की किनार पर कठेड़े के साथ सीढ़ियों को छोड़कर सुन्दर तकिये आए हैं। जिस दिशा में जो रंग आए हैं, उस दिशा में उसी रंग की तीनों थंभों की हारें आयी हैं। ६८ थंभों के बीच छत से लगकर चन्द्रवा तना है। चारों तरफ नगों की झालर लगी है। गिलम के ऊपर मध्य में सिंहासन शोभा ले रहा है, जिसके आगे दो चौकी नूर की शोभायमान हैं।

कृष्ण पक्ष में १५ दिन तक इस चबूतरे पर बैठकर सब सखियां व श्री श्यामा जी सहित श्री राजजी नवरंग बाई के जुत्थ द्वारा किए हुए निरत को देखते है। श्री राजजी चांदनी

Nijanand App

चौक से लगभग ६ बजे सब सखियों को लेकर १०० सीढ़ियां व २० चांदे चढ़कर २ मंदिर के लम्बे-चौड़े चौक को पार कर, बाहर व भीतर का दरवाजा पार कर, अन्दर की गली को पार कर फिर, २८ थंभ के चौक को पार कर, एक गली पार कर, ११ मंदिर की लंबी एक मंदिर की चौड़ी देहेलान को पार कर, आगे दो मंदिर चलकर कमर भर ऊंचे चबूतरे पर आकर दो घड़ी तक आरोगते हैं फिर सीढ़ियों वाले मंदिर से प्रथम भोम से होकर दूसरी भोम व तीसरी व चौथी भोम में उत्तर वाले दरवाजे से निकलकर त्रिपोलिया की मध्य की गली से होकर पश्चिम तरफ चले, फिर तीन हवेली चौरस उलंघकर फिर दक्षिण तरफ घूमकर पूर्व तरफ की देहेलान की शोभा देखकर सखियां व श्री राजश्यामाजी कमर भर ऊंचे चबूतरे पर आए। श्री राजश्यामा जी सिंहासन पर विराजमान हुए। सब सखियां श्री राजश्यामा जी के दाएं-बाएं, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण गिलम पर विराजमान हुईं। नवरंग बाई १९ सखियों को लेकर श्री राजश्यामा जी के सामने पश्चिम मुख करके नृत्य करने के लिए खड़ी हुईं। बाकी २८० सखियां तरह-तरह के बाजों को लेकर बजाने के वास्ते बैठी और कई सखियां खड़े होकर बाजे बजाती हैं। ३६ राग-रागनियों से अपने धनी के गुणों को गाती हैं। इस प्रकार नृत्य का आनन्द डेढ़ घंटे तक चलता रहता है।

कई विध के बाजे बजे, नवरंग बाई नाचत।
हाथ पांव अंग वालत, कही न जाय सिफत॥
ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जन्त्र लाल।
रंग रवाव चंग तम्बूरा, बोलत वेन रसाल॥

जिस समय नवरंग बाई नृत्य करती हैं, तो इनका अक्स दीवालों, सिंहासन सब में पड़ता है। ऐसा दिखाई देता है मानो हर ठिकानों पर निरत होती है और दीवालों के पशु-पक्षी तथा पुतली आदि सब कोई नृत्य में स्वर पूरते हैं।

मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत।
और नजर न कर सके, बंध ऐसे ही बांधत॥
नामे जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए - नए दिल धर॥

इस नृत्य का आनंद कौन ब्यान कर सकता है। सो इस नवरंग बाई जी के नृत्य को देखकर श्री राजश्यामा जी तथा सब सखियां आनन्द में मग्न हो जाते हैं। अन्त में श्री राजजी महाराज नवरंग बाई को बुलाकर पान का बीड़ा देते हैं।

निरत होत चौथी भोम में, एक पोहोर लग रात।
हक सुभान रीझ के, हाथ बीड़ी देत कहे बात॥

तब रात के नौ बजते हैं। इसके बाद श्री राजश्यामा जी तथा सखियां शयन के लिए पांचवी भोम जाते हैं।

Nijanand App

१७. पांचवीं भोम के नौ चौक

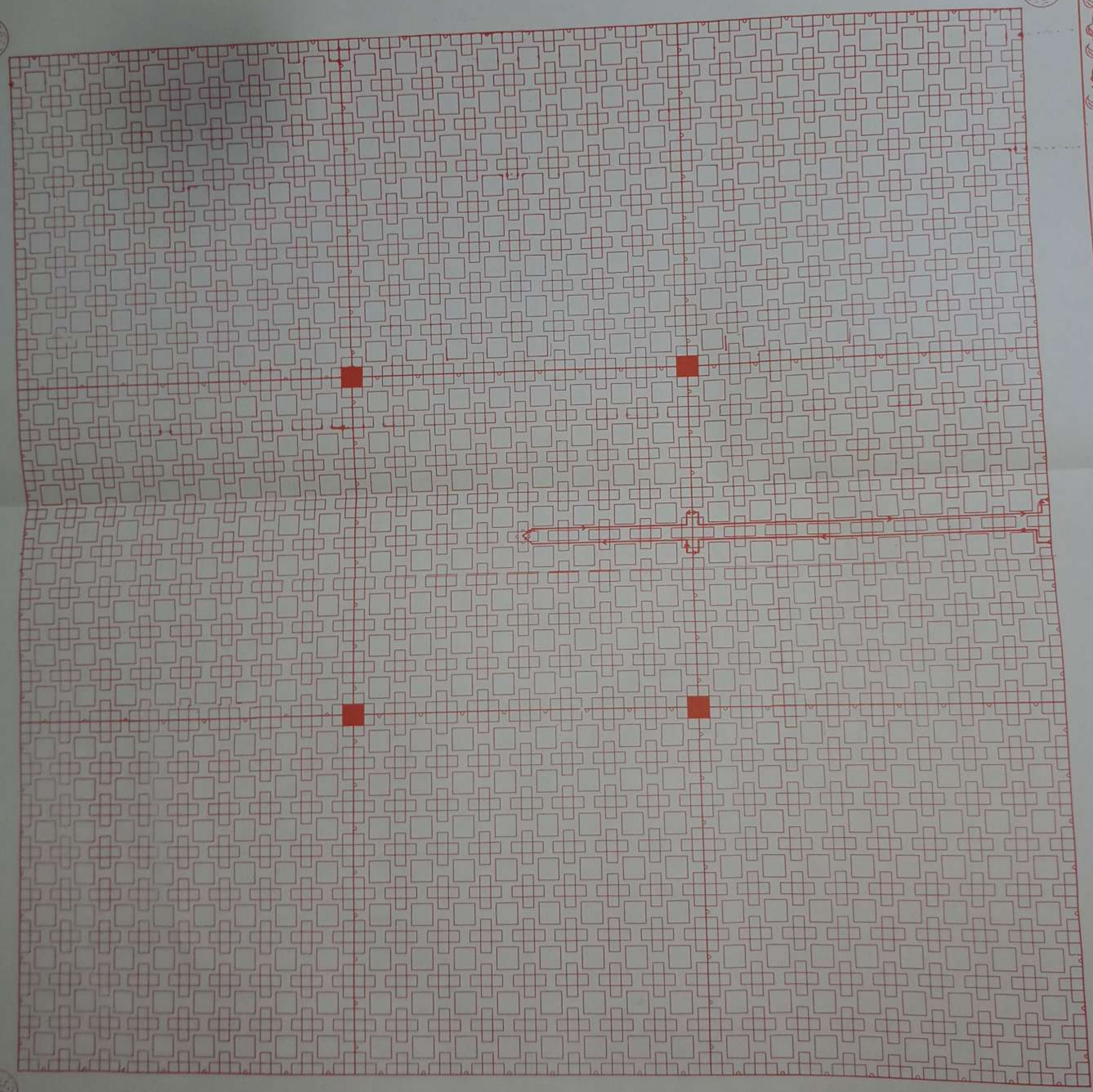

Nijanand App

१७ - पांचवीं भोम के नव चौक

नृत्य देखे पीछे श्री नवरंगबाई को पान देने के बाद श्री राजश्यामा जी उठ बैठते हैं। तब सब सखियां उठकर श्री राजश्यामा जी के साथ चलती हैं। सीधे पूर्व तरफ चलकर सीढ़ियों वाले मंदिर से चढ़कर उत्तर की मेहराब से बाहर निकल कर बीच वाली गली में होके पश्चिम मुख करके ९९० मंदिर पश्चिम तरफ चलकर मध्य के चौक रंग परवाली मंदिर में जाकर श्री युगल स्वरूप जी चारों चरण चौकी पर धर के सुख सैय्या पर बैठे। सब सखियां प्रणाम करके शयन के लिए अपने-अपने मंदिरों पधारी। वहां पर श्री राज जी को अपनी-अपनी सुख शैय्या पर पौढ़े देखा। कुछ देर आनन्द विलास के उपरान्त शयन किया। पूर्व तरफ रसोई की हवेली के भीतर तरफ जहां ३६ हारें हवेलियों की खत्म हो जाती हैं, तब इसके आगे २८ मंदिर की जगह चलकर ६३० मंदिर की लम्बाई-चौड़ाई की जगह में नव चौक आये हैं। एक चौक २१० मंदिर का लम्बा-चौड़ा आया है। सब चौक आपस में मिल करके आयें हैं। एक दिशा के किनारे पर तीनों चौकों की बाहरी दीवाल ६३० मंदिर की लम्बी दिखायी दे रही है। इस चौक की बाहरी दीवाल में मंदिर-मंदिर की हद पर एक-एक अक्शी मेहराब थंभों सहित ८८ हाथ की ऊंची आयी है। ऊपर छोटी मेहराब १२ हाथ की आयी है। फिर एक-एक में तीन-तीन अक्शी मेहराबे ३३-३३ हाथ की ऊंची आयी है। इसी प्रकार की बनक चारों तरफ बाहरी दीवाल पर आयी है। चारों दीवालों के कोनों पर चार स्तून जल के आयें है।

ईशान कोने से अग्नि कोने तक ६३० मंदिर आये हैं। बाहरी दीवाल से अन्दर जाने के वास्ते २४ दरवाजे आये हैं। ईशान कोने से दक्षिण तरफ १७ मंदिर की दीवाल छोड़कर आगे एक मंदिर की जगह में दरवाजा आया है। इस दरवाजे के आगे २४ मंदिर की दीवाल छोड़कर ८८ हाथ लंबा-चौड़ा एक दरवाजा आया है। इसी प्रकार २४-२४ मंदिर की दूरी पर ८८ हाथ के लम्बे-चौड़े दरवाजे आये हैं। आठवें दरवाजे के आगे १७ मंदिर पर बाहरी दीवाल पर पहले चौक की हद आयी है। परन्तु आठवें दरवाजे से सीधा ३४ मंदिर चलकर दूसरे चौक का पहला दरवाजा आयेगा। क्योंकि इसके बीच में दीवाल आयी है। इस प्रकार प्रथम चौक की भांति फिर २४-२४ मंदिर पर दरवाजे आते गये है। इस प्रकार से तीन चौक के एक दिशा में २४ दरवाजे आये हैं। चारों दिशा के ९६ दरवाजे आये हैं।

इन मंदिरों की हार के भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर एक थंभ की हार चारों तरफ आयी है, जिसकी एक दिशा में २०७ थंभ आये हैं। चारों तरफ के सब थंभ ८२८ एक हार में हुए। बाहरी पूर्व तरफ की थंभ की हार से लगते हुए ९ चौक आये है। पूर्व से पश्चिम तरफ १७ मंदिर के अन्तर पर चौक आये हैं। इस प्रकार पूर्व से पश्चिम प्रथम थंभ की हार से लगते हुए ९ चौक आये हैं। पश्चिम तरफ के ९ चौकों के पश्चिम तरफ साथ लगकर २०७ थंभ आये हैं! इन्हीं थंभों से एक मंदिर दूरी पर २०८ मंदिर की एक हार आयी है। इसी प्रकार दक्षिण से उत्तर तरफ के चौकों का ब्यान जानना।

चारों तरफों के किनारे के चौकों को छोड़कर बीच के चौकों का ब्यान इस प्रकार आया है। यह चौक आठ-आठ मंदिर के लंबे-चौड़े अर्थात् ६४-६४ मंदिर के आये हैं। इन सब चौकों की हर एक दिशा में मध्य भाग में दो जुड़ाफे के मंदिर और दाएं-बाएं तीन-तीन गली जिसमें २-२ हारें थंभों की आयी हैं। हर एक चौक के चारों तरफ से २४-२४ गली आने से इन चौकों को ४९ चौपड़े कहा जाता है। इन चौपड़ों के कोनों में हवेलियां आयी है।

Nijanand App

बाहर की थंभ की हार के साथ लगकर भीतरी तरफ एक दिशा पूर्व में सात चौक आये हैं । पूर्व से पश्चिम तरफ आठ मंदिर का लंबा और उत्तर से दक्षिण सात मंदिर का चौड़ा आया है । इस प्रकार से चारों तरफ किनार के सब चौक २८ आये हैं । इन्ही चौकों के तीन दिशा में १८ रास्ते चले हैं । इस वास्ते इन चौकों को त्रिपुड़ा करके कहा है ।

चारों तरफ थंभ की हार की भीतरी तरफ चारों कोनो में चार दोपुड़ा के चौक आये हैं । यह चौक ७-७ मंदिर के लंबे-चौड़े बराबर आये हैं अर्थात् ४९-४९ मंदिर के आये हैं। इन चौकों के दोनों तरफ १२ रास्ते चले हैं । इस वास्ते इनको दोपुड़ा करके कहा है । इस प्रकार से दोपुड़ा, त्रिपुड़ा व चौपुड़ा के कुल चौक मिला के ८१ हुए । इन चौकों में सुन्दर गिलम बिछी है ।

एक हवेली १७ मंदिर की लंबी-चौड़ी बराबर आयी है । मध्य भाग के एक मंदिर की जगह में ८८ हाथ का एक दरवाजा आया है । चारों तरफ के कुल ५६ मंदिर हुए । चारों खूंटों के चार मंदिर मिलाकर ६० मंदिर हुए । इन सब मंदिरों में एक-एक दरवाजा आया है और चार दरवाजे चारों दिशा में भीतर जाने के वास्ते आये हैं । दरवाजों सहित ६४ मंदिर की गृद हवेली की आयी है । इन मंदिरों की हार से बाहरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर १८ थंभ आये हैं । चारों तरफ के सब ७२ हुए । चारों कोनों पर ४ थंभ नहीं आए हैं । इन हवेलियों के मंदिरों के भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर एक दिशा में ग्यारह मंदिर आये हैं । तब चारों तरफ के ४४ मंदिर हुए परन्तु इस हवेली के एक दिशा में भीतर जाने के वास्ते एक बड़ा दरवाजा आया है । जिससे मंदिर ४३ हुए । इन सब मंदिरों में एक-एक दरवाजा भीतरी तरफ आया है । चारों कोनों वाले मंदिरों को गुर्ज करके कहा है । गुर्ज में दो-दो दरवाजे आये हैं । यह दरवाजे कमर भर ऊंचे रौंस पर आये हैं । कमर भर की सीढ़ी चढ़कर दरवाजों से होकर गुर्ज के चौक पर जाइये । इस गुर्ज के चौक की जमीन मंदिर के चौक से कमर भर ऊंची आयी है । चारों गुर्जों के आठ दरवाजे हुए । दूसरी हार मंदिर से एक मंदिर भीतरी तरफ ४० थंभों की एक हार चारों तरफ आयी है । एक दिशा में देखने के १० थंभ आये हैं । तब चारों तरफ के ४० थंभ हुए । इन चालीस थंभों के बीच में ९ मंदिर का लंबा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चौक आया है । जिस पर सुन्दर गिलम बिछी है । मध्य में सिहांसन तथा चारों तरफ कुर्सियां रखी हैं । ऊपर चन्द्रवा को घेरकर झालर शोभायमान है । इस हवेली की दोनों हारों में १०३ मंदिर और ११२ थंभ आये हैं । पांच बड़े दरवाजे और ४ गुर्जों के ८ दरवाजे हुए। इसी प्रकार से ६४ हवेली आयी है ।

पूर्व तरफ के बाहर की २०८ मंदिर की हार से तीन मंदिर के अन्तर पर एक दिशा में आठ जुड़ाफे आये हैं । हर एक जुड़ाफा पूर्व से पश्चिम तरफ दो मंदिर का चौड़ा और दक्षिण से उत्तर १७ मंदिर का लंबा आया है । यह जुड़ाफा नौ चौकों के बीच में आया है । इसी प्रकार पश्चिम में २३ मंदिर की दूरी पर ८ जुड़ाफे आये हैं । तब कुल नौ हारों के ७२ जुड़ाफे हुए । अन्तिम नवमी हार जुड़ाफे से तीन मंदिर की दूरी पर पश्चिम की तरफ २०८ मंदिर की एक हार मंदिरों की आयी है हर एक जुड़ाफा के पूर्व-पश्चिम तरफ तीन-तीन मंदिर की दूरी पर एक-एक हवेली आयी है । उत्तर-दक्षिण तरफ ६४-६४ मंदिर वाला चौक चौपुड़ा आया है । इसी प्रकार उत्तर से दक्षिण तरफ ७२ जुड़ाफे आये हैं । तब पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण एक चौक में १४४ जुड़ाफे आये हैं ।

Nijanand App

१८. पांचवीं भोम के रंग परवाली

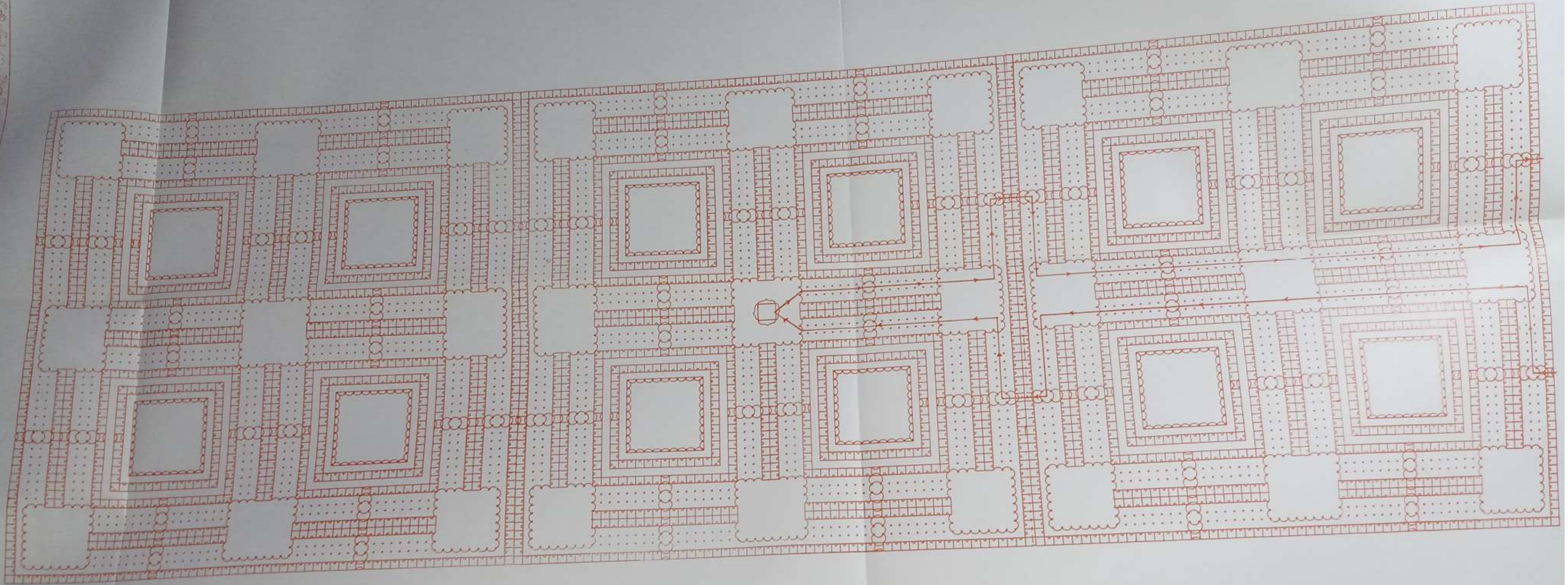

Nijanand App

१८ - पांचवीं भोम के रंग परवाली मंदिर का दृश्य

पूर्व तरफ की २०८ मंदिर की एक हार से पश्चिम तरफ एक जुड़ाफे का ब्यान किया जाता है। उसी प्रकार सभी जुड़ाफों को जानना। एक जुड़ाफा उत्तर से दक्षिण तरफ १७ मंदिर का लंबा और पूर्व-पश्चिम दो मंदिर का चौड़ा आया है। मध्य भाग के चौड़ाई तरफ के दोनों मंदिरों की जगह में तीन दरवाजे बड़े अन्दर जाने के वास्ते आये हैं। एक दरवाजा मध्य की दीवाल में, एक दरवाजा भीतरी तरफ तथा एक दरवाजा बाहरी तरफ है। दरवाजे के दाएं-बाएं ८-८ मंदिर आये हैं। इन १६ मंदिरों के दरवाजे बाहर की तरफ ही आये हैं। इस प्रकार भीतरी दरवाजे के दाएं-बाएं मंदिर आये हैं। इन सब मंदिरों का एक-एक दरवाजा भीतरी तरफ आया है। चौड़ाई के दो मंदिरों के बीच में एक ही दीवाल १७ मंदिर की लंबी आयी है। इस वास्ते इनको जुड़ाफे का मंदिर कहते हैं। तब एक जुड़ाफे के ३२ मंदिर हुए और बाहरी मंदिरों के बाहरी तरफ १८ थंभ और भीतरी तरफ भी १८ थंभ आये हैं। तब एक जुड़ाफे के ३६ थंभ हुए। इन जुड़ाफों की लंबाई में ६४-६४ मंदिर वाले चौक आये हैं और चौड़ाई तरफ तीन-तीन मंदिर की दूरी पर सब हवेलियां आयी हैं।

एक हवेली में १०३ मंदिर आए हैं, तो ६४ हवेलियों के सब मंदिर ६५९२ हुए और एक जुड़ाफा में ३२ मंदिर तब १४४ जुड़ाफों के ४६०८ सब मंदिर हुए। बाहरी हार के एक दिशा के २०० मंदिर तो चारो दिशा के ८०० मंदिर तब कुल मंदिर १२००० हुए।

एक चौपड़ा के १२४ मंदिर तो ४९ चौपड़ा के सब मंदिर=६०७६

एक त्रिपुड़ा के १०२ मंदिर तो २८ त्रिपुड़ा के सब मंदिर=२८५६

एक दोपुड़ा के ७९ मंदिर तो ४ दोपुड़ा के सब मंदिर=३१६

एक हवेली के ४३ मंदिर तो ६४ हवेलियें के सब मंदिर=२७५२ कुल मंदिर १२००० हुए।

एक हवेली के बाहर-भीतर के सब थंभ ११२ आये हैं। तब चौंसठ हवेलियों के सब थंभ ६१६८ हुए और एक जुड़ाफा के ३६ थंभ आये हैं। तब १४४ जुड़ाफों के सब ५१८४ थंभ हुए। बाहरी मंदिरों के भीतरी तरफ के २०६ हुए। तब चारों तरफ के ८२४ थंभ हुए। कुल थंभ १३१७६ हुए।

प्रत्येक मंदिर के दो बड़े दरवाजे आये हैं। उनकी गिनती लिखी जाती है। हर एक मंदिर में बड़े दरवाजे आये हैं। एक बाहर की तरफ, एक भीतर की तरफ। जुड़ाफे में तीन दरवाजे आये हैं। एक बाहर, एक भीतर, एक मध्य में। बाहरी मंदिरों की दीवाल की एक दिशा में १६ दरवाजे तो चारों दिशा में सब ६४, एक हवेली के दस दरवाजे तो ६४ हवेली के सब मिलाकर दरवाजे ६४०। एक जुड़ाफे में तीन दरवाजे तो १४४ जुड़ाफों के कुल दरवाजे ४३२। कुल दरवाजे ११३६ हुए। १२००० मंदिरों के छोटे दरवाजे १२०००। एक चौक के कुल दरवाजे १३,१३६ हुए।

एक हवेली में चार गुर्ज आये हैं। ६४ हवेली में २५६ हुए। एक हवेली में दरवाजे ८ हुए तो ६४ हवेली में ५१२ हुए। एक हवेली के मध्य में एक चौक, तो चौंसठ हवेली में चौंसठ चौक हुए।

Nijanand App

एक दोपुड़ा में १२ गली तो ४ में ४८ होगी। एक त्रिपुड़ा में १८ गली तो २८ त्रिपुड़ा में ५०४ हुई। एक चौपुड़ा में २४ गली आयी हैं, तो ४९ चौपुड़ा में ११७६ हुई। एक हवेली में एक गली आयी है तो ६४ हवेली में ६४। कुल गलियां १७९२ हुई।

एक हवेली के दरवाजे से दूसरी हवेली के दरवाजे तक एक ही दरवाजा माना जाता है। दक्षिण से उत्तर तरफ ७२ दरवाजे हुए। पूर्व से पश्चिम ७२ दरवाजें हुए कुल १४४ दरवाजे हुए। बाहरी मंदिर की हार से हवेली तक एक दरवाजा, तब ३२ हवेलियों के ३२ दरवाजे हुए। पूर्व से पश्चिम ५६ दरवाजे हुए। उत्तर से दक्षिण ५६ दरवाजे हुए। इस प्रकार से कुल ५६+५६+३२=१४४ दरवाजे हुए।

एक हवेली के दरवाजे से दूसरी हवेली के दरवाजे तक एक दरवाजा माना जाता है। एक दरवाजे पर २३ मेहराबें हुई। ११ मेहराबें सामने और १२ मेहराबें बगली दाएं-बाएं तरफ होने से २३ मेहराबें होती हैं। जिसका बेवरा दोनों हवेलियों के दोनों दरवाजों पर चार मेहराबें, इस जुड़ाफे की तीन मेहराबों के आगे-पीछे दो-दो थंभों पर दो-दो मेहराबें आयी हैं। इस प्रकार ११ मेहराबें सामने तरफ हुई। हवेली तथा जुड़ाफों के दाएं-बाएं तीन-तीन मेहराबें आयी हैं, जिसमें एक-एक मेहराब थंभ पर आयी है और दो-दो मेहराबें दरवाजों तथा थंभों पर आयी है। इसी प्रकार से मेहराबें दूसरी हवेली तथा जुड़ाफा के दरवाजे के दाएं-बाएं तरफ आयी हैं। यह १२ मेहराबें बगली तरफ हुई। इस प्रकार २३ मेहराबें एक दरवाजे पर हुई। कुल १४४ और दरवाजों पर ३३१२ मेहराबें हुई।

नव की नव हारें आने से ८१ चौक बनते हैं। मध्य के चौक में दो मंदिर का लंबा-चौड़ा परवाली रंग का लाल मंदिर आया है। इस चौक के चारों तरफ खांचों में १६-१६ चौक आये हैं और हर एक दिशा में चार-चार चौक आये हैं। इस प्रकार मध्य के चौक के चारों तरफ ८० चौक आये हैं। मध्य रंग परवाली मंदिर की एक दिशा में दो मंदिर की चौड़ी और एक मंदिर की ऊंची अक्सी मेहराब आयी है। जिस पर तीन फूल लाल मणिक के शोभा दे रहे हैं। इस अक्सी मेहराब के बीच में एक ८८ हाथ की लम्बी चौड़ी सेंदुरिया रंग की चौखट आयी है। इस चौखट पर हरे रंगों की अनेक प्रकार की चित्रकारी बनी है। इस चौखट में दो किवाड़ दर्पण रंग के शोभायमान हो रहे हैं। एक किवाड़ ४३ हाथ का चौड़ा और ८६ हाथ का ऊंचा आया हुआ है, जिसमें वेनी, सड़, अदवान आने से चौक बने हैं। चौक पर कई प्रकार के नग जडे हुए हैं और सांकल, कुण्डों की अपार शोभा है। इस दरवाजे के दाएं-बाएं ५६-५६ हाथ की दीवाल आयी है। इसी प्रकार की बनक चारों दिशा के चारों दरवाजों पर आयी है। इस मंदिर के चारों तरफ एक-एक मंदिर की दूरी पर तीन परिकरमा आयी है। पहली एक परिकरमा एक मंदिर की चौड़ी आठ मंदिर की लंबी और दूसरी परिकरमा रंग परवाली मंदिर से एक मंदिर की दूरी पर १६ मंदिर की लम्बी आयी है। तीसरी परिकरमा २ मंदिर की दूरी पर २४ मंदिर की लम्बी आयी है। चौथी परिकरमा ३ मंदिर की दूरी पर ३२ मंदिर की लम्बी घेर कर आयी है। पूर्व के दरवाजे के सामने तीन मंदिर की दूरी पर जुड़ाफे के मंदिरों की चौड़ाई में दो मंदिर की चौड़ी एक मंदिर की ऊंची एक अक्सी मेहराब शोभा दे रही है। इस रंग परवाली मंदिर के दरवाजे के भीतर जाइए तो फर्श पर गिलम बिछी है। इसके मध्य भाग में नूर की शैय्या विराजमान है। जिस शैय्या के चार पाये हैं। ऊपर दो ईस दो उपले आये हैं। सो पांच रंग की नीवार से बुनी हुई है। जिस पर तरह-तरह की चित्रकारी आयी है। इस नीवार के ऊपर मखमल का गदला और ऊपर चादर बिछी हुई है। दक्षिण तरफ दो तकिए रखे हैं और गाल मसूरे रखे हैं। रजाई, चादर आदि उत्तर तरफ ओढ़ने के

Nijanand App

वास्ते रखे हैं। जितनी जोगबाई सुख शैय्या के लिए होनी चाहिए, सो सब है। चार पावों के ऊपर चार डांडे आये हैं। डांडों के ऊपर छतरी है। छतरी पर कलश, चार कलश चार डांडों पर एक कलश मध्य छतरी पर आया है। इस सुख शैय्या के पूर्व तरफ दो सुन्दर नूर की चौकी लाल माणिक की हैं। इस रंग परवाली मंदिर की दीवाल के साथ वस्त्र, भूषण, वासन, सन्दूक, खाने की वस्तु अनेक प्रकार की रखी हैं। दक्षिण की बड़ी मेहराब के दरवाजे के पूर्व-पश्चिम बगली दीवाल में पूर्व-पश्चिम दो सुन्दर स्नानघर बने हैं। अन्दर नल, टोंटी, फव्वारा सब सुन्दरता शीशा इत्यादि से सुसज्जित हैं। नल से पानी इच्छा चाही मिलता है।

श्री राजश्यामा जी समस्त सखियों को लेकर ३६ हवेलियों को उलंघकर २८ मंदिर की जगह को उलंघ कर पूर्व तरफ तीनों चौकों की जो एक ही दीवाल आयी है। उस दीवाल में २४ दरवाजे अन्दर जाने के वास्ते आये हैं। सो अग्नि कोने से ईशान कोने की तरफ जो १२वां दरवाजा आया है, उस दरवाजे से होकर अन्दर प्रवेश किया। एक मंदिर चलकर अन्दर का दरवाजा उलंघ कर आये। पूर्व तरफ १-१/२ मंदिर चलकर थंभ की हार वाली गली में होकर उत्तर तरफ आठ मंदिर चलकर ५६ मंदिर वाले चौक में पहुँचे फिर इस चौक के पश्चिम तरफ ६-१/२ मंदिर चलकर चौथी हवेली के दक्षिण तरफ जो इस चौक के आगे पश्चिम तरफ बाई तरफ वाला त्रिपोलिया आया है। उसकी मध्य की गली में होते हुए पश्चिम तरफ चले। दाएं-बाएं आठ-आठ हवेलियों को उलंघकर मध्य वाले ९वें चौक में दाखिल हुए।

इस चौक के पश्चिम के थंभों के साथ होकर दक्षिण आठ मंदिर चलकर फिर पश्चिम तरफ एक मंदिर चलकर जो दो चौकों के बीच एक ही दीवाल आयी है। वहां दो मंदिर की हारें आपस में मिली हैं। इसके तीनों दरवाजों को उलंघ कर आगे १-१/२ चलकर थंभों की हार वाली गली के साथ में होकर उत्तर तरफ आठ मंदिर चलकर ५६ मंदिर वाले चौक मे पहुँचे। इस चौक के पश्चिम तरफ ६-१/२ मंदिर चलकर चौथी हवेली के उत्तर तरफ चले। दाएं-बाएं चार-चार हवेलियों को पार करके मध्य के चौसठ मंदिरों वाले चौक के पूर्व तरफ किनार पर पहुंचे। इस चौक में तीन मंदिर पश्चिम तरफ चलकर रंग परवाली के मध्य में जो नूरमयी सुख शैय्या है। मंदिर भर चलकर सुख शैय्या के आगे दो चौकी पर चरण कमल रखकर श्री युगल स्वरूप जी पूर्व की तरफ मुख करके विराजमान हुए। हम सब सखियों ने आ-आ करके श्री राज जी के स्वरूप को हृदय में लेकर शीश झुकाकर प्रणाम किया। अब सिर उठाया तो अपने को मंदिर में श्री राज जी के साथ सुख शैय्या पर बैठे देखा। इस प्रकार सब सखियां अपने-अपने मंदिर पहुँचीं। बाकी २० सखियां आसावन्ती जुत्थ की रह गयी। उनमें आठ सखियों ने श्री राजश्यामा जी के वस्त्राभूषण उतार कर, उन्हें शयन के वस्त्र पहनाए। १२ सखियां अपने-अपने बाजे लेकर मेहबूब के गुण गाने लगी। उन आठ सखियों नें फिर श्री राजश्यामा जी के चरण दबाये, एक घड़ी तक यह होता रहा, फिर राज जी की आज्ञानुसार ये सब सखियां अपने-अपने मंदिर शयन वास्ते गयी। अपनी सुख शैय्या पर श्री राज जी को पौढ़े देखा तो स्वयं श्री राज जी के साथ पौढ़ गयी।

चौपाई : अब कहूँ प्रेम इतको, सुख लेवें चाहया चित् को।
सुख लेवें सारी रात, सुख लेवें सारी रात ॥

जिस प्रकार मध्य के चौक का ब्यान किया गया है। उसी प्रकार से बाकी आठ चौकों का ब्यान जानना।

Nijanand App

१९. छठीं भोम-सुखपाल

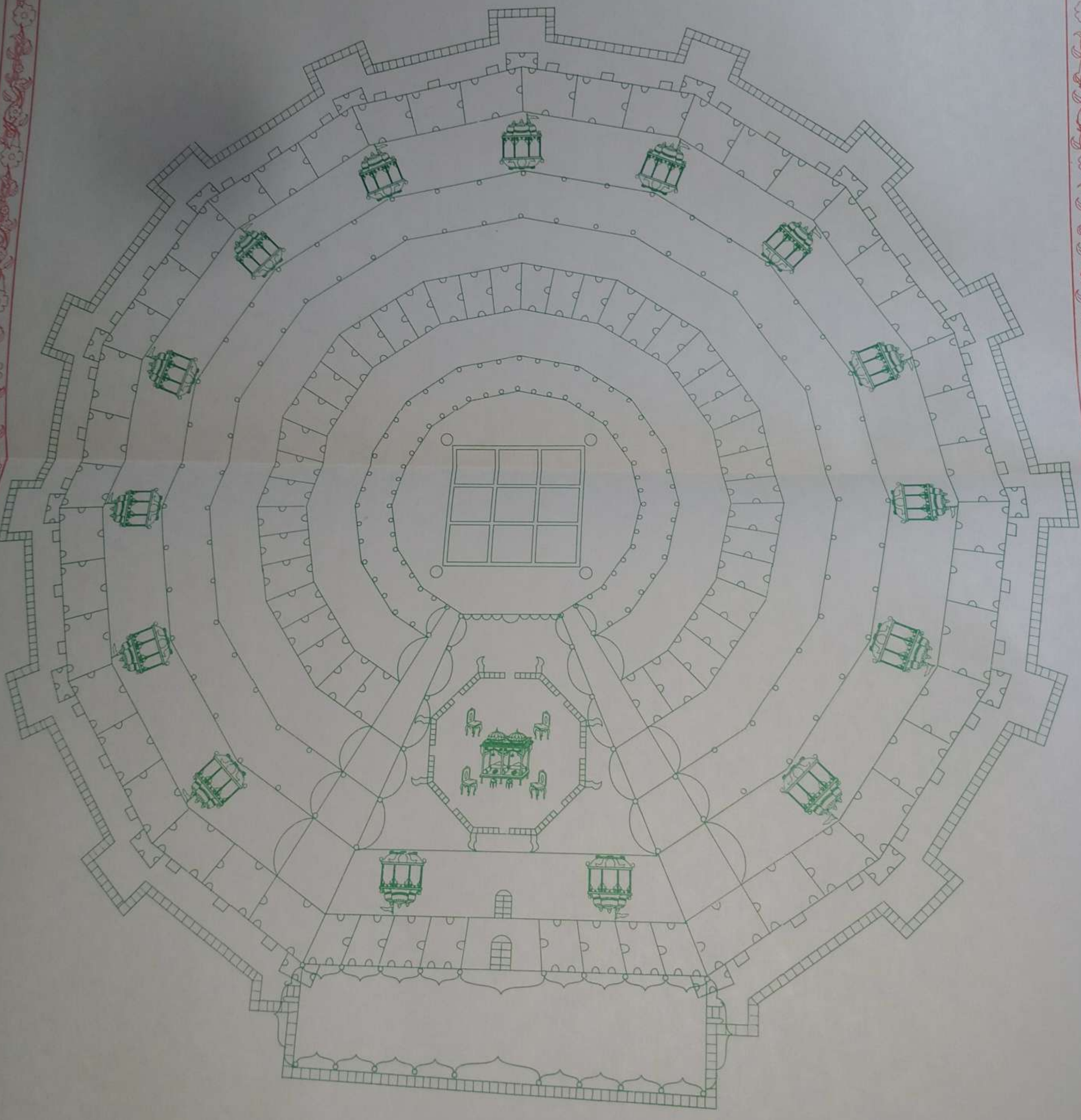

Nijanand App

१९ - छठीं भोम - सुखपाल

बाहर की तरफ जो ६ हजार मंदिर में से एक मंदिर कम जो एक हार मंदिरों की आयी है और पाखों की दीवालें भी एक कम ६ हजार आयी हैं। इन मंदिरों के भीतरी तरफ एक कम ६ हजार थंभों की हार आयी है। मंदिरों और थंभों के बीच में जो जगह आयी है, इसको देहलान करके कहा गया है। इस देहलान में पांखें की दीवाल के सामने मंदिरों की दीवाल के साथ लगकर एक कम ६ हजार सुखपाल आये हैं और पूर्व तरफ बड़े दरवाजे के दाएं-बाएं १/२-१/२ मंदिर की दीवाल आयी है। इन दोनों दीवालों के साथ लगकर दो सुखपाल आये हैं। तब सब सुखपाल ६ हजार एक हुए। जब शाम के तीन बजते हैं, उस समय सुखपाल तीसरी भोम के छज्जे के साथ लग जातें हैं। श्री राजश्यामा जी सब सखियों को लेकर सैर करने के लिए वनों में जाते हैं।

श्री लालदास जी की वृत्त।

इन भोम में रहत है, सुखपाल छः हजार।
तरह तख्तरवा की, हक हादी रूहें बैठन हार ॥
चार पाय नूर के, ऊपर छत्रियाँ सुखदाय।
झालर मोती झलकत, फिरती गृद शोभाय ॥
आठों कलश नूर के, छत्री ऊपर झलकत।
मिने सुजनी जड़ाव बिछौने, साम - सामी तकिए सोभित ॥
विच जागा शोभित, अति सुन्दर सुखदाय।
मन वांछत हाजर होत है, जब सवारी को जाय ॥

सुखपालों के नीचे चार पाये हैं। ऊपर दो ईस दो उपले आये हैं। बीच की सब जगह रत्नों से जड़ी है। चार पावों पर चार डाँडे आये हैं। ऊपर छत आयी है। घेर कर मोतियों की झालर आयी हैं। छत पर दो गुम्मट शोभा दे रहे हैं। दो कलश दो गुम्मट पर और तीन कलश सामने आये हैं। इसी प्रकार तीन कलश पीछे आये हैं और दोनों गुम्मटों के कलश पर दो ध्वजा पताका फहरा रही हैं। एक सुखपाल ९ हाथ का लंबा और चार हाथ का चौड़ा आया है। लंबाई के मध्य भाग में तीन हाथ की चौड़ी और चौड़ाई की तरफ ४ हाथ की जगह आयी है। इस जगह से दांई तरफ ३ हाथ का चौड़ा लंबाई तरफ और ४ हाथ का लंबा चौड़ाई तरफ एक हाथ ऊंचा तख्त आया है। इस तख्त पर पशमी बिछौना आया है।

Nijanand App

ऊपर एक गादी, एक चाकला, तीन तकिए धरे हैं। ऊपर एक छत्री लटक रही है। एक-एक गज के गोफने दायें-बायें पकड़ने के वास्ते लटक रहे हैं। चाकले पर एक सखी बैठती है और चरण नीचे खाली जगह पर शोभित हैं। इसी प्रकार से दूसरी तरफ तख्त पर साज शोभा आयी है। चाकले पर एक सखी विराजमान है। सुखपाल मन चाही चाल से चलते हैं।

छठी भोम के २८ थंभ के चौक में तखतरवा के रहने का ठिकाना है। जब श्री राज श्यामा जी को सखियों सहित इकट्ठे बैठकर जाने का विचार होता है, तब छठी भोम के २८ थंभ के चौक से तखतरवा बड़े दरवाजे से निकल कर तीसरी भोम के छज्जे से बराबर लगकर खड़ा होता है। उस तखतरवा में बैठकर श्री राजश्यामा जी तथा सखियां आकाश में उड़कर जहां जाना चाहे, चले जातें हैं।

तखतरवा १६ पहल का आया हैं। हर एक पहल १८-१८ हाथ के आये हैं। ९६ हाथ का लंबा-चौड़ा और गृद २८८ हाथ की आयी है। इसके १६ पावे हैं। ऊपर १६ डांडे आये हैं। ऊपर एक गुम्मट है। गुम्मट पर एक कलश आया है। १६ डांडों पर १६ कलश आये हैं। इन १६ कलशों पर ध्वजा पताका फहरा रहे हैं। १६ पावों के ऊपर तथा बीच की जगह पर रत्नों से जड़ित चित्रकारी हुई है। मध्य भाग में गिलम बिछी हुई है। ऊपर चन्द्रवा तना है। १६ डांडों के गृद कठेड़ा कमर भर ऊंचा आया है। चारों दिशाओं में कठेड़े खोल देने पर तीन-२ सीढ़ी बन जाती है। फिर उसी को बन्द कर देते हैं, तो कठेड़ा बन जाता है। श्री राज जी के वास्ते गिलम पर सिंहासन विराजमान है और घेर करके सिंहासन के चारों तरफ सखियों के वास्ते कुर्सियां रखी हैं। यह तखतरवा मानों एक गोल मकान जैसा आकाश में उड़ता है तो अति सुहावना दिखायी देता है।

Nijanand App

२०. सातवीं भोम के दो हिंडोलों की ताली

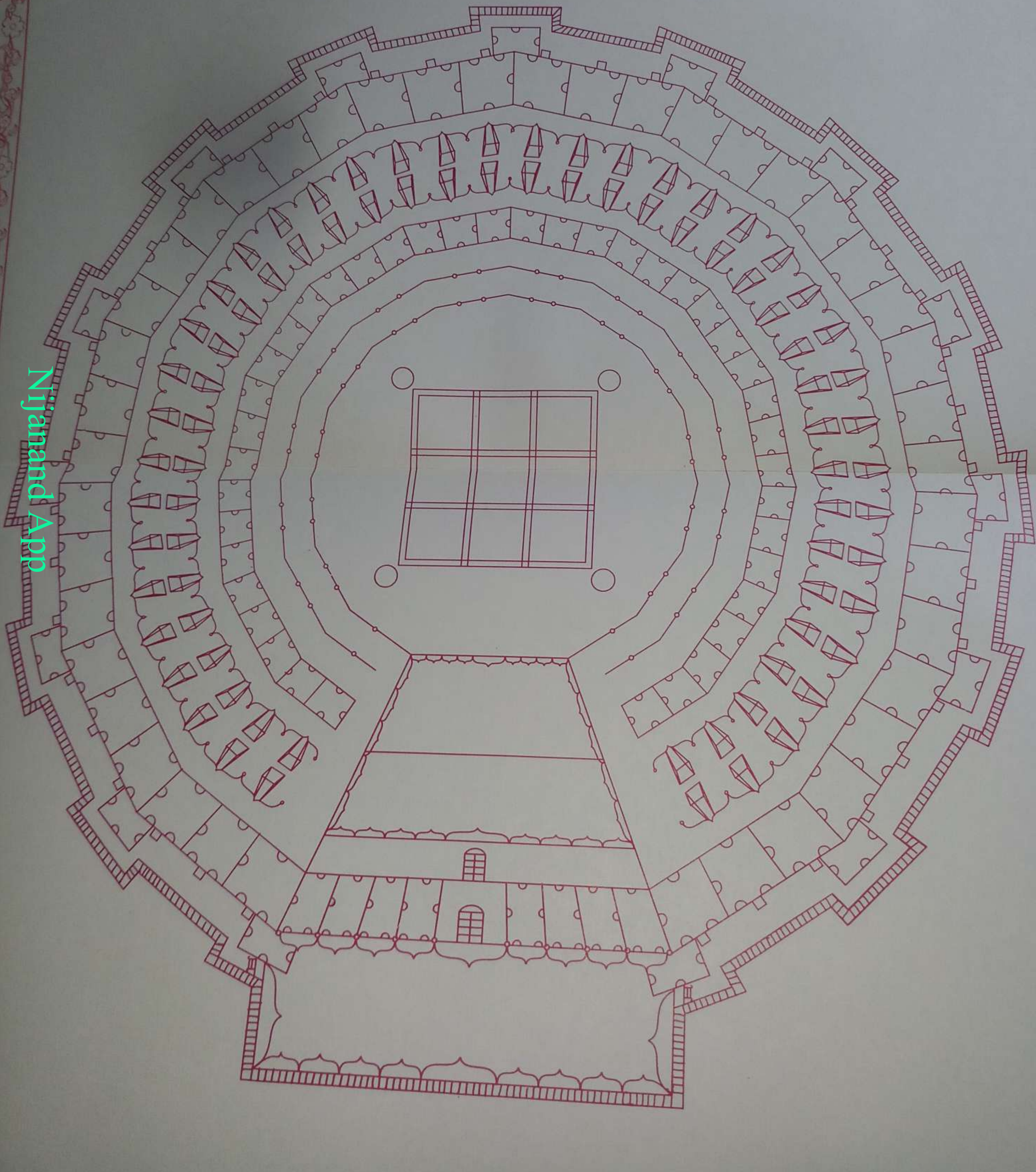

Nijanand App

२० - सातवीं भोम के दो हिंडोलों की ताली

बाहर की हार एक कम ६ हजार मंदिरों की आयी है और इसके भीतर एक कम ६ हजार थंभों की हार आयी है। इन थंभों पर एक कम ६ हजार मेहराबें आयी है। हर एक मेहराब में एक-एक हिंडोला लटक रहा है। परन्तु बड़े दरवाजे के भीतरी तरफ जो एक बड़ी मेहराब आयी है। एक मेहराब दो मंदिर की लंबी आयी है। इस मेहराब के दाएं-बाएं दो हिंडोले लटक रहे हैं। इस प्रकार ६ हजार हिंडोले पहली थंभों की हार में शोभा दे रहे हैं। इन थंभों की हार के भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर एक हार और थंभों की आयी है। यह हार ९ कम ६ हजार की आयी है। इन थंभों में १० कम ६००० मेहराबें आयी हैं। इस वास्ते इन मेहराबों में ९ कम ६ हजार हिंडोले आये हैं। यह १० थंभ २८ थंभ के चौक की जगह पर नहीं आने से यहां मेहराबें नहीं आयी हैं। यहां पर इनकी जगह में २८ थंभ के चौक की छत में कुण्डों के साथ दायें-बायें के हिडोलों के ठीक सामने समान अन्तर पर हिंडोले आये हैं। इस प्रकार दोनों थंभों की हारों में बारह हजार हिडोलें हुए। जब झूलने का समय होता है, तब चकरी से जंजीरें खुलनी शुरू होती हैं। हिंडोले नीचे योग्य स्थान तक लटक आते हैं। तब हर एक हिंडोले में श्री राजश्यामा जी अनन्त रूप होकर एक-एक सखी के साथ बैठकर झूलते है। एक हिंडोला मध्य की गली में पहुंचकर फिर वापस एक मंदिर आकर मध्य की गली में फिर हिंडोले से मिलता है। यहाँ सातवीं भोम में दो हिंडोलों की ताली पड़ती है। झूलते समय कुन्डों की अति मोहनी आवाज की झनकार होती है।

चौपाई : सुख कहाँ कहूँ सातमी भोम का, जो लेत खट छप्पर।
हक हादी रूहें झूलत, साम - सामी बांध नजर॥

यह हिंडोले श्री राजश्यामा जी तथा सखियों की इच्छानुसार झूलते हैं। यह सब हिंडोले खट छप्पर की भांति के आये हैं। हर एक हिंडोंले के नीचे चार पाये आये हैं। ऊपर दो ईस और दो उपले आने से पलंग बन गया है। बीच की सब जगह नीवार से बुनी हुई है। ऊपर गादला, चादर, तकिया सब रखे हुए हैं। चार पावों पर चार डान्डे, चार डान्डों के ऊपर चार जंजीरें मेहराब की चकरी के कड़े तक आयी हैं। सो इसी तरह से सब हिंडोलें आये हैं।

Nijanand App

२१. आठवीं भोम के चार हिंडोलों की ताली

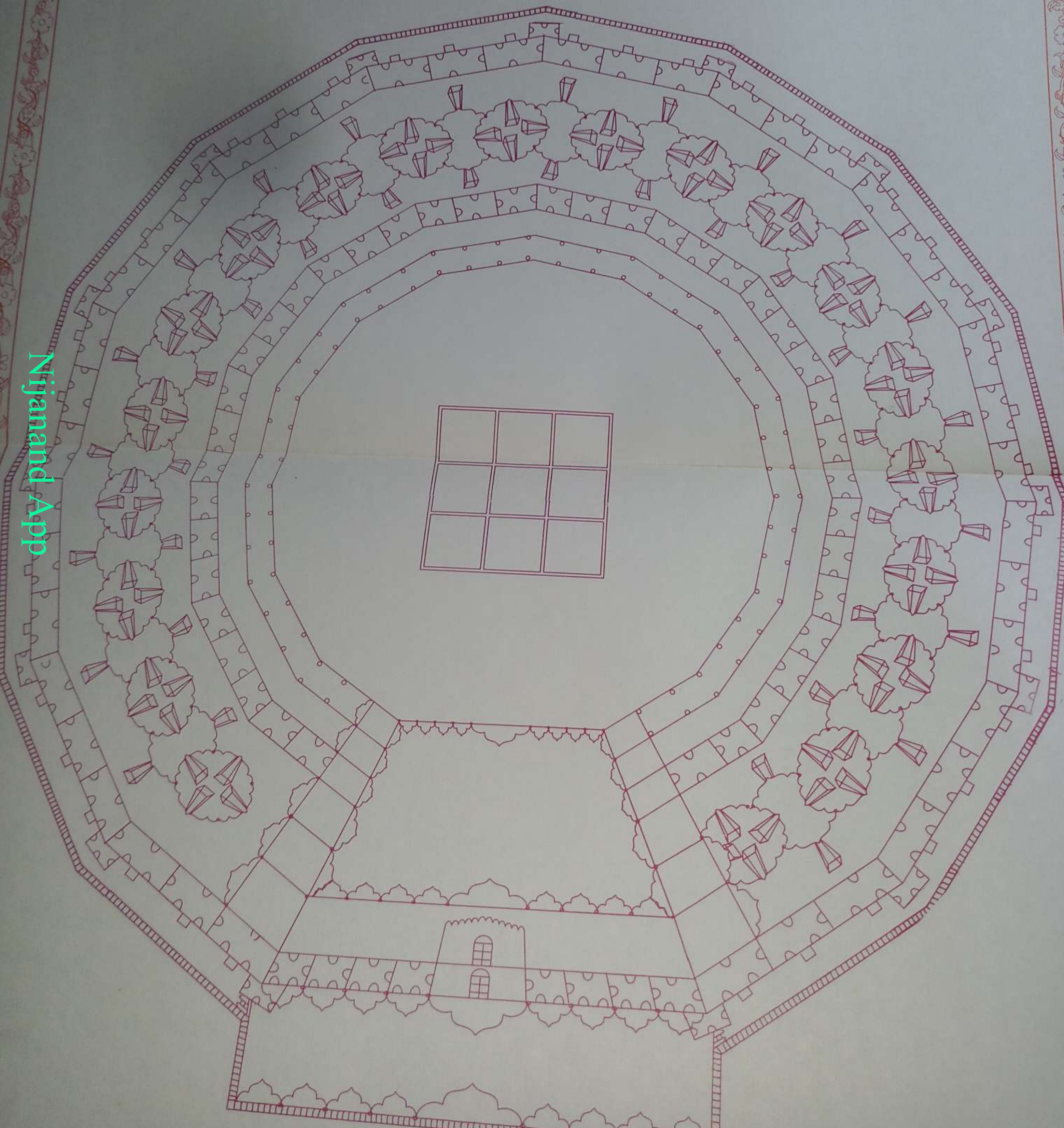

Nijanand App

२१ - आठवीं भोम के चार हिंडोलों की ताली

बाहरी-भीतरी दोनों मंदिरों की हारों के मध्य में १० कम १२ हजार थंभ आये हैं। सातवीं भोम के अनुसार १२००० हिंडोलें आयें हैं। थंभों की दोनों हारों के मध्य में जो गली आयी है, इस गली में ९ कम ६ हजार मेहराबें आयी हैं। जिससे ९ कम ६ हजार हिंडोले आए हैं। किन्तु थंभों की मेहराब के कुण्डों के सूत में २८ थंभ के चौक में कुण्डों में ९ हिंडोले आये हैं। ये सब हिंडोले १८००० हुए। सातवीं भोम के अनुसार सब सखियों के साथ श्री राज जी अनन्त रूप होकर झूलते हैं। यहां पर मध्य में चार हिंडोलों की ताली पड़ती है।

चौपाई : सुख हिंडोले आठवीं भोम के, हक हादी रूहें झूलत।
ए चारों तरफ के झूलने, हक हमको देत लज्जत ॥

Nijanand App

२२. नवीं भोम के दो सौ एक छज्जों की शोभा

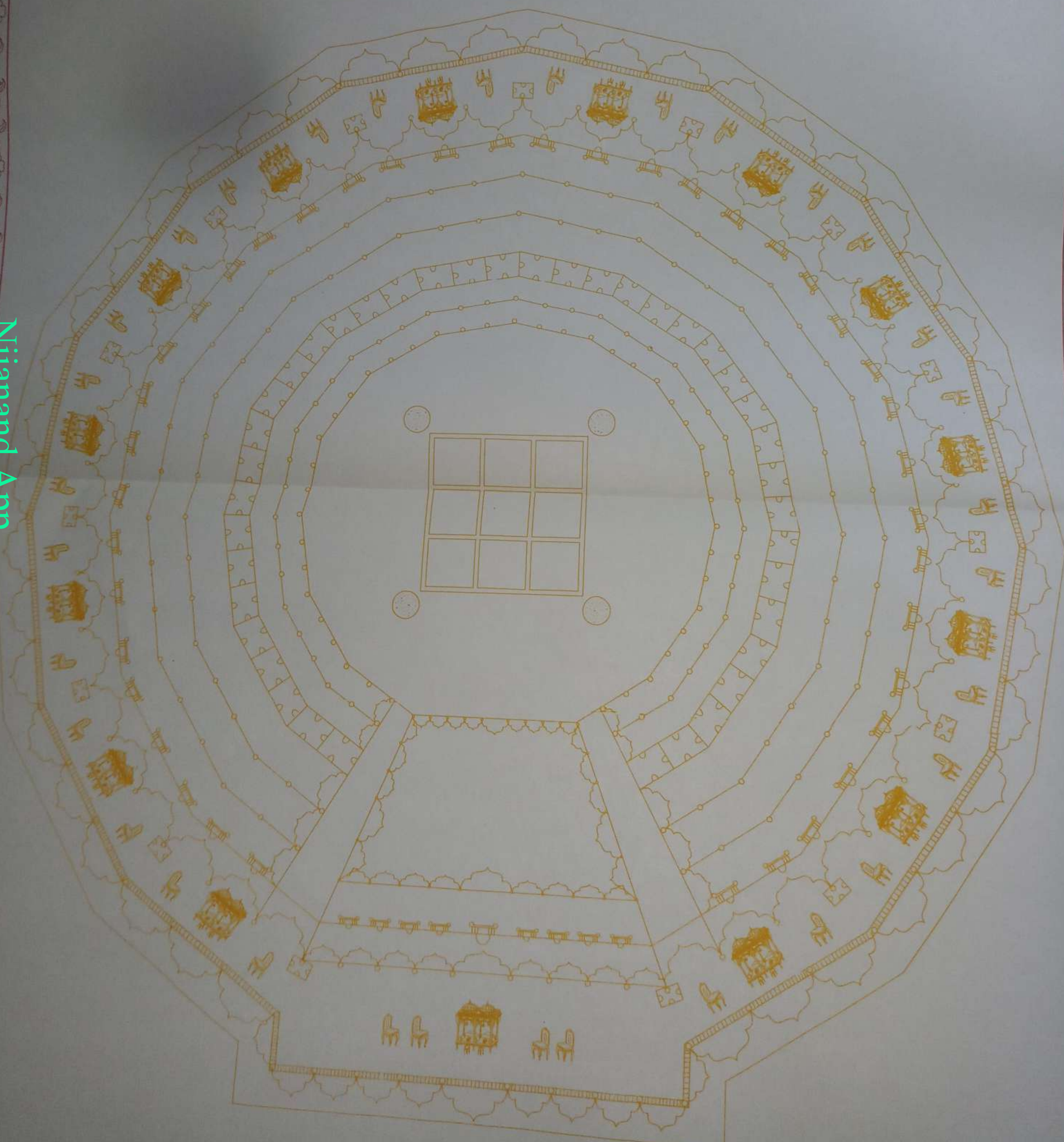

Nijanand App

२२ - नवमी भोम के दो सौ एक छज्जों की शोभा

बाहरी तरफ जो ६ हजार मंदिरों की जगह आयी है। इस जगह पर कमर भर ऊंचा त्रिपोलिया के साथ लगता हुआ एक चबूतरा घेर करके आया है। यह एक मंदिर का चौड़ा ६ हजार मंदिर का लंबा है। इस चबूतरे के भीतरी तरफ किनार पर ६ हजार मंदिर की लंबी दीवाल चारों तरफ घूमी है। यह दीवाल बाहरी हार मंदिरों की है। इस दीवाल पर एक कम ६ हजार अक्सी थंभ ४४ हाथ के ऊंचे आये हैं। फिर उनके ऊपर ४४-४४ हाथ की अक्सी मेहराबें हैं। इस चबूतरे की बाहरी किनार पर मंदिर-मंदिर के अन्तर पर ६००० थंभ आने चाहिए थे, परन्तु २०१ हांस जो आये हैं, इसलिए कम हो जायेंगे, तो थंभ ५७९८ आये हैं। फिर इन थंभों पर तथा गुर्जों पर मेहराबें खुली शोभा दे रही हैं। बाहरी मंदिर के स्थान पर नवमी भोम में मंदिर नहीं आये हैं। केवल भीतरी तरफ की दीवाल आयी है। जिससे एक देहलान ६००० मंदिर की दिखायी दे रही है। पूर्व तरफ एक मेहराब दो मंदिर की आयी है। भीतर की एक बड़ी मेहराब में ३-३ अक्सी मेहराबें आयी हैं। मध्य में दरवाजा और दाएं-बाएं अक्सों पर अनेकों प्रकार की चित्रकारी दिखाई दे रही हैं। इस दीवाल में जो मंदिर-२ के अन्तर पर ४४-४४ हाथ के अक्सी थंभ आये हैं। उन पर और खुले थंभों पर खुली मेहराबें एक कम ६ हजार आयी हैं। इस प्रकार दीवार पर मध्य भाग में ३३ हाथ का लंबा ३० हाथ का ऊंचा दरवाजा आया है। ऊपर तीन हाथ की मेहराब शोभा ले रही है। दाएं-बाएं अक्शी मेहराबों की शोभा है।

देहलान से निकलकर त्रिपोलिया की तरफ आइए तो ३३ हाथ का लंबा चौड़ा कमर भर का ऊंचा चौक आया है। इसके दाएं-बाएं कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। एक चांदे से दूसरा चांदा ६६ हाथ की दूरी पर आया है और पूर्व तरफ मध्य भाग में एक मंदिर का लंबा, ८८ हाथ का ऊंचा दरवाजा आया है। इस दरवाजे के दाएं-बाएं आधे-आधे मंदिर की दीवाल आयी है। इस दरवाजे के पश्चिम तरफ एक मंदिर का लंबा उत्तर से दक्षिण तरफ और ३३ हाथ का चौंड़ा पूर्व से पश्चिम तरफ कमर भर का ऊंचा चौक आया है। इस चौक के उत्तर-दक्षिण तरफ कमर भर की सीढ़ी आयी है। चौक तथा सीढ़ियों के पश्चिम तरफ कठेड़ा आया है। इस चांदे के चौक के दाएं-बाएं ८३-८३ हाथ की दूरी पर एक-एक चांदा और आया है। यह चांदे देहलान के भीतरी तरफ पश्चिम की ओर आये हैं।

दस मंदिर के हांस में दो गुर्ज और आठ थंभों के ऊपर नव मेहराबें खुली आयी हैं। इन मेहराबों के बाहर पूर्व तरफ १० मंदिर का लंबा और दो मंदिर का चौड़ा छज्जा आया है। इसके दायें-बाएं जो एक मंदिर का चौड़ा छज्जा आया है। वह इस बड़े छज्जे से आकर एक मंदिर की जगह में मिल गया है।

हर एक हांस में छज्जे के ऊपर मध्य भाग में सिंहासन आया है, जिसके ऊपर श्री युगल स्वरूप आकर बैठा करते हैं और सिंहासन के दाएं-बाएं ३०००-३००० कुर्सियां रखी हैं। हर एक कुर्सी पर दो-दो सखियां बैठी हैं। इस प्रकार २०१ हांसों के मध्य में सिंहासन तथा कुर्सियां अनेकों प्रकार की बनक की रखी हैं। इस प्रकार २०१ हांसों में २०१ सिंहासन और १२०६००० सब कुर्सियां रखी हैं। जिस दिशा में श्री राजश्यामा जी और सखियां बैठते हैं, श्री राज जी उस दिशा का ब्यान बड़ी दूर-दूर तक अपनी अंगुली के इशारों से समझाते हैं।

Nijanand App

२३. दसवीं चांदनी पर बाग बगीचे

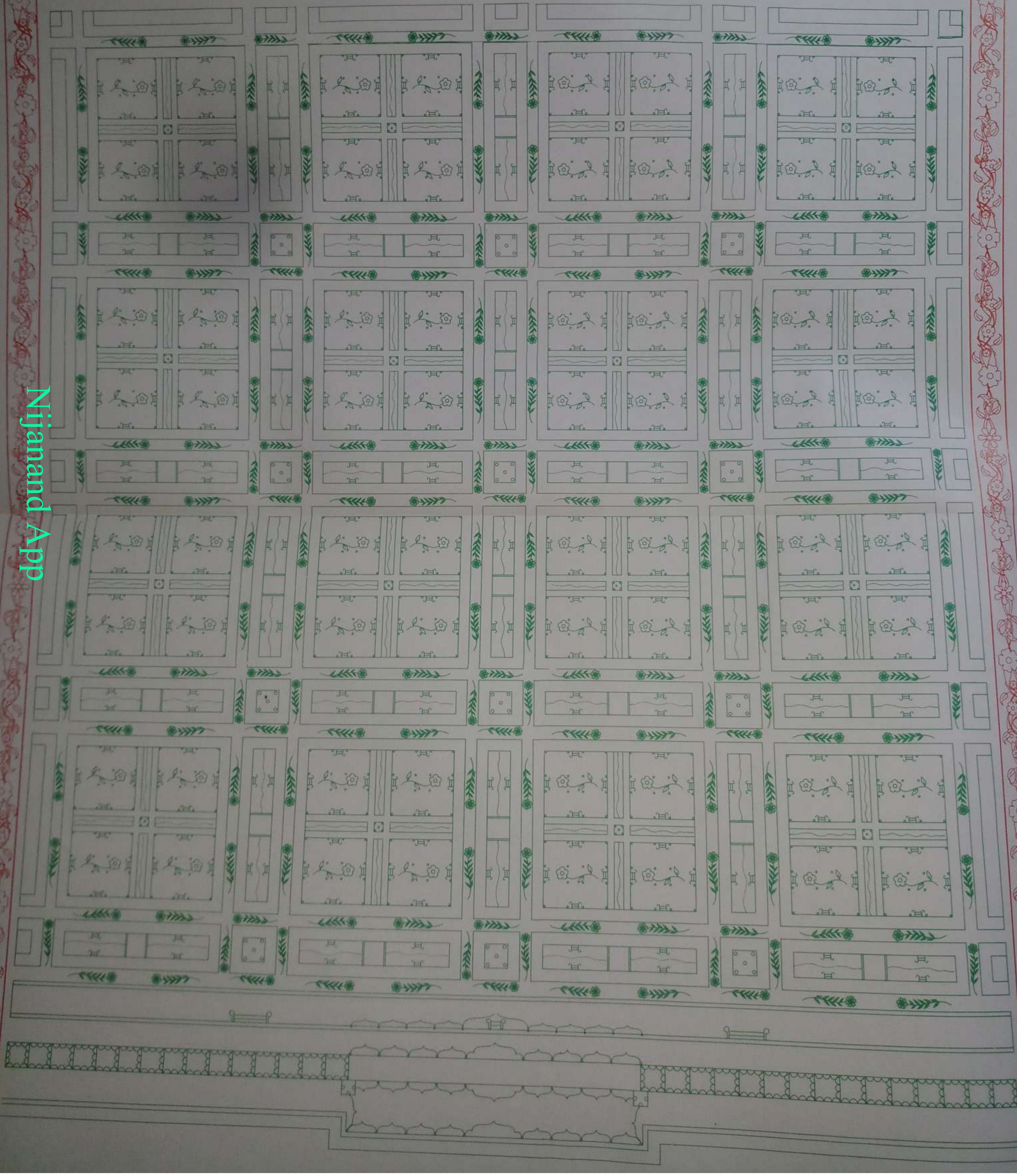

Nijanand App

२३ - दसवीं चांदनी पर बाग-बगीचे

श्री रंगभवन की चांदनी २००० मंदिर की लंबी-चौड़ी और ६००० मंदिर की गृद में आयी है। इस चांदनी के तीसरे हिस्से के मध्य भाग में ६६६ मंदिर का लंबा-चौड़ा और १९९८ मंदिर की गृद तथा २०० हांसों का गोलाकार चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है। इस चबूतरे की चारों दिशा में पहल (हांस) आए हैं। हर एक हांस की लंबाई १० मंदिर की आयी है। नीचे के जो नौ चौक आए हैं, उनकी लंबाई-चौड़ाई ६३० मंदिर की है। यह चौक चौरस हैं। इसके बाहर चारों तरफ कोनों से गोल गृद चबूतरा आया है। गोलाई आने से १८-१८ मंदिर की जगह चारों तरफ से इस चबूतरे में मिल गई है, इस प्रकार लंबाई बढ़ जाने से ६३०+१८+१८=६६६ मंदिर लंबा-चौड़ा चबूतरा आया है। इस चबूतरे के चारों दिशा के हांसों के सामने कमर भर सीढ़ी नीचे उतरी है। सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ घेरके कठेड़ा आया है। चबूतरे पर गिलम और मध्य में सिंहासन शोभा ले रहा है। जिसको घेरके ६००० कुर्सियां रखी हैं। चबूतरे के बाहरी किनार की तरफ हर एक हांस में एक-एक सिंहासन तथा ६००० कुर्सियां हैं। इस प्रकार इस चबूतरे के किनार पर भी १२००००० कुर्सियां और २०० सिंहासन हैं।

इस चबूतरे के चारों कोनों पर चार चेहेबच्चे शोभा ले रहे हैं। हर एक चेहेबच्चा ६ मंदिर का लंबा-चौड़ा है, जिसकी गृद १८ मंदिर की है। पहल १६ आए हैं। इस चेहेबच्चे में कई फव्वारे लगे हैं। फव्वारों का पानी चांदनी के बगीचों के चेहेबच्चे में पड़ता है। इन चेहेबच्चों को घेरके १ मंदिर की चौड़ी रौंस आयी है, जो चेहेबच्चे की दीवाल पर घूमी है। यह रौंस चबूतरे के एक हांस में रौंस से मिली है। इस रौंस के भीतरी तरफ चारों दिशा के चारों हांसों से कमर भर सीढ़ी उतरी है। जो कमर भर नीचे जल चबूतरे पर उतरी है। सीढ़ियों को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा आया है। इस रौंस से बाहरी तरफ तीनों हांसों से कमर भर की सीढ़ी तीन दिशा में उतरी हैं। बाकी में कठेड़ा आया है।

चांदनी के मध्य भाग में गोल चबूतरे से पंचमोहलों तक २८ मंदिर की जगह आयी है और एक मंदिर की जगह पंच मोहलों की गली की आयी है। उसे मिलाकर २९ मंदिर की जगह हुई, जिसमें से १८ मंदिर की जगह चबूतरे में मिल गई और ८ मंदिर की जगह चेहेबच्चे की रौंस तक आयी है। बाकी ३ मंदिर की जगह चबूतरे से ८ मंदिर की दूरी पर ३ मंदिर का चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा २३१ पहल का आया है, जो चारों तरफ घूमा है और बाहरी किनार पर मंदिर भर चौड़ा और कमर भर ऊंचा चारों तरफ चबूतरा है। बाहरी पहली हार मंदिर से दूसरी हार मंदिर तक ५ मंदिर की जगह आयी है। पहली हार मंदिर और पहली गली की जगह पर कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। फिर ३ मंदिर की जगह दूसरी हार तक चबूतरे से कमर भर नीची रौंस छोड़कर, फिर दूसरे त्रिपोलिये पर ३ मंदिर का चौड़ा २३१ हांस का लंबा कमर भर ऊंचा एक चबूतरा आया है। इस पहले और भीतर के दूसरे चबूतरे के बीच ३५ त्रिपोलियों पर ३५ चबूतरे ३-३ मंदिर के चौड़े और कमर भर ऊंचे २३१ पहल के आये हैं। बाहरी किनार के चबूतरे से लेकर अंदर के चबूतरे तक ६५४ मंदिर की जगह आयी है। मध्य से ३३३+८ (चबूतरे+चेहेबच्चे की जगह) और बाहरी दो मंदिर का चौड़ा चबूतरा तथा तीन मंदिर की कमर भर नीची जगह, ये ५ मंदिर छोड़कर अर्थात् ३४१+५=३४६ मंदिर बाकी १०००-३४६=६५४ मंदिर। इस ६५४ मंदिर की जगह में नीचे की भोमों के अनुसार ३६ हवेलियों के बीच में ३५ आड़े रास्ते जो त्रिपोलिया ६००० मंदिर के लंबे आए हैं। उन्हीं के ऊपर यह ३५ और दाएं-बाएं के २, कुल ३७ चबूतरे कमर भर के ऊंचे आए हैं और नीचे बाहरी किनार की तरफ चौरस हवेलियों के बाहर दूसरी मंदिरों की हार के पश्चिम तरफ साथ लगता हुआ जो त्रिपोलिया आया है। इसी के ऊपर चांदनी पर पहला चबूतरा आया है और मध्य में ३६ फिरावे हवेलियों के पंच मोहलों तक आए हैं। इसके आगे भीतरी तरफ ३ मंदिर

Nijanand App

की जगह के ऊपर चेहेबच्चों के आगे एक चबूतरा कमर भर ऊंचा भीतरी तरफ आया है। इस प्रकार ३७ चबूतरे कमर भर ऊंचे आए हैं और नीचे की भोमों में जो हर हवेली के दाएं-बाएं ३-३ मंदिर के चौड़े त्रिपोलिये खड़े हैं, जो २३१ आये हैं। इसी जगह के ऊपर चांदनी पर खड़े रास्ते ३-३ मंदिर के चौड़े और ६५४ मंदिर के लंबे आये हैं। जो चांदनी से कमर भर ऊंचे हैं।

एक चबूतरा ३ मंदिर का चौड़ा है। मध्य भाग के एक मंदिर के स्थान पर कमर भर गहरी एक मंदिर चौड़ी नहर आयी है। इस नहर के दाएं-बाएं १-१ मंदिर की चौड़ी जगह आयी है। उसके मध्य भाग में ३३-३३ हाथ की सुंदर फुलवाड़ी शोभायमान है। फुलवाड़ी के दाएं-बाएं ३३ हाथ की रौंस आयी है। नहरों के मध्य भाग में एक पुल आया है। नहर की लंबाई में पुल के दाएं-बाएं की रौंस से कमर भर की दो सीढ़ियां नहर में उतरी हैं जिसके दाएं-बाएं कठेड़ा आया है। इसी प्रकार नहर के दाएं-बाएं दोनों तरफ फुलवाड़ी और रौंसे आयी हैं। इसी प्रकार सभी आड़े और खड़े चबूतरों की शोभा है।

चार बड़ी नहरों के बीच में एक बगीचा कमर भर नीचा आया है, नहर चबूतरों पर आयी है। चारों कोनों पर जहां ४ नहरें मिली हैं, वहां पर ४ चेहेबच्चे हैं। तब चारों तरफ दो नहरों या दो चबूतरों के बीच एक लाईन में २३१ बगीचे हुए। इसी प्रकार ३७ चबूतरों के बीच ३६ हारें आने से बगीचों की कुल संख्या ८३१६ हुई।

एक बगीचे के मध्य भाग में आड़ी-खड़ी जगह में १-१ मंदिर का चौड़ा चबूतरा कमर भर ऊंचा बड़े चबूतरे के साथ मिलते हुए आया है। एक मंदिर चौड़े चबूतरे के मध्य में १/२ मंदिर की चौड़ी नहरें आयी हैं। इस नहर के दाएं-बाएं २५-२५ हाथ की बची हुई जगह पर सुन्दर रौंस रत्नों से जड़ित आयी हैं। इन ४ छोटी नहरों के मध्य भाग में जहां चार छोटी नहरें आकर मिली हैं, वहां पर चेहेबच्चा आया है, जिसमें पांच चकरीदार फव्वारे लगे हैं, उनका पानी उछलकर फिर उसी चेहेबच्चे में गिरता है। इस बड़े बगीचे में चार चबूतरे छोटे होने से चार छोटे बगीचे आए हैं। इन सब छोटे बगीचों में मंदिर-मंदिर के अंतर पर अनेक प्रकार के फूलों के पौधे हैं। हर एक बगीचे के चारों दिशा में कमर भर सीढ़ी उतरी है, जो इन छोटे बगीचों में आयी है। फिर इन सीढ़ियों के सामने नहरों में भी सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा आया है। बगीचों के चौक में तथा रौंस पर जगह-जगह बैठने के वास्ते सिंहासन और कुर्सियां रखी हैं। चौरस हवेलियों पर फूल के वृक्ष है और, गोल हवेलियों पर दूब आयी है। इसी क्रम से फिर फूल, फिर दूब आयी है। पंचमोहलों पर फल-फूलों के वृक्ष आए हैं।

बड़ी चार नहरों के चार कोनों पर जो ४ चेहेबच्चे हैं, इसके चार फव्वारों का पानी एक दिशा से दूसरे चेहेबच्चों में कमानों द्वारा होकर गिर रहा है। मध्य के फव्वारे का पानी चकरी खाकर फिर इसी में ही पड़ता है। इसी प्रकार सब फव्वारे आये हैं।

हर एक बगीचे को घेरकर देखने की ८-८ और गिनती की ४-४ फुलवाड़ी आयी है। बड़ी नहरें जो १-१ मंदिर की आयी हैं, उसके दाएं-बाएं ३३ हाथ की रौंस छोड़कर ३३-३३ हाथ की चौड़ी दोनों ओर फुलवाड़ी आयी है। तब ८३१६ बगीचों की कुल फुलवाड़ी ३३२६४ आयी है और बाहरी तरफ तथा भीतरी तरफ किनार पर २३१-२३१ फुलवाड़ी अधिक हैं। तब सम्पूर्ण फुलवाड़ी ३३७३६ हुई।

Nijanand App

२४. दसवीं चांदनी पर देहेलान

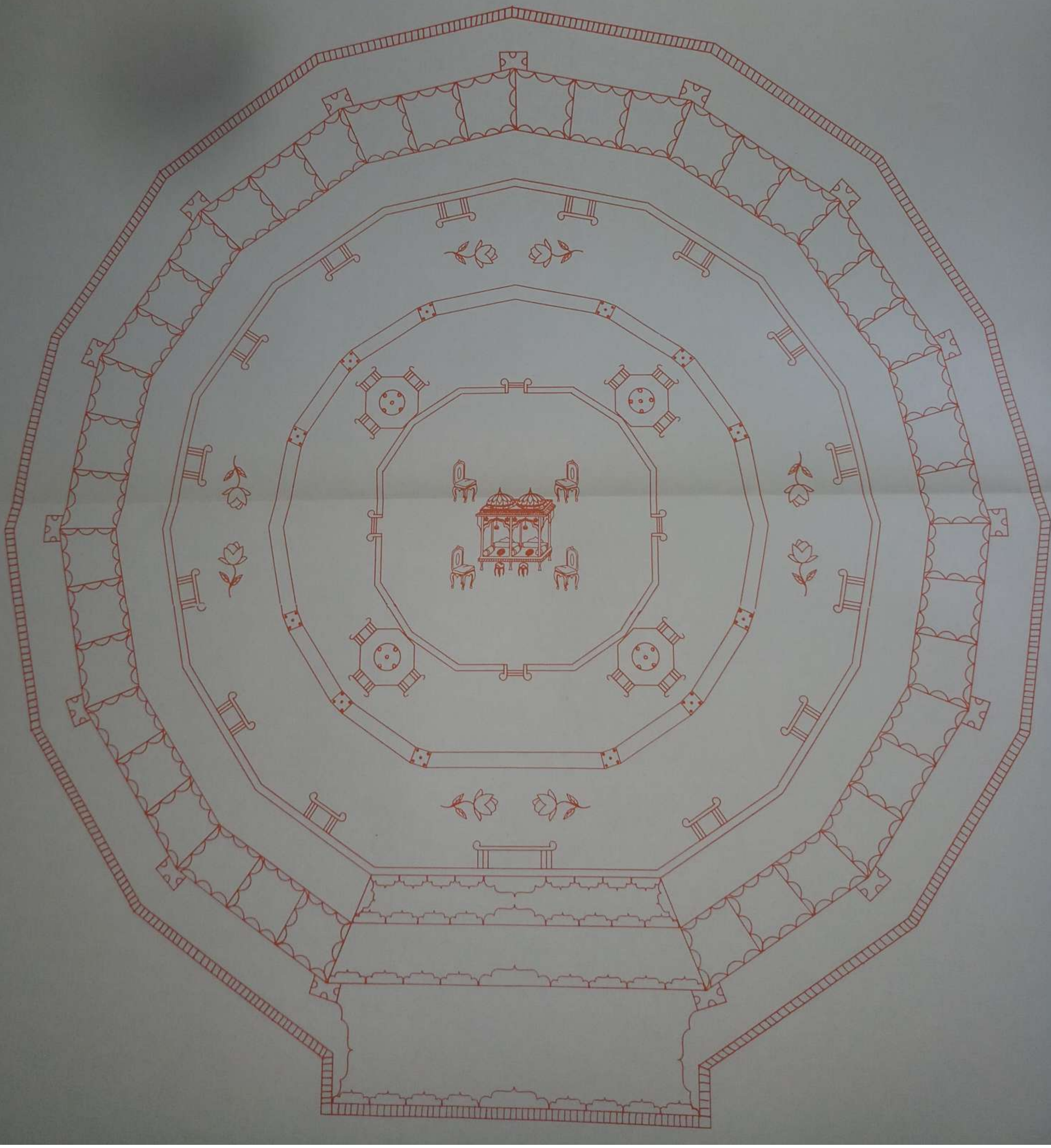

Nijanand App

२४ - दसवीं चांदनी पर देहेलान

रंगभवन की चांदनी के बाहरी चबूतरे के ऊपर भीतरी तरफ १ मंदिर की चौड़ी और ६००० मंदिर की लंबी रौंस घूमी है। इस रौंस के ऊपर चांदे को छोड़ कर कठेड़ा आया है। नीचे की बाहरी हार मंदिरों के ऊपर १ मंदिर की चौड़ी और ५९९० मंदिर की लंबी देहेलान आयी है। यह कमर भर ऊंची रौंस के बाहरी तरफ आई हैं। मंदिरों की जमीन से लगता हुआ बाहरी तरफ १ मंदिर का चौड़ा और ५९९० मंदिर का लंबा पूर्व तरफ के १० मंदिर के छज्जे को छोड़कर २०० पहल का छज्जा आया है। यह छज्जा ९वीं भोम के थंभों पर बना है। इस छज्जे के ऊपर २०१ गुर्ज हांसों के पहल में दो-दो मंदिर के साथ लगकर आए हैं। इस छज्जे की बाहरी किनार पर चारों तरफ घेर के कठेड़ा आया है परन्तु १० मंदिर के हांस के सामने वह कठेड़ा नहीं आया है। दस मंदिर के छज्जे के दाएं-बाएं जो २-२ मंदिर की जगह है, उसकी एक मंदिर की जगह में आकर मिला है।

एक मंदिर की देहलान एक मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। एक मंदिर के एक तरफ ४४ हाथ के ऊंचे थंभ १०० हाथ के अन्तर पर आये हैं। जो दो थंभ अक्सी बगली दीवालों के हैं, उनके सामने आये हैं। इसके ऊपर ४४ हाथ की ऊंची मेहराब आयी है। ऊपर ३ फूल आये हैं। इसके ऊपर १२ हाथ में तरह-तरह की चित्रकारी बनी है। इन २ थंभों के बीच में दो थंभ ३३-३३ हाथ के ऊंचे आये हैं। सो इनके ऊपर ११-११ हाथ की मेहराब आयी है। मध्य मेहराब में दीवाल और इसके दाएं-बाएं ३३-३३ हाथ के लंबे-चौड़े दो दरवाजे आए हैं। इसी तरह की बनक चारों तरफ की आयी है।

एक मंदिर में देखने के ८ दरवाजे और हिसाब में ६ आए हैं, क्योंकि पाखे वाला दरवाजा दोनों मंदिरों में काम देता है दो दरवाजे बाहर छज्जे पर दो भीतरी तरफ रौंस पर तथा बगली दीवालों में दो-दो दरवाजे आये हैं। इस हिसाब से ६ दरवाजे हुए।

एक मंदिर में देखने के १२ थंभ परन्तु हिसाब के ८ आये हैं, जिसमें ४ थंभ ४ कोने वाले और ४ थंभ बगली दीवालों में आये हैं। यह आठों थंभ दोनों मंदिरों में काम करते हैं। इस वास्ते बगली दीवालों से २-२ थंभ पूरे लिए। इस प्रकार हिसाब के ४ थंभ हुए। २ थंभ बाहरी छज्जे की तरफ और २ थंभ भीतरी रौंस पर आये हैं। इस हिसाब से ८ थंभ हुए।

एक मंदिर में अक्सी मेहराबें देखने की ४ और हिसाब की ३ आयी हैं, और बगली तरफ की १/२-१/२ मेहराब लेने से एक अक्सी मेहराब हुई। बाकी १ मेहराब बाहरी छज्जे की तरफ और एक मेहराब भीतरी रौंस पर आयी है। इस हिसाब से ३ मेहराबें हुई। बगली अक्सी दरवाजों की दीवाल से अंदर गोलाई में होकर ऊपर को सीढ़ियां गई हैं।

एक मंदिर में ६ दरवाजे हैं। ५९९० मंदिरों के कुल दरवाजे ३५९४० हुए। परन्तु १० मंदिर की देहलान के दाएं-बाएं के दरवाजे पूरे हैं। इस वास्ते १-१ दरवाजा और बढ़ गया। तब कुल दरवाजे ३५९४२ हुए।

Nijanand App

एक मंदिर में ८ थंभ आये हैं। तब ५९९० मंदिरों के थंभ ४७९२० हुए। परन्तु १० मंदिर की देहेलान के दाएं-बाएं चार कोने वाले ४ थंभों की गिनती देहलान में आएगी। इस वास्ते देहलान के दाएं-बाएं के मंदिर में ७-७ थंभ हुए। परन्तु इन मंदिरों के मध्य वाले भाग के २ थंभ हुए। क्योंकि इन मंदिरों वाले मध्य भाग के दो थंभ बढ़ गए। इसलिए हिसाब ज्यों का त्यों रहा।

एक मंदिर में ३ मेहराबें आयी हैं। ५९९० मंदिरों की सब अक्सी मेहराबें १७९७० हुई। परन्तु १० मंदिर की देहलान के दाएं-बाएं दो अक्सी थंभ पूरे हैं। इस वास्ते दाएं-बाएं तरफ का अक्स आ जाने से सम्पूर्ण अक्सी मेहराबें १७९७२ हुई।

पूर्व तरफ १० मंदिरों के हांस में उत्तर से दक्षिण तरफ १० मंदिर की लंबी और एक मंदिर की चौड़ी पूर्व से पश्चिम तरफ एक देहेलान मंदिरों के दाएं-बाएं सूत में आयी है। जिसमें पूर्व-पश्चिम तरफ १०-१० थंभों की दो हारें आयी हैं। यह कोने वाले ४ थंभ अक्सी आये हैं जिन पर ९-९ मेहराबें आयी हैं। मध्य की दो मेहराबें २ मंदिर की चौड़ी हैं बाकी १६ मेहराबें १-१ मंदिर की चौड़ी आयी हैं इस देहेलान के पूर्व तरफ २ मंदिर की दूरी पर १० थंभ बाहर के छज्जे किनार पर आए हैं जिस पर ९ मेहराबें आयी हैं। मेहराबों के मध्य में बड़ी मेहराब दो मंदिर की लंबी आयी है। सो इन थंभों के बीच कठेड़ा आया है। उत्तर दक्षिण तरफ २-२ मंदिर की जगह आयी है सो इसके बाहर की तरफ १-१ मंदिर की जगह में कठेड़ा आया है और एक-एक मंदिर की जगह में मंदिर भर चौड़े छज्जे पर जाने के लिए रास्ता आया है और १० मंदिर की देहेलान के पश्चिम तरफ एक मंदिर दूरी पर रौंस की किनार पर चबूतरे के पूर्व १० थंभ देहेलान के थंभों के सामने आये हैं, जिस पर ९ मेहराबें आयी हैं। मध्य की मेहराब दो मंदिर की चौड़ी है। इसी के सामने पश्चिम तरफ चांदा आया है। इस प्रकार पूर्व तरफ देहलान ४ मंदिर की चौड़ी और १० मंदिर की लंबी आयी है। जिसमें ४० थंभों पर छत आयी है।

Nijanand App

२५. दसवीं चांदनी पर गुमटियां

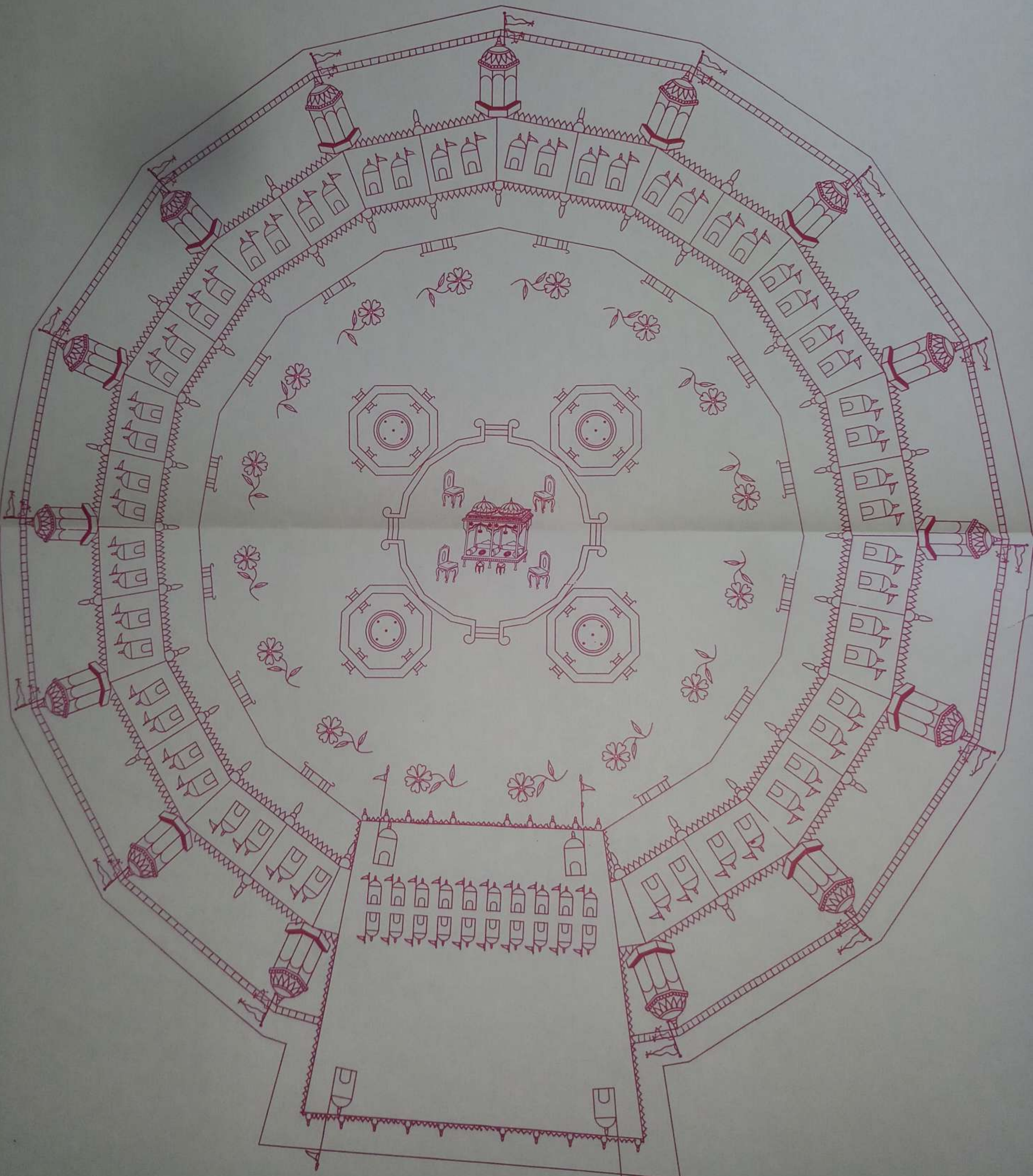

Nijanand App

२५ - दसवीं चांदनी पर गुमटियां

पूर्व की तरफ के एक मंदिर की चांदनी का ब्यान किया जा रहा है। इसी प्रकार सभी मंदिरों की चांदनी आयी है। हर एक मंदिर की चांदनी १००-१०० हाथ की लंबी-चौड़ी आयी है। जिसके पांच भाग हुए। दाएं-बाएं तरफ का भाग १२-१/२-१२-१/२ हाथ का आया है और बीच में तीन भाग २५-२५ हाथ के आये हैं। इन भागों में से अधबीच का छोड़कर दाएं-बाएं तरफ के भाग में २५-२५ हाथ की जगह में एक-एक गुमटी आयी है और मध्य भाग में २५ हाथ की जगह आयी है। ऊपर चार थंभ, ४ मेहराब, ऊपर गुम्मट, ऊपर कलश, ऊपर ध्वजा, पताका वेरखे फहरा रहे हैं। इसी प्रकार दुसरी गुमटी आयी है। इन दोनों गुमटियों के पूर्व-पश्चिम तरफ ३७-१/२-३७-१/२ हाथ की जगह आयी है। इन देहुरियों से दूसरे मंदिर की देहुरियां २५-२५ हाथ की दूरी पर आयी हैं। इस मंदिर की चांदनी के चार कोनों पर चार कंगूरे आए हैं। इन कंगूरों पर भी कलश आये हैं। ऊपर तरह-तरह के ध्वजा पताका आये हैं और घुंघरियां तरह-तरह की आवाज करती हैं। पूर्व-पश्चिम तरफ दो-दो कंगूरों के बीच में सुंदर कांगरी बनी है। एक कंगूरा दो मंदिर की चांदनी पर काम देता है।

पूर्व तरफ ४० थंभों के ऊपर एक ही चांदनी देहेलान की आयी है। चांदनी पूर्व से पश्चिम तरफ ४ मंदिर की चौड़ी और उत्तर से दक्षिण तरफ १० मंदिर की लंबी आयी है। जमीन से ११ भोम की ऊंचाई पर आयी है। यह चांदनी दाएं-बाएं मंदिरों से मिलती हुई एक समान आयी है। और दाएं-बाएं की गुमटियों की सूत में इस चांदनी पर २० गुमटियां आयी हैं।

२० गुमटियों के पूर्व तरफ २ मंदिर ३७ हाथ की दूरी पर किनार पर १० कंगूरे आये हैं। मध्य भाग में दो मंदिर के फासले पर दो कंगूरे आये हैं। बाकी सब मंदिर-मंदिर के फासले पर आये हैं। इन कंगूरों पर ध्वजा पताका सब आये हैं। दो-दो कंगूरों के बीच में कांगरी आयी है। इस चांदनी पर दक्षिण तरफ किनार पर एक मंदिर ३४ हाथ की जगह पर सुन्दर कांगरी आयी है। यह कांगरी पूर्व से पश्चिम तरफ जाकर गुर्जों के मध्य भाग में मिल गयी है। इसी तरह उत्तर तरफ भी कांगरी आयी है। पूर्व और उत्तर तरफ कांगरी से २५ हाथ की दूरी पर भीतरी तरफ एक गुमटी चांदनी पर २५ हाथ की लंबी-चौड़ी लाल रंग की आयी है। इसी प्रकार दक्षिण तरफ की कांगरी से २५ हाथ की दूरी पर भीतरी तरफ चांदनी पर दूसरी गुमटी लाल रंग की २५ हाथ की लंबी-चौड़ी आयी है। दोनों गुमटियों पर ध्वजा, पताका आये हैं।

२० गुमटियों के पश्चिम तरफ एक मंदिर ३७ हाथ की दूरी पर भीतरी किनार पर १० मंदिर की जगह पर १० कंगूरे, कांगरी, ध्वजा, पताका सब पूर्व की तरह आये हैं। चांदनी के दाएं-बाएं अर्थात् उत्तर-दक्षिण तरफ मंदिर-मंदिर की जगह में सुंदर कांगरी आयी है। यह कांगरी भीतरी तरफ रौंस के ऊपर आयी है और दो गुमटियां लाल रंग की दोनों कोनों से २५-२५ हाथ की दूरी पर पूर्व तरफ की दोनों गुमटियों जैसी आयी हैं। इस तरह पूर्व की चांदनी पर २४ देहुरियां आयी हैं।

Nijanand App

२५ - दसवीं चांदनी पर गुमटियां

पूर्व की तरफ के एक मंदिर की चांदनी का ब्यान किया जा रहा है। इसी प्रकार सभी मंदिरों की चांदनी आयी है। हर एक मंदिर की चांदनी १००-१०० हाथ की लंबी-चौड़ी आयी है। जिसके पांच भाग हुए। दाएं-बाएं तरफ का भाग १२-१/२-१२-१/२ हाथ का आया है और बीच में तीन भाग २५-२५ हाथ के आये हैं। इन भागों में से अधबीच का छोड़कर दाएं-बाएं तरफ के भाग में २५-२५ हाथ की जगह में एक-एक गुमटी आयी है और मध्य भाग में २५ हाथ की जगह आयी है। ऊपर चार थंभ, ४ मेहराब, ऊपर गुम्मट, ऊपर कलश, ऊपर ध्वजा, पताका वेरखे फहरा रहे हैं। इसी प्रकार दुसरी गुमटी आयी है। इन दोनों गुमटियों के पूर्व-पश्चिम तरफ ३७-१/२-३७-१/२ हाथ की जगह आयी है। इन देहुरियों से दूसरे मंदिर की देहुरियां २५-२५ हाथ की दूरी पर आयी हैं। इस मंदिर की चांदनी के चार कोनों पर चार कंगूरे आए हैं। इन कंगूरों पर भी कलश आये हैं। ऊपर तरह-तरह के ध्वजा पताका आये हैं और घुंघरियां तरह-तरह की आवाज करती हैं। पूर्व-पश्चिम तरफ दो-दो कंगूरों के बीच में सुंदर कांगरी बनी है। एक कंगूरा दो मंदिर की चांदनी पर काम देता है।

पूर्व तरफ ४० थंभों के ऊपर एक ही चांदनी देहेलान की आयी है। चांदनी पूर्व से पश्चिम तरफ ४ मंदिर की चौड़ी और उत्तर से दक्षिण तरफ १० मंदिर की लंबी आयी है। जमीन से ११ भोम की ऊंचाई पर आयी है। यह चांदनी दाएं-बाएं मंदिरों से मिलती हुई एक समान आयी है। और दाएं-बाएं की गुमटियों की सूत में इस चांदनी पर २० गुमटियां आयी हैं।

२० गुमटियों के पूर्व तरफ २ मंदिर ३७ हाथ की दूरी पर किनार पर १० कंगूरे आये हैं। मध्य भाग में दो मंदिर के फासले पर दो कंगूरे आये हैं। बाकी सब मंदिर-मंदिर के फासले पर आये हैं। इन कंगूरों पर ध्वजा पताका सब आये हैं। दो-दो कंगूरों के बीच में कांगरी आयी है। इस चांदनी पर दक्षिण तरफ किनार पर एक मंदिर ३४ हाथ की जगह पर सुन्दर कांगरी आयी है। यह कांगरी पूर्व से पश्चिम तरफ जाकर गुर्जों के मध्य भाग में मिल गयी है। इसी तरह उत्तर तरफ भी कांगरी आयी है। पूर्व और उत्तर तरफ कांगरी से २५ हाथ की दूरी पर भीतरी तरफ एक गुमटी चांदनी पर २५ हाथ की लंबी-चौड़ी लाल रंग की आयी है। इसी प्रकार दक्षिण तरफ की कांगरी से २५ हाथ की दूरी पर भीतरी तरफ चांदनी पर दूसरी गुमटी लाल रंग की २५ हाथ की लंबी-चौड़ी आयी है। दोनों गुमटियों पर ध्वजा, पताका आये हैं।

२० गुमटियों के पश्चिम तरफ एक मंदिर ३७ हाथ की दूरी पर भीतरी किनार पर १० मंदिर की जगह पर १० कंगूरे, कांगरी, ध्वजा, पताका सब पूर्व की तरह आये हैं। चांदनी के दाएं-बाएं अर्थात् उत्तर-दक्षिण तरफ मंदिर-मंदिर की जगह में सुंदर कांगरी आयी है। यह कांगरी भीतरी तरफ रौंस के ऊपर आयी है और दो गुमटियां लाल रंग की दोनों कोनों से २५-२५ हाथ की दूरी पर पूर्व तरफ की दोनों गुमटियों जैसी आयी हैं। इस तरह पूर्व की चांदनी पर २४ देहुरियां आयी हैं।

Nijanand App

५९९० मंदिरों की चांदनी पर ११९८० गुमटियां आयी हैं और २४ गुमटियां पूर्व तरफ की देहेलान की चांदनी पर आयी हैं। तब सम्पूर्ण गुमटियां १२००४ हुई। गुमटियों सहित ऊंचाई १२ भोम की आयी है।

५९९० मंदिर घेरकर के आये हैं। हर एक मंदिर के पाखे की दीवाल की चांदनी पर बाहरी तरफ ५९९१ कंगूरे आने चाहिए, परन्तु २०१ हांसों के गुर्जों के मध्य भाग में २०१ कंगूरे नहीं आये। इस वास्ते बाहर की तरफ ५७९० कंगूरे आये हैं।

चांदनी के भीतरी तरफ इन्हीं कंगूरों के सामने ५९९१ कंगूरे आए हैं और १० मंदिर की देहलान की चांदनी के ऊपर बाहर की तरफ १० कंगूरे आये हैं। भीतरी तरफ ४ मंदिर की दूरी पर १० कंगूरे आये हैं। तब सम्पूर्ण कंगूरे ११८०१ हुए। इन पर कलश, ऊपर ध्वजा, पताका फहरा रही हैं। दो कंगूरों के बीच बाहर और भीतरी तरफ नूरमयी कांगरी की अपरम्पार शोभा है।

एक गुर्ज बाहरी मंदिरों की रौंस से १० भोम ऊपर उठकर हांस-हांस के कोने पर २०१ चौरस गुर्ज ६६-६६ हाथ के लंबे-चौड़े मंदिरों की चांदनी के बाहरी तरफ साथ लगकर यहां तक आए हैं। इनकी छत ६६-६६ हाथ की लंबी-चौड़ी आयी है। एक गुर्ज की ११वीं चांदनी के चारों तरफ कोनों पर ४ थंभ आए हैं और ऊपर ४ मेहराबें आयी हैं। ऊपर गुम्मट, ऊपर कलश, ऊपर ध्वजा, पताका, वेरखे रंग-बिरंगे फहरा रहे हैं। घूंघरी तरह-तरह की आवाजें कर रही हैं। इसी प्रकार से २०१ गुर्ज आये हैं।

पूर्णमासी के दिन शाम को तीन बजे सुखपालों में बैठकर सब सैर करने जाते हैं। दो घड़ी तक वनों में सैर करते हैं। उसके बाद पौने चार बजे सुखपाल रंगभवन की दसवीं चांदनी के मंदिर भर के बाहर की तरफ छज्जे पर आके खड़े होते हैं। तब सब सुखपालों से उतर कर छज्जों पर खड़े होते हैं। श्री राजजी का हुकम पाकर सुखपाल अपने ठिकानों पर चले जाते हैं। तब श्री राजजी सखियों को लेकर मंदिरों की हार को पारकर रौंस से कमर भर सीढ़ी उतर कर बगीचों में जाते हैं। यहीं चार घड़ी तक खेल तमाशा करते हैं। इसके बाद एक घड़ी तक झीलना करके एक घड़ी में श्रृंगार सजकर, ६ बजे श्री राजश्यामा जी को सभी प्रणाम करते हैं। इसके बाद चांदनी पर तरह-तरह के खेल तमाशे करते हैं, कभी चबूतरों पर बैठकर हांस-विनोद करते हैं।

इस प्रकार रात ११.३० बजे तक आनंद विहार करते हैं। इसके बाद दो घड़ी तक मध्य चबूतरे पर बैठकर आरोगते हैं। फिर श्री राजश्यामा जी सब सखियों को लेकर भोम भर की सीढ़ी उतरकर नौमी भोम, नौमी भोम से ८वीं, ७वीं, ६ठी, ५वीं भोम में आये। ३६ हवेलियों को पार करके २८ मंदिरों की जगह को पार कर आगे ३१५ मंदिर की जगह चलकर रंगपरवाली मंदिर में आकर रात के १२ बजे श्री युगल स्वरूप शयन करते हैं। बाकी सब सखियां अपने-२ मंदिरों में अपने-२ पिया के साथ विलास करते हुए शयन करती हैं।

Nijanand App

२६. अमृत वन का दृश्य

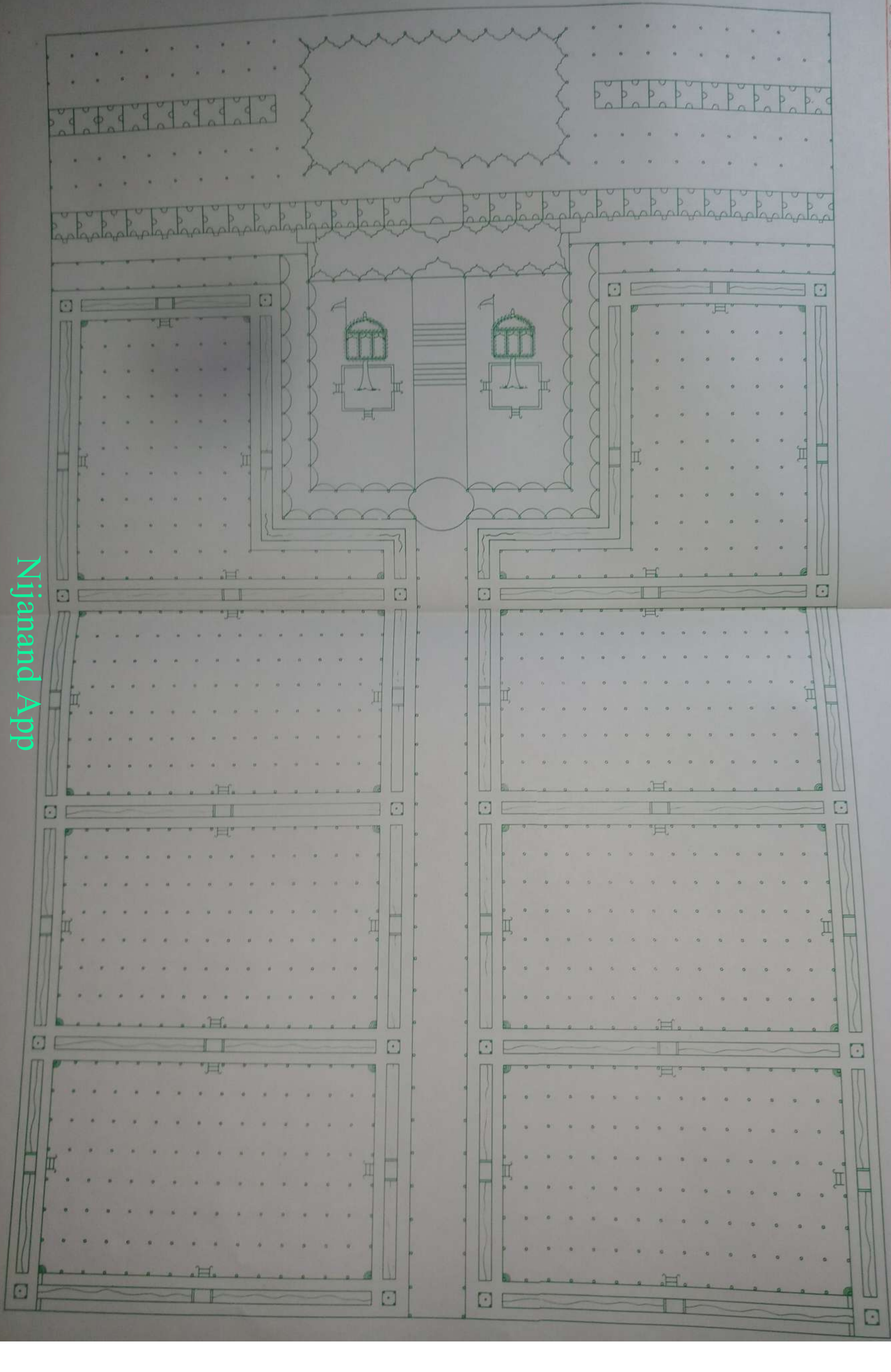

Nijanand App

२६ - अमृत वन का दृश्य

चांदनी चौक के दक्षिण तरफ दो बगीचे जाम्बू और नारंगी के आये हैं और उत्तर तरफ अनार, लिबोई और केल के आये हैं। इनके मध्य २००० मंदिर का लंबा और ५०० मंदिर का चौड़ा अमृत वन आया है। रंगभवन के बड़े दरवाजे के सामने जो भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं इन सीढ़ियों से दक्षिण तरफ ८२ मंदिर की जगह आयी है। उत्तर तरफ भी इतनी ही आयी है और दो मंदिर के मध्य में सीढ़ियों की जगह है। इस प्रकार १६६ मंदिर की लम्बी जगह हुई। पूर्व से पश्चिम भी १६६ मंदिर का चौड़ा है। चांदनी चौक में दो चबूतरे दाएं-बाएं ३३-३३ मंदिर के लंबे-चौड़े कमर भर ऊंचे आये हैं। चबूतरे के चारों तरफ सीढ़ियां आयी हैं। चबूतरे के चारों तरफ सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा आया है। इस चबूतरे के मध्य भाग में एक मंदिर की मोटाई में पेड़ आया है। वृक्षों की दो भोम तीसरी चांदनी आयी है। चांदनी पर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब शोभायमान हैं। दक्षिण तरफ अशोक का वृक्ष है। इस चबूतरे की जोगबाई हरे रंग की है। उत्तर तरफ आम का वृक्ष है। इस चबूतरे की जोगबाई लाल रंग की है। लाल वृक्ष के उत्तर तरफ और हरे वृक्ष की दक्षिण तरफ ३३ मंदिर की जगह है। दोनों चबूतरों के बीच ३४ मंदिर की जगह आयी है। चबूतरों की जगह को छोड़कर पश्चिम (धाम) की तरफ और पूर्व (श्री यमुना जी) की तरफ ६६-१/२-६६-१/२ मंदिर की जगह है। भोम भर की सीढ़ियों के सामने दो मंदिर चौड़ी (उत्तर से दक्षिण) और १६६ मंदिर की लंबी (पूर्व से पश्चिम) एक रौंस अमृतवन की मध्य रौंस से जाकर मिल गयी है। इस रौंस पर नग जड़े हुए हैं।यहां रेती नहीं आयी है। चबूतरे को छोड़कर चारों तरफ घेरकर सुन्दर रंगों की रेती बिछी हुई है। ऐसा लगता है कि मानो हीरे, माणिक, मोती, पन्ने और परवाल आदि अनेक नग बिछे हैं।

चांदनी चौक के पूर्व, उत्तर तथा दक्षिण में दो मंदिर की चौड़ी रौंस आयी है। पश्चिम तरफ मध्य भाग में दस मंदिर का लंबा उत्तर से दक्षिण तरफ और एक मंदिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम, श्री रंग भवन के साथ चबूतरे से लगकर बाहर की तरफ चबूतरा निकला हुआ है।

अमृत वन के मध्य भाग में २ मंदिर की चौड़ी रौंस आ जाने से दो बगीचे दिखाई देते हैं। अमृत वन के बगीचे के चारों तरफ रौंस आयी है। श्री रंग भवन की दीवाल के साथ पश्चिम की तरफ दो मंदिर की चौड़ी और दक्षिण से उत्तर तरफ १६६ मंदिर की लम्बी आयी है। फिर पश्चिम से पूर्व चांदनी चौक के साथ लगकर १६६ मंदिर की लंबी आयी है। फिर दक्षिण से उत्तर ८४ मंदिर तक गई है, फिर पश्चिम से पूर्व तरफ जाकर वन रौंस से मिल गई है। फिर वन रौंस और अमृत वन के बगीचे के साथ लगकर २५० मंदिर उत्तर से दक्षिण तरफ गई। फिर पूर्व से पश्चिम तरफ अमृत और जाम्बू वन के बीच में २००० मंदिर लम्बी जाकर धाम चबूतरा के साथ जाकर मिली है। रौंस के साथ-२ अमृत वन के चारों तरफ चबूतरा आया है। अमृत वन में पांच आड़े चबूतरे दो मंदिर के चौड़े (पूर्व-पश्चिम तरफ) आए हैं। हर एक चबूतरे के मध्य में एक मंदिर की जगह में नहर भोम भर गहरी आयी है। चबूतरे के दोनों किनारों पर वृक्षों की दो हारें आयी हैं। पांच आड़ी नहरों के बीच में चार बगीचे आए हैं। हर एक बगीचा ५०० मंदिर का लंबा (पूर्व से पश्चिम), २४८ मंदिर चौड़ा (उत्तर से

Nijanand App

दक्षिण) आया है। इन बगीचों में दो-दो मंदिर के अन्तर पर वृक्ष हैं। इस प्रकार १२५ वृक्षों की २५० हारें आने से एक बगीचे के कुल वृक्ष १२५००० हुए परन्तु चांदनी चौक की जगह में वृक्ष नहीं आए हैं। आधे चांदनी चौक में ४१ वृक्षों की ८२ हारें नहीं आयी, इस कारण से इस बगीचे के वृक्ष कम आए हैं।

इसी प्रकार से अमृत वन के उत्तर तरफ के बगीचों की शोभा आयी है। अमृत वन के किनारे पर आम के वृक्ष आये हैं। बाकी जगह में सब प्रकार के वृक्ष आये हैं। अमृत वन की दो भोम तीसरी चांदनी आयी है। लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू और नारंगी इन पांचों बगीचों की एक छत आयी है। लिबोई के उत्तर केल वन दो भोम तक तो पांचों बगीचों के समान आया है, परन्तु इसके ऊपर बड़े वन के वृक्ष केल रूप हो गए हैं तथा पांच भोम तक गए हैं। इस कारण से केल वन की तीन भोम और ऊपर गई है।

Nijanand App

२७. श्री रंग मोहोल की नजदीकी परिकरमा की शोभा

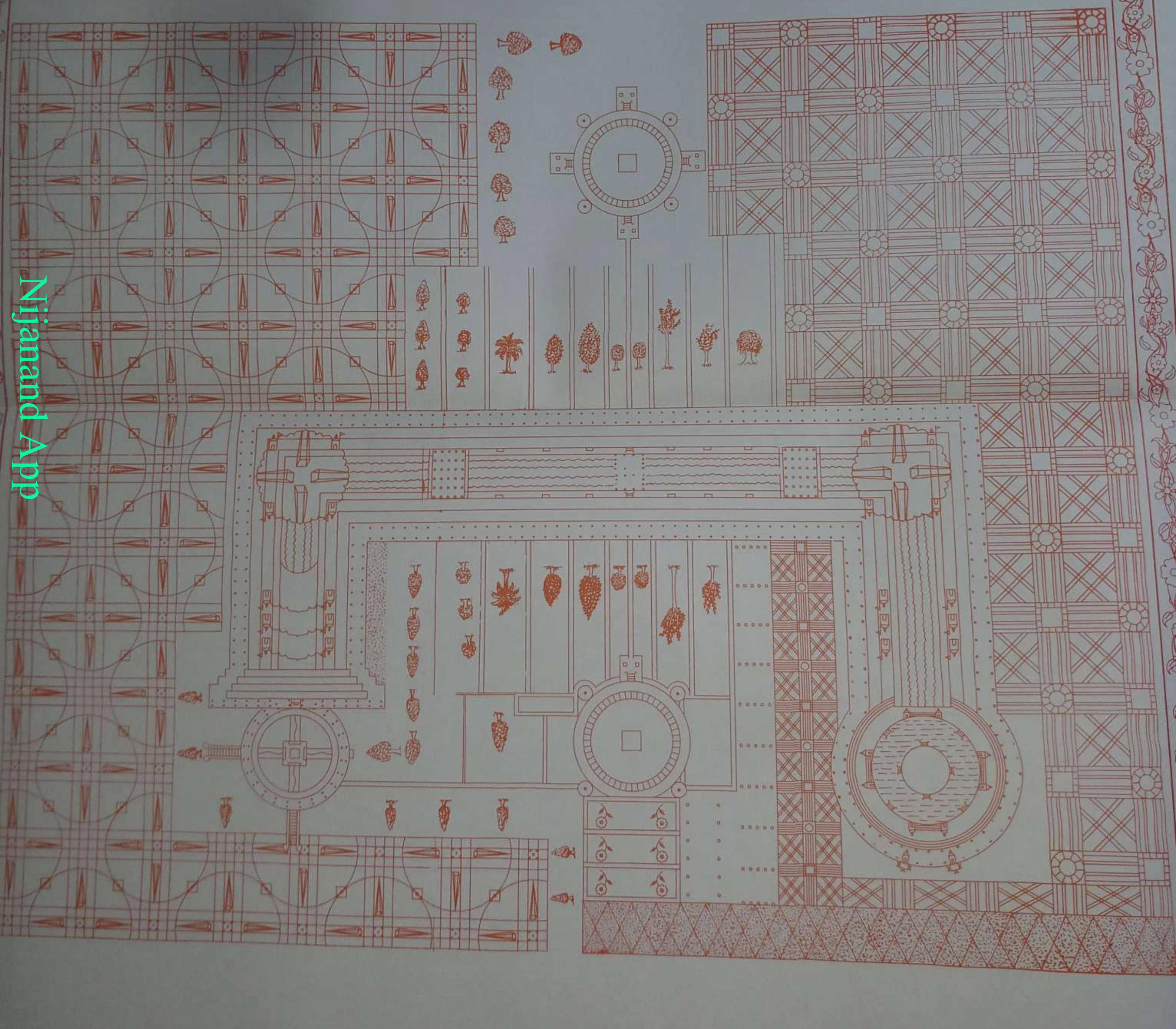

Nijanand App

२७ - श्री रंग मोहोल की नजदीकी परिकरमा की शोभा

श्री परमधाम के बीचो-बीच में रंगमहल आया हुआ है, जिसकी नव भोम एंव दसवीं चांदनी है। रंगमहल की दो हजार मंदिर (दो लाख कोस) की लंबाई-चौड़ाई और ६ हजार मंदिर (६ लाख कोस) की परिकरमा आयी है। रंगमहल की पूरब दिशा में अनार, अमृत एवं जाम्बू ये तीन वन आये हुए हैं। इन तीनों वनों के उत्तर में लिबोई, केल वन, मधुवन एवं महावन आये हुए हैं तथा दक्षिण में नारंगी, वट, कुंज एवं निकुन्ज वन आये हैं। केल, लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू, नारंगी एवं वट इन सातों घाटों की लम्बाई दो हजार मंदिर की तथा चौड़ाई पांच सौ मंदिर की आयी है। सातों घाटों के वनों के वृक्षों की ऊंचाई दो भोम तीसरी चांदनी आयी है। बड़ोवन के पांच वृक्ष केल वन के अन्दर होते हुए केल वन के रूप में होकर श्री यमुना जी की पाल के ऊपर आये हुए हैं। पाल के ऊपर सातों घाटों के सामने से होते हुए सातों घाटों के वृक्षों के रूप में होकर वट घाट के अन्दर होकर आगे पश्चिम में गये हैं। इनकी पांच भोम छठी चांदनी आयी है। इनके पांचों भोम में हिंडोले लगे हुए हैं। रंगमहल से पूरब दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी में श्री यमुना जी शोभायमान हो रही हैं। श्री यमुनाजी से साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर अक्षर धाम आया हुआ है। रंगमहल के ठीक सामने पूरब दिशा में अमृत घाट के सामने बीचो-बीच में यमुना जी के ऊपर पाट घाट आया हुआ है, जिसकी एक भोम की ऊंचाई है। पाट घाट से दक्षिण और उत्तर में वट और केल का पुल आया हुआ है। यह पांच भोम ऊंचा है। इसकी पांचों भोमों में हिंडोले आये हैं।

श्री रंगमहल की दक्षिण दिशा में रंगमोहोल से लगते हुए १५०० मंदिर की लंबाई और ५०० मंदिर की चौड़ाई में वट-पीपल की चौकी आयी हुई है। इसकी चार भोम एवं पांचवीं चांदनी आयी हुई है। इसकी चारों भोमों में हिंडोले लगे हुए हैं। वट-पीपल की चौकी की दक्षिण दिशा में वट के घाट के बड़ो वन के पांच वृक्ष आये हुए हैं। इसके दक्षिण दिशा में कुन्ज निकुन्ज आया हुआ है, जिसकी दो भोम तीसरी चांदनी है। रंग महल से साढ़े चार लाख कोस की दूरी में दक्षिण में एक हीरे का हौज-कौसर का तालाब आया हुआ है, जिसके चारों दिशाओं में चार घाट आये हुए हैं। पूरब में सोलह देहूरी का घाट, दक्षिण में तेरह देहूरी का घाट, पश्चिम में झुण्ड का घाट तथा उत्तर में नव देहूरी का घाट आया है। ताल के बीचो-बीच में टापू मोहोल आया हुआ है जिसकी तीन भोम चौथी चांदनी है। हौज-कौसर तालाब की ढलकती एवं चौरस पाल के ऊपर ५ हार बड़ोवन के वृक्षों की आयी है, जिनके पांचो भोमों में हिंडोले शोभायमान हो रहे हैं।

रंगमहल की पश्चिम दिशा में रंगमहल से लगते हुए जमीन पर नूर बाग आया हुआ है। नूर बाग की चांदनी पर फूल बाग आया है। इन दोनों की लंबाई १५०० मंदिर (डेढ़ लाख कोस) की आयी है। नूर बाग के पश्चिम में डेढ लाख कोस की लंबाई मे अन्न वन आया हुआ है। अन्न वन के पश्चिम में डेढ़ लाख कोस की लंबाई में दूब-दूलीचा आया हुआ है। दूब-दूलीचा के पश्चिम में साढ़े चार लाख कोस का चौड़ा तथा नौ लाख कोस की लंबी पश्चिम की चौगान आयी है।

Nijanand App

रंग महल की उत्तर दिशा में रंगमहल से लगते हुए १२०० मंदिर का लंबा तथा ३० मंदिर का चौड़ा लाल चबूतरा आया है। लाल चबूतरे के आगे १२०० मंदिर की लंबाई में ४० हांस (१२०० मंदिर) की लंबाई-चौड़ाई में बड़ो वन के वृक्ष आये हैं। बड़ो वन में ४१ वृक्षों की ४१ हारें आयी हैं। लाल चबूतरे की तरफ से ४१ वृक्षों की १७ हांरों के वृक्षों की ऊंचाई दस भोम के (रंग महल की चांदनी) बराबर एक ही भोम आयी है।

बाकी ४१ वृक्षों की २४ हारों के वृक्षों की ऊंचाई २५० भोम की आयी है। लाल चबूतरे की पूरब दिशा में रंग मोहोल से लगते हुए १० हांस (३०० मंदिर) की चौड़ाई तथा १७ हांस (५१० मंदिर) की लंबाई में ताड़वन के १६९ बगीचे आये हैं। एक बगीचे के स्थान पर खड़ोकली आ गयी है। ताड़ वन की ऊंचाई रंगमहल की चांदनी के बराबर आयी है। बड़ो वन के उत्तर दिशा में मधुवन ५०० भोम का ऊंचा आया हुआ है। मधुवन के उत्तर दिशा में महावन १००० भोम का ऊंचा आया हुआ है। महावन से लगते हुए रंगमहल से साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर पुखराजी पहाड़ आया हुआ है, जिसकी ऊंचाई आठ लाख कोस की आयी है। पुखराजी पहाड़ के पश्चिम और उत्तर दिशा में दो घाटियां (सीढ़ियां) आयी हैं।

पुखराजी पहाड़ के पांचवें पेड़ से श्री यमुना जी का जल आठ लाख कोस ऊपर से उतर कर पुखराजी ताल में आता है। पुखराजी ताल से अधबीच के कुण्ड में आता है। अधबीच के कुण्ड की तलहटी से होते हुए ढंपो चबूतरे एवं मूलकुण्ड से होकर श्री यमुना जी के रूप में प्रवाहित हो रहा है। यमुना जी मूल कुण्ड से होते हुए पूरब दिशा में आती हैं। ईशान कोण से मरोड़ खाकर केल के पुल, पाट-घाट एवं वट के पुल से होते हुए अग्नि कोण से मरोड़ खाकर पश्चिम दिशा में हौज कौसर तालाब के अन्दर प्रवेश करती हैं।

Nijanand App

२८. सोलह हांस का चेहेबच्चा

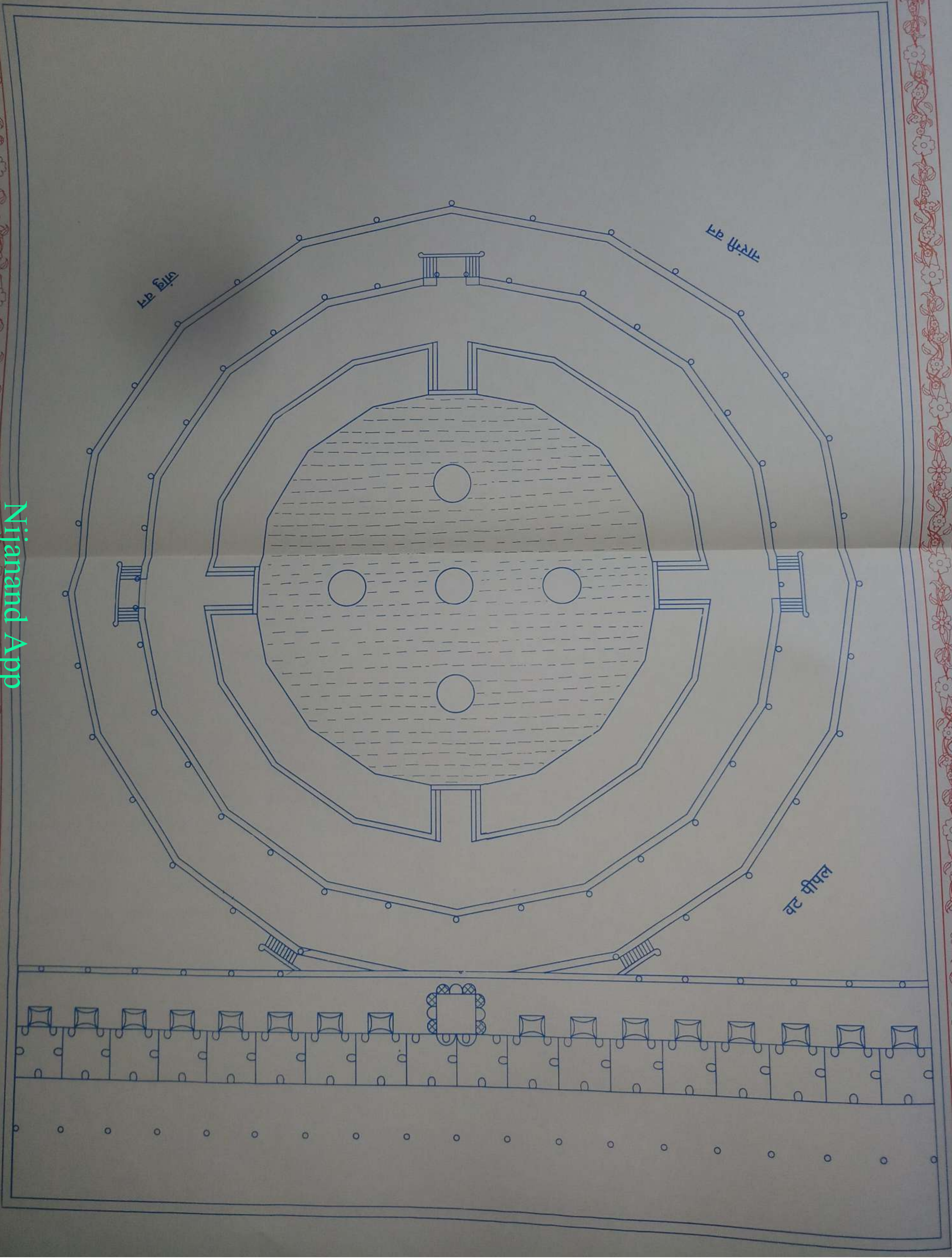

Nijanand App

२८ - सोलह हांस का चेहेबच्चा

एक चेहेबच्चा के १६ हांस आये हैं। एक हांस ३० मंदिर का आया है। एक हांस चेहेबच्चे का श्री रंगभवन की रौंस से मिला है। इस वास्ते रंग भवन के ३० झरोखे चेहेबच्चे के हांस में आये हैं। इसी प्रकार चारों तरफ १२० मंदिर बढ़ोत्तरी के चारों चेहबच्चों पर आये हैं। इस वास्ते हर एक दिशा में १५०० मंदिर की जगह यथार्थ रह गयी है। यदि बाहिर की दीवाल से हिसाब बांधा जाता तो चारों चेहेबच्चे श्री रंगभवन से अलग हो जाते। अगर साथ मिलाते तो दायें-बायें के बगीचों में जगह कम हो जाती है।

श्री रंगभवन के अग्नि कोने में तले के जमीन से एक कोट दीवाल मंदिर भर की चौड़ी और भोम भर का ऊंचा गोलाकृत एक चबूतरा १६ हांस का उठा। हर एक हांस ३०-३० मंदिर का आया है। तब इस कोट की गृद ४८० मंदिर की हुई और लंबाई चौड़ाई १६०-१६० मंदिर की हुई। श्री रंगभवन के पूर्व-ईशान कोनें से लेकर अग्नि कोनें में ५१ गुर्ज आये हैं। उस गुर्ज के सामने पूर्व तरफ जो ३३ हाथ की चौड़ी रौंस आयी है, इस रौंस के किनार पर जो चबूतरे के हांस का कोना आया है। इस कोने के दायें-बायें तरफ के हांस में से १५-१५ मंदिर की जगह में इस कोट का पश्चिम का हांस मिला है और बाकी के १५ हांस दीवाल को छोड़कर चारों तरफ आये हैं। मानों चेहेबच्चे की दीवाल ४५० मंदिर श्री रंगभवन के चबूतरे की दीवाल से बाहिर निकली हुई शोभा ले रही है।

जमीन से भोम भर की कोट की ऊंचाई से जो भीतर तरफ देखिए तो १५८ मंदिर का लंबा चौड़ा १६ हांस का ४७४ मंदिर का गृद एक पानी का चेहेबच्चा मानों एक ताल दो भोम का गहरा दिखायी दे रहा है। इस ताल के चारों तरफ मंदिर भर की रौंस कोट दीवाल पर आयी है।

पानी के चारों तरफ एक मंदिर की चौड़ी रौंस एक मंदिर की कोट दीवाल के ऊपर आयी है। इस रौंस के भीतर कमर भर जल की गहराई में कोट की दीवाल में से एक मंदिर का चौड़ा छज्जा चारों तरफ निकला है। चारों दिशा में हांसों के मध्य भाग में कमर भर के ऊंचे चार चबूतरे एक-एक मंदिर के लंबे-चौड़े रौंस के बराबर उठे। इन चबूतरों के भीतरी जल तरफ कठेड़े लगे हुए हैं और दायें-बायें तरफ कमर भर की सीढ़ी जल के चबूतरे (छज्जा) पर उतरी है। यहां पर कमर भर का पानी भरा है। यदि इस छज्जे के भीतरी तरफ जायें, तो दो भोम का गहरा पानी भरा है। चांदों की सीढ़ियां छोड़कर बाकी में कठेड़ा लगा है।

इस पानी के चेहेबच्चे को घेर करके एक मंदिर की चौड़ी रौंस आयी है और वह रौंस श्री रंगभवन के मंदिरों के आगे जो एक मंदिर की रौंस आयी है, यहां एक बराबर आयी है। मानों दो मंदिर की चौड़ी पूर्व से पश्चिम तरफ और ३० मंदिर की लंबी उत्तर से दक्षिण तरफ उस हांस पर दिखायी देगी, जो पश्चिम तरफ मिली है। चेहेबच्चे की बाहरी रौंस की बाहरी किनार (वन तरफ) भोम भर नीची दो मंदिर की चौड़ी रौंस पर कोट की दीवाल के साथ लगकर एक मंदिर का चौड़ा, और पानी तरफ दो मंदिर की लंबाई आयी हैं। इस प्रकार तीन चबूतरे भोम भर के ऊंचे उठकर चेहेबच्चा की रौंस के बराबर आये हैं। इन चबूतरों के चौक एक-एक मंदिर के चौड़े और दो-दो मंदिर के लंबे आये हैं। इन चबूतरों के दायें-बायें

Nijanand App

तरफ भोम भर की सीढ़ी नीचे की रौंस पर उतरी है। चबूतरे के चौक के वन तरफ तथा सीढ़ियों के वन तरफ कठेड़े आये हैं। चबूतरे के चौक के भीतरी तरफ रौंस आयी है और सीढ़ियों के भीतरी तरफ कोट दीवाल आयी है। इसी प्रकार से तीनों दिशाओं में चांदों की शोभा जानना। चेहेबच्चा के पश्चिम तरफ जो हांस आये हैं जो रंग भवन के साथ मिला है। इस हांस के दायें बायें तरफ अर्थात् उत्तर दक्षिण तरफ चेहेबच्चा के नैरित्य और वायव्य कोना कहे गये हैं। इसके साथ लगकर श्री रंगभवन तथा चेहेबच्चा के बीच की जगह में एक मंदिर का लंबा चौड़ा नीचे से ऊपर तक एक चबूतरा आया है। इस चबूतरे पर धाम की रौंस से तथा चेहेबच्चा की रौंस से आ जा सकते हैं। इस चबूतरे से उत्तर तरफ भोम भर की सीढ़ी नीचे की रौंस पर उतरी है। यह सीढ़ी रंगभवन के चबूतरे तथा चेहेबच्चे की कोट दीवाल के साथ लगकर आयी है। इसी प्रकार से मध्य हांस के दक्षिण तरफ चौक और सीढ़ी आयी है।

तीनों चांदों की जगह छोड़कर तथा पश्चिम तरफ एक हांस दो मंदिर की जगह (जो दो चौक एक-एक मंदिर के आये हैं जहां से नीचे सीढ़ियां उतरी हैं) छोड़कर चारों तरफ घेर के ४४२ मंदिर की जगह में कठेड़ा आया है।

चेहेबच्चे की गृद ४८० मंदिर की आयी है जिसके उत्तर, दक्षिण और पूर्व तरफ चांदे आये हैं। पश्चिमी तरफ का हांस रंगभवन के चबूतरे के साथ लगा हुआ है। एक चांदे के मध्य भाग से लेकर दूसरे चांदे के मध्य भाग तक १२० मंदिर की जगह आयी है। इस प्रकार चारों चादों का ब्यान है।

चेहेबच्चे के पश्चिम हांस के उत्तर अर्थात् वायव्य कोने के साथ लगकर पहला वृक्ष जाम्बू का एक मंदिर के चबूतरे के चौक के ऊपर आया है। यहां से लेकर उत्तर के चांदे के पश्चिम तरफ चांदे के चौक के साथ लगकर सीढ़ियों के बीच में चबूतरे की पिठौर में दो-दो मंदिर के अन्तर पर ५३ वृक्ष जाम्बू वन के लगे हुए हैं। जिन पर बावन मेहराबें चेहेबच्चे की रौंस से २२ हाथ की ऊंचाई पर आयी हैं। बावन मेहराबों के बीच में १०४ मंदिर की जगह हुई १५ मंदिर पश्चिम तरफ के हांस के छूट गये हैं और एक मंदिर उत्तर तरफ के आधे चांदे का छूट गया है। इस प्रकार १२० मंदिर की जगह उत्तर के मध्य चांदे तक हुई। उत्तर चांदे के चौक के पूर्व तरफ साथ लगकर सीढ़ियों के बीच में पहला वृक्ष जाम्बू का हुआ। इन वृक्षों से लेकर पूर्व के चांदे के उत्तर तरफ सीढ़ियों के बीच में यहां तक ६० वृक्ष जाम्बू के आये हैं और उन पर ५९ मेहराबें आयी है। इन वृक्षों के बीच में ११८ मंदिर की जगह हुई और एक मेहराब उत्तर के चांदे पर आयी है। तब १२० मंदिर की जगह पूर्ण हुई। एक मंदिर उत्तर के चांदे की और एक मंदिर पूर्व के चांदे की जगह ली, जिससे १२० मंदिर होते हैं। वायब्य कोने से लेकर पूर्व के चांदे तक ११३ वृक्ष जाम्बू के, चेहेबच्चा की दीवाल के साथ लगकर रौंस पर आये हैं जिनके ऊपर ११२ मेहराबें दिखायी दे रही हैं।

चेहबच्चे के पूर्व तरफ के चांदे से लगता हुआ सीढ़ियों के बीच में दक्षिण तरफ का पहला वृक्ष नारंगी का आया है। इस वृक्ष से लेकर चेहेबच्चे के दक्षिण तरफ के चांदे के चौक से लगता हुआ पूर्व तरफ सीढ़ियों के बीच में जो वृक्ष आया है, यहां तक ६० वृक्ष नारंगी के आये हैं, जो चबूतरे की पिठौर में आये हैं। चेहेबच्चे के ऊपर रौंस से २२ हाथ की ऊंचाई

Nijanand App

पर ५९ मेहराबें वृक्षों के ऊपर आयी हैं। इस प्रकार से १२० मंदिर का हिसाब हुआ। चेहेबच्चे के कोट को घेरकर दो मंदिर की चौड़ी रौंस आयी है। इस रौंस से लगता हुआ एक चबूतरा नारंगी बन में चेहेबच्चे के दक्षिण तरफ के चांदे तक आया है। फिर घूमकर दक्षिण तरफ चला गया है।

इस चेहेबच्चे के दक्षिण तरफ के चांदे से, पश्चिम तरफ की दीवाल से लेकर चेहेबच्चे के नैरित्य कोने तक वट पीपल की चौकी की हद आयी है। इस चेहेबच्चे की कोट दीवाल से लगकर और श्री रंगभवन के दक्षिण तरफ अग्नि कोने में एक मंदिर की चौड़ी रौंस के साथ लगकर नहर का एक चबूतरा वट पीपल की चौकी का आया है। फिर इस चबूतरे की दक्षिण तरफ ९८-१/२ मंदिर की लंबी एक नहर चेहेबच्चे की कोट दीवाल से लगकर ८० मंदिर तक आयी है। फिर इसके आगे चेहेबच्चे के दक्षिण तरफ का हांस गोलाई लेकर पूर्व तरफ घूम गया है। श्री रंगभवन के दक्षिण तरफ बड़े चेहेबच्चे के नैरित्य कोने की तरफ एक वृक्ष वट का इस चबूतरा के सामने ५० मंदिर की दूरी पर आया है। इस वृक्ष ने ५२ मंदिर का छत्री मण्डल पूर्व तरफ ला कर चेहेबच्चे के जल के चबूतरे तक अपनी छत्तरी चारो तरफ बांधी है। छत्तरी ने नैरित्य कोने की सीढ़ियों से लेकर दक्षिण तरफ के आधे चांदे तक १०५ मंदिर की जगह में छाया कर रखी है।

जाम्बू के ११३ वृक्षों ने और नारंगी के ६० वृक्षों ने दो मंदिर की लंबी छत्री ला कर चेहेबच्चे के जल के चबूतरे तक अपना छत्री मण्डल बांधा है। चेहेबच्चे की रौंस से ऊपर देखिए तो २२ हाथ की ऊंचाई पर चारों तरफ वृक्षों ने अपना छत्री मण्डल बांधा है और कठेड़ा चारों तरफ शोभा ले रहा है। इस छत्री से ७८ हाथ की ऊंचाई पर चेहेबच्चे के चारों तरफ वृक्षों ने दूसरा छत्री मंडल बांधा है, जहां वृक्षों की दूसरी भोम आयी है। वहां पर चारों तरफ कठेड़ा दिखायी दे रहा है। यह कठेड़ा जाम्बू नारंगी की चांदनी तथा चौकी की तीसरी भोम का कठेड़ा जानना। चौकी की दो भोम और ऊपर आयी हैं। उनके कठेड़े भी दिखायी दे रहे हैं। जिस प्रकार से अग्नि कोने के चेहेबच्चे का ब्यान किया गया, उसी प्रकार से श्री रंगभवन के चारों कोनों में आये हुए चेहेबच्चों का ब्यान जानना। केवल चेहेबच्चों पर वृक्षों का छत्री मण्डल अलग-अलग प्रकार का आया है।

Nijanand App

२९. वट पीपल की चौकी

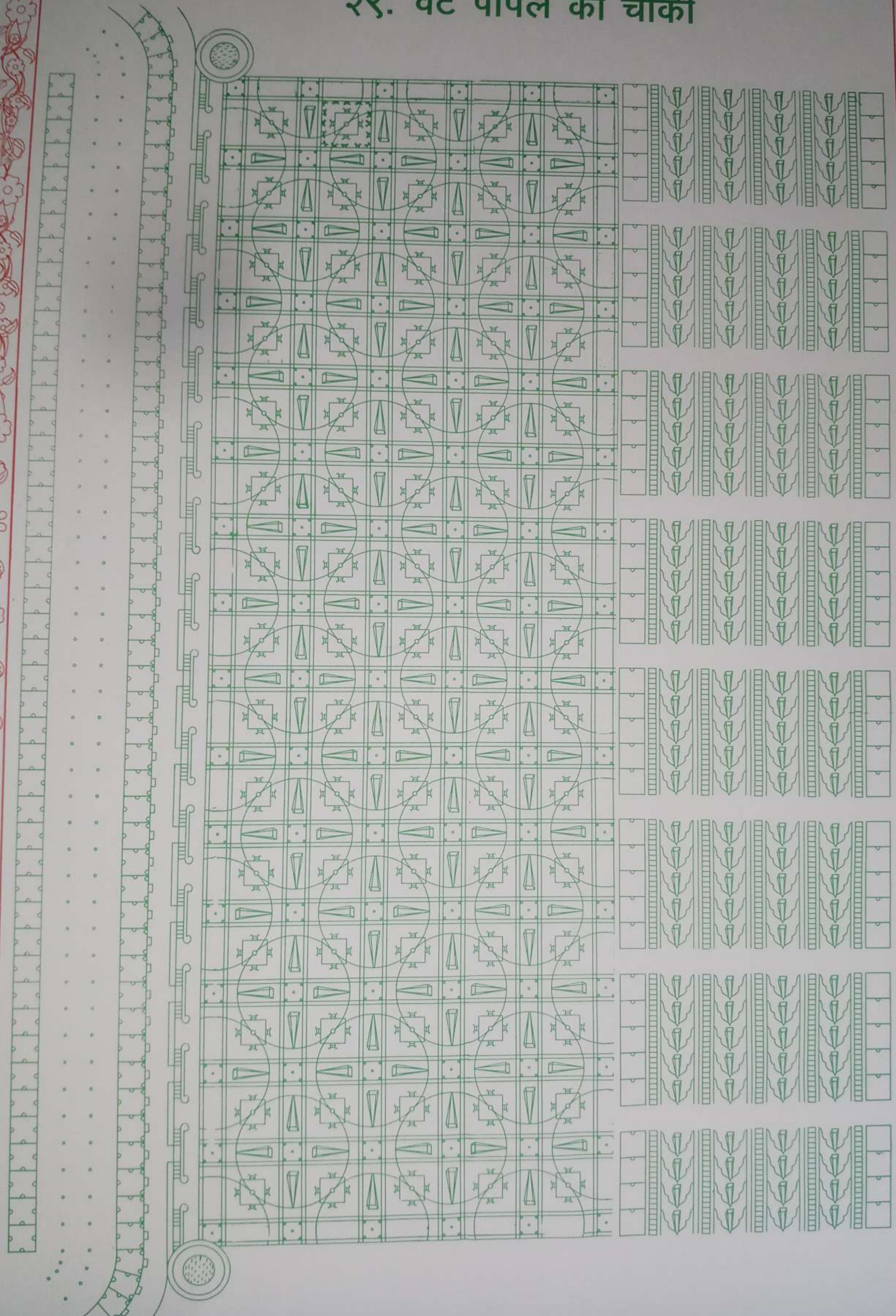

Nijanand App

२९ - बट पीपल की चौकी

श्री रंग भवन के दक्षिण की तरफ पचास हांस में बट पीपल की चौकी है। यह चौकी ५०० मंदिर चौड़ी (उत्तर से दक्षिण तरफ) और १५०० मंदिर की लंबी (पूर्व से पश्चिम तरफ) है। धाम चबूतरे के साथ लगकर एक मंदिर की चौड़ी और १५०० मंदिर की लंबी रौंस जमीन पर आयी हैं। इस रौंस पर ५० चांदों की सीढ़ियां धाम रौंस से उतरी है। जो हर हांस के मध्य में आयी है। चेहेबच्चे का जो हांस रंगभवन के साथ मिला है, उसके दाएं-बाएं एक-एक मंदिर का लंबा-चौड़ा चौक बना है। इन चौकों के साथ भोम भर की सीढ़ी उतरी है। इन चेहेबच्चों से पानी गुप्त रूप से बट पीपल की चौकी में जाता है।

धाम चबूतरे की रौंस के साथ लगकर दक्षिण तरफ एक मंदिर का चौड़ा और १५०० मंदिर का लंबा एक चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है। इसी प्रकार ९८-१/२-९८-१/२ मंदिरों की जगह छोड़कर ६ चबूतरे आए हैं। नारंगी बाग तथा बट पीपल की चौकी के बीच रौंस दो मंदिर की चौड़ी है। इस रौंस के साथ लगकर पहला चबूतरा कमर भर ऊंचा, एक मंदिर का चौड़ा, ५०० मंदिर का लंबा उत्तर से दक्षिण तरफ आया है। फिर पश्चिम की तरफ ९८ मंदिर ९३-१/२ हाथ की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा आया है। इसी प्रकार ९८ मंदिर ९३-१/२ हाथ की जगह छोड़कर १६ चबूतरे आये हैं।

एक चबूतरे के मध्य में आधे मंदिर की चौड़ी और एक भोम गहरी नहर आयी है। इसके दाएं-बाएं १/४ मंदिर की जगह में कमर भर ऊंची रौंस बनी है। इस रौंस से दोनों तरफ (वन तथा नहर) कमर भर की सीढ़ियां जगह-जगह पर उतरी हैं। रौंसों में सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा शोभा ले रहा है। नहर के मध्य भाग में १/२ मंदिर के लंबे-चौड़े पुल आए हैं।

चार रौंस के बीच में एक चौक कमर भर नीचा आया है। उत्तर से दक्षिण तरफ ५ चौक आए हैं तथा पूर्व से पश्चिम तरफ १५ चौक हैं, इस प्रकार ५ चौकों की १५ हारें आयी हैं। इस प्रकार कुल चौक ७५ हुए। एक चौक के मध्य में ३३ मंदिर का लंबा-चौड़ा और कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। चारों तरफ सीढ़ी चौक की जमीन पर उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा आया है। चबूतरे के मध्य भाग में एक मंदिर का मोटा पीपल का वृक्ष आया है। इस चबूतरे पर सुन्दर गिलम बिछी है। हर दिशा में एक-एक सिंहासन और दाएं-बाएं तीन-तीन हजार कुर्सियां हैं। इस प्रकार ५ की १५ हारें आने से कुल ७५ वृक्ष हुए। एक वृक्ष बट का तथा दूसरा पीपल का है दो वृक्षों के बीच १०० मंदिर की जगह आयी है, जिसमें एक मेहेराब आयी है तथा मेहराब के मध्य भाग में एक चकरी है, जिसमें एक-एक हिंडोला नहरों पर झूलने के लिए लटक रहा है। छत, पत्ती और सुंदर डालियों से भरी हुई है। हर एक भोम के सब हिंडोले उत्तर से दक्षिण १४ की ५ हारें आने से ७० हिंडोले, पूर्व से पश्चिम ४ की १५ हारें आने से ६० हिंडोले हुए। इस प्रकार, कुल १३० हिंडोले आये हैं। चार भोम के कुल ५२० हिंडोले हुए।

Nijanand App

चार वृक्षों के बीच में एक चौक आया है। ऐसे उत्तर से दक्षिण तरफ १४ चौकों की चार हारें आने से कुल चौक ५६ हुए। हर एक चौक नहरों तथा रौंसों सहित १००-१०० मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। हर चौकी के चारों कोनों पर चार-चार नहरों में चार चेहेबच्चे आये हैं। हर चेहेबच्चे में पांच फव्वारे चकरीदार आए हैं। चेहेबच्चे के चारों तरफ रौंस आयी है। रौंस के चारों तरफ कठेड़ा है। चेहेबच्चे १/२-१/२ मंदिर के लंबे-चौड़े भोम भर गहरे आये हैं। पूर्व से पश्चिम ६ की १६ हारें आने से ९६ चेहेबच्चे आये हैं। चांदनी के चारों कोनों पर चार चबूतरे कमर भर ऊंचे एक-एक मंदिर के लंबे-चौड़े आये हैं, जिनके मध्य में एक चेहेबच्चा आया है। ये चेहेबच्चे पांच भोम के गहरे आये हैं। इस प्रकार से चार चेहेबच्चे पांचवीं चांदनी पर आये हैं। तब, कुल १०० चेहेबच्चे बट पीपल की चौकी में आये हैं।

रंग भवन के दक्षिण तरफ जो १५ वृक्ष बट पीपल की चौकी के आये हैं, इन वृक्षों ने पहली भोम की ऊंचाई से उत्तर तरफ २२ सीढ़ियां बनाकर फिर २ मंदिर सीधा उत्तर तरफ चलकर झरोखों के साथ और रंगभवन की दीवाल के साथ मिलान किया है। इस प्रकार, इन वृक्षों ने १५०० मंदिर का लंबा और दो मंदिर का चौड़ा छत्री मण्डल बांधा है। बट पीपल की चौकी की चार भोम और पांचवीं चांदनी आयी है।

Nijanand App

३०. फूल बाग के सौ बगीचे

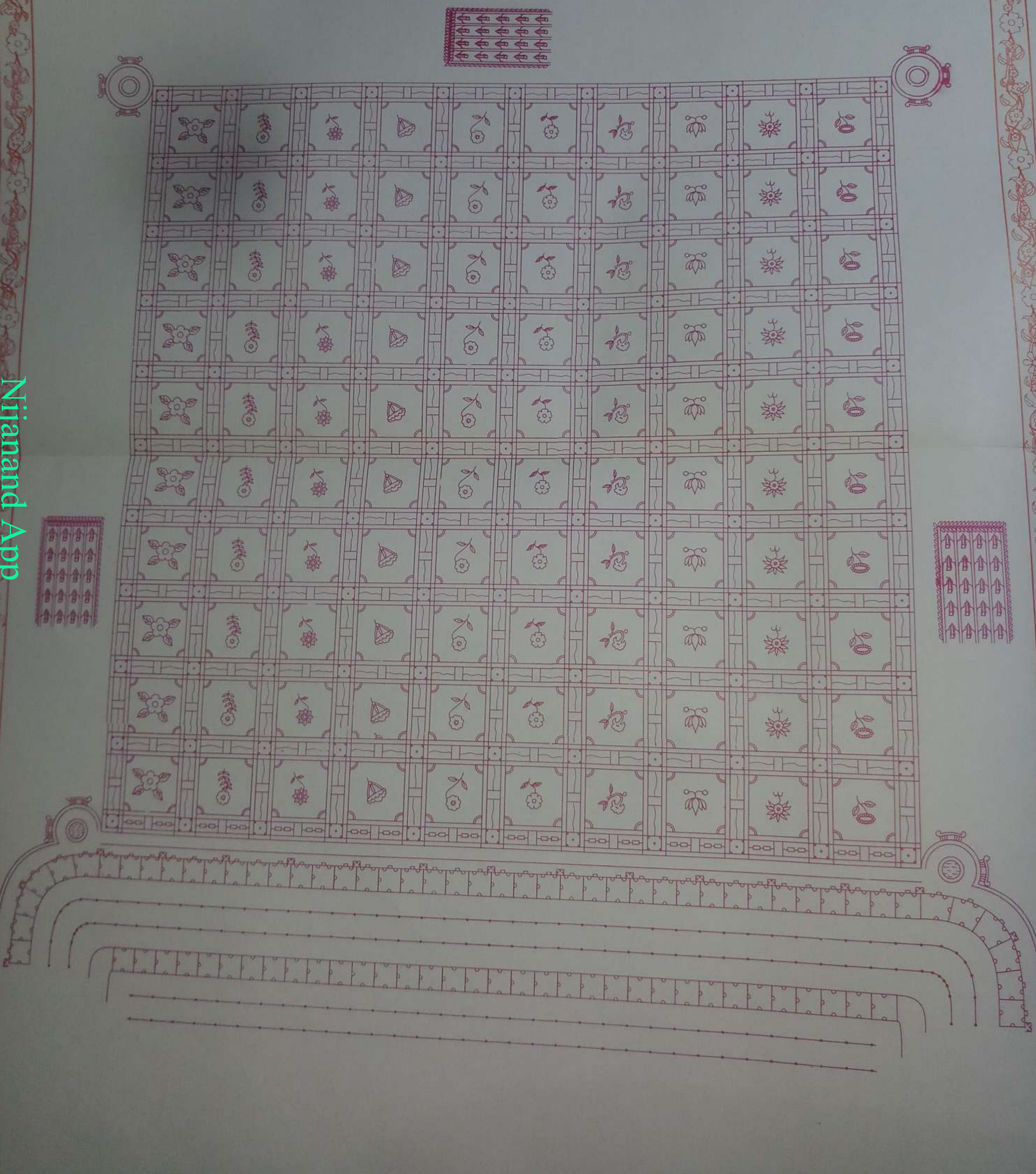

Nijanand App

३० - फूलबाग के सौ बगीचे

रंग भवन के पश्चिम तरफ रौंस के साथ लगकर जो दक्षिण का खड़ा चबूतरा फूल बाग का पूर्व से पश्चिम तरफ गया है। इस चबूतरे के साथ दक्षिण तरफ ३५ वृक्षों ने दक्षिण तरफ ५ मंदिर की छत्री बढ़ाकर बड़े चेहेबच्चे के डूबे हुए जल चबूतरों पर छत्री मण्डल बांधा है (दो भोम का) इस फूल बाग के वृक्षों की ऊंचाई दो भोम की आयी है।

श्री रंगभवन के नैरित्य कोने से लेकर वायव्य कोने तक ५० हांस आये हैं। १५०० मंदिर के पश्चिम तरफ एक मंदिर चौड़ी धाम रौंस आयी है। इस धाम रौंस से भोम भर नीचे जमीन पर १५०० मंदिर की लंबाई-चौड़ाई में १०० बगीचे नूरबाग के आये हैं। इस नूरबाग में ६६००० लोह थंभ एक भोम में कमर भर कम अर्थात् धाम रौंस से कमर भर नीचे तक आकर एक ही छत १५०० मंदिर की लंबी-चौड़ी आयी है। यह १५०० मंदिर का हिसाब भीतरी मंदिरों से किया गया है। बाहरी हार के केवल १४७० मंदिर इस फूलबाग के सामने आये हैं। ३०-३० मंदिर नैरित्य कोने और वायव्य कोने के चेहेबच्चे पर आये हैं। फूलबाग में इन्हीं बड़े चेहेबच्चों से गुप्ता-गुप्त पानी जाता है।

फूलबाग के चारों कोनों पर चार चेहेबच्चे १६-१६ हांस के आये हैं। जिसमें दो चेहेबच्चे श्री रंगभवन के नैरित्य तथा वायव्य कोने के हैं। सो वही फूलबाग के अग्नि कोने और ईशान कोने के चेहेबच्चे कहे जाते हैं। नूरबाग और अन्नबन की सन्ध के बाहर बड़ोवन की जगह में दो चेहेबच्चे १६-१६ हांस के नैरित्य कोने और वायव्य कोने में आये हैं।

श्री रंगभवन की रौंस के साथ लगकर नूरबाग की चांदनी पर पूर्व से पश्चिम तरफ पौने तीन-तीन मंदिर का चौड़ा और नैरित्य कोने के चेहेबच्चे की कोट दीवाल से लेकर वायव्य कोने के चेहेबच्चे की कोट दीवाल तक १५०० मंदिर का दक्षिण से उत्तर तरफ कमर भर का ऊंचा चबूतरा पहला आया है। इस चबूतरे के पश्चिम तरफ १४७ मंदिर की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा पहले चबूतरे की लंबाई-चौड़ाई की भांति आया है। इसी प्रकार से १४७-१४७ मंदिर की दूरी पर बीच में जगह छोड़कर ११ चबूतरे आये हैं। इन ११ चबूतरों के बीच में १० संन्धे आयी हैं। तब १० सन्धों की जगह १४७० मंदिर की हुई। ११ चबूतरों की जगह ३० मंदिर की हुई। इस प्रकार १५०० मंदिर की चौड़ाई फूलबाग की हुई।

दक्षिण तरफ नैरित्य कोने के चेहेबच्चे की कोट दीवाल से लगकर २-३/४ मंदिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर तरफ धाम रौंस के साथ पहला चबूतरा आड़ा आया है, इस चबूतरे के पूर्व तरफ की रौंस की किनार के साथ लगकर पहला चबूतरा खड़ा १५०० मंदिर का लंबा पूर्व से पश्चिम तरफ कमर भर ऊंचा इस नूरबाग की चांदनी के दक्षिण किनारे पर आया है। फिर उत्तर तरफ १४७ मंदिर की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा आड़े चबूतरे के पश्चिम तरफ की रौंस के साथ लगकर पौने तीन मंदिर का चौड़ा, दक्षिण से उत्तर तरफ और पूर्व से पश्चिम तरफ १४९७-१/४ मंदिर का लंबा कमर भर का ऊंचा आया है। इसी प्रकार उत्तर तरफ १४७ मंदिर की जगह छोड़कर ९ चबूतरे और आये हैं जिनमें ८ चबूतरे और चबूतरों जैसे आये हैं। और नवां चबूतरा पहले चबूतरे जैसा आया है। इन ११ चबूतरों के बीच में १० सन्धें आयी हैं। जिसमें १४७० मंदिर की जगह हुई और ३० मंदिर की जगह ११ चबूतरों की हुई।

फूलबाग के एक चबूतरे का ब्यान इस प्रकार है। इसी तरह सब चबूतरों की शोभा आयी है। चबूतरों के मध्य भाग में पौन मंदिर की चौड़ी और कमर भर की गहरी एक नहर आयी है। इस नहर के दाएं-बाएं एक-एक मंदिर की जगह आयी है, जिसके मध्य भाग में सुन्दर फुलवाड़ी आयी है। इसके दाएं-बाएं रौंस फूलबाग की जमीन से कमर भर की ऊंची

Nijanand App

आयी है । इसी प्रकार से नहरों के दाएं-बाएं तरफ भी दो रौंसें और मध्य में फुलवाड़ी आयी है ।

दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर चबूतरों के बाहरी किनार के बाहरी तरफ चबूतरों से कमर भर नीचे एक मंदिर का चौड़ा छज्जा नूरबाग की छत से तीनों तरफ निकला है । बगीचे में रौंसों से सीढ़ी उतरी हैं । इन्हीं सीढ़ियों के सामने नहर की बाहरी रौंस से कमर भर की सीढ़ियां छज्जों पर उतरी हैं और फूल बाग के चारों तरफ कोने पर चार चेहेबच्चे आये हैं । ये फूलबाग के छज्जे लंबे जाकर बड़े चेहेबच्चों की कोट दीवालों से मिले हैं । चेहेबच्चों की रौंस पर छज्जे से कमर भर की सीढ़ी चढ़कर जा सकते हैं । इस छज्जे के बाहरी तरफ लगकर बड़ोवन के पांच वृक्ष चौड़ाई तरफ आये हैं । छज्जों से होकर बड़ोवन की दूसरी भोम में जा सकते हैं । ११ नहरों के बीच में १० चौक आये हैं । पूर्व से पश्चिम तथा दक्षिण से उत्तर १० की १० हारें आने से कुल १०० चौक आये हैं । १०० चौकों में १०० बगीचे आये हैं । एक बगीचे की लंबाई १४७ मंदिर की आयी है । दाएं-बाए आधा-आधा चबूतरा लेने से १५० मंदिर का लंबा-चौड़ा एक बगीचा हुआ । एक चौक के चारों तरफ एक रौंस ३३ हाथ की चौड़ी, ५८९ मंदिर ३३ हाथ की लंबी आयी है । इस रौंस से चौक की तरफ चारों दिशा में १६ सीढ़ियां कमर भर की उतरी हैं । इन सीढ़ियों की जगह को छोड़कर सभी जगह कठेड़ा आया है । चारों कोनों की सीढ़ियां गोलाई में उतरी हैं । इस रौंस से बाहर चारों तरफ ३३ हाथ की चौड़ी और ५९० मंदिर ६६ हाथ की लंबी एक फुलवाड़ी आयी है । इस फुलवाड़ी के बाहर चारों तरफ ३३ हाथ की चौड़ी ५९२ मंदिर की लंबी नहर के साथ एक रौंस आयी है । इस रौंस से जल तरफ चारों दिशा में १६ सीढ़ियां कमर भर की उतरी हैं और चार सीढ़ियां चारों कोनों में गोलाई में चारों चेहेबच्चों में उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

फूलबाग के एक चौक के चारों तरफ कोनों पर नहरों के बीच में चार चेहेबच्चे आये हैं । एक चेहेबच्चे में ५ फव्वारे हैं । चारों दिशाओं के फव्वारों का पानी उछलकर कमानों द्वारा होकर चार चेहेबच्चों में पड़ता है और चार चेहेबच्चों का पानी उछल कर एक चेहेबच्चे में पड़ता है । मध्य का फव्वारा चकरावदार है । इसका पानी चकरी खाकर इसी में पड़ता है । चेहेबच्चे के चारों कोनों से सीढ़ियां गोलाईदार होकर पानी में उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा आया है । इसी प्रकार की शोभा चारों चेहेबच्चों की आयी है ।

रंगभवन के पश्चिम तरफ मंदिरों के साथ लगकर एक मंदिर की चौड़ी धाम रौंस आयी है । इस धाम रौंस के साथ लगकर पश्चिम तरफ जो पहला आड़ा चबूतरा है, उसके मध्य में पौन मंदिर की चौड़ी और १४९४-१/२ मंदिर की लंबी दक्षिण से उत्तर तरफ एक नहर आयी है । इस नहर के दक्षिण-उत्तर तरफ पौने तीन-तीन मंदिर का चौड़ा एक-एक चबूतरा धाम रौंस के साथ लगकर १५००-१५०० मंदिर का लंबा पूर्व से पश्चिम चला गया है । उस बड़ी नहर पर एक-एक पुल पौन-पौन मंदिर के चौड़े बगीचों के मध्य भाग के सामने आने-जाने के वास्ते हैं। दस पुलों के बीच ९ सन्धे हैं । आधी-आधी सन्ध उत्तर-दक्षिण तरफ आयी है । दो पुलों के बीच में १४९ मंदिर की जगह आयी है । इस १४९ मंदिर की जगह में ३०० चेहेबच्चे आए हैं । इस प्रकार, बड़ी नहर में सब ३००० चेहेबच्चे हुए । इन चेहेबच्चों के पूर्व तरफ श्री रंगभवन की दीवाल में १४७० झरोखे आये हैं । इसी वास्ते कहीं पर चेहेबच्चे दरवाजो के सामने, कहीं पर झरोखों के सामने आये हैं । श्री राजश्यामा जी तथा समस्त सुंदर साथ उन झरोखों में जाकर बैठते हैं । यह झरोखे नहर की रौंस से कमर भर ही ऊंचे आये हैं । सामने फव्वारे उछल रहे हैं । दो मंदिर की दूरी से कोई -कोई बूंद उड़कर मोतियों के समान श्री राजश्यामा जी तथा सखियों के ऊपर पड़ती हैं । इस प्रकार अपरम्पार शोभा है ।

Nijanand App

३१. फूल बाग के एक बगीचा (सम्पूर्ण दृश्य)

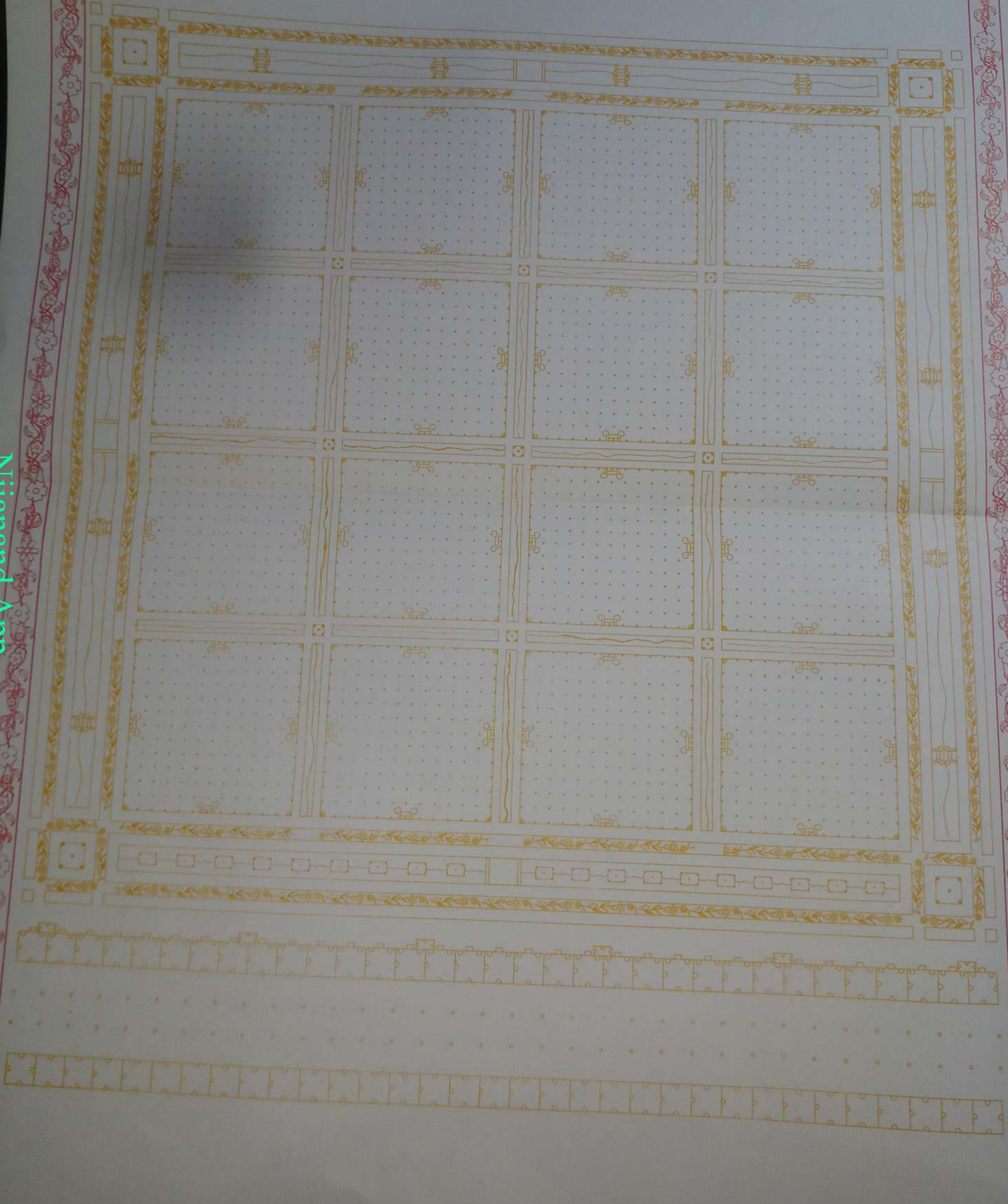

Nijanand App

३१ - फूलबाग का एक बगीचा (सम्पूर्ण दृश्य)

फूलबाग में १०० बगीचे आये हैं, उनमें से एक बगीचे की शोभा का वर्णन किया जा रहा है। इसी प्रकार, सब बगीचों की बनक आयी है। एक बगीचे की लंबाई १४७ मंदिर की आयी है। दाएं-बाएं १-१/२-१-१/२ मंदिर का चबूतरा लेने से १५० मंदिर का लंबा-चौड़ा एक बगीचा हुआ।

आड़ी-खड़ी नहरों के चबूतरे की रौंस के किनारे से पश्चिम तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर एक चबूतरा आड़ा एक मंदिर का चौड़ा उत्तर से दक्षिण तरफ कमर भर का ऊंचा आया है। इस चबूतरे के पश्चिम किनारे से पश्चिम तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर दूसरा चबूतरा पहले चबूतरे जैसा आया है। इसी प्रकार ३६ मंदिर की दूरी पर तीसरा चबूतरा आया है। तीसरे चबूतरे के पश्चिम तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर बड़े चबूतरे की किनार आयी है। इस प्रकार एक बगीचे में तीन आड़े चबूतरे आये हैं।

बड़ी नहर खड़ी आयी है। इस नहर के बाहरी रौंस के उत्तर की किनारे से ३६ मंदिर उत्तर तरफ एक चबूतरा दक्षिण से उत्तर तरफ एक मंदिर का चौड़ा १४७ मंदिर का लंबा पूर्व से पश्चिम कमर भर का ऊंचा आया है। इस चबूतरे के उत्तर तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर दूसरा चबूतरा तथा इसी प्रकार से ३६ मंदिर की दूरी पर तीसरा चबूतरा पहले जैसा आया है। तीसरे चबूतरे के ३६ मंदिर की दूरी पर बड़े चबूतरे की किनार आयी है। इस प्रकार से एक चौक में आड़े-खड़े सब २४ चबूतरे आये हैं। हर एक चबूतरा ३६ मंदिर का लंबा और एक-एक मंदिर का चौड़ा आया है। इस प्रकार एक चौक में १६ बगीचे हुए और ९ चेहेबच्चे आये हैं।

एक चबूतरे के मध्य भाग में १/२-१/२ मंदिर की चौड़ी और ३६ मंदिर की लंबी कमर भर की गहरी नहर आयी है। इस नहर के दाएं-बाएं पाव-पाव मंदिर की चौड़ी रौंसें आयी हैं। इन रौंसों से जल तरफ तथा बगीचे की तरफ कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा आया है।

एक चौक में ३ आड़ी और ३ खड़ी नहरों के आने से ९ चेहेबच्चे आये हैं, जिसमें ४ चेहेबच्चे चारों दिशा के और ४ चेहेबच्चे चार कोनों के और एक मध्य में आया है। यह चेहेबच्चा १/२-१/२ मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। इस चेहेबच्चे के चारों कोने से कमर भर की सीढ़ी जल में उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा आया है। चारों दिशा वाले और मध्य का एक, ये पांच फव्वारे चकरावदार आए हैं। चकरी खाकर जल इसी चेहेबच्चे में पड़ता है। चारों कोने वाले चेहबच्चों में ५-५ फव्वारे आए हैं, जिसमें दो दिशाओं के फव्वारों का पानी ३७-१/२-३७-१/२ मंदिर की मेहराब बनाकर दिशा की दो बड़ी नहरों में पड़ता हैं। दो दिशा के फव्वारों का पानी ७३-१/२ मंदिर की मेहराब बनाकर दूसरे कोने के चेहेबच्चे में पड़ता है। ५वां मध्य का फव्वारा उछलकर मध्य में ही पड़ता है।

फूलबाग के एक बड़े चौक के चारों तरफ चार बड़ी नहरें आयी हैं। बीच में ३ आड़ी और ३ खड़ी नहरें आने से एक दिशा में ४ चौक हुए। जो मध्य में ४ चौक आये हैं, उनमें से हर एक चौक के चारों तरफ चार नहरें आयी हैं। हर चौक के चारों कोनों पर चार चेहेबच्चे आये हैं। ये नहरें और चेहेबच्चे हर एक बगीचे में गिनती करते हैं। इन चारों के चारों दिशाओं में आठ चौक और आये हैं। इन चौकों की हर एक दिशा में ३-३ नहरें आयी हैं और चौथी तरफ बड़ी नहर आयी है। हर एक के दोनों कोनों में २-२ चेहेबच्चे आये हैं। बाकी चार कोने के चौक आये हैं। हर चौक में दाएं-बाएं दो-दो छोटी नहरें और दाएं-बाएं दो-दो बड़ी नहरें आयी हैं। इन चार चौकों में हर एक चौक के कोने पर एक छोटा चेहेबच्चा

Nijanand App

आया है और एक-एक चेहेबच्चा बड़ी नहर का आया है। यह नहरें और चेहेबच्चे दूसरे चौकों में भी गिनती करते हैं। नहर और चेहेबच्चों में कमर भर पानी आया है।

फूलबाग के एक बड़े चौक में १६ छोटे चौक आये हैं। एक-एक चौक ३६-३६ मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। हर एक चौक के चारों तरफ एक-एक रौंस पाव-पाव मंदिर की चौड़ी आयी है और १४५ मंदिर की लंबी चारों तरफ कमर भर ऊंची आयी है। चारों दिशा में ४ नहरें आयी हैं। चारों कोनों पर ४ चेहेबच्चे आए हैं। १३ वृक्षों की १३ हारें आने से १६९ वृक्ष हुए। ये वृक्ष ३-३ मंदिर की दूरी पर आये हैं। ये वृक्ष अलग-अलग रंगों के तथा अलग-अलग फूलों के आये हैं। फूलबाग के एक बगीचे में १६९ वृक्ष आने से १६ बगीचों के वृक्ष २७०४ हुए। इस प्रकार कुल १०० बगीचों के २७०४०० वृक्ष हुए। दक्षिण तरफ बाहर की किनार पर एक बगीचे में ५२ वृक्ष आये हैं। सो एक दिशा के सब वृक्ष ५२० तथा दक्षिण, पश्चिम और उत्तर तरफ के सब १५६० वृक्ष हुए, तथा चार वृक्ष चार कोने वाले, तब सम्पूर्ण फूलबाग के १०० बगीचों के कुल वृक्ष २७१९६४ हुए।

फूलबाग के वृक्षों के थड़ों में दरवाजे आये हैं। थड़ें ४४ हाथ सीधा जाकर मेहराबें बनना शुरू हुई। ४४ हाथ तक मेहराबें आयी हैं। ऊपर १२ हाथ की जगह में अनेक प्रकार की चित्रकारी बनी है। ऊपर सब वृक्षों की एक छत आयी है। २-२ वृक्षों के बीच में ३-३ मंदिर की मेहराबें आयी हैं। छोटी नहर पर एक मंदिर की मेहराबें हैं। बड़ी नहर पर पौने तीन-तीन मंदिर की मेहराब आयी है। दक्षिण, उत्तर और पश्चिम तरफ किनारों के वृक्ष एक दिशा में ५२० आये हैं। इन वृक्षों से एक-एक मंदिर के चौड़े छज्जे निकलकर नूरबाग के एक मंदिर के चौड़े छज्जे को उलंघकर बड़ोवन के साथ मिलान किया है। फूलबाग के पूर्व तरफ आड़े चबूतरे के पश्चिम तरफ के दसों बगीचों के ५२० वृक्षों ने ३-३ मंदिर और ४२ हाथ का चौड़ा छज्जा निकालकर श्री रंगभवन की पहली भोम के छज्जे के साथ मिलान किया है। फूलबाग की तीसरी छत १५०२ मंदिर की लंबी-चौड़ी आयी है। जगह तो १५०० मंदिर की है, परन्तु एक मंदिर का चौड़ा छज्जा चारों तरफ निकलने से २ मंदिर की जगह बढ़ गयी है। वृक्षों की थड़ों में होकर सीढ़ियां तीसरी चांदनी तक गयी हैं।

फूलबाग के एक चौक में एक तरफ नहर रौंस के किनारे पर १३ वृक्ष आये हैं। सो वृक्ष के दाएं-बाएं १-१/२-१-१/२ मंदिर लेने से ३ मंदिर की जगह हुई। इस रौंस से कमर भर की सीढ़ियां बगीचे में उतरी हैं और इसी प्रकार दूसरी जल तरफ रौंस से, इन सीढ़ियों के सामने ४ नहरों में ४ सीढ़ियां उतरी हैं। चौक के चारों कोनों से चार सीढ़ियां गोलाईदार होकर चौक में उतरी हैं। हर एक सीढ़ी के मध्य भाग में वृक्ष आया है तो इस प्रकार से हर एक चौक में ८-८ सीढ़ियां आयी हैं सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है।

हर एक चौक में एक-एक रौंस आने से १६ रौंसें हुई। जिसमें मध्य के चारों चौकों की रौंसें १४५-१४५ मंदिर लंबी आयी है। और ४ दिशाओं के ८ चौकों की १०८-१/२-१०८-१/२ मंदिर की लंबी रौंसें आयी हैं और चारों कोनों के चौकों की ७२-१/४-७२-१/४ मंदिर की लंबी रौंसें आयी हैं। इन रौंसों पर जगह-जगह पर बैठने के वास्ते कुर्सियां तखत आदि आये हैं।

हर एक बगीचे के पूर्व से पश्चिम तरफ ४ की ३ हारें आने से १२ नहरें हुई। दक्षिण से उत्तर तरफ ४ की ३ हारें आने से १२ नहरें हुई। इस प्रकार से आड़ी-खड़ी नहरें २४ हुई। ये छोटी नहरें हैं।

Nijanand App

३२. फूल बाग के एक बगीचे की शोभा

Nijanand App

३२ - फूलबाग के एक बगीचे की शोभा

एक बगीचे की लंबाई-चौड़ाई १४७ मंदिर की आयी है। दायें-बायें का आधा-आधा चबूतरा लेने से १५० मंदिर का लंबा चौड़ा एक बगीचा हुआ। आड़ी-खड़ी नहरों के चबूतरे की रौंस की किनारे से पश्चिम तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर एक चबूतरा आड़ा तथा एक मंदिर का चौड़ा उत्तर से दक्षिण तरफ कमर भर का ऊँचा आया है। इस चबूतरे के पश्चिम किनारे से पश्चिम तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर दूसरा चबूतरा पहले चबूतरे जैसा आया है। इसी प्रकार ३६ मंदिर की दूरी पर तीसरा चबूतरा आया है। तीसरे चबूतरे के पश्चिम तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर बड़े चबूतरे की किनार आयी है। इस प्रकार एक बगीचे में आड़े तीन चबूतरे आये हैं।

बड़ी नहर खड़ी आयी है। इस नहर की बाहरी रौंस के उत्तर के किनारे से ३६ मंदिर उत्तर की तरफ एक चबूतरा दक्षिण से उत्तर तरफ एक मंदिर का चौड़ा और १४७ मंदिर का लंबा पूर्व से पश्चिम कमर भर का ऊँचा आया है। इस चबूतरे के उत्तर तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर दूसरा चबूतरा पहले जैसा आया है। इसी प्रकार से तीसरा चबूतरा ३६ मंदिर की दूरी पर आया है। तीसरे चबूतरे से ३६ मंदिर की दूरी पर बड़े चबूतरे की किनार आयी है। इसी प्रकार से एक चौक में आड़े-खड़े सब २४ चबूतरे आये हैं। हरेक चबूतरा ३६ मंदिर का लंबा और एक-एक मंदिर का चौड़ा आया है। इस प्रकार एक चौक में १६ बगीचे हुए और ९ चेहेबच्चे आये हैं।

एक चबूतरे के मध्य भाग में आधे-आधे मंदिर की चौड़ी और ३६ मंदिर की लंबी कमर भर की गहरी नहर आयी है। इस नहर के दाएं-बाएं पाव-पाव (चौथाई) मंदिर की चौड़ी रौंसें आयी हैं। इन रौसों से जल की तरफ तथा बगीचे की तरफ कमर भर की सीढ़ियों की जगह को छोड़कर कठेड़ा आया है। इसी प्रकार सभी चबूतरे आये हैं।

एक चौक में तीन आड़ी और तीन खड़ी नहरों के आने से ९ चेहेबच्चे आये हैं। जिसमें चार चेहेबच्चे चार दिशाओं के तथा चार चेहेबच्चा चार कोनों के और एक मध्य में आया है। यह आध-आध मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। इस चेहबच्चे के चारों कोनों से कमर भर की सीढ़ी जल में उतरी है। सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा आया है। इस प्रकार सभी चेहबच्चे आये हैं। चारों दिशा वाले और एक मध्य का यह पांच फव्वारे चकरावदार आये हैं। चकरी खाकर जल इसी चेहेबच्चे में पड़ता है। चारों कोनों वाले चेहेबच्चे में पांच-पांच फव्वारे आये हैं, जिसमें दो दिशाओं के फव्वारे का पानी ३७-१/२-३७-१/२ मंदिर की मेहराब बनाकर दिशा की दो बड़ी नहरों में पड़ता है। दो दिशा के फव्वारों का पानी ७३-१/२ मंदिर की मेहराब बनाकर दूसरे कोने के चेहेबच्चे में पड़ता है। पांचवा मध्य का फव्वारा उछलकर मध्य में ही पड़ता है। इसी प्रकार चार कोने वाले चेहेबच्चे आये हैं।

फूलबाग के एक बड़े चौक के चारों तरफ चार बड़ी नहरें आयी हैं। बीच में तीन आड़ी और तीन खड़ी नहरें आने से एक दिशा में चार चौक हुये। जो मध्य में चार चौक आये हैं, इन हर एक चौक के चारों तरफ चार नहरें आयी हैं। हर चौक के चारों कोनों पर चार चेहेबच्चे आये हैं। ये नहरें और चेहेबच्चे हर एक बगीचे में गिनती करते हैं। इन चारों के चारों दिशाओं में आठ चौक और आये हैं। इन आठ चौकों की हर एक दिशा में तीन-तीन नहरें आयी हैं, और चौथी तरफ बड़ी नहर आयी है। हर एक के दोनों कोनों में दो-दो चेहबच्चे आये हैं। नहर और चेहबच्चों की दूसरे चौकों में भी गिनती होती है और बाकी रहे चार कोनों के, सो कोनों में भी चार चौक आये हैं। हर एक चौक में दायें बायें दो छोटी-छोटी नहरें

Nijanand App

आयी हैं। और दो-दो दायें बायें बड़ी नहरें आयी हैं। ये सब नहरें दूसरे चौकों में भी गिनी जाती हैं। हर एक चौक के कोने पर एक छोटा चेहबच्चा आया है और एक-एक चेहबच्चा बड़ी नहर का आया है। ये चेहबच्चे दूसरे चेहबच्चे में भी गिनती करते हैं। नहर और चेहबच्चों में कमर भर पानी आया है।

फूल बाग के एक बड़े चौक में १६ छोटे चौक आये हैं एक एक चौक ३६-३६ मंदिर का लंबा चौड़ा आया है। हर एक चौक के चारों तरफ एक-एक रौंस पाव-पाव मंदिर की चौड़ी आयी है और १४५ मंदिर की लंबी चारों तरफ कमर भर ऊँची आयी है। चारों दिशाओं में चार नहरें आयी हैं। चारों कोनों पर चार चेहबच्चे आये हैं। नहर और चेहबच्चों की दूसरी चौकों में भी गिनती होती है। सो हर एक चौक में १३ वृक्षों की १३ हारें आने से सब १६९ वृक्ष हुए। ये सब वृक्ष तीन-तीन मंदिर की दूरी पर आये हैं। ये सब वृक्ष अलग अलग रंगों के और अलग-अलग फूलों के आये हैं। इन सब वृक्षों के पेड़ों में, मेहराबों में और छत पर फूल पत्ते आये हैं। इन वृक्षों के चारों तरफ डेढ -डेढ़ मंदिर की मेहराबें निकली हैं। दो वृक्षों की मेहराबों के आपस में मिल जाने पर एक मेहराब तीन मंदिर की बन जाती है। ये सब मेहराबें आपस में मिली हैं। छोटी-छोटी नहरों पर एक-एक मंदिर की मेहराब आयी है और बड़ी नहर पर पौने तीन-तीन मंदिर की मेहराब है। इस प्रकार सौ बड़े बगीचों के वृक्षों की मेहराबें मिलने से एक छत फूलबाग की हो गयी है। सो इन वृक्षों की दो भोम और तीसरी चांदनी आयी है।

फूलबाग के एक बगीचे में १६ चौक आये हैं। एक चौक के एक तरफ नहर की रौंस की किनारे पर १३ वृक्ष आये हैं, सो वृक्ष के दायें-बायें १-१/२-१-१/२ मंदिर लेने से तीन मंदिर की जगह हुई। इन मंदिरों की जगह से रौंस से कमर भर की सीढ़ियां बगीचे में उतरी हैं और इसी प्रकार दूसरी जल तरफ रौंस से, इन सीढ़ियों के सामने चार नहरों में चार सीढ़ियां उतरी हैं। चौक के चारों कोनों से चार सीढ़ियां गोलाईदार होकर चौक में उतरी हैं। हर एक सीढ़ी के मध्य भाग में वृक्ष आया है, तो इस प्रकार हर एक चौक में ८-८ सीढ़ियां आयी हैं। सीढ़ियों की जगह को छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है।

फूलबाग के एक बगीचे में १६ चौक आये हैं। हर एक चौक में एक-एक रौंस आने से १६ रौंसें हुई। जिसमें मध्य की चारों चौकों की चारों रौंसें १४५-१४५ मंदिर की लंबी आयी हैं और चार दिशाओं के ८ चौकों की १०८-१/२, १०८-१/२ मंदिर की लंबी रौंसे आयी हैं और चारों कोने के चारों चौकों की ७२-१/४-७२-१/४ मंदिर की लंबी रौंसें आयी है। इन रौंसों में बैठने के वास्ते जगह जगह पर कुर्सियां तखत आदि आये हैं।

फूलबाग के एक बगीचे में १६ बगीचे आये हैं। हर एक बगीचे में १६९ वृक्ष आने से १६ बगीचों के वृक्ष २७०४ हुए। दक्षिण की तरफ बाहर की किनार पर एक बगीचे में ५२ वृक्ष आये हैं। एक दिशा में सभी बगीचों के सब वृक्ष ५२० हुए। दक्षिण, पश्चिम और उत्तर तरफ के सब १५६० हुए। चार वृक्ष चार कोनों वाले, तब सम्पूर्ण फूलबाग के १०० बगीचों के कुल वृक्ष २७१९६४ हुए।

Nijanand App

३३. नूर बाग के सौ बगीचे

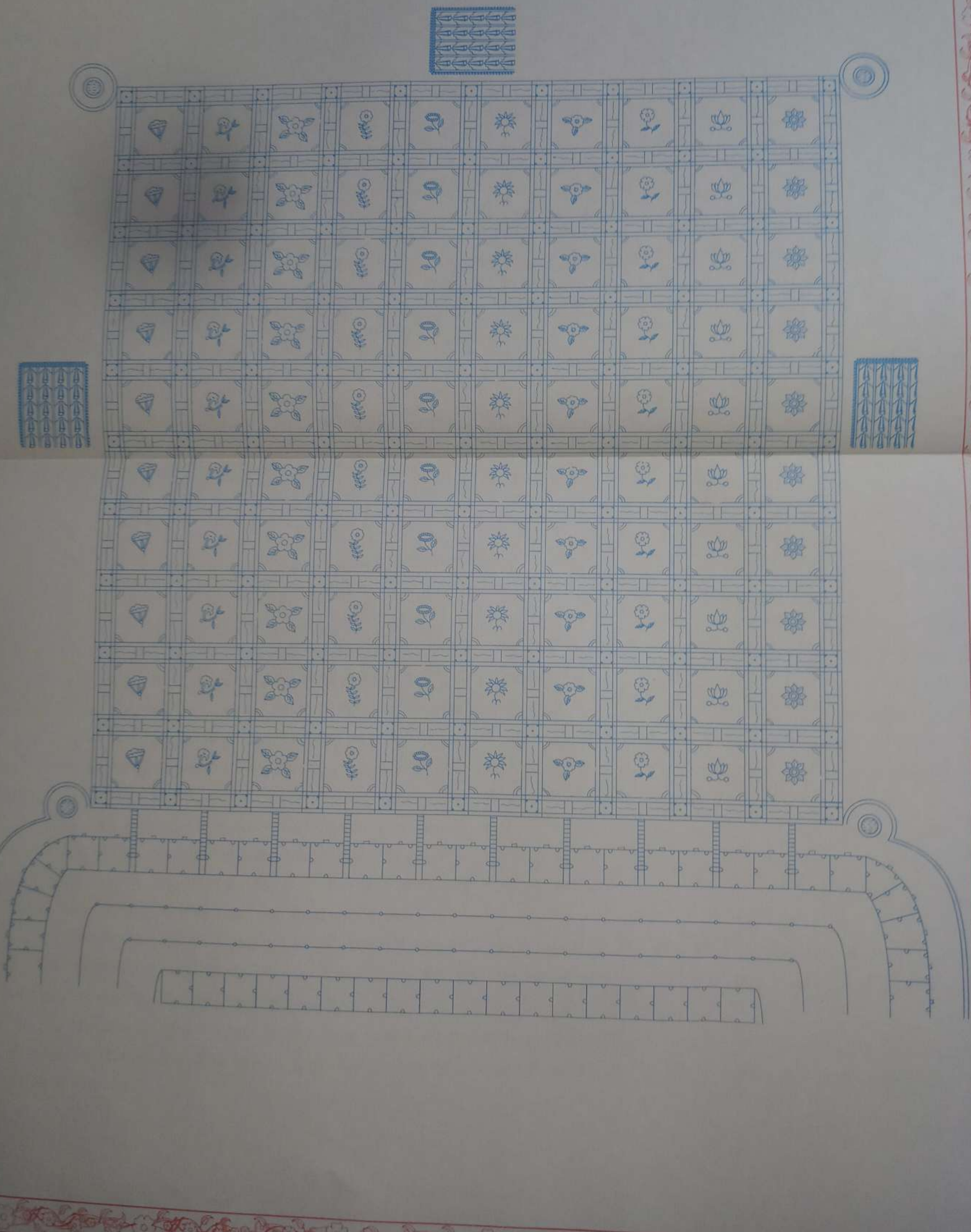

Nijanand App

३३ - नूर बाग के सौ बगीचे

रंग भवन के पश्चिम तरफ चबूतरे की दीवाल के साथ लगकर पूर्व से पश्चिम तरफ पौने तीन मंदिर का चौड़ा नैरित्य कोने के चेहेबच्चे की कोट की दीवाल से लेकर वायव्य कोने के चेहेबच्चे की कोट दीवाल तक १५०० मंदिर का लंबा दक्षिण से उत्तर तरफ पहला चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है। इस चबूतरे के पश्चिम तरफ १४७ मंदिर की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा दक्षिण उत्तर तरफ आया है। इस प्रकार से ११ चबूतरे आड़े आये हैं, जिसमें १० संधे आयी हैं। इस प्रकार से १५०० मंदिर की चौड़ाई नूर बाग की आयी है।

नैरित्य कोने के चेहबच्चा की कोट दीवाल के साथ लगकर पौने तीन मंदिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर तरफ नूर बाग का १५०० मंदिर का लंबा पूर्व से पश्चिम चबूतरा आया है। फिर १४७ मंदिर की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा दक्षिण से उत्तर तरफ पौने तीन मंदिर का चौड़ा आया है। इस प्रकार से ११ चबूतरे खड़े आये हैं, जिसमें १० सन्धे आने से १५०० मंदिर की लंबाई नूर बाग की आयी है।

नूर बाग के एक चबूतरे का ब्यान किया जाता है। इसी प्रकार सब चबूतरे आये हैं। एक चबूतरे के मध्य भाग में पौन मंदिर की चौड़ी और १४७ मंदिर की लंबी भोम भर की गहरी-नहर आयी है। इसके दाएं-बाएं रौंस, फुलवारी, कठेड़ा आदि आये हैं। सो फूल बाग की तरह सब जोगबाई आयी है।

नूर बाग के एक बड़े बगीचे में १६ चौक आये हैं। एक चौक में १३ वृक्षों की १३ हारें आयी हैं। तो कुल १६९ हुए। १६ चौकों के २७०४ हुये और १०० बगीचों के २७०४०० हुए। बाहरी किनार पर एक दिशा में ५२० वृक्ष आये हैं। तो चारों दिशा के २०८० वृक्ष हुए तब सम्पूर्ण वृक्ष २७२४८० हुए। सब अलग-अलग रंगों के अलग-२ जातियों के एक ही भोम में आये हैं। इसमें ६६००० फीलपाये आये हैं।

एक बगीचे में २४ नहरें आयी हैं। तब १०० बगीचें की सब नहरें २४०० हुई। बड़ी नहर पूर्व से पश्चिम १० की ११ हारें आने से ११० हुई। दक्षिण से उत्तर तरफ भी १० की ग्यारह हारें आने से ११० हुई। तब सम्पूर्ण नहरें २६२० हुई।

पूर्व से पश्चिम तरफ १० की ११ हारें आने से ११० पुल हुए। तब कुल पुल २२० हुए। हर एक पुल पौन मंदिर का लंबा-चौड़ा हर एक नहर के मध्य भाग पर आया है।

एक बड़े बगीचे में ९ छोटे चेहेबच्चे आये हैं। तब १०० बगीचों के ९०० चेहबच्चें हुए। पूर्व के चबूतरे पर ११ चेहेबच्चें आये हैं। तब ११ चबूतरे के चेहबच्चे १२१ हुए। तब सम्पूर्ण चेहबच्चे १०२१ हुए। नूर बाग के चारों कोनों पर चार चेहबच्चे आये हैं, जो १६ हांस के आये हैं। ये नूर बाग के हिसाब में नहीं हैं।

नूर बाग के एक बड़े बगीचे में ५३ रौंसे आयी हैं। तब १०० बगीचों की ५३०० रौंसें हुई। बड़ी नहर के चारों तरफ एक रौंस आयी है। इस प्रकार २२० नहरों पर २२० रौंसें हुई। बड़े चेहबच्चे के चारों तरफ एक रौंस आयी है। तो १२१ चेहेबच्चों की १२१ रौंसें हुई। बाहर की किनार पर तीन दिशा में एक ही रौंस आयी है। सो ४४९८ मंदिर और ६६ हाथ

Nijanand App

की लंबी और ३३ हाथ की चौड़ी आयी है। पश्चिम तरफ की रौस का ब्यान अन्नवन में आयेगा। तब सम्पूर्ण रौसें ५६४२ हुई। पूरा वर्णन फूल बाग में देखिए।

एक बगीचे में चारों तरफ एक फुलवाड़ी आयी है। तो १०० बगीचों की १०० फुलवाड़ी हुई। एक चेहबच्चे के चारों तरफ चार फुलवाड़ी आयी है, तो १२१ चेहबच्चों की ४८४ फुलवाड़ी आयी। बाहर की किनार के उत्तर दक्षिण तथा पूर्व तरफ की फुलवाड़ी ३० हुई और पश्चिम तरफ की फुलवाड़ी अन्न बन में आयेगी। तब सम्पूर्ण फुलवाड़ी ६१४ हुई। इनका पूर्ण ब्यान फूलबाग में देखिए।

एक बड़े बगीचे में २१२ सीढ़ियां आयी हैं तो १०० बगीचों की २१२०० सीढ़ियां हुई। दक्षिण तरफ बाहर की किनार के बाहरी तरफ ४० सीढ़ियां आयी हैं, और एक बड़ी नहर में आठ सीढ़ियां आयी हैं। अब २२० नहरों में १७६० सीढ़ियां हुई। उत्तर तरफ किनार के बाहर तरफ ४० सीढ़ियां आयी हैं। हर एक चेहबच्चे में चार-चार सीढ़ियां आने से बड़े १२१ चेहबच्चे की ४८४ हुई। तब सम्पूर्ण सीढ़ी २३५२४ हुई। पूर्ण ब्यान फूलबाग में देखिए।

इस नूर बाग में जो ११ चबूतरे पूर्व से पश्चिम तरफ पौने तीन-पौने तीन मंदिर के चौड़े और दक्षिण से उत्तर तरफ १५०० मंदिर के लंबे आये हैं। सो इन चबूतरों के बाहरी किनार पर मंदिर-मंदिर के अन्तर पर लंबाई तरफ फीलपायें आये है। चबूतरा के एक तरफ फीलपायें आये हैं। चबूतरे के एक तरफ फीलपायें १५०४ आये हैं। दसों बगीचों की किनार पर १४८० हुए और ११ नहरों के २२ हुए और एक-एक फीलपाये पूर्व पश्चिम की बाहरी किनार पर आये हैं। तब सम्पूर्ण फीलपाये एक लाइन में १५०४ हुए। इसी प्रकार चबूतरों के बाहरी तरफ किनार पर भी १५०४ फीलपाये आये हैं। तब एक चबूतरे की बाहरी किनार पर ३००८ हुए। तब ११ चबूतरों के सब फीलपाये ३३०८८ हुए, जिसमें पूर्व तरफ के धाम चबूतरे के पिठौर में १५०४ फिलपाये अक्सी आये हैं। इन थंभों पर १५०३ अक्सी मेहराबें आयी हैं, और ११ चबूतरे खड़े दक्षिण से उत्तर पौने तीन-तीन मंदिर चौड़े और पूर्व से पश्चिम १५००-१५०० मंदिर के लंबे सब आये हैं। इस एक चबूतरे के दोनों (भीतरी व बाहरी) तरफ ३००८ फीलपाये हुए। तब ११ खड़े चबूतरे ३३०८८ हुए। तब सम्पूर्ण ६६१७६ हुए।

Nijanand App

३४. नूरबाग के एक बगीचे की शोभा

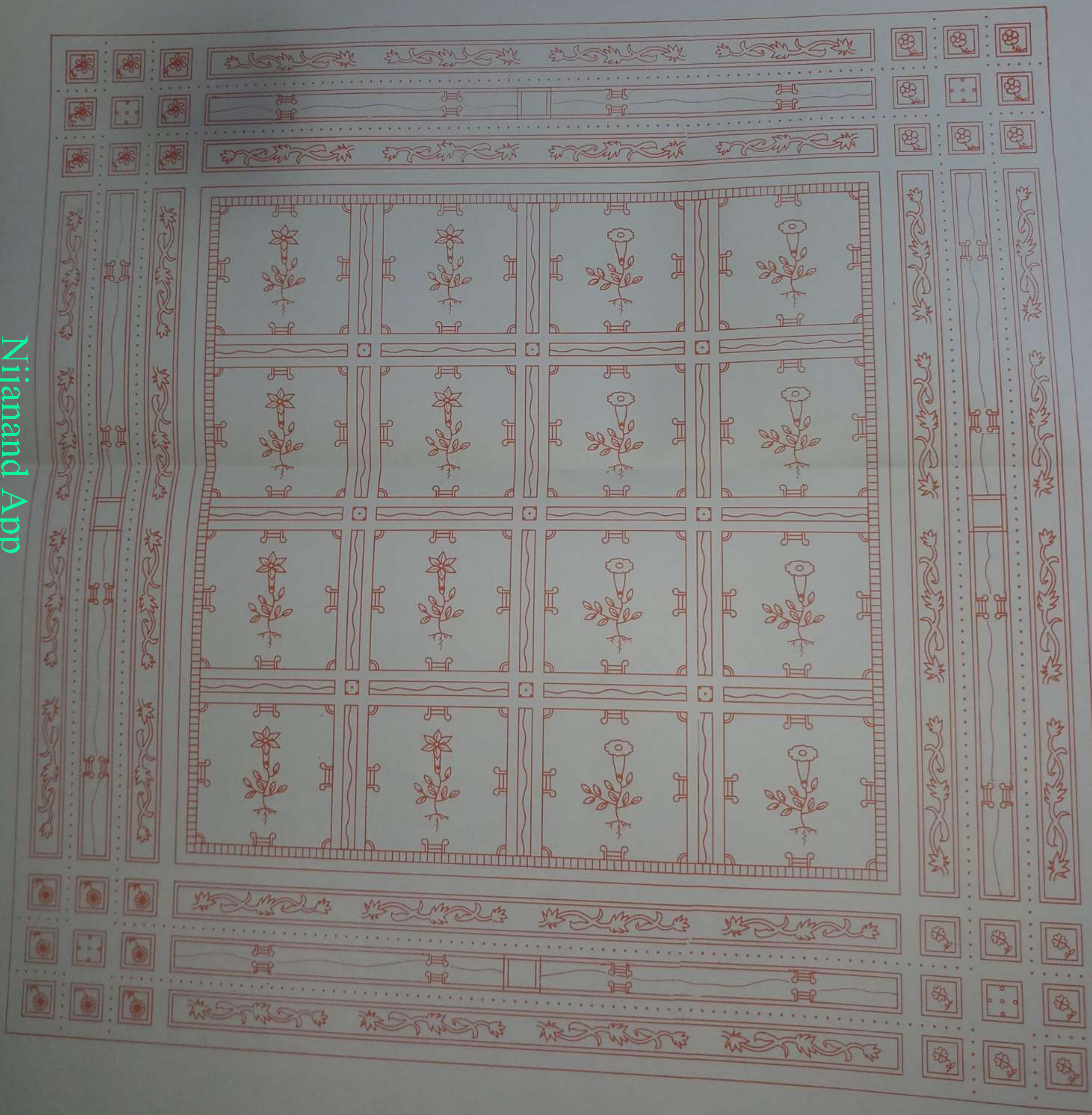

Nijanand App

३४ - नूर बाग के एक बगीचे की शोभा

आड़ी-खड़ी नहरों के बीच में १०० चौक आए हैं। १०० चौकों में १०० बगीचे आए हैं। आड़ी-खड़ी नहरों के चबूतरों की रौंस के किनारे से पश्चिम तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर एक चबूतरा आड़ा, एक मंदिर का चौड़ा उत्तर से दक्षिण तरफ कमर भर ऊंचा आया है। इस चबूतरे के पश्चिम तरफ ३६-३६ मंदिर की दूरी पर दूसरा और तीसरा चबूतरा आया है। तीसरे चबूतरे के पश्चिम तरफ ३६ मंदिर की दूरी पर बड़े चबूतरे की किनार आयी है। इस प्रकार एक बगीचे में तीन आड़े चबूतरे आए हैं। ठीक इसी प्रकार ३६-३६ मंदिर की दूरी पर तीन चबूतरे खड़े एक मंदिर के चौड़े पूर्व से पश्चिम तरफ कमर भर ऊंचे आए हैं। इस प्रकार एक चौक में आड़े-खड़े सब २४ चबूतरे हुए। तब एक चौक में आड़े-खड़े सब २४ चबूतरे हुए। इस प्रकार एक चौक में १६ बगीचे हुए। एक चबूतरे के मध्य में १/२-१/२ मंदिर की चौड़ी और ३६ मंदिर की लम्बी कमर भर गहरी नहर आयी है, जिसके दाएं-बाएं रौंसें आयी है। इन रौंसों से नहर तथा बगीचे की तरफ कमर भर की सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा आया है।

एक चौक में ३ आड़ी और खड़ी नहरों के आने से ९ चेहेबच्चे आए हैं, जिसमें चार चेहेबच्चे चारों दिशा के और चार चेहेबच्चे चार कोनों के और एक बीच में आया है। यह १/२-१/२ मंदिर के लम्बे-चौड़े आए हैं।

नूरबाग के एक बड़े चौक के चारों तरफ बड़ी नहरें आयी हैं। इस नहर के दाएं-बाएं फीलपाए घेर कर आए हैं। बीच में तीन आड़ी और तीन खड़ी नहरें आने से एक दिशा में चार चौक हुए। इस प्रकार, कुल १६ चौक हुए। जो मध्य में चार चौक आए हैं, इन चौकों के चारों तरफ चार नहरें तथा चारों कोनों पर चार चेहेबच्चे आए हैं। इन चार चौकों की चारों दिशाओं में आठ चौक और आए हैं, जिनके तीन तरफ तीन नहरें तथा चौथी तरफ बड़ी नहर आयी है। हर एक के दोनों कोनों में दो-दो चेहेबच्चे आए हैं। बाकी चार कोनों में भी चार चौक आए हैं। हर एक चौक में दाएं-बाएं दो-दो छोटी नहरें तथा दाएं-बाएं दो-दो बड़ी नहरें आयी हैं। हर एक चौक के कोने पर एक छोटा चेहेबच्चा और एक एक चेहेबच्चा बड़ी नहर का आया है।

नूरबाग के एक बगीचे में १६ चौक आए हैं। हर एक चौक में एक-एक रौंस आने से १६ रौंसें हुई। चौक के चारों कोने से चार सीढ़ियां चौक में उतरी हैं। हर एक सीढ़ी के मध्य भाग में वृक्ष आया है, इस प्रकार एक चौक में ८-८ सीढ़ियां आयी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है। एक चौक में १३ वृक्षों की १३ हारें आने से १६९ वृक्ष हुए। ये वृक्ष तीन-तीन मंदिर की दूरी पर आए है। ये सब वृक्ष अलग अलग रंगों के और अलग अलग फूलों के आए हैं। इन सब वृक्षों के पेड़ों में, मेहराबों में, छत पर फूल-पत्ते आए हैं। छोटी नहरों पर एक मंदिर की मेहेराब आयी हैं और बड़ी नहर पर पौने ३-३ मंदिर की मेहराब है। इस प्रकार, सौ बड़े बगीचों के वृक्षों की मेहराबें मिलने से तथा फीलपाए के ऊपर एक छत आयी है, जिस पर फूलबाग आया है।

Nijanand App

३५. अन्न वन

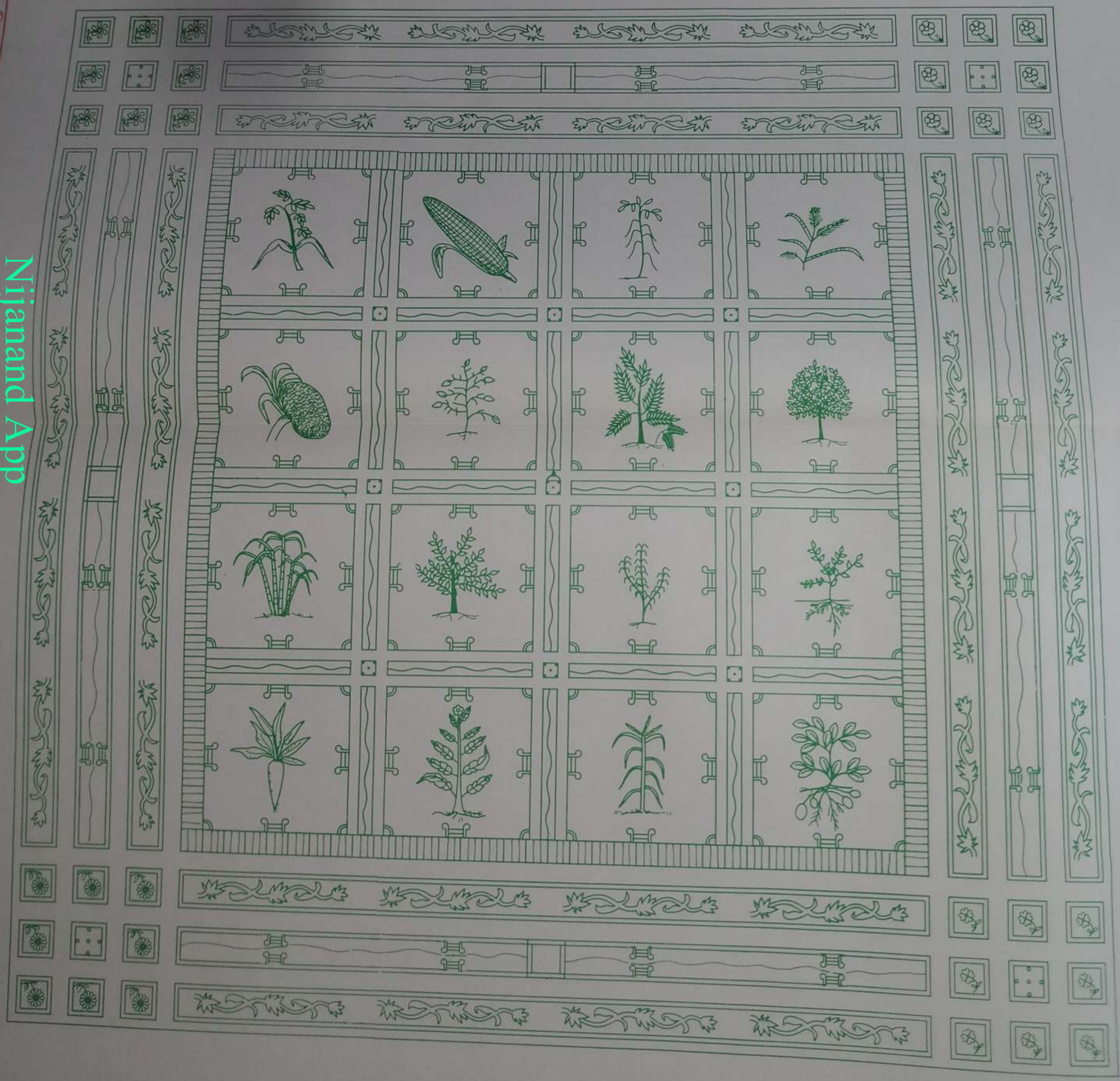

Nijanand App

३५ - अन्न वन

नूर बाग के पश्चिम तरफ ११वां चबूतरा आड़ा १५०० मंदिर का लंबा आया है। इस चबूतरे के पश्चिम तरफ १४७ मंदिर की दूरी पर एक चबूतरा २-३/४ मंदिर का चौड़ा और १५०० मंदिर का लंबा दक्षिण से उत्तर तरफ आया है। इसी प्रकार १४७-१४७ मंदिर की दूरी पर १० चबूतरे आये हैं। इन दस चबूतरों के बीच में ९ संधे आयी है और एक सन्ध नूरबाग की तरफ है तब दसों सन्धों की जगह १४७० मंदिर हुई। १० चबूतरों की जगह २७-१/२ मंदिर की हुई। तब पूर्व से पश्चिम तरफ १४९७-१/२ मंदिर की जगह अन्न वन की चौड़ाई में हुई।

नूर बाग में ११ चबूतरे खड़े आये हैं। हर एक चबूतरा पौने तीन-तीन मंदिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर और १५०० मंदिर का लंबा पूर्व से पश्चिम तरफ गया है। सो १५०० मंदिर तक नूर बाग की हद आयी है, और १४९७-१/२ मंदिर की हद अन्न वन की आयी है और १४९७-१/२ मंदिर की हद दूब दूलीचा की आयी है। तब ११ चबूतरों मे दस सन्धें आयी है। १० सन्धों की जगह १४७० मंदिर की हुई और ११ चबूतरों की जगह ३० मंदिर की हुई। तब सब १५०० मंदिर की लंबाई दक्षिण से उत्तर अन्न वन की हुई।

इस अन्नवन के आड़े और खड़े चबूतरों के बीच में १०० चौक आये हैं। हर एक चौक में खड़ी और आड़ी तीन-तीन नहरें आने से १६ चौक, २४ नहरें और ९ चेहेबच्चे आये हैं। मध्य का चेहेबच्चा आधे मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। इस चेहबच्चे के चारों कोनों पर चार थंभ आये हैं। ऊपर ४ मेहराबें आयी हैं, जिनके उपर गुम्मट आये हैं। ऊपर कंगूरे, कलश, ध्वजा, पताका अति सुन्दर शोभा युक्त है। इस प्रकार हर बगीचे में देहुरी आयी है। इस बगीचे के चारों तरफ रौंस, फुलवाड़ी, चार नहरों के कोनों पर चार चेहबच्चे तथा चौकों में सीढ़ियां कठेड़े सब जोगबाई नूर बाग की तरह आयी है। केवल देहुरी की ज्यादा आयी है।

एक बगीचे में १६ चौक आने से १०० बगीचों में १६०० चौक हुए। हर एक चौक ३६ मंदिर का लंबा चौड़ा आया है। हर एक चौक में अलग-अलग रंगों व अलग-२ जातियों के अन्नों के खेत लहरा रहें हैं। कोई चीज की यहां पर कमी नहीं है। चौकों में मेवे, फल, साक, जमीनकन्द, गेहूं, जौ आदि अनेक प्रकार के अन्न अनादि काल के बने दिखायी देते हैं। सर्वदा एक रस विद्यमान हैं। वस्तु को ले लेने पर भी वस्तु अपने स्थान पर ज्यों की त्यों दिखायी देती है। यह परमधाम के बगीचों की बाते हैं।

१०० बगीचों में छोटी नहर २४०० आयी हैं। बड़ी नहर पूर्व से पश्चिम १०० आयी हैं और उत्तर से दक्षिण तरफ १० की ११ आने से ११० नहरें हुई। तब सब नहरें २६१० हुई। २१० नहरें जो बड़ी आयी हैं। हर एक नहर के मध्यभाग में एक पुल आने से २१० पुल आये हैं और चबूतरे पर ११ चेहेबच्चे आये हैं। पूर्व से पश्चिम तरफ ११ चेहेबच्चों की १० हारें होने से ११० चेहेबच्चे हुए। तो सम्पूर्ण चेहेबच्चे १०१० हुए।

अन्न वन की रौंसे एक बगीचे की ५३ आयी हैं तो १०० बगीचों की ५३०० हुई। २२० बड़ी नहरों की २२० रौंसे आयी हैं। ११० चेहेबच्चों की ११० रौंसें आयी है। उत्तर, दक्षिण

Nijanand App

तरफ बाहरी किनार पर एक-एक रौंसें आयी है। पश्चिम तरफ की रौंसों की गिनती दूब-दूलीचा में आयेगी। तब सम्पूर्ण रौंसें ५६३२ हुई। इसका विस्तार फूलबाग में देखिए।

सौ बगीचों की सौ फुलवाड़ी आयी हैं और ११० चेहेबच्चों की ४४० फुलवाड़ी आयी हैं और उत्तर व दक्षिण तरफ बाहर नहर पर २० फुलवाड़ी आयी हैं। पश्चिम तरफ की फुलवाड़ी दूब-दुलीचा में आयी है। तब सम्पूर्ण फुलवाड़ी ५६० हुई। विस्तार में फूलबाग में देखिए, क्योंकि वर्णन एक समान है।

एक बगीचे में २१२ सीढ़ियां आने से १०० बगीचों की २१२०० सीढ़ियां हुई। एक बड़ी नहर में आठ सीढ़ियां आने से २१० बड़ी नहर की १६८० सीढ़ियां हुई। हर एक चेहेबच्चे में ४ सीढ़ी आयी तो ११० चेहेबच्चों में ४४० सीढ़ी हुई। उत्तर व दक्षिण बाहर तरफ ८० सीढ़ियां आयी हैं। पश्चिम तरफ की सीढ़ियां दूब दुलीचा में आयेंगी। तब सम्पूर्ण सीढ़ियां २३४०० हुई।

अन्न वन के पूर्व तरफ नूरबाग दिखायी दे रहा है। दक्षिण तरफ एक मंदिर की दूरी पर कुन्ज-निकुन्ज दो भोम का ऊँचा आया है, और उत्तर तरफ एक मंदिर की दूरी पर बड़ोवन की नहरें, चेहेबच्चे आये हैं। सो यह बड़ोवन पांच भोम का ऊंचा है और पश्चिम तरफ दूब-दुलीचा शोभा ले रहा है।

अन्नवन और नूरबाग एक जैसा है। कुछ फर्क नहीं है। नूरबाग में फीलपाये और वृक्ष आये हैं। सो यहां अन्न के अनेक खेत लहरा रहे हैं। अन्न वन में १०० देहुरी आयी हैं, सो नूरबाग में नहीं है। विस्तार से पढ़ना हो तो फूलबाग के ब्यान को देखें।

Nijanand App

३६. दूब-दूलीचा

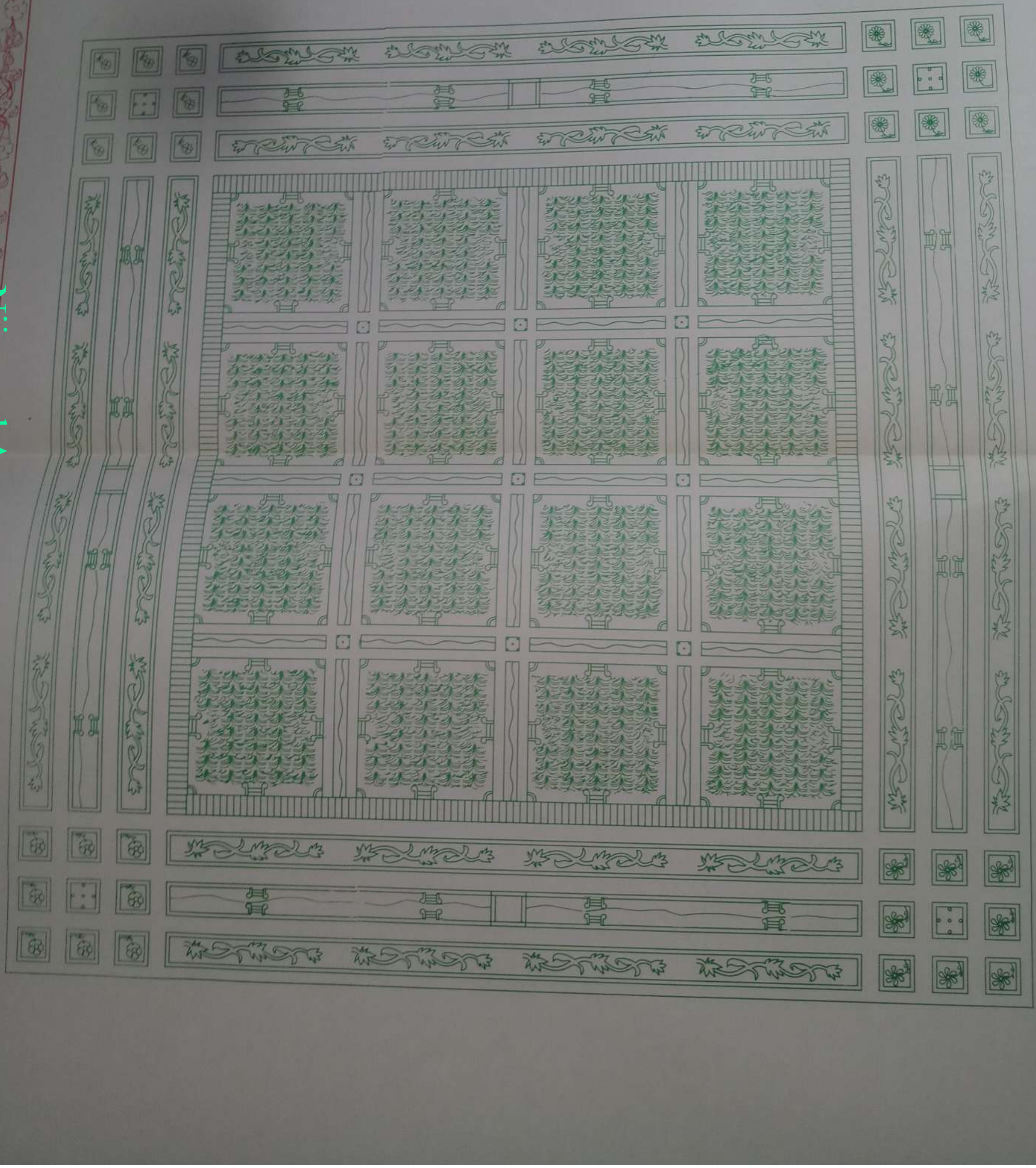

Nijanand App

३६. दूब-दूलीचा

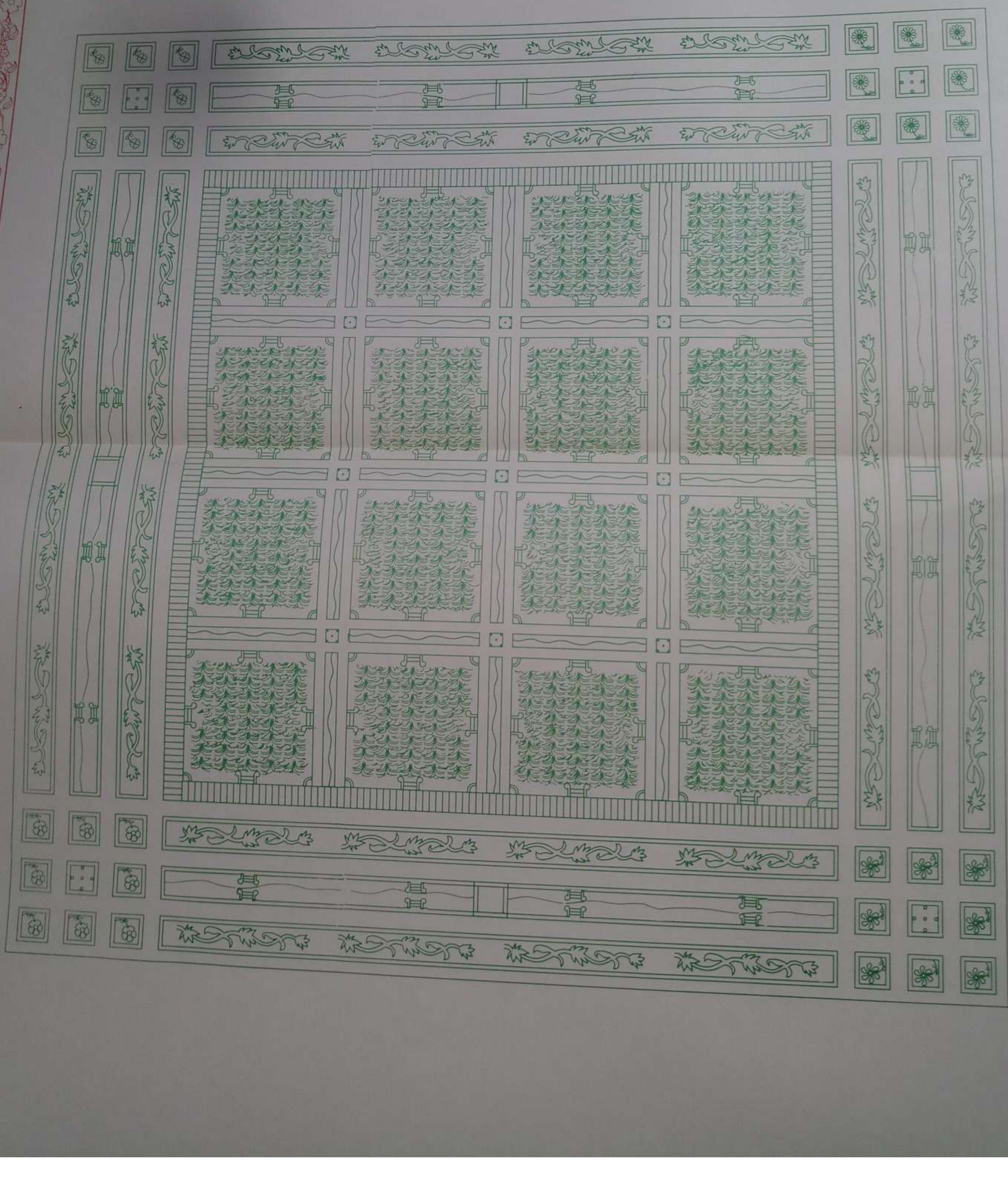

Nijanand App

३६ - दूब दूलीचा

अन्नवन के पश्चिम तरफ एक चबूतरा आड़ा आया है यह चबूतरा अन्न वन और दूब-दुलीचा के दोनों बगीचों में काम देता है। इस चबूतरे से पश्चिम तरफ १४७ मंदिर की दूरी पर एक चबूतरा आड़ा आया है। सो इतने ही मंदिर की दूरी पर ९ चबूतरे और आये हैं। यह दस चबूतरे आड़े हुए। इसी प्रकार चौड़ाई दूब-दुलीचा की पूर्व-पश्चिम तरफ १४९७-१/२ मंदिर की हुई। लंबाई तरफ ११ खड़े चबूतरे आये हैं, जिसमें १० सन्धें आयी हैं। सो सब जगह दक्षिण से उत्तर तरफ १५०० मंदिर की आयी है। इन आड़े-खड़े चबूतरों के बीच में १०० चौक आये हैं। हर एक चौक के चारों तरफ फुलवाड़ी रौंस, चारों दिशा में ४ नहरें पुल तथा कोने पर चेहेबच्चे आये हैं। हर एक बड़े बगीचे में १६ चौक तथा २४ छोटी नहरें आयी हैं और नव चेहबच्चे हैं तथा चारों कोनों के चेहबच्चों पर एक-एक देहुरी आयी है। बाकी बनक फूलबाग जैसी आयी है। १०० बगीचों में १६०० चौक हुए। एक चौक ३६ मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। हर एक चौक अलग-अलग रंगों की घास-दूब की शोभा से युक्त है। दूब की फूल बेल चित्रकारी आयी है। जगह-जगह पर सिंहासन एवं कुर्सियां बैठने के वास्ते रखी हैं।

सम्पूर्ण नहरें छोटी-बड़ी २६१० आयी हैं। बड़ी २१० नहरों पर २१० पुल आये हैं, और छोटे-बड़े चेहेबच्चे सब १०१० आये हैं। दक्षिण पश्चिम और उत्तर तरफ एक ही रौंस बाहर की किनार पर ४४९५ मंदिर की लंबी और ३३ हाथ की चौड़ी आयी है। सम्पूर्ण रौंसे ५६३२ हैं। फुलवाड़ी ५७० आयी हैं। यहां अन्न वन से १० फुलवाड़ी अधिक आयी हैं। सम्पूर्ण सीढ़ियां २३४४० आयी हैं। अन्न वन के बगीचे से २४० सीढ़ियां अधिक आयी हैं। सो यह सीढ़ियां दूब-दुलीचे के पश्चिम तरफ चबूतरे की किनार पर आयी हैं। अन्नवन में अन्न के खेत हैं। यहां पर दूब-घास युक्त खेत शोभा ले रहे हैं।

दूब दुलीचा और अन्न वन के दक्षिण तरफ एक मंदिर की दूरी पर कुन्ज-निकुन्ज दो भोम का ऊंचा आया है। उत्तर तरफ एक मंदिर की दूरी पर बड़ोवन की नहरें, चेहेबच्चें आये हैं। सो बड़ोवन ५ भोम का ऊंचा है। पश्चिम तरफ पश्चिम की चौगान का मैदान है, जो बहुत शोभायमान है।

Nijanand App

३७. कुंज-निकुंज तथा पश्चिम की चौगान

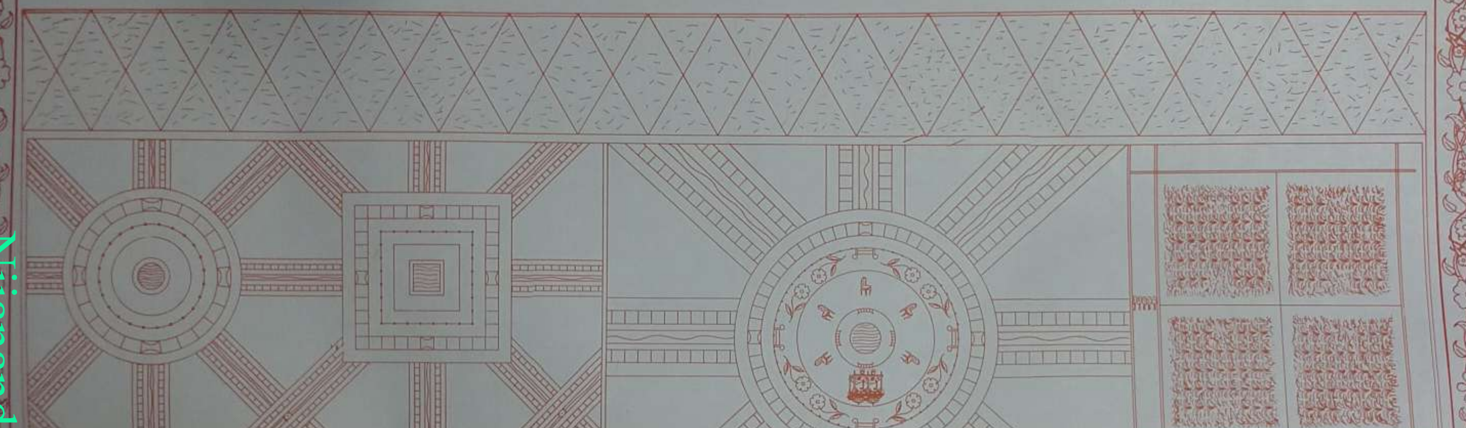

Nijanand App

३७ - कुंज - निकुंज तथा पश्चिम की चौगान

यमुना जी की पाल के साथ वन रौंस आयी है। वन रौंस के साथ २५० मंदिर की रेती आयी है, जिससे होकर कुंज-निकुंज में जाते हैं। कुंज-निकुंज रेती की किनार से लेकर नारंगी बाग तक आया है। कुंज-निकुंज हौज कौसर तालाब को घेर कर आया है। यही दूब-दुलीचा के नैरित्य कोने तक गया है, तथा पश्चिम की चौगान की लंबाई के साथ होकर जवेरों के मोहलों तक गया है। फिर जवेरों के मोहलों के साथ होकर यमुना जी के अगिन कोने से दक्षिण होकर हौज कौसर के दक्षिण में पश्चिम की चौगान से मिल गया है। कुंज-निकुंज की चौड़ाई ७-१/२ लाख कोस है। यह लम्बाई में दूब-दुलीचा के नैरित्य कोने से लेकर अक्षरधाम से पूर्व तक, जवेरों के मोहलों तक आया है। जिससे लम्बाई १९ करोड़ की होती है। पहले कुंज फिर निकुंज, इस तरह से सब मोहल आए हैं। कुंज के चौरस तथा निकुंज के गोल मोहल आये हैं। केवल यही अन्तर है, इसके अतिरिक्त बाकी शोभा एक समान आयी है।

एक कमर भर का ऊंचा ८३ मंदिर का लंबा-चौड़ा चबूतरा उठा है, चारों तरफ से सीढ़ियां उतरी हैं। किनारे पर कठेड़ा आया है। आगे रौंस छोड़कर मोहल आया है। मध्य में दरवाजा है। दरवाजे के दाएं-बाएं ४१-४१ मोहल आए हैं। भीतरी तरफ थंभ आये हैं। कमर भर सीढ़ी उतर कर बगीचे आते हैं, जहां नहरें, चेहेबच्चे फव्वारे आये हैं मेहराबों में (वृक्षों की) हिंडोले आये हैं। बगीचों के आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चबूतरे के मध्य में पानी का भरा कुण्ड आया है। चारों तरफ रौंस आयी है। इस रौंस के जल तरफ चारों दिशा में चार चांदे आये हैं। चांदों से सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं और रौंस पर चारों तरफ गिलम बिछी है। गिलम पर सिंहासन आया है। यह शोभा पहली भोम में आयी है। इसी तरह की शोभा दूसरी भोम में आयी है। चांदनी पर चारों तरफ कठेड़ा आया है। पहली भोम के मध्य के कुण्ड से आठ नहरें निकली हैं। चारों दिशाओं से और चार कोने से। नहर मंदिरों के नीचे से होकर आगे जाहिर हो जाती है। नहरों के दाएं-बाएं कमर भर ऊंची पाल आयी है।

निकुंज में मंदिरों की जो हार आयी है, उसकी दो भोमें आयी हैं। बीच की जगह पर भोम नहीं आयी है। कुंज मोहल से ८३ मंदिर की दूरी पर निकुंज महल आया है। कुंज चौरस और ढका हुआ है। निकुंज गोल और खुला आया है। चार मोहलों के बीच में ८३ मंदिर का चौक आया है, जिसमें से चार नहरें चारों दिशाओं में, चार मोहलों के कोनों से निकल कर चल रही हैं। चार नहरों के मध्य में चेहेबच्चा है तथा चार चौकों में वृक्ष आये हैं, जिनकी ऊंचाई दो भोम की आयी है और जमीन पर सुन्दर रेती रंग-बिरंगी बिछी हुई है। इस प्रकार, कुंज-निकुंज की अपार शोभा आयी है।

दूब-दुलीचे के पश्चिम तरफ जवेरों की नहरों तक ४५०० मंदिर की चौड़ी और दूब-दुलीचा के वायव्य कोने से दक्षिण तरफ जवेरों की नहरों तक ९००० मंदिर की लंबी ये चौगान शोभा ले रही है। जिसमें १५०० मंदिर में दूब-दुलीचा उत्तर से दक्षिण तरफ इस चौगान के साथ आया है। आगे ७५०० मंदिर में चौगान के पूर्व साथ-साथ दूब-दुलीचा के दक्षिण तरफ कुंज-निकुंज जवेरों की नहरों तक आया है। इस चौगान में सुन्दर चौक बने हुए हैं। हर एक चौक में रंग-बिरंगी सुन्दर रेत बिछी हुई है। इस चौगान में श्री राज श्यामाजी तथा सब रूहें पशु-पक्षियों पर बैठकर दौड़ते हैं और एक-दूसरे को पकड़ने के लिए सब दौड़ते हैं। यहां पर दौड़ना, कूदना, उड़ना, लड़ना, भमरियां खाना और गुलाटियां खाना आदि कई प्रकार के खेल किए जाते हैं।

Nijanand App

३८. लाल चबूतरा

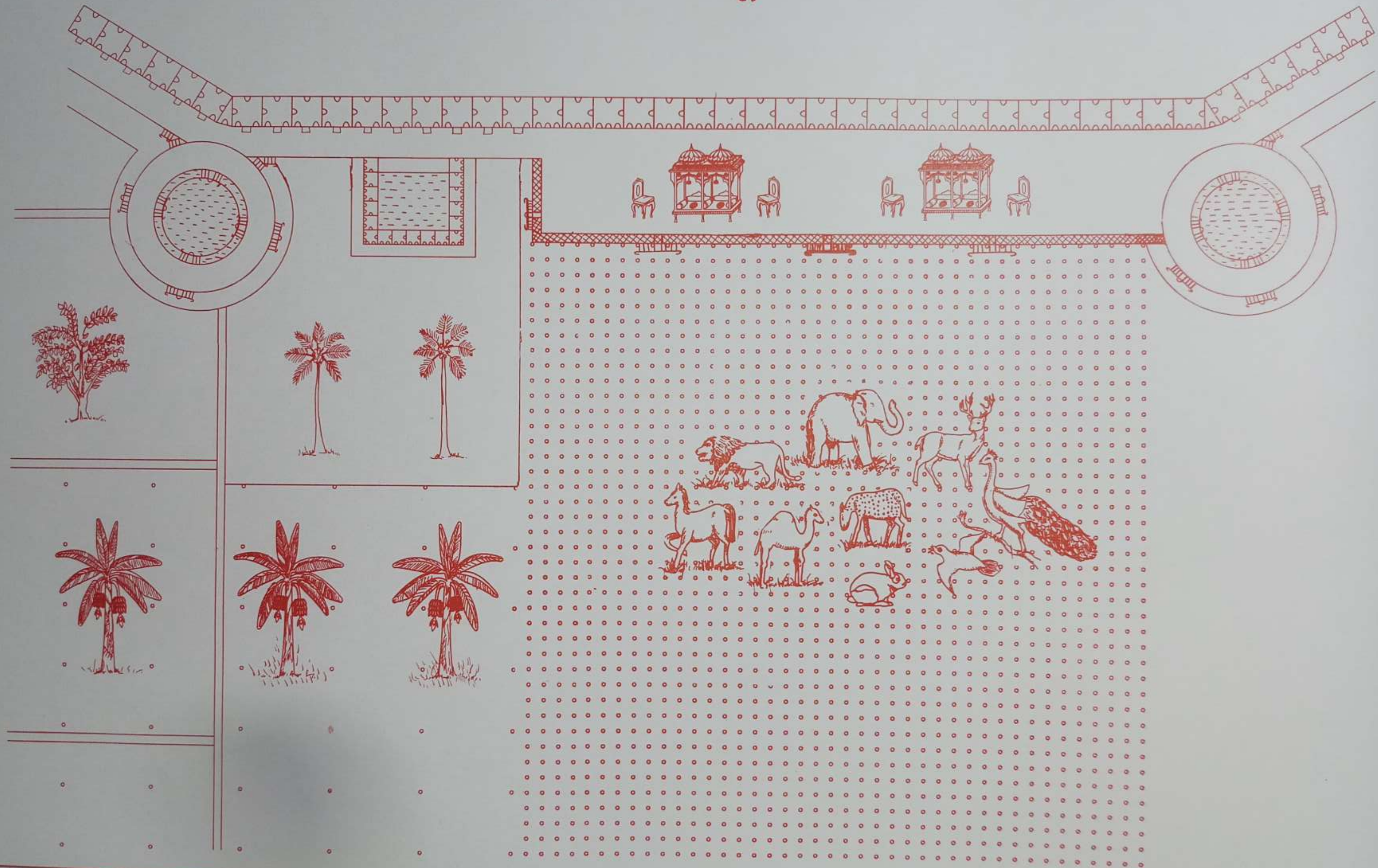

Nijanand App

३८ - लाल चबूतरा

श्री रंग भवन के उत्तर तरफ वायव्य कोने से लेकर ईशान कोने तक ५० हांस आये हैं। हर एक हांस ३०-३० मंदिर का होने से १५०० मंदिर हुए। सो इन मंदिरों के सामने उत्तर तरफ एक मंदिर की चौड़ी उत्तर से दक्षिण तरफ और पश्चिम से पूर्व तरफ १५०० मंदिर की लंबी धाम रौंस आयी है। वायव्य कोने के सामने वाले गुर्ज से लेकर पूर्व तरफ ४० हांस तथा १२०० मंदिर के सामने उत्तर तरफ रौंस के साथ लगकर ३० मंदिर का चौड़ा उत्तर से दक्षिण और वायव्य कोने के चेहबच्चा की कोट दीवाल से लगकर लाल चबूतरे की पश्चिम तरफ की दीवाल की चौड़ाई आयी है। पश्चिम से पूर्व तरफ ११८५ मंदिर का लंबा लाल चबूतरा आया है। लंबाई की जगह १२०० मंदिर की थी, किन्तु लाल चबूतरे के १२ मंदिर वायव्य कोने के चेहबच्चे पर आ गये हैं। यदि इन मंदिरों के भीतरी तरफ की दीवाल से गिनती करें, तो १२०० मंदिर पूरे हो जाते हैं।

लाल चबूतरे पर ३० मंदिर की चौड़ी दक्षिण से उत्तर और १२०० मंदिर की लंबी पूर्व से पश्चिम एक गिलम बिछी है। हर एक हांस का रंग अलग-अलग होने से गिलम न्यारी-२ सी प्रतीत होती है। इन गलीचों पर अनेक प्रकार की चित्रकारी बेल बूटे नगों से की हुई है। ३० मंदिर का लंबा-चौड़ा गलीचा दिखायी देता है।

हर एक हांस के मध्य भाग में एक-२ सिंहासन आया है। तब ४० हांसों के ४० सिंहासन हुए। हर एक सिंहासन के दाएं-बाएं ३-३ हजार कुर्सियां रखी हैं। तब एक हांस में ६ हजार कुर्सियां हुई। प्रत्येक कुर्सी पर २-२ सखी बैठती हैं। तब ४० हांसों की सब कुर्सियां २ लाख ४० हजार हुई। यें सब कुर्सियां अलग-अलग नमूने की आयी हैं। जिस हांस में चाहें, वहां बैठकर सामने के पशु-पक्षी का तमाशा देख सकते हैं।

लाल चबूतरे के उत्तर तरफ हर एक हांस के मध्य में लाल चबूतरे की दीवाल से लगकर एक मंदिर का लंबा-चौड़ा एक चबूतरा बड़ोवन की जमीन से एक भोम का ऊंचा उठ कर लाल चबूतरे के बराबर आया है। इस चबूतरे के चौक से पूर्व और पश्चिम तरफ १००-१०० सीढ़ियां उतरी हैं। चौक तथा सीढ़ियों के उत्तर तरफ कठेड़ा आया है। इसी प्रकार से ४० चांदे आये हैं।

लाल चबूतरे के पूर्व तरफ चबूतरे की दीवाल के मध्य भाग में और ताड़वन के पश्चिम के चबूतरे की बाहरी तरफ जो २५ हाथ की रौंस आयी है, उस रौंस पर १२-१/२ हाथ का चौड़ा पश्चिम से पूर्व और एक मंदिर का लंबा दक्षिण से उत्तर तरफ एक चबूतरा ९७ हाथ का ऊंचा उठकर लाल चबूतरे के बराबर आया है। इस चौक से दक्षिण तरफ ९७ सीढ़ी ताड़वन के चबूतरे की रौंस पर उतरी है। चबूतरे की रौंस जमीन से ३ हाथ ऊंची आयी है। यह सीढ़ी १२-१/२ हाथ की लंबी पूर्व से पश्चिम और एक हाथ की चौड़ी उत्तर से दक्षिण तरफ आयी है। इस चांदे के चौक और सीढ़ियों के पूर्व सुन्दर कठेड़ा शोभा ले रहा है। सो लाल चबूतरे के साथ ४१ चांदे हुए।

लाल चबूतरे के पश्चिम तरफ साथ लगकर वायव्य कोने का चेहबच्चा १६ हांस का दिखायी दे रहा है और लाल चबूतरे के उत्तर तरफ हांस-हांस के कोनों पर चबूतरे के

Nijanand App

दीवाल के साथ लगकर ४१ वृक्ष बड़ोवन के आये हैं, जिनकी ऊँचाई एक भोम की दस भोम जितनी आयी है। लाल चबूतरे के पूर्व तरफ दीवाल के साथ लगकर ताड़वन के ३१ वृक्ष आये हैं। इन सबकी ऊंचाई दस भोम की एक ही भोम की आयी है और लाल चबूतरे के दक्षिण तरफ ११८५ मंदिर श्री रंगभवन के दिखायी देते हैं और १५ मंदिर वायव्य कोने के चेहबच्चे पर आये हैं। दोनों मिलाकर १२०० मंदिर हुए। सो इन १२०० मंदिरों के झरोखे नहीं आये। तब हर एक मंदिर में तीन तीन दरवाजे आने से सब दरवाजे ३६०० और ४१ गुर्ज आये हैं। हर एक गुर्ज में ३-३ दरवाजे आने से १२३ दरवाजे गुर्ज के हुए और १२०० मंदिर का लंबा पश्चिम से पूर्व तरफ और ३० मंदिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर जो लाल चबूतरा आया है। सो इसी को पहली भोम का एक ही झरोखा करके कहा है और ऊपर दूसरी भोम का ३३ हाथ का चौड़ा छज्जा तथा कठेड़ा सब दिखायी दे रहा है। सो इस तरह की बनक सात भोम तक आयी है। ऊपर नवीं भोम का एक मंदिर का चौड़ा और ४० हांस का लंबा छज्जा दिखायी दे रहा है। इन छज्जे की किनार पर १२०१ थंभ मंदिर-मंदिर के अन्तर पर सब आये हैं। सो थंभो में कठेड़ा तथा १२०० ऊपर खुली मेहराबें शोभा ले रही हैं। और इसके ऊपर बड़ोवन की छत दिखायी दे रही है। सो इस कारण से ऊपर की देहलानें तथा गुमटियां गुर्ज कुछ भी दिखायी नहीं देते हैं।

Nijanand App

३९. ताड़वन

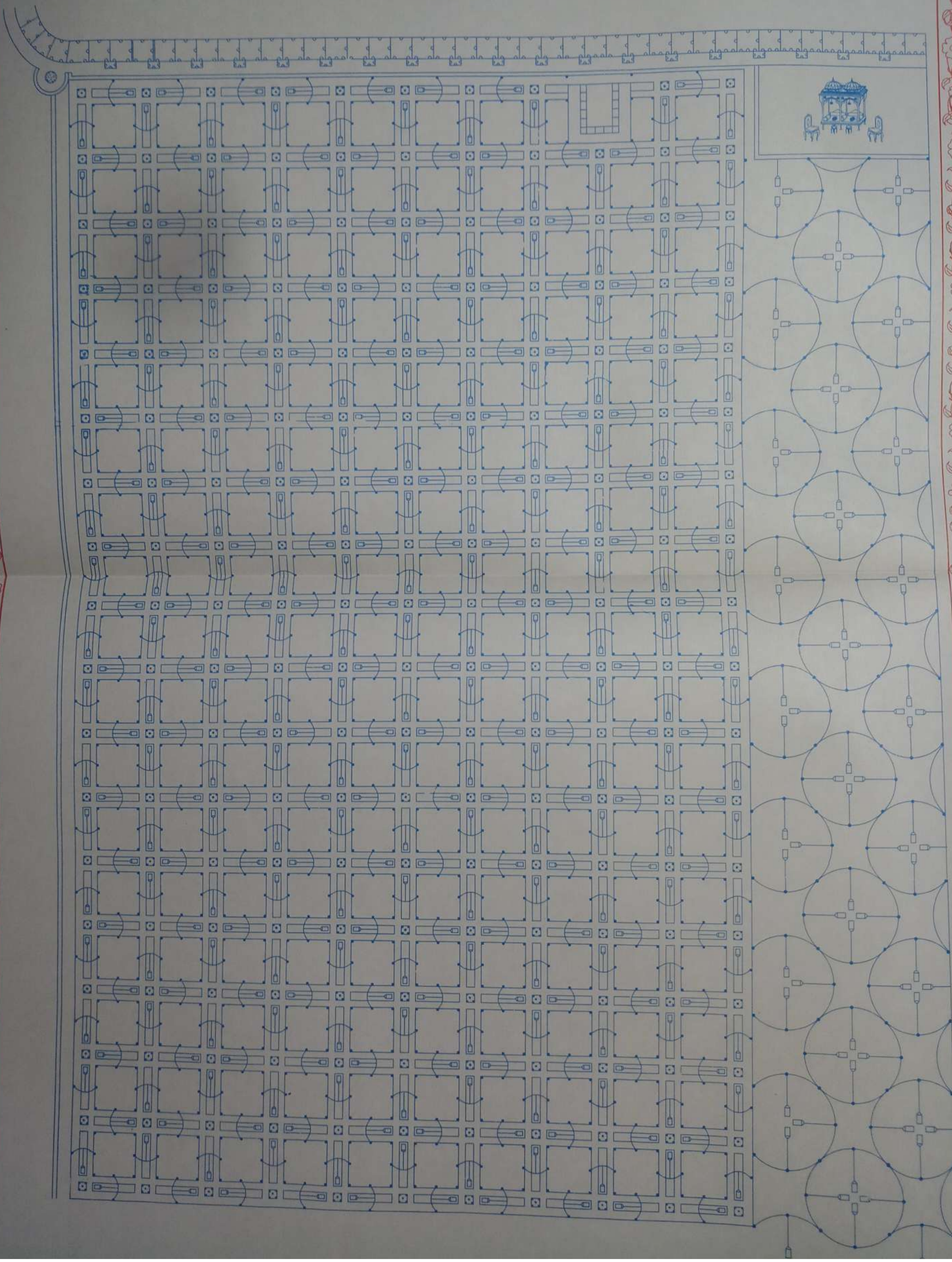

Nijanand App

३९ - ताड़वन

लाल चबूतरे के पूर्व तरफ जो दस हांस आये हैं। उसी दस हांस में अर्थात् ३०० मंदिर पूर्व से पश्चिम चौड़ा और उत्तर से दक्षिण १७ हांस ५१० मंदिर का लंबा धाम रौंस के तले धाम चबूतरा की पिठौर के आगे यह ताड़वन आया है।

११ गुर्जों के सामने ११ रास्ते १ मंदिर के चौड़े और ३०-३० मंदिर के लंबे उत्तर से दक्षिण चबूतरे आये हैं। ११ खड़े रास्तों की १७ हारें आने से कुल १८७ चबूतरे आये हैं।

एक मंदिर चौड़े उत्तर से दक्षिण, ३० मंदिर के लंबे पूर्व से पश्चिम ये चबूतरे धाम रौंस से एक मंदिर की दूरी पर आये हैं। दस रौंसों की १८ हारें आने से कुल १८० रौंसे आयी हैं। कुल रौंसे ३६७ आयी हैं। परन्तु एक बगीचे में खड़ोकली आने से एक रौंस की कमी हो गयी।

आड़े-खड़े रास्ते होने के कारण कुल १७० बगीचे आये हैं। एक बगीचे के किनारे चारों तरफ १२० पेड़ ताड़ के आये हैं। १२० पेड़ों के भीतर २९ वृक्षों की २९ हारें आने से ८४१ पेड़ और जिनस के आयें हैं। उन वृक्षों की दस भोमे आयी हैं परन्तु ताड़ के जो वृक्ष आये हैं, उनकी दस भोम की एक ही भोम आयी है। ताड़वन के हर एक बगीचे में ताड़ के समेत ९६१ वृक्ष आये हैं। ३० की ३० हारें आने से एक बगीचे में ९०० चौक बनते हैं। १० भोम के ९००० चौक बने। एक बगीचे में हिंडोले १८००, १० भोम के १८००० हिंडोले हुए। जैसा बेवरा एक बगीचा का वैसे ही १६९ बगीचों का है। रौंसों के कुल चेहबच्चे १९८, एक सौ चौवालिस मध्य की रौंस के और ५४ चारों तरफ की किनार की रौंस के है, जिनमें से बड़ा हिंडोला खटछप्पर के जिनस का चकराव की जुगती के ३६७, जिनमें एक हिंडोला खड़ोकली के आ जाने से कम हो गया है। ताड़वन के किनार के बगीचों के किनार के वृक्ष १६७८ ताड़ के आये हैं। ताड़ के दाहिनी तरफ पूर्व लिबोई का घाट ५०० मंदिर में आया है और पश्चिम में बडोवन विराजमान है। १७ वृक्ष तक बराबर आगे केल का बगीचा है। केल वन के १० मंदिर और ६ वृक्ष ताड़ के मुकाबिल आये हैं। एक रौंस चबूतरे की किनार पर ३१ वृक्ष ताड़ के हैं। १५ वृक्ष दाएं हैं तथा १५ वृक्ष बाएं है। मध्य का ३१ वां वृक्ष आया है। इसी प्रकार दूसरे बगीचे का ३१वां वृक्ष हैं। इन दोनों वृक्षों के मेहराब में चकरीदार हिंडोला आया है। वट पीपल की चौकी की भांति चारों तरफ के चार हिंडोलों की ताली पड़ती है। एक चेहबच्चा पर चार हिंडोलों की पीठ मिलती है। यहाँ पर यह नहर व चेहबच्चा वट पीपल चौकी की भांति आये हैं। नहरों की लंबाई यहां पर कम है। धाम रौंस से जो सीढ़ियां चांदों द्वारा उतरी हैं। वे भी वट पीपल की चौकी की भांति आयी हैं। ईशान कोनें के चेहबच्चे से जो सीढ़ी ताड़वन में आयी है, वह नैरित्य कोने के चेहबच्चे की भांति है। वृक्षों के थड़ों से ऊपर को सीढ़ियां गयी हैं। ताड़ के वृक्षों में उसी भांति सीढ़ियां आयी हैं, जैसे बड़ो वन के वृक्षों में आयी हैं। बड़ोवन व ताड़वन की चांदनी एक भांति आयी है। बड़ोवन की चांदनी पर चार चेहबच्चे आये हैं। सो यहां नही है। एक बगीचे के ताड़ के वृक्ष १२० तो १६९ बगीचों के २०२८०, १६७८ ताड़ के वृक्ष बाहरी गृद के, सब २१९५८ वृक्ष हुए। एक बगीचे में ८४१ वृक्ष और जिनस के, तो १६९ बगीचों के १४२१२९ वृक्ष एक भोम के, दसों भोम के १४२१२९० और जिनस के वृक्ष हुए। एक बगीचे के चौक ९०० तो १६९ बगीचों के १५२१०० चौक हुए तो दसों भोम के १५२१००० चौक हुए।

Nijanand App

एक चौक के हिंडोले १८०० तो १६९ बगीचों के हिंडोले ३०४२००० हुए। रंग मोहल के लाल चबूतरे से पूर्व तरफ ताड़वन की हद में १३ गुर्ज आये हैं। पहला गुर्ज लाल चबूतरे से ३० मंदिर पर, दूसरा दस मंदिर पर, तीसरा २० मंदिर पर, चौथा १० मंदिर पर, पांचवां २० मंदिर पर आगे छठे गुर्ज से लेकर सभी गुर्ज ३०-३० मंदिर पर आये हैं। खड़ोकली के दाएं-बाएं दो गुर्ज आये हैं। सो एक भोम के ही आये हैं। भुलवनी के सामने तीन गुर्ज और २० मंदिर आये हैं।

रंगभवन के ईशान कोने में जो चेहबच्चा आया है, वह सोलह हांस (४८० मंदिर की गृद) और १६० मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। सब जोगबाई अग्नि कोने के चेहबच्चे के समान आयी है। इस चेहबच्चे पर तीन वन आये हैं। अनार, जाम्बू और ताड़ के इस चेहबच्चा की एक मंदिर की चौड़ी और एक भोम की ऊंची दीवाल आयी है, जिसका एक हांस रंग भवन की रौंस के साथ मिला है। बाकी १५ हांस चारों तरफ घूमें हैं। इस चेहबच्चे की रौंस मंदिर भर की चौड़ी है। एक रौंस दीवाल पर बन गयी है। इस रौंस के दो किनारे हैं। जल की तरफ चार चांदे जल के चबूतरे पर बने हैं। चांदे की जगह को छोड़कर चारों तरफ घेर करके कठेड़ा है। दूसरी किनार वन की दिशा की है, जिसके तीन तरफ कठेड़ा आया है। नैरित्य कोने से दक्षिण के चांदों तक चेहबच्चे की दिवाल के साथ लगकर अनार के ५३ वृक्ष आये हैं, जिस पर ५२ मेहराबें आयी हैं। २-२ मंदिर के फासले पर सब वृक्ष आए हैं। दक्षिण के चांदे से पूर्व के चांदे तक ६० वृक्ष और ६० मेहराबें अनार की आयी हैं। पूर्व के चांदे से पूर्व तरफ दो मंदिर की चौड़ी रौंस श्री जमुना जी तक चली गयी है। एक रौंस लिबोई और अनार के घाट के बीच में आयी है। पूर्व के चांदे से उत्तर के चांदे तक ६० वृक्षों की मेहराबें लिंबोई घाट की हैं। और उत्तर के चांदे से वायव्य कोना तक १०५ वृक्ष ताड़वन के आए हैं, जिस पर १०४ मेहराबें सब आयी हैं। यह वृक्ष मंदिर-२ के अन्तर पर आए हैं। लिंबोई घाट के और अनार घाट के ४०-४० वृक्ष कम हुए हैं। हर हार में एक वृक्ष छूटा है। अग्नि कोने के चेहबच्चे पर तीन वन आये हैं। जाम्बू, नारंगी और वट पीपल की चौकी। नैरित्य और वायव्य कोने के चेहबच्चे पर बड़ोवन के पांच वृक्ष चारों तरफ घूमे हैं। ईशान कोने पर तीन वन आए हैं अनार, लिंबोई और ताड़ के।

Nijanand App

४०. ताड़वन का एक बगीचा

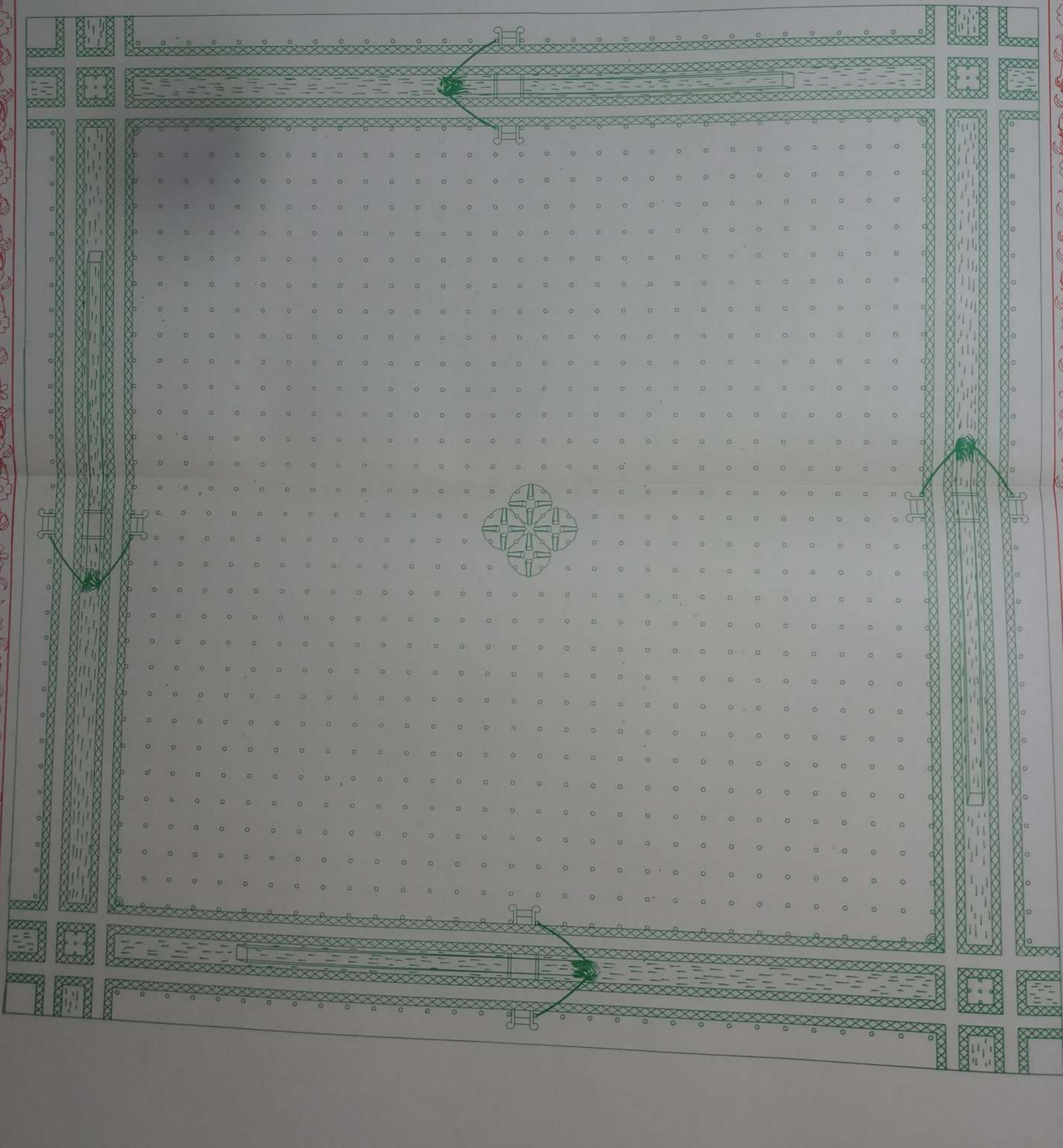

Nijanand App

४० - ताड़वन का एक बगीचा

ताड़वन का एक बगीचा ३० मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। हर बगीचे के किनारे पर चारों तरफ १२० वृक्ष ताड़ के आये हैं। इसके भीतर २९ वृक्षों की २९ हारें आयी हैं, जिसके वृक्ष अलग-अलग जिनस के आए हैं, इन वृक्षों की १० भोमें आयी हैं, परन्तु जो किनारे के ताड़ के वृक्ष आये हैं, उनकी १० भोम ऊंची केवल एक भोम आयी है। ३० वृक्षों की ३० हारें आने से एक बगीचे में ९०० चौक बनते हैं, इस प्रकार १० भोम के ९००० चौक हुए। एक बगीचे में १८०० हिंडोले हैं, इसलिए दस भोम के १८००० हिंडोले हुए।

चबूतरे के किनारे पर ताड़ के ३१ वृक्ष आये हैं, १५ वृक्ष दाएं हैं तथा १५ वृक्ष बाएं हैं। मध्य का जो ३१ वां वृक्ष आया है, तथा उसके सामने के बगीचे के मध्य के वृक्ष, इन दोनों के बीच एक मेहराब है, जिसमें चकरीदार हिंडोला आया है। चारों तरफ के चार हिंडोलों की ताली चेहेबच्चे पर पड़ती है। वृक्षों के थड़ों से ऊपर को सीढ़ियां गई हैं। ताड़वन की चांदनी पर चार चेहेबच्चे आये हैं।

Nijanand App

४१. बड़ोवन, मधुवन तथा महावन का दृश्य

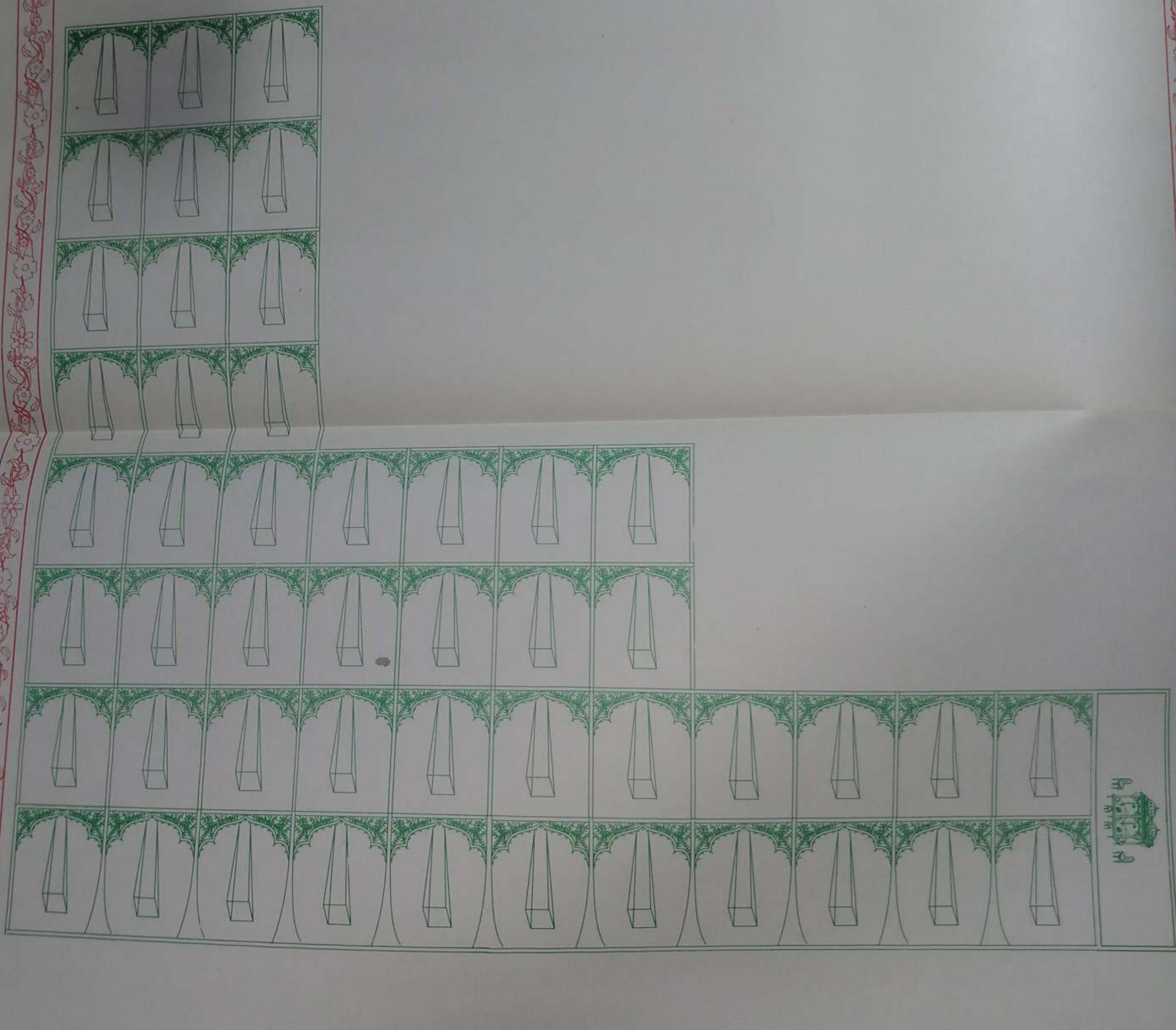

Nijanand App

४१ - बड़ोवन, मधुवन तथा महावन का दृश्य

लाल चबूतरे के उत्तर तरफ चबूतरे के साथ लगकर बड़ोवन के ४१ वृक्ष आये हैं। ४१ वृक्षों की ४१ हारें दक्षिण से उत्तर तरफ १२०० मंदिर तक आयी हैं। इस प्रकार, दक्षिण से उत्तर तरफ ४० अखाड़ों की ४० हारें आने से १६०० अखाड़े हुए। इन अखाड़ों में कई रंगों की रेती बिछी है। अनेक प्रकार के पसु पंखी इन अखाड़ों में आकर तमाशे दिखाते हैं। श्री राज श्यामाजी लाल चबूतरे पर बैठकर पशु-पक्षियों तथा जानवरों के खेलों को देखते हैं। सब वृक्ष एक-एक मंदिर के मोटे और एक-एक भोम के ऊंचे आये हैं, परन्तु इन वृक्षों की एक भोम में रंगभवन की दस भोमें आयी हैं। दो-दो वृक्षों के बीच में एक-एक मेहराब आयी है, जिनके मध्य में हिंडोले लगे हैं। चकरियों से हिंडोले नीचे आ जाते हैं और जमीन से एक भोम और कमर भर ऊंचे आ जाते हैं और लाल चबूतरे के कठेड़े के साथ तक की ऊंचाई से झूलते हैं। हर एक चौक में चार हिंडोलों की ताली पड़ती है। वृक्षों की थड़ों में सीढ़ी गोलाई में होकर चढ़ी है। रंगभवन के हर भोम के छज्जों के सामने इन पेड़ों में से ५ हाथ का चौड़ा छज्जा चारों तरफ घेरकर आया है। इस छज्जे की किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है।

लाल चबूतरे के उत्तर तरफ १७ वृक्ष तक जो बड़ोवन आया है, वह वृक्ष रगंभवन की चांदनी के बराबर आये हैं। बाकी के २४ वृक्षों की ४१ हारों के जो वृक्ष हैं, उनकी २५० भोम के ऊपर एक चांदनी आयी हैं। एक भोम ४०० कोस ऊंची आने से बड़ोवन के इन वृक्षों की ऊंचाई एक लाख कोस आयी है।

बड़ोवन के ३३ वृक्षों के आगे १२० मंदिर पर एक हार मधुवन की बड़ोवन के पूर्व तरफ आयी है। दूसरी हार ४१वें वृक्ष के सामने आयी है। इसके आगे १३०-१३० मंदिर पर दो हारें मधुवन की आयी हैं। मधुवन श्री यमुना जी के केल के पुल से चला है। फिर पुखराज और बंगले की संधि के चेहेबच्चे तक आकर पुखराज के चारों ओर घूमा है। इसकी ४ हारें पुखराज को घेरकर आयी हैं। पुखराज के दक्षिण की नहर का पानी महावन, मधुवन और बड़ोवन में होता हुआ ताड़वन के चेहेबच्चों व नहरों में आता है। इसके वृक्ष ५०० भोम ऊपर गए हैं, जिससे इसकी ऊंचाई दो लाख कोस की आयी है। वृक्षों के बीच नहरें और चेहेबच्चे व सीढ़ियां आयी हैं। पेड़ों की मेहराबों में हिंडोले आये हैं।

मधुवन की तरह महावन भी ४०० कोस का चौड़ा और मधुवन की हद के उत्तर की रौंस की किनार से शुरू होकर पुखराज को घेर के आये हैं। इन वृक्षों की ४ हारें आयी हैं। पुखराज की रौंस से ५० कोस की दूरी पर पहली पंक्ति आयी है। इससे १०० कोस की दूरी पर दूसरी पंक्ति है। इसी प्रकार से महावन की दो हारें और आयी हैं। महावन के बाद ४ हारें मधुवन की आयी हैं। पुखराज को घेर करके पहली हार महावन की आयी है। महावन के वृक्षों ने पुखराज की तरफ अपना छत्री मण्डल किया है। पुखराज की चांदनी और महावन की ४ लाख कोस की चांदनी एक बराबर आयी है। १२५ मंदिर के लंबे-चौड़े चौक के मध्य में कमर भर ऊंचे चबूतरे पर महावन का वृक्ष १००० भोम लिए शोभायमान हैं। वृक्षों के चारों तरफ की नहरें जहां पर मिलती हैं, वहां पर चेहेबच्चा शोभायमान है। चेहेबच्चों में फव्वारों की शोभा अपरम्पार है। नहरों के मध्य में पुल है। पेड़ों के थड़ों से सीढ़ियां ऊपर को गयी हैं। पेड़ों की मेहरावों में हिंडोले आये हैं। इन वृक्षों की ऊंचाई के कारण इसे लम्बा वन कहा गया है।

Nijanand App

४२. पुखराज, बंगला, घाटी, बड़ोवन, मधुवन तथा महावन

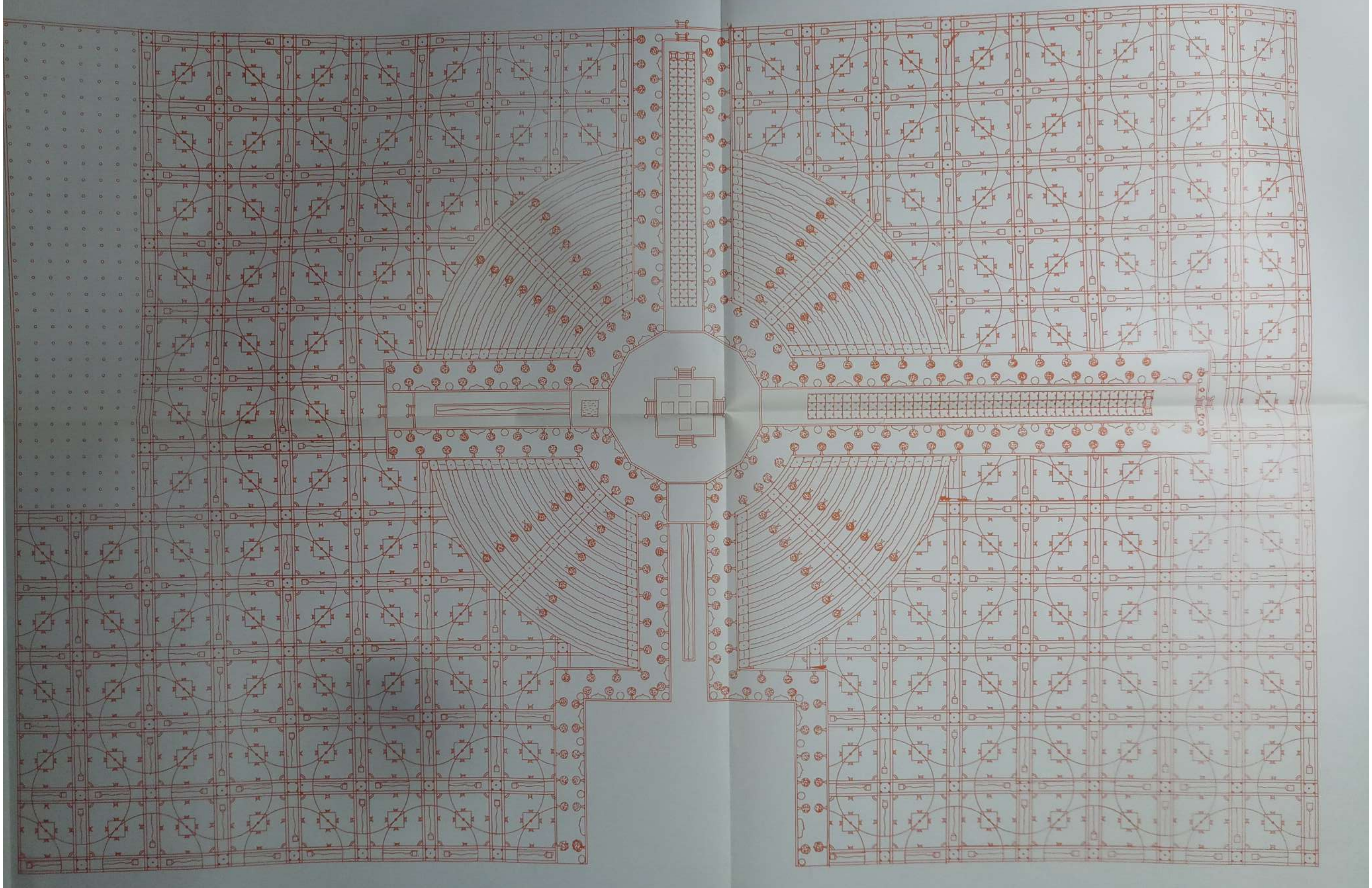

Nijanand App

४२ - पुखराज एवं बंगला, घाटी, बड़ोवन, मधुवन एवं महावन

पुखराजी पहाड़ का गोल चबूतरा एक हजार हांस का जमीन से भोम भर ऊंचा आया है। हांसों के कोनों पर एक हजार गोल गुर्ज भोम भर ऊंचे चबूतरे तक आये हैं। इस चबूतरे के तीसरे हिस्से में भोम भर का ऊंचा चौरस चबूतरा आया है। इस चौरस चबूतरे के ऊपर तलहटी से आये हुए पांच पेड़ जाहिर हुए हैं। पांचों पेड़ों के पांचवीं भोम से छज्जे निकले हुए हैं, जो ढाई सौ भोम उपरा-ऊपर जाकर आपस में मिले हुए हैं। पुखराज पर्वत के पश्चिम एवं उत्तर दिशा में दो घाटियां आयी हैं, जिनकी चार लाख कोस की लंबाई एवं ४०० कोस की चौड़ाई आयी है। घाटी की मोहोलात की पांच भोम छठीं चांदनी से पुखराज की तरफ छज्जे बढ़े हुए हैं। ढाई सौ भोम पर जाकर पश्चिम एवं उत्तर के पेड़ के छज्जे से जाकर मिल गये हैं। पुखराज पहाड़ की पूरब दिशा में एक लाख कोस का बंगले का चबूतरा आया है। उस चबूतरे के बीचोबीच तीसरे हिस्से में ४८ बंगलों की ४८ हारें तथा ४८ चेहबच्चों की ४८ हारें आयी हैं। बंगले के चारों तरफ चबूतरे के दो हिस्सों में ५-५ वृक्षों के बीच में चार फीलपाइयों की हारें आयी हैं। इनकी ऊंचाई ५ भोम की एक ही भोम आयी है।

सभी बंगलों की पांच भोम के ऊपर एक ही छठीं चांदनी आयी है। चांदनी के मध्य में ग्यारह हजार कोस का लंबा-चौड़ा ताल आया हुआ है। ताल के चारों तरफ देहलान से छज्जे बढ़े हुए हैं। ढाई सौ भोम उपरा-ऊपर छज्जे बढ़ते हुए पुखराज के पूरब के पेड़ से मिलान किया है, जिससे ताल ३३००० कोस का लंबा चौड़ा हो गया है। यहां से ताल का बढ़ना बन्द होकर चारों तरफ छज्जों के उपर मोहोलाते बनती जाती हैं, जो साढ़े सात सौ भोम तक गयी हैं।

पुखराजी पहाड़ के पांचों पेड़, दोनों घाटियां एवं पुखराजी ताल इन आठों निशानों के २५० भोम ऊपर १४ मेहराबें दिखायी देती हैं। २५० भोम के ऊपर सभी छज्जों के मिलने से सबकी एक चांदनी बन जाती है। तब यहां से ७५० भोम मोहलातें बनती चली जाती हैं। यहां तक पुखराजी पहाड़ की १००० भोम (४ लाख कोस) की ऊंचाई हो जाती है। यहां पुखराज की चांदनी की किनार पर १००० हांस की मोहोलाइत एवं चारों दिशाओं में चार बड़े दरवाजे आये हैं। हजार हांस की मोहोलाइत के पश्चिम एवं उत्तर के दरवाजे से दोनों दिशाओं की घाटियां (सीढ़ियां) आकर लगी हैं।

पुखराज की चांदनी के तीसरे हिस्से में एक हजार भोम (४ लाख कोस) ऊंचे आकाशी मोहोल आये हुए हैं। पुखराजी पहाड़ से लगते हुए चारों तरफ महावन के वृक्षों की चार हारें आयी हैं। महावन को घेरकर चार हारें मधुवन की आयी हैं। इन आठ हारों के बीच में ९ नहरें घेर कर आयी हैं। मधुवन को घेर कर चारों तरफ बड़ोवन के वृक्ष आये हुए हैं। इन तीनों वनों के अन्दर वट पीपल की चौकी की भांति नहरें, चेहेबच्चे तथा हिंडोले आये हैं।

Nijanand App

४३. पुखराज पर्वत तथा बंगले की तरहटी

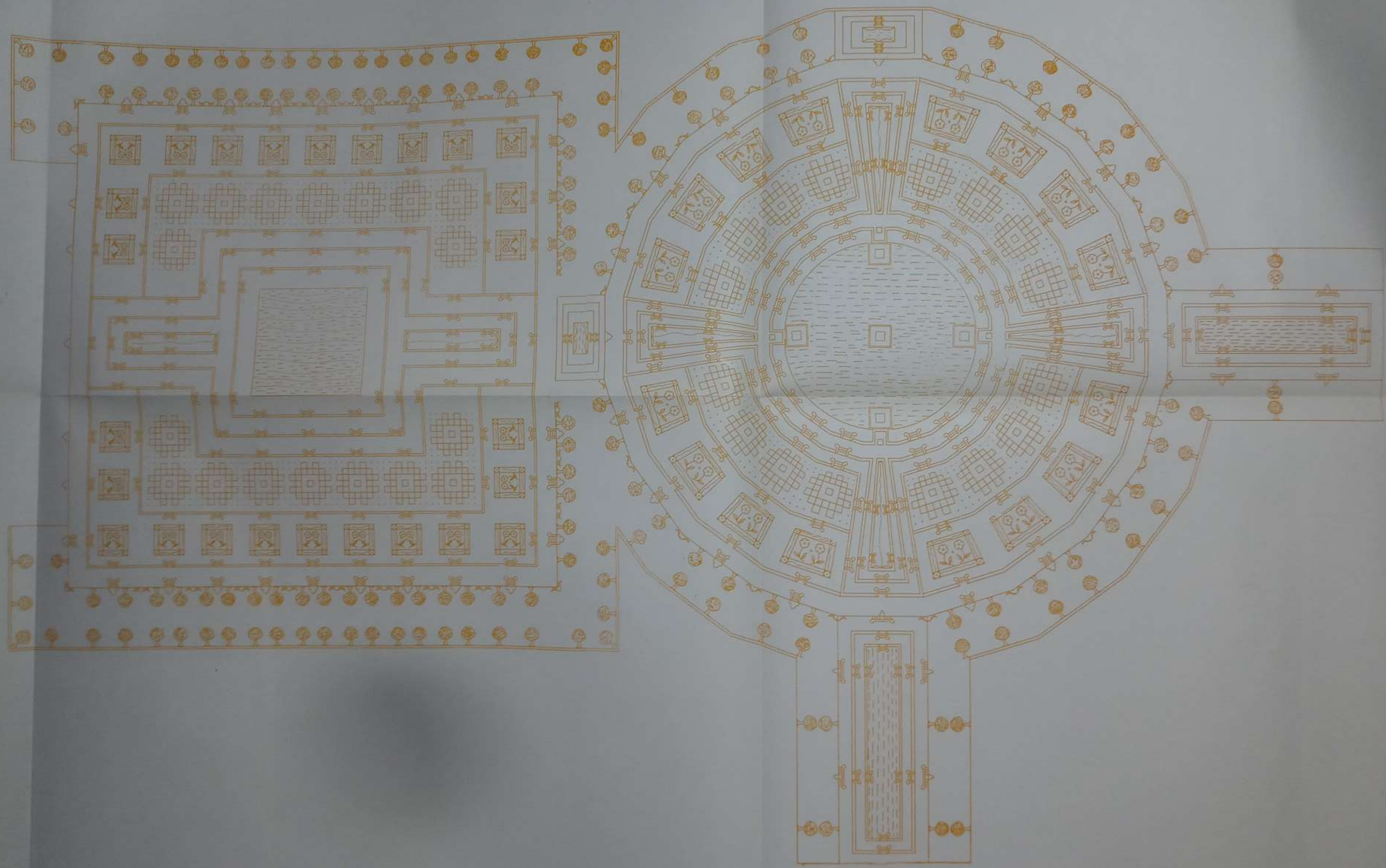

Nijanand App

४३ - पुखराज पर्वत तथा बंगले की तरहटी

पुखराज पर्वत की तरहटी एक भोम नीचे जमीन में आयी है, जिसकी गृद चार लाख कोस की है तथा लंबाई-चौड़ाई १३३३३३ कोस की है। दीवाल में जो हजार दरवाजे आये हैं, उन दरवाजों के आगे भोम भर की सीढ़ी उतरी है। ४०० कोस की रौंस तरहटी की दीवाल के साथ लगकर आयी है, इस रौंस के आगे कमर भर नीचे ४०० कोस की चौड़ी बगीचों को घेर करके रौंस आयी है। इस रौंस से कमर भर नीचे बगीचा आया है, जो ४०० कोस का लंबा-चौड़ा आया है। बगीचों में नहरें, फव्वारे व मध्य बगीचे में फीलपाए आये हैं। इसी प्रकार ५२००० बगीचों के आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की रौंस आयी है। ऐसी बनक १००० हांस में ५२००० बगीचों व ५२००० फीलपायों की आयी है। बगीचों के आगे जो ४०० कोस की रौंस है, यहां तक दीवाल से २२००० कोस की जगह हुई। इस रौंस के आगे ४०० कोस की चौड़ी कमर भर ऊंची मोहलातों की रौंस आयी है। इसके आगे एक हांस में एक मोहल आया है। मोहल को घेरकर के त्रिपोलिया आए हैं, जिसमें दो हार थंभों की आयी है। त्रिपोलिया सहित मोहोल ४०० कोस का लंबा-चौड़ा बराबर आया है। मोहोल के अन्दर घेर करके मंदिर आये हैं, जिसमें चारों दिशा में चार दरवाजे हैं। दरवाजे के दाएं-बाएं एक-एक चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है। मंदिरों के आगे थंभों की हार है, इसके आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा है, जिसकी किनार पर थंभ व कठेड़ा सुशोभित है। चारों दिशा में सीढ़ियां शोभित हैं। चबूतरे पर गिलम, गिलम पर सिंहासन, कुर्सियां हैं। चौड़ाई में इसी प्रकार ५३ मोहोल आये हैं। १००० हांस में ५३००० मोहल हुए। मोहलातों के आगे ४०० कोस की चौड़ी रौंस मोहोलातों को घेर करके आयी है। मोहोलातों व दोनों रौंसों सहित २२००० कोस हुए। अब मोहोलातों की रौंस के आगे कमर भर नीचे ताल की पाल ४०० कोस की आयी है। इस पाल से नीचे कमर भर २५० कोस का चौड़ा ताल का चबूतरा आया है। किनारे से लेकर लाल चबूतरे तक ४४६५० कोस हुए। इतने ही दूसरी तरफ आये हैं। बीच में ४४००० कोस में तालाब आया है। सब मिलाके १३३३३३ कोस हुए।

ताल के एक दिशा में नहर के दोनों तरफ २५०-२५० कोस की रौंस आयी है और ४००-४०० कोस में पाल आयी है, जिससे एक दिशा में १७०० कोस की जगह दबी, एक हार में ४ मोहलातें कम हुई, चारों दिशाओं में १६ मोहोलातें कम हुई, तो ५३ हारों के ८४८ मोहल कम हुए। तब सही मोहल ५२१५२ हुए। इसी प्रकार से बगीचों की ५२ हारों के ८३२ कम हुए। तब सही बगीचे व फीलपाए ५११६८ हुए।

खजाने के ताल में पांच मोहोल आये हैं। चार मोहल चार दिशा में है तथा एक मोहल मध्य में आया है। रौंस के किनारे ताल में थंभ उठकर रौंस के बराबर ९०० कोस का लंबा-चौड़ा बराबर एक चबूतरा चौरस आया है। बीच में ४०० कोस की हवेली और दाएं-बाएं २५०-२५० कोस की रौंस आयी है। नहर की रौंस तीन तरफ घूमकर फिर दूसरी तरफ जाकर मिल गयी है। हवेली के अन्दर घेर के मोहल, भीतर थंभ और बगीचा है तथा बीच में कमर भर ऊंचा चबूतरा, किनार पर थंभ व गिलम, सिंहासन और कुर्सियां सब आये हैं। इस प्रकार से चारों दिशा में चार मोहल आये हैं। पांचवां मध्य का मोहल ताल के मध्य में हैं तथा ९०० कोस का चौरस टापू आया है। ४०० कोस में हवेली हैं जिसके दाएं-बाएं २५०-

Nijanand App

२५० कोस की रौंस आयी है। हवेली के चारों तरफ मंदिरों की भीतरी दिवाल से लगकर भरा हुआ पानी का थंभ ऊपर आकाशी मोहल तक गया है, जो खड़ोकली के समान है। तरहटी की ऊंचाई दो भोम की आयी है। ऊपर छत सब एक हो गई है। १३३३३३ कोस की लंबी-चौड़ी बराबर और बाहर की जमीन से तरहटी की ऊंचाई एक भोम की आयी है।

बंगला की तरहटी भोम भर नीचे की जमीन पर आयी है, जिसकी लंबाई-चौड़ाई एक लाख कोस की है और गृद चार लाख कोस की है। बाहर दो वृक्षों वाली रौंस से एक भोम की ऊंची दीवाल उठी हैं। एक दिशा में एक लाख कोस की लंबी है, जिसमें २५० हांस आये हैं। एक-एक हांस की हद में गोल गुर्ज आये हैं। हांस-हांस के मध्य में दो गुर्जों के मध्य में एक दरवाजा तरहटी में जाने के वास्ते आया है। ऊपर जाने के वास्ते गुर्जों में सीढ़ियां आयी हैं। एक दिशा में २५० दरवाजे आये हैं परन्तु अधबीच के कुण्ड की तरफ (बंगला के पूर्व) गुर्ज नहीं आये हैं। दरवाजे के सामने सीढ़ियां उतरी हैं। ४०० कोस की रौंस से कमर भर नीचे वन की रौंस आयी है। हांस-हांस की जगह पर सीढ़ियां उतरी हैं। एक-एक हांस का लंबा-चौड़ा बराबर बगीचा आया है। मध्य में फीलपाए आये हैं। सो ताल पर ३८ बगीचे आए हैं। हांस-हांस के लंबे-चौड़े हजार हांस में ३८००० बगीचे आये हैं। मोहोल या बगीचे का ब्यान पुखराज की तरहटी की भांति आया है। बगीचों के आगे ४०० कोस की रौंस है। इसके आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस मोहलातों की रौंस आयी है। आगे एक हांस (४०० कोस) का लंबा-चौड़ा बराबर जिसमें घेर करके १००० मोहोलात हैं, इस तरह ताल तरफ ३९ मोहोलातें आयी हैं, तो हजार हांस को घेर करके ३९००० मोहोलातें हुई। मोहोलों के आगे ४०० कोस की रौंस हैं। इसके आगे कमर भर नीचे ४०० कोस की पाल हैं। इसके आगे कमर भर नीचे १०० कोस की ताल की रौंस आयी है। दीवाल से लेकर यहां तक ३३३०० कोस होते हैं। इतनी ही जगह दूसरी तरफ आयी है, इतने ही में ताल ३३४०० कोस का आया है। इस प्रकार एक किनार से लेकर दूसरी किनार तक एक लाख कोस का हिसाब पूरा हुआ। पुखराज की तरहटी की भांति इसमें भी पूर्व-पश्चिम तरफ मोहोलातें कम होंगी। इसकी मोहोलातें दो भोम की आयी हैं। ऊपर एक ही पूरी छत आयी है।

Nijanand App

४४. अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा एवं मूल कुण्ड की तरहटी

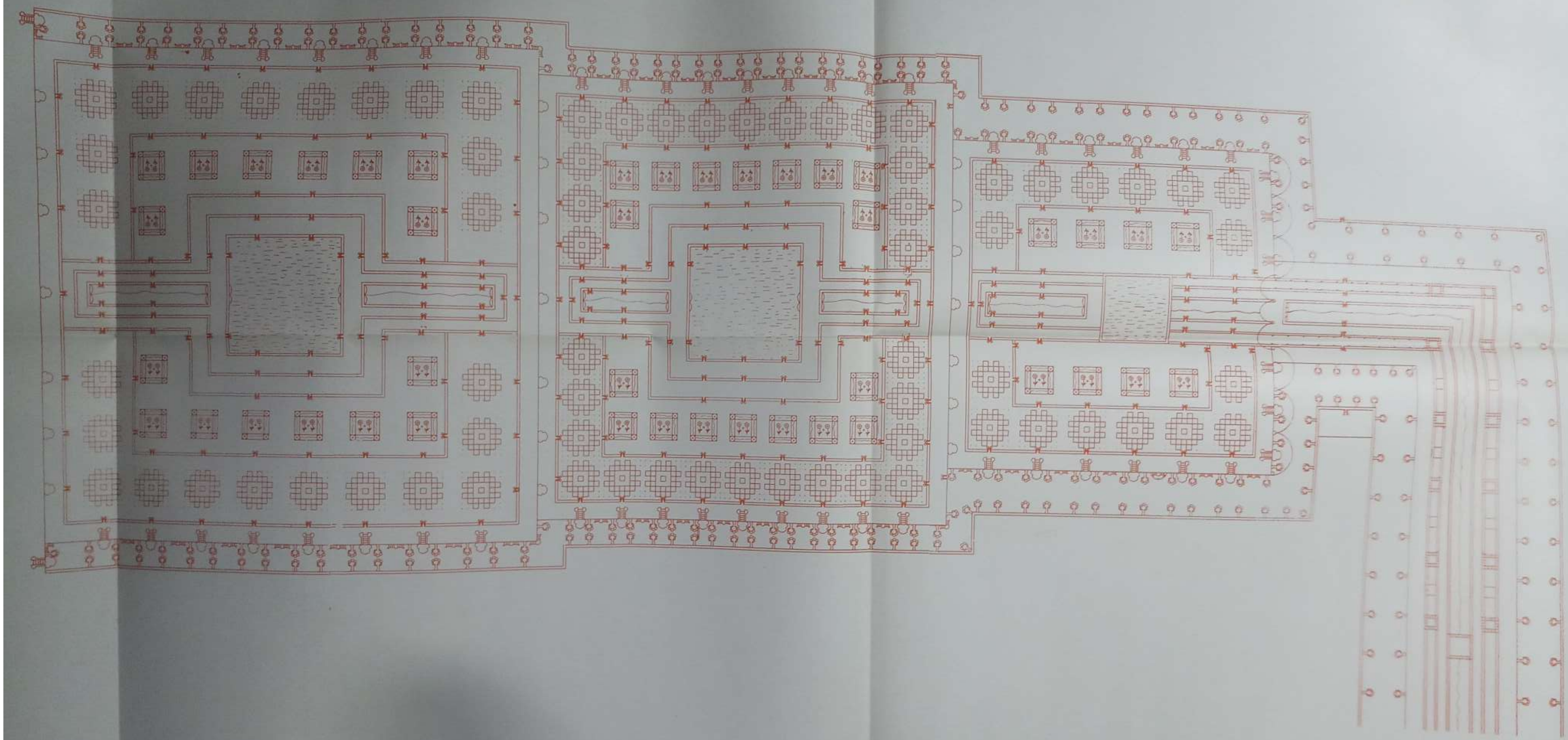

Nijanand App

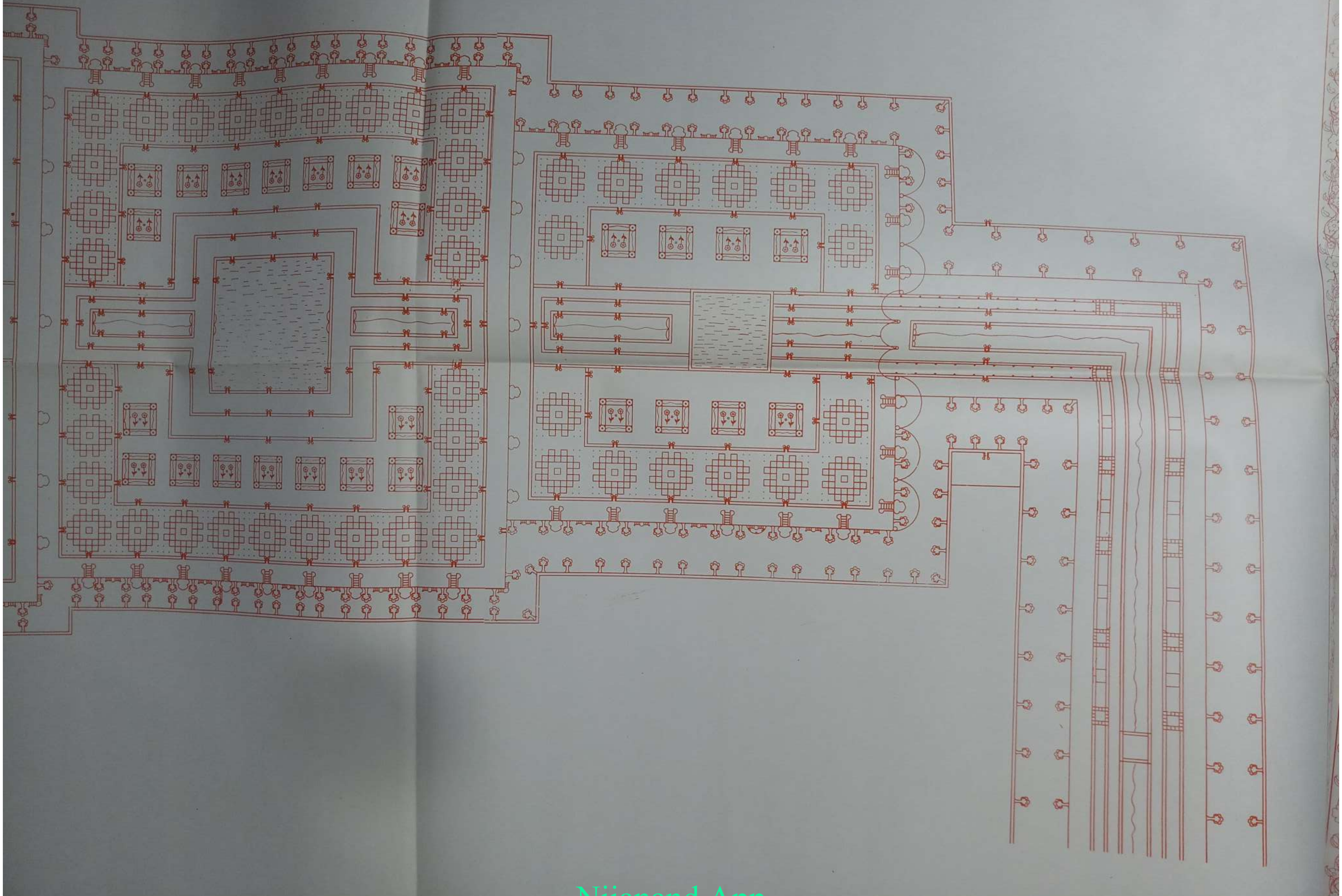

Nijanand App

४४ - अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा एवं मूलकुण्ड की तरहटी

अधबीच के कुण्ड के बाहर कमर भर ऊंची रौंस ५०० मंदिर की चौड़ी है। जिस पर दो हारें वृक्षों की आयी हैं। इस रौंस के आगे भोम भर ऊंची दीवाल आयी है। ऐसी दीवाल चारों तरफ घेर करके आयी है। दीवाल की लंबाई ३३३०० कोस की आयी है। जिसमें हांस-हांस के अन्तर पर गोल गुर्ज आये हैं। गुर्जों से सीढ़ी चबूतरे पर जाने के वास्ते आयी है। दो गुर्जों के मध्य में दरवाजा आया है। इस दरवाजे के आगे तरहटी में जाने वास्ते सीढ़ियां भोम भर की आयी हैं। सो सीढ़ियां ४०० कोस की रौंस पर उतरी हैं। इस रौंस से कमर भर नीचे ४०० कोस की चौड़ी मोहोलात की रौंस आयी है। इसके आगे ४०० कोस का एक मोहोल आया है, ऐसे दस मोहोल आए हैं।इसके आगे ४०० कोस की रौंस आयी है। इस रौंस के आगे कमर भर नीचे की रौंस ४०० कोस की चौड़ी आयी है। इसके आगे ४०० कोस का लंबा-चौड़ा बगीचा आया है। ऐसे ही कुण्ड की तरफ ११ बगीचे आये हैं। ये बगीचे तथा मोहोलातें पुखराज की तरहटी के समान हैं। ११वें बगीचे के आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की चौड़ी बगीचे की रौंस आयी है। इस रौंस के आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की चौड़ी पाल आयी है। इस पाल से कमर भर नीचे २५० कोस की चौड़ी ताल की रौंस आयी है। यहां तक किनारे से लेकर ११०५० कोस हुए। ११२०० कोस में ताल और ताल के आगे ११०५० कोस की जगह पहले की भांति आयी है। ताल के चारों तरफ ५० कोस का जल चबूतरा आया है। जिस पर कमर भर ऊंचा जल है। रौंस से चारों दिशा में सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। जिससे लंबाई-चौड़ाई ३३३३३ कोस की आयी है। एक दिशा के हांस ८३ होते हैं। चारों दिशा के ३३२ हांस हुए। एक हांस की जगह में सीढ़ियां उतरी हैं। बंगला और अधबीच के कुण्ड के बीच में दीवाल आयी है। दीवाल में हांस-हांस की जगह पर दरवाजे बने हैं। सीढ़ियों की रौंस से चढ़ करके दरवाजों में होकर बंगलों की तरहटी में सीढ़ियों की रौंस पर चले जाइए। इस तरहटी के मोहलों की ऊंचाई दो भोम आयी है। ऊपर छत सब एक हो गई है। पूर्व-पश्चिम नहर होने के कारण पुखराज की तरहटी की भांति कुछ बगीचा व मोहोल कम हो गए हैं। तरहटी की छत ३३३०० कोस की लंबी-चौड़ी आयी है।

ढंपो चबूतरा की तरहटी के बाहर, जमीन से कमर भर ऊंची रौंस आयी है। जिस पर दो हारें वृक्षों की आयी हैं, इस रौंस के साथ लगकर भोम भर ऊंची दीवाल उठी हैं, जो ११११०० कोस की लंबी है, जिसमें ४०० कोस पर गोल गुर्ज आये हैं, जिनके दोनों तरफ से ऊपर जाने की सीढ़ियां आयी हैं। दोनों गुर्जों के मध्य में दरवाजा अंदर तरहटी में जाने के लिए आया है, जो ११११०० कोस की लंबी दीवाल चारों तरफ घूम करके आयी है। चारों तरफ इसी प्रकार की शोभा आयी है, जिससे तरहटी ११११०० कोस की लंबी-चौड़ी और दो भोम गहरी आयी है। एक भोम ऊंची दीवाल है और एक भोम जमीन के अंदर आयी है, जिसके एक तरफ के हांस २८ होते हैं। चारों तरफ के हांस ११२ होते हैं। सबसे पहले दीवाल के आगे भोम भर नीचे ४०० कोस की रौंस सीढ़ियों वाली आयी है। आगे कमर भर नीचे मोहलातों की रौंस १०० कोस की आयी है। आगे ४०० कोस का लंबा-चौड़ा मोहोल आया है। ऐसे तीन मोहोल आये हैं। इसके आगे कमर भर नीचे बगीचों की रौंस आयी है। आगे हांस-हांस के लंबे-चौड़े तीन बगीचे आये हैं। बगीचों के मध्य बाग में फीलपाए आये हैं। आगे १०० कोस की वन की रौंस आयी है। आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की पाल आयी है। पाल से कमर भर नीचे ताल की रौंस १०० कोस की घेर करके आयी है। इससे कमर भर सीढ़ी

Nijanand App

उतर कर ५० कोस के जल चबूतरे पर स्नान करते हैं। पूर्व-पश्चिम नहरों के आने के कारण कुछ मोहलातों व बगीचों की कमी आ गई है, जैसे पुखराज की तरहटी में आयी है। किनारे से यहां तक ३७०० कोस हुए। ३७०० कोस में ताल आया है। आगे ३७०० कोस में बाग-बगीचे पहले की भांति आये हैं।इस प्रकार से ११९०० कोस में तरहटी आयी है और ढंपो चबूतरा व अधबीच के कुण्ड की जो दीवाल आयी है, उसमें हांस-हांस में दरवाजे आये हैं। इन मोहलों की दो भोमें आयी हैं। मोहलों और बगीचों का ब्यान पुखराज के बगीचों तथा मोहलों के समान है। ऊपर ११९०० कोस की लंबी-चौड़ी छत आयी है। इस छत के तीन तरफ कठेड़ा है। चौथी तरफ अधबीच के कुण्ड के मोहल आये हैं। ढंपो चबूतरा एक भोम ऊंचा ११९०० कोस लंबा-चौड़ा है। जिसके दोनों तरफ (उत्तर-दक्षिण) बड़ोवन के वृक्षों ने छत्री बांधी है। चबूतरे पर सिंहासन, कुर्सियां शोभायमान हैं।

मूल कुण्ड की तरहटी ढंपो चबूतरे के तीसरे हिस्से में ३७०० कोस में आयी है। बाहर कमर भर ऊंची रौंस, जिस पर दो वृक्षों की हारें आयी हैं। रौंस के भीतरी तरफ भोम भर की ऊंची दीवाल आयी है, जिसके हांस-हांस में गुर्ज हैं, तथा दो गुर्जो के मध्य में दरवाजा आया है। दरवाजे के आगे भोम भर की सीढ़ियां आयी हैं। ऐसी बनक चारों तरफ आयी है। सीढ़ियों वाली ४०० कोस की रौंस के आगे कमर भर नीचे १२-१/२ कोस की मोहोलातों की रौंस आयी है। इसके आगे ४०० कोस का एक मोहल आया है। इस मोहल के आगे १२-१/२ कोस की चौड़ी मोहोलातों की रौंस आयी है। इसके आगे कमर भर नीचे १२-१/२ कोस की बगीचों की रौंस आयी है। इसके आगे ४०० कोस का लंबा-चौड़ा बगीचा है जिसके मध्य में फिलपाए आये हैं। इसके आगे १२-१/२ कोस की बगीचों की रौंस आयी है। किनारे से लेकर यहां तक १२५० कोस हुए। इतनी जगह दूसरी तरफ है। बीच में १२०० कोस का लंबा चौड़ा कुण्ड आया है। जो यहां खुला नहीं है। कुण्ड के चारों तरफ की कोट दीवाल, दो भोम तरहटी की जमीन से ऊपर जाकर चांदनी पर कुण्ड बना है। इस कुण्ड के चारों तरफ १२५० कोस की चांदनी आयी है। इस कुण्ड के चारों दिशा में चार चांदे आये हैं। चांदे से सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। कुण्ड के चारों तरफ कठेड़ा आया है। पश्चिम तरफ का कठेड़ा ढंपो चबूतरे का है। कुण्ड की तीन भोमें आयी हैं। एक भोम-तरहटी की जमीन से भोम भर नीचे की है। दूसरी-तरहटी की बाहिर की जमीन के बराबर और तीसरी-बाहिर जमीन से भोम भर ऊंचा जो चबूतरा आया है। क्योंकि कुण्ड चबूतरे पर खुला है। दूसरी भोम की पूर्व दीवाल पर ४०० कोस की चौड़ी मेहराब आयी है। इसी मेहराब से पानी निकलता है। यही यमुना जी हैं। इसी मेहराब पर एक भोम ऊंची दीवाल (तीसरी भोम कुण्ड की) आयी है। मध्य की ४०० कोस की मेहराब से नहर जाती है। दाएं-बाएं ४००-४०० कोस की जगह आयी है। सो तरहटी की जमीन से दो पालें उठी। यह पालें कुण्ड की तीन भोमों में से दूसरी भोम पर उठी। ४०० कोस की चौड़ी और १२०० कोस की लंबी मध्य भाग में नहर जाती है। दाएं-बाएं जो पाल उठी है, उसके दो भाग हुए। २०० कोस में रौंस और २०० कोस में पाल। यही बनक दूसरी तरफ है। यह पाल बाहर की जमीन से कमर भर ऊंची आयी है। मूलकुण्ड के तीनों तरफ ९-९ मेहराबें आयी हैं। पूर्व तरफ जो ९ मेहराबें हैं उनके मध्य की ४०० कोस की मेहराब से श्री यमुना जी निकल रही हैं। दाएं-बाएं की मेहराब में रौंसें और पालें आयी हैं। सो तीनों मेहराबों के सामने श्री यमुना जी मानी गयी हैं। बाहरी रौंस पर दो वृक्षों की हारें आयी हैं, जिनकी ऊंचाई दो भोम की है। सब वृक्षों की डालियां कुण्ड के ऊपर १०० कोस तक आयी हैं। इसी तरह से दूसरी तरफ भी आयी हैं। पुखराज के मध्य के पेड़ से लेकर यहां मूल कुण्ड के पूर्व किनारे तक २१५२०० कोस होते हैं।

Nijanand App

४५. पुखराज एवं बंगलों का चबूतरा

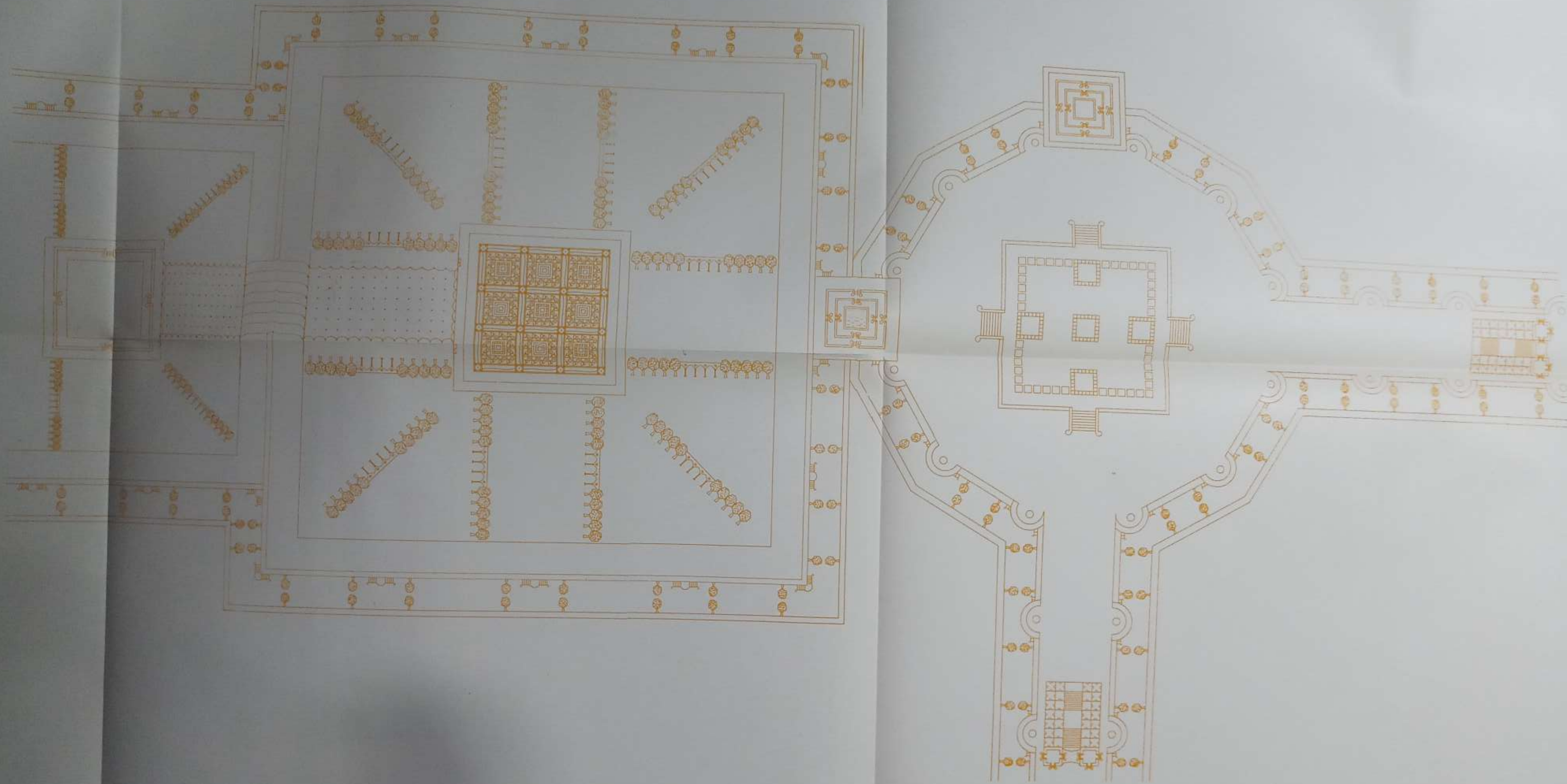

Nijanand App

४५ - पुखराज एवं बंगलों का चबूतरा

बाहर की रौंस से भोम भर की ऊंची दीवाल आयी है। घेर कर चारों तरफ तरहटी की छत १३३३३३ कोस की लंबी-चौड़ी आयी है। ४ लाख कोस की गृद भोम भर ऊंचे चबूतरे पर तीसरे हिस्से के मध्य में एक चौरस चबूतरा एक भोम का ऊंचा ४४४४४ कोस का आया है। चारों दिशा में सीढ़ी उतरी है। बाकी जगह में कठेड़ा आया है।

इस चौरस चबूतरे पर पांच पेड़ तरहटी से तीन भोम उठकर चबूतरे पर जाहिर हुए हैं। चारों दिशा के जो पेड़ हैं, उनके दाएं-बाएं ६-६ मोहल आए हैं। इस प्रकार चारों तरफ मोहल आये हैं। कोने का मोहल दो तरफ जवाब देता है। इनकी ऊंचाई दो भोम की आयी है। इन मोहलों को घेर करके २५० कोस की रौंस आयी है। मध्य के मोहल से दिशा के पेड़ २२००० कोस दूर आये हैं। दिशा के पेड़ से दूसरे दिशा वाले पेड़ पर जाना हो तो ३३००० कोस जाना पड़ेगा। इस चौरस चबूतरे से गोल चबूतरे की किनार ४४००० कोस दूरी पर है। १३ मोहल जो एक दिशा में आये हैं। उनकी किनार से परिक्रमा १७६००० कोस की होगी। यदि पेड़ ही पेड़ होकर परिकरमा दें तो १३३००० कोस की होती है। हिसाब से तो १३२००० कोस आता है, परन्तु पेड़ को घेर कर के रौंस पर होकर जाना पड़ता है। इस वास्ते १००० कोस बढ़ गए हैं।

बंगलों का चबूतरा बाहर की जमीन से भोम भर का ऊंचा आया है। यह एक लाख कोस का लंबा-चौड़ा तथा चार लाख कोस की गृद में आया है। चारों तरफ कठेड़ा आया है। कठेड़े के साथ ४०० कोस की चौड़ी रौंस घेरकर आयी है। इस रौंस के आगे ५ वृक्ष बड़ोवन के, ४ वृक्ष फिलपायों के, फिर ५ वृक्ष बड़ोवन के, यह १४ वृक्ष हुए। बीच में १३ संधे आयी हैं। प्रत्येक सन्ध २५०० कोस की आयी है, और भीतरी तरफ ४०० कोस की रौंस चारों तरफ घेरकर आयी हैं। इन वृक्षों और फिलपायों की ऊंचाई एक ही भोम आयी है, परन्तु एक ही भोम ५ भोम जितनी ऊंची है। इन १४ वृक्षों की मेहराबें चौड़ाई तरफ २५०० कोस की आयी है और लंबाई तरफ १२५० कोस की सब मेहराबें आयी हैं। बाहरी तरफ चार हारें, जो फिलपायों की हैं, उनकी पहली हार में २०४, दूसरी में २००, तीसरी में १९६, चौथी हार में १९२ फीलपाये आये हैं। इस प्रकार, कुल ७९२ फीलपाए हुए। भीतरी रौंस से कमर भर नीचे बची जमीन बंगलों की है। किनारे से ३३३०० कोस जगह यहां तक हुई। इतनी ही जगह बंगलों के दूसरी तरफ है। चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ी बंगलों की रौंस पर उतरी है।

३३३०० कोस के फिलपाए दाएं तरफ, इतने ही बाएं तरफ इस प्रकार बीच में ३३४०० कोस की जगह बंगलों की आयी है। पहले १२५ कोस की रौंस आयी है। जिस पर सीढ़ियां उतरी हैं। आगे ३२० कोस में बंगला आया है। आगे २५ कोस में नहर, और ३२० कोस में चेहेबच्चा आया है। आगे २५ कोस में नहर, फिर बंगला, फिर नहर, फिर चेहेबच्चा है इसी प्रकार से ९७ नहर आयी हैं, जिसके २४२५ कोस हुए। ४८ बंगलों के १५३६० कोस और ४८ चेहेबच्चों के १५३६० कोस हुए। सब ३३३९५ कोस हुए। दूसरे हिसाब से बंगलों की जमीन ३३४०० कोस की है। एक कोस ५ मंदिर के बराबर है तब ३३३३३ कोस के १६६६०० मंदिर हुए। पहले एक रौंस ५०० मंदिर की है जो वन रौंस से कमर भर नीची आयी है।

Nijanand App

एक नहर १२५ मंदिर की तो ९७ नहरें १२१२५ मंदिर की हुई। एक बंगला १६०० मंदिर का, तब ४८ बंगले ७६८०० मंदिर के हुए। एक चेहेबच्चा १६०० मंदिर का, तो ४८ चेहेबच्चे ७६८०० मंदिर के हुए। बंगले के दूसरे तरफ भी रौंस ५०० मंदिर की, तो कुल १६६७२५ मंदिर पूरे हुए।

एक नहर १२५ मंदिर की कमर भर ऊंची आयी है, जिसमें २५ मंदिर में नहर है तथा नहर के दाएं-बाएं ५०-५० मंदिर की पाल आयी है। १६ मंदिर का बीच में मोहल आया है। मोहलों के ऊपर गुम्मट, कलश आये हैं। उनकी ऊंचाई एक भोम की आयी है। दाएं-बाएं १७ मंदिर की जगह आयी है, जिसके ३-३ हिस्से हुए। दाएं-बाएं दो रौंसें तथा बीच में फुलवाड़ी आयी है। इसी प्रकार सब नहरें आयी हैं।

बंगले के पूर्व तरफ पाल जो ३३३०० कोस की आयी है। ताल के तरफ ४०० कोस की रौंस आयी है। उस रौंस से लगकर मध्य भाग में पूर्व तरफ देहलान आयी है। सो लंबाई में अधबीच के कुण्ड के पश्चिम तरफ जो पाल आयी है। उस पाल के जल तरफ जो ७५ कोस की रौंस आयी है। सो रौंस के पश्चिम की किनार से आकर लगी है अर्थात् बड़ोवन के वृक्षों और फीलपायों के सामने इस देहलान के थंभ आए हैं। इस देहलान के थंभों के दाएं-बाएं १२५०-१२५० कोस पर वृक्ष और फीलपाये आए हैं। सो लंबाई ४३९७३ कोस की हुई। और चौड़ाई तरफ ८ थंभ जिन पर ७ मेहराबें आयी हैं। एक मेहराब १२५० कोस की आयी है। तो सात मेहेराबों के ८७५० कोस हुए। यह देहलान की चौड़ाई है।

Nijanand App

४६. अधबीच का कुण्ड ढंपो चबूतरा तथा मूलकुण्ड का चबूतरा

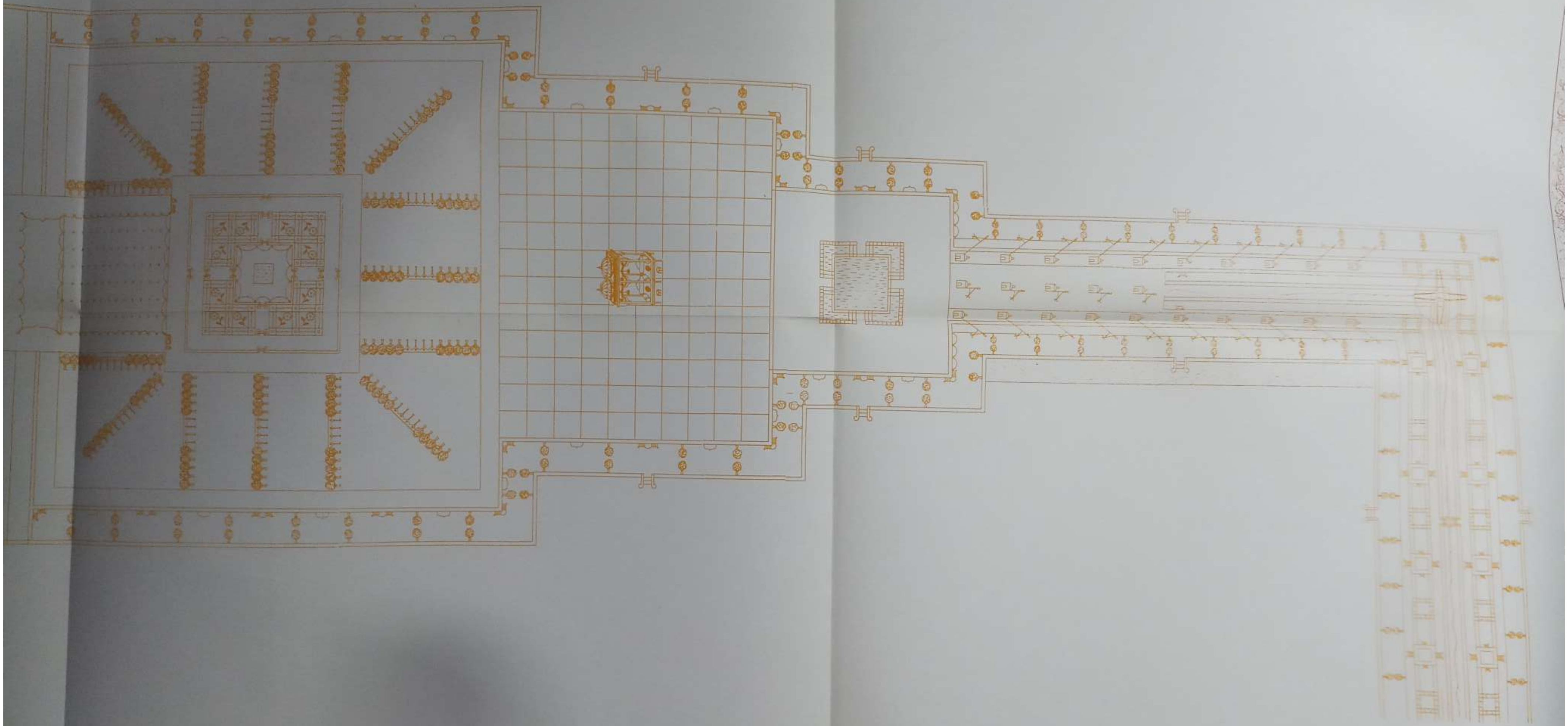

Nijanand App

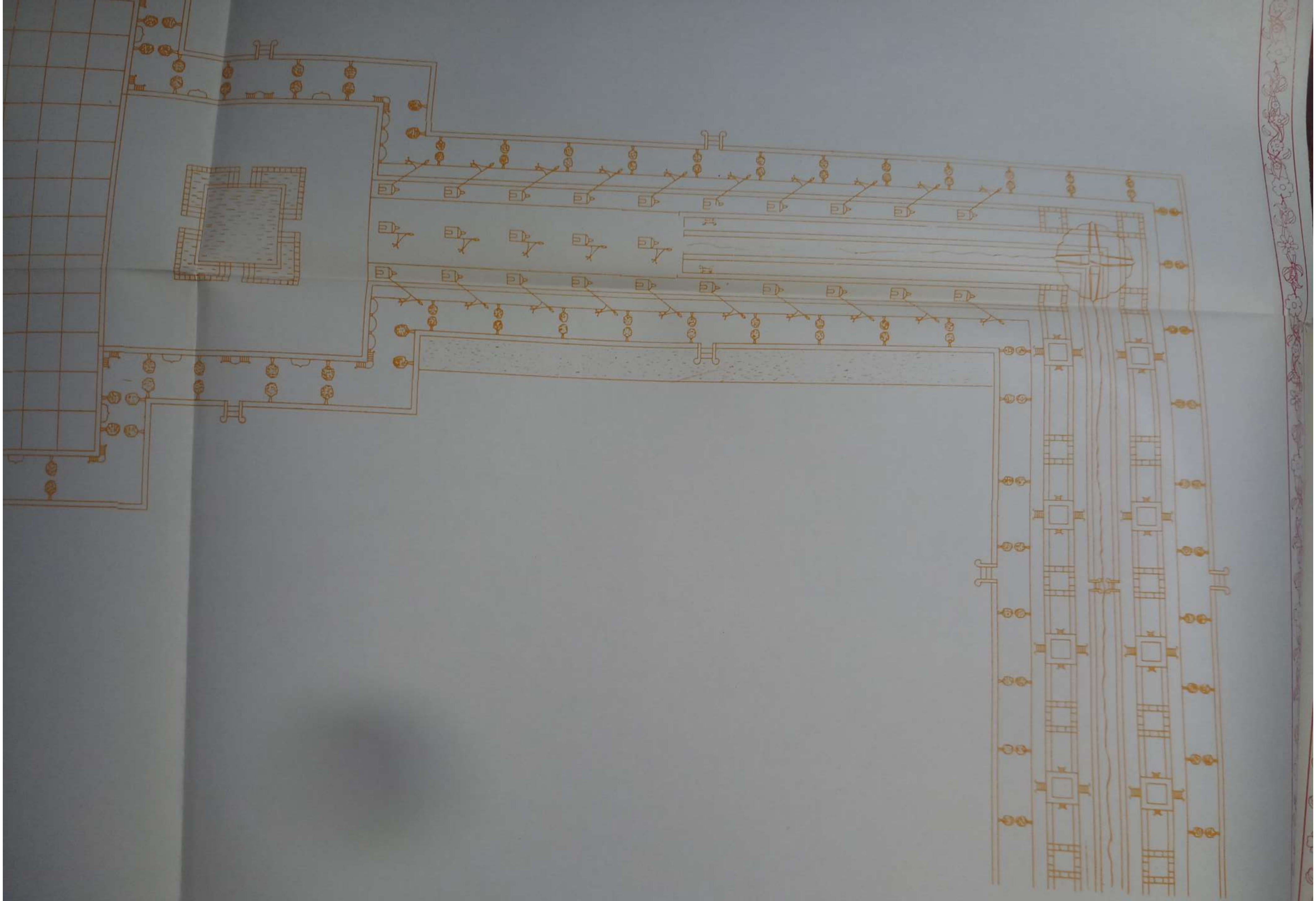

Nijanand App

४६. अधबीच का कुण्ड ढंपो चबूतरा तथा मूलकुण्ड का च

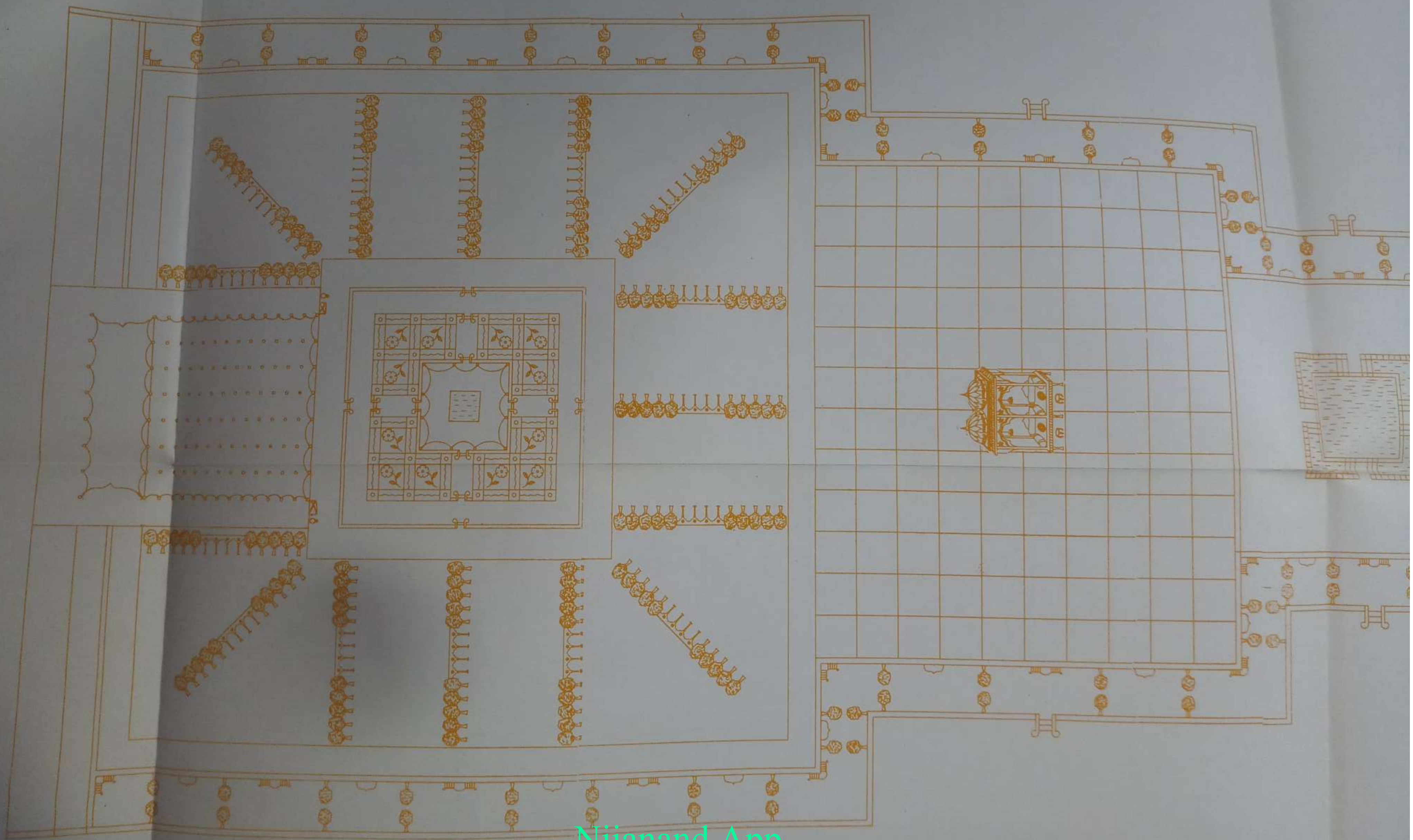

Nijanand App

४६ - अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा तथा मूल कुण्ड का चबूतरा

अधबीच के कुण्ड का चबूतरा बाहर की रौंस से भोम भर का ऊंचा ३३३०० कोस लंबा-चौड़ा बराबर आया है। चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है। ११११५० कोस की पाल एक तरफ है जिसमें ७५-७५ कोस की दोनों तरफ पाल की रौंस है। इसके बीच की ११००० कोस की जगह के मध्य में चार फीलपाये आये हैं। फीलपायों के दाएं-बाएं ५-५ वृक्ष बड़ोवन के आये हैं। जिनकी ऊंचाई पांच भोम की है। वृक्षों और फीलपायों की चौड़ाई में १३ सन्धे आयी हैं। एक सन्ध ८४६ कोस की होती है। इसी प्रकार की बनक दूसरी तरफ भी आयी है। इस प्रकार दोनों तरफ की पालों के २२३०० कोस होते हैं। ११००० कोस के मध्य में जगह बची है, जिसमें ७५ कोस की पाल की रौंस आयी है। इसी प्रकार दूसरी तरफ भी है। पाल की रौंस से कमर भर की सीढ़ी उतरी है। बाकी जगह पर कठेड़ा है। बगीचे की १०० कोस की रौंस के आगे २८ नहरों की २८ हारें आयी हैं। नहरों के कोने पर चार चेहेबच्चे आये हैं। चेहेबच्चे के मध्य भाग में फीलपाए आये हैं। २८ की २८ हारें आने से ७८४ थंभ हुए। चार नहरों के बीच में एक बगीचा ४०० कोस का लंबा-चौड़ा आया है। इसी प्रकार से २७ बगीचों की २७ हारें आयी हैं। कुल ७२९ बगीचे हुए। मध्य में तीन हांस का लंबा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा है। चारों दिशा में चबूतरे से सीढ़ियां उतरी हैं। चबूतरे के किनार पर १२ थंभ हैं और घेर करके कठेड़ा आया है। इस चबूतरे के मध्य भाग में एक हांस का लंबा-चौड़ा स्तून आया है। स्तून के चारों तरफ ४०० कोस की परिकरमा आयी है। चारों दिशा से चार रास्ते बगीचों में से गए हैं। बगीचे कमर भर नीचे आये हैं। सब नहरें कमर भर ऊंची हैं। चार रास्ते १०० कोस के चार रौंसों के मुताबिक जो रास्ते निकले हैं, सो रास्ते भी नहरों की ऊंचाई के मुताबिक आये हैं। इन्हीं रास्तों पर कमर भर की सीढ़ियां चबूतरे से उतरी हैं। सो इस चबूतरे की ऊंचाई के चारों तरफ पाल आयी है। जो इसके अनुसार ऊंची आयी है। इस चबूतरे की चारों दिशाओं से चार नहरें निकली हैं, जिससे सब बगीचों में पानी आता है। इसी प्रकार ५ भोम उठी हैं। हर भोम में इसी प्रकार नहरें, रौंसें, चबूतरे, फव्वारे, स्तंभ सब जोगबाई है। बड़ोवन के वृक्ष व फीलपाये भी घेर करके आये हैं। इन वृक्षों की पांच भोम आयी है। इस अधबीच के कुण्ड के पश्चिम तरफ देहलान आयी है। पूर्व-पश्चिम इसकी चौड़ाई में ८ थंभ आए हैं जिनमें ७ मेहराबें हैं। एक मेहराब १२५० कोस की होती है। इसके दाएं-बाएं एक-एक संध आयी है वो सन्ध भी १२५० कोस की है। इस संध पर एक मेहराब आयी है। देहलान के थंभों और बड़ोवन के वृक्षों पर, इन ११२५० कोस में वन और फीलपाए नहीं आये हैं और लंबाई तरफ तो फीलपाए वृक्षों से मिलते हुए गए हैं। और ८४६ कोस की मेहराबें आयी हैं। भीतरी तरफ पाल की रौंस पर दाएं-बाएं की मेहराब में एक चौखूटा गुर्ज और दाएं-बाएं गोल गुर्ज आया है। इनकी भोम भी मिलती जाती हैं।

ढंपों चबूतरा तथा मूल कुण्ड का चबूतरा बाहर की जमीन से भोम भर ऊंचा आया है। ढंपो चबूतरा १११०० कोस का लंबा-चौड़ा है, जिसके तीन तरफ कठेड़ा है, चौथी तरफ अधबीच के कुण्ड के मोहल आये हैं। चबूतरे के दोनों तरफ (उत्तर-दक्षिण) बड़ोवन के वृक्षों ने छत्री बांधी है। चबूतरे पर सिंहासन, कुर्सियां शोभायमान हैं।

मूल कुण्ड का चबूतरा ढंपो चबूतरे के तीसरे हिस्से में ३७०० कोस में आया है। इस चबूतरे के मध्य में कुण्ड खुला है। इस कुण्ड की लंबाई-चौड़ाई १२०० कोस की है। इस कुण्ड के चारों तरफ १२५० कोस की चांदनी आयी है। इस कुण्ड की चारों दिशा में चार चांदे आये हैं। चांदे से सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। मूल कुण्ड के चारों तरफ कठेड़ा आया है। पश्चिम तरफ का कठेड़ा ढंपो चबूतरे का है।

Nijanand App

४७. पुखराज की चौदह मेहरावें ताल और अधबीच के कुण्ड की छठीं भोम

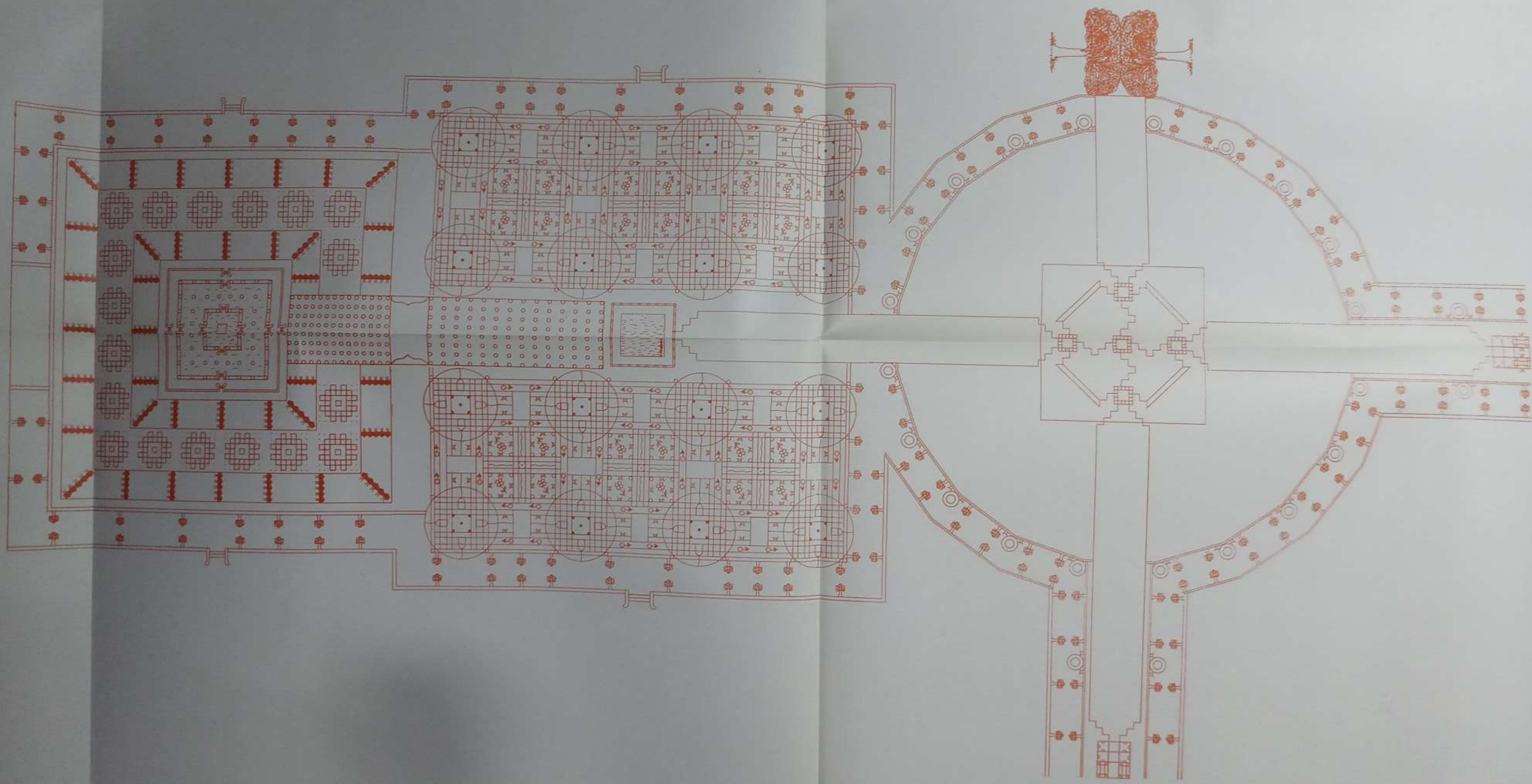

Nijanand App

४७ - पुखराज की चौदह मेहराबें, बंगला और अधबीच के कुण्ड की छठीं भोम

पुखराज पर्वत के चौरस चबूतरे पर जो पांच पेड़ हैं, ये पांचों पेड़ पांच भोम उठे हैं तथा छठीं छत से छज्जे निकले हैं। मध्य के पेड़ से चारों तरफ २२ कोस का छज्जा निकला है। इस छज्जे पर चौड़ाई में २२ थंभ हैं और लंबाई तरफ कोस-कोस के अन्तर पर थंभ आए हैं। यह थंभ एक भोम ऊंचे उठे हैं। फिर छत पड़ गयी है। फिर उस पर २२ कोस का छज्जा आगे निकला है। छज्जे पर थंभों की हार है और पीछे की तरफ मोहल आये हैं। इस प्रकार २५० भोम के छज्जे निकले हैं। सो छज्जों पर थंभ और पीछे मोहोलातें आती गई हैं। चारों दिशा के पेड़ों के छज्जे चार तरफ निकले हैं। मध्य के पेड़ की तरफ २२ कोस का छज्जा आया है। दिशा के पेड़ से दिशा की पेड़ तरफ ३३ कोस का आया है, जिस पर चौड़ाई तरफ ३३ थंभ आये हैं और लंबाई तरफ कोस-कोस के अन्तर पर आये हैं। बाहरी तरफ ४४ कोस के छज्जे आये हैं। चौड़ाई तरफ ४४ थंभ तथा लंबाई तरफ कोस-कोस पर थंभ आये हैं। इन पांचों पेड़ों के छज्जे निकले हैं। आगे-आगे थंभ और पीछे-पीछे मोहलातें बनती गई हैं। पश्चिम की तरफ घाटी की मोहोलात गोल चबूतरे की किनार से ४४००० कोस दूर आयी है। उन घाटी की पांच भोम छठी चांदनी से छज्जा निकलना शुरू हुआ हैं। आगे-२ थंभ, पीछे-२ मोहोलातें बनती गई है। २५० छज्जे निकले परन्तु घाटी का मोहल १०० कोस का आया है। १०० कोस दूसरी तरफ में मोहल आये हैं, दोनों के बीच में १०० कोस खाली जगह है। इन मोहोलात के छज्जे अलग-अलग निकले हैं। ४४ कोस का चौड़ा और १०० कोस का लंबा छज्जा है, जिस पर चौड़ाई की तरफ ४४ थंभ, लंबाई की तरफ कोस-कोस पर थंभ आये हैं। इस प्रकार से २५० छज्जे निकले। मध्य के पेड़ ने चारों पेड़ों की तरफ ५५०० कोस तक अपनी छाया डाली है और चारों पेड़ों में से एक पेड़ ने अपनी २५० भोमों में ५५०० कोस की छाया डाली है। इस प्रकार से चारों दिशा के पेड़ों ने दिशाओं की तरफ ४१२५ कोस तक छाया डाली है। बीच में २४७५० कोस की जगह बाकी रही। पश्चिम के पेड़ ने पश्चिम की तरफ ११००० कोस तक अपनी छाया २५० भोमों में डाली है। पश्चिम की घाटी ने पूर्व तरफ २५० भोमों में ११००० कोस की छाया डाली है। बीच में ६६००० का पाट पड़ गया है। इसी प्रकार उत्तर तरफ पाट बाकी रहे। इस प्रकार से मध्य पेड़ के पश्चिम के छज्जे और पश्चिम पेड़ के पूर्व के छज्जे के बीच १६५०० कोस की जगह बाकी रही। दिशाओं के पेड़ों के छज्जों के बीच में २४७५० कोस का फर्क है। इसी प्रकार से पश्चिम घाटी व पश्चिम पेड़ के पश्चिम छज्जे के बीच में ६६००० कोस का फर्क है। दक्षिण तरफ पेड़ के भी छज्जे निकले हैं, जो महावन के वृक्ष सामने रौंस के पास आए हैं। उन पेड़ों ने भी अपनी छत्री छज्जे की तरह बढ़ाई है। २५० भोम बाद २५१वां छज्जा जो पेड़ का आया है, वह छज्जा व महावन की छत्री एक हो गई हैं। इसी प्रकार से २५१वें छज्जे ने पुखराज के पश्चिम पेड़ के पश्चिम छज्जे ने ६६००० कोस की जगह को पाट लिया व मध्य के पेड़ के छज्जों ने व दिशाओं वाले पेड़ों के छज्जों ने २५१वें छज्जे पर सब दिशाओं की जगह को पाट लिया। २५१ भोम से ७५० भोम तक ४४-४४ कोस के चौड़े छज्जे गृदवाए बढ़ते गये हैं, इसमें आगे-२ थंभ पीछे-२ मोहोलातें बनती गई हैं जिससे ४ लाख कोस १००० भोम की ऊंची चांदनी पर ४ लाख कोस गृद की १३३३३३ कोस की लंबी-चौड़ी चांदनी बन गई, जिससे इस चांदनी के नीचे १४ मेहराबें भोम भर ऊंचे चबूतरे पर दिखाई देती हैं। ८ मेहराबें तो चौरस चबूतरे पर आयी हैं और

Nijanand App

२-२ मेहराबें दोनों घाटियों की। घाटी के मेहराब के नीचे वृक्ष जाकर लगा है। इस कारण से घाटी की दो मेहराबें हुई। दोनों घाटियों की चार मेहराबें हुई। पूर्व तरफ भी घाटी के समान दो मेहराबें आयी हैं। इस प्रकार से १४ मेहराबें हुईं।

बाहर की पाल छोड़कर बंगलों के चबूतरे के मध्य में बंगलों की जमीन आयी है। एक लाईन में ४८ बंगले हैं। ऐसी ४८ हारें आने के कारण कुल २३०४ बंगले आये और इतने ही चेहेबच्चे आये हैं। एक बंगले की जगह १६०० मंदिर की लंबी-चौड़ी है। इसी प्रकार चेहेबच्चों की भी है। बंगले की पांच भोम के ऊपर ८०० मंदिर की लंबी-चौड़ी छत आयी है। जिस छत पर ६०० मंदिर का लंबा-चौड़ा एक चबूतरा कमर भर का ऊंचा आया है। चबूतरे के चारों कोनों पर चार थंभ आये हैं, ऊपर गुम्मट, कलश आये हैं। एक बंगले के चारों कोनों पर जो चार चेहेबच्चे आये हैं, उन चारों चेहेबच्चों से फुहारें उठकर एक दूसरे में पड़ती हैं। इस प्रकार से चारों तरफ से कमानें आकर कलश की नोंक पर लग रही हैं। सब बगीचों के वृक्ष बंगलों की पांच भोम तक रहे तथा फीलपाए व बड़ोवन के वृक्ष इसके ऊपर की छत को लग रहे हैं। इसी प्रकार, सब बंगलों की चांदनी आयी है। चांदनी के मध्य भाग में १२००० कोस की लंबी ४०० कोस की चौड़ी देहेलान आयी है, जिसके बाहर तरफ थंभ आये हैं। भीतरी तरफ दीवाल आयी है। इस दीवाल के भीतरी तरफ पानी का कुण्ड आया है। ११२०० कोस में कुण्ड है। देहलान की किनार से चांदनी की किनार ४४००० कोस दूरी पर आयी है। इस तरह से चारों तरफ किनार आयी है। देहलान की चांदनी से ४४ कोस का छज्जा चारों तरफ निकला है। उस छज्जे पर बाहरी तरफ थंभ और थंभों पर कठेड़ा आया है। इस छज्जे के भीतरी तरफ दीवाल है, इस दीवाल तक कुण्ड का पानी बढ़ा। इस छज्जे की छत से फिर ४४ कोस का छज्जा निकला, इस छज्जे की किनार पर थंभ भोम भर ऊंचे, थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। भीतरी तरफ दीवाल आयी है। अब ताल कुण्ड का पानी इस दीवाल तक आया है। इस प्रकार भोम-२ पर छज्जा आता गया। पीछे-२ पानी बढ़ता गया, मानिन्द उल्टी सीढ़ी के, इसी प्रकार २५० छज्जे निकले, तो एक लाख कोस पूरे हुए। तब पुखराज का २५१वां छज्जा निकला। तब बीच में ६६००० का पाट पट गया। पुखराज के चारों तरफ ६६००० का पाट पटा। उत्तर, पश्चिम घाटी, पूर्व पुखराजी ताल और दक्षिण में महावन के वृक्षों ने मिलान किया हैं। यहां से बंगले व पुखराज की घाटी में जहां चाहें आ जा सकते हैं। अधबीच के कुण्ड में भी जा सकते हैं। पूर्व तरफ का छज्जा देहलान के साथ जा मिला है। २५० छज्जों ने ११००० कोस की छाया चांदनी पर डाली है। यहां तक ताल बढ़ा है। यहां १ लाख कोस में ताल ३३२०० कोस का हो गया। अब यहां से सीधी दीवाल ७३० भोम तक चली गयी है। कोस २९२००० हुए। यहां ताल का बढ़ना बंद हुआ। अब यहां से फिर ४४ कोस का छज्जा निकला भोम भर का ऊंचा, छज्जे के पीछे मंदिर बने। ११ कोस की लंबी-चौड़ी बराबर, तीन हारें मंदिरों की आयी। ११ कोस का छज्जा रहा। फिर ४४ कोस का छज्जा तथा इसके पीछे ताल तक की जगह तक मंदिर बने हैं। इसी प्रकार से आगे-२ छज्जा घेर करके थंभ पीछे-२ सब जगह मंदिर ही मंदिर आए हैं। मध्य में ३३२०० कोस का ताल ऊंचा बराबर जा रहा है। इसी प्रकार से यहां से ७३० छज्जे निकले। ७३० भोम के २९२००० कोस हुए। परन्तु नीचे से ३९२००० कोस ऊंचा रहा। यहां तक ९८० भोम आयी हैं। अब ऊपर यहां पर एक ही चांदनी आयी है। ताल खुला है। ताल की जगह छोड़कर

Nijanand App

एक ही चांदनी आयी है। यही पुखराजी ताल है।

अधबीच के कुण्ड की छठी चांदनी पर मध्य भाग में तीन हांस का लंबा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चबूतरे के चारों तरफ १२ थंभ, कठेड़ा और चारों दिशा में सीढ़ियां उतरी हैं। ४०० कोस की परिकरमा भी आयी है। नीचे की भोम में होकर पानी का स्तून (पाइप) जो आया है, सो यहां चबूतरे के नीचे से फूटा है, जिससे बेशुमार पानी का पूर निकला। जिस कारण से १०८०० कोस में पानी का ताल हुआ। इसकी गहराई नाभि तक आयी है। इस ताल में २८ थंभों की २८ हारें आयी हैं। सब स्तून ७८४ हुए। सो सब थंभ पानी में डूबे हुए हैं। मध्य के चबूतरे पर कुछ थंभ कम होंगे। अब इस ताल के चारों तरफ १०० कोस की रौंस आयी है, इस रौंस से हाथ लगता पानी है। जल तरफ कठेड़ा आया है। इस रौंस से कमर भर ऊंची पाल आयी है (११११५० कोस की पाल)। जल की रौंस से कमर भर ऊंची ७५ कोस की चौड़ी रौंस के किनारें पर कठेड़ा आया है। पाल पर ५ वृक्ष मधुवन के हैं, जिसमें चार सन्ध आयी हैं। एक सन्ध ८४६ कोस की है। इस सन्ध ऊपर मेहराब आयी है। फीलपायों की मोहलात और बड़ोवन के वृक्षों पर यह मेहराब आयी है। २५३८ कोस की फीलपायों की मोहलात इस वास्ते कहा है कि इसके नीचे फीलपायें आये हैं। यह मोहलात चौरस हवेली के समान है। हर एक हवेली के आगे ८४६ कोस की सन्ध आयी है। इसके आगे ५ मधुवन के वृक्ष आये हैं, जिसमें चार सन्धें आयी हैं। एक सन्ध ८४६ कोस की हैं चारों की ३३८४ कोस की जगह हुई। आगे ७५ कोस की पाल रौंस है। पाल रौंस की किनार पर चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है। यहां तक कोस ११११५० हुए। इतने ही कोस दूसरी तरफ आये हैं। ये फीलपाए के मोहल या मधुवन के वृक्ष तीन तरफ की पाल पर आये हैं। दक्षिण, पूर्व, उत्तर तरफ आये हैं, पश्चिम तरफ नहीं आये। ताल के सामने ११२५० कोस की हद में देहेलान आयी है। दाएं-बाएं मोहोलात और वृक्ष आये हैं। बंगलों की चांदनी से देहेलान द्वारा होकर आ सकते हैं। देहेलान से निकलकर ७५ कोस की रौंस उलंघकर आगे कमर भर सीढ़ी उतर कर १०० कोस की रौंस आयी है, आगे तीन सीढ़ी उतरकर जल चबूतरा आया है। यहां से सब जोगबाई एक भोम उठकर ऊपर छत पड़ गई। स्तून को छोड़कर इस सातवीं चांदनी पर वही नीचे वाली सब बनक आयी है। जरा भी अन्तर नहीं है। यही बनक उपरा-ऊपर ४९५ भोम तक गयी है। हर एक भोम के छज्जे, कठेड़े सब दिखाई देते हैं। तरहटी के चबूतरे से ५०० भोम ऊंची चांदनी आयी है।

Nijanand App

४८. हजार हांस की मोहोलात, जवेरों के मोहोल तथा खास मोहोल

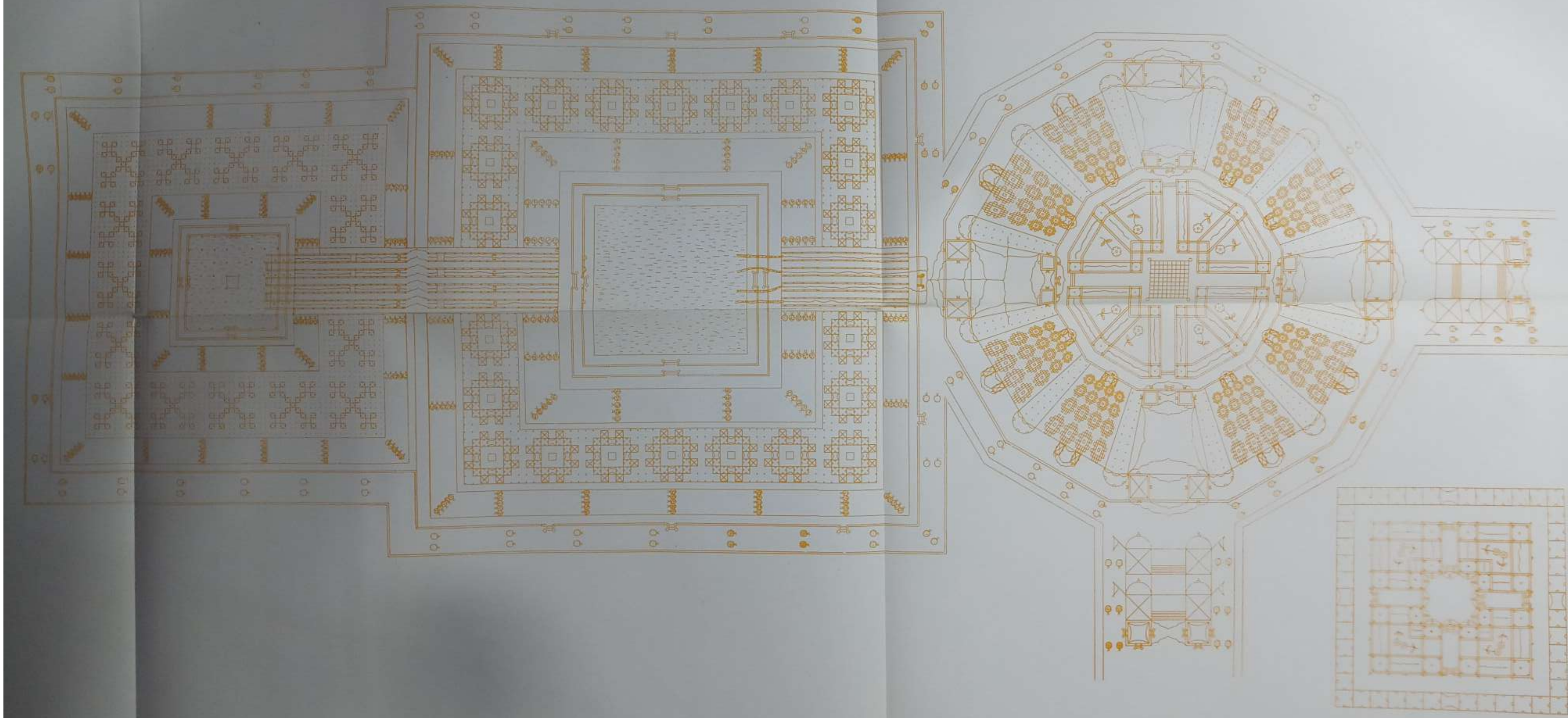

Nijanand App

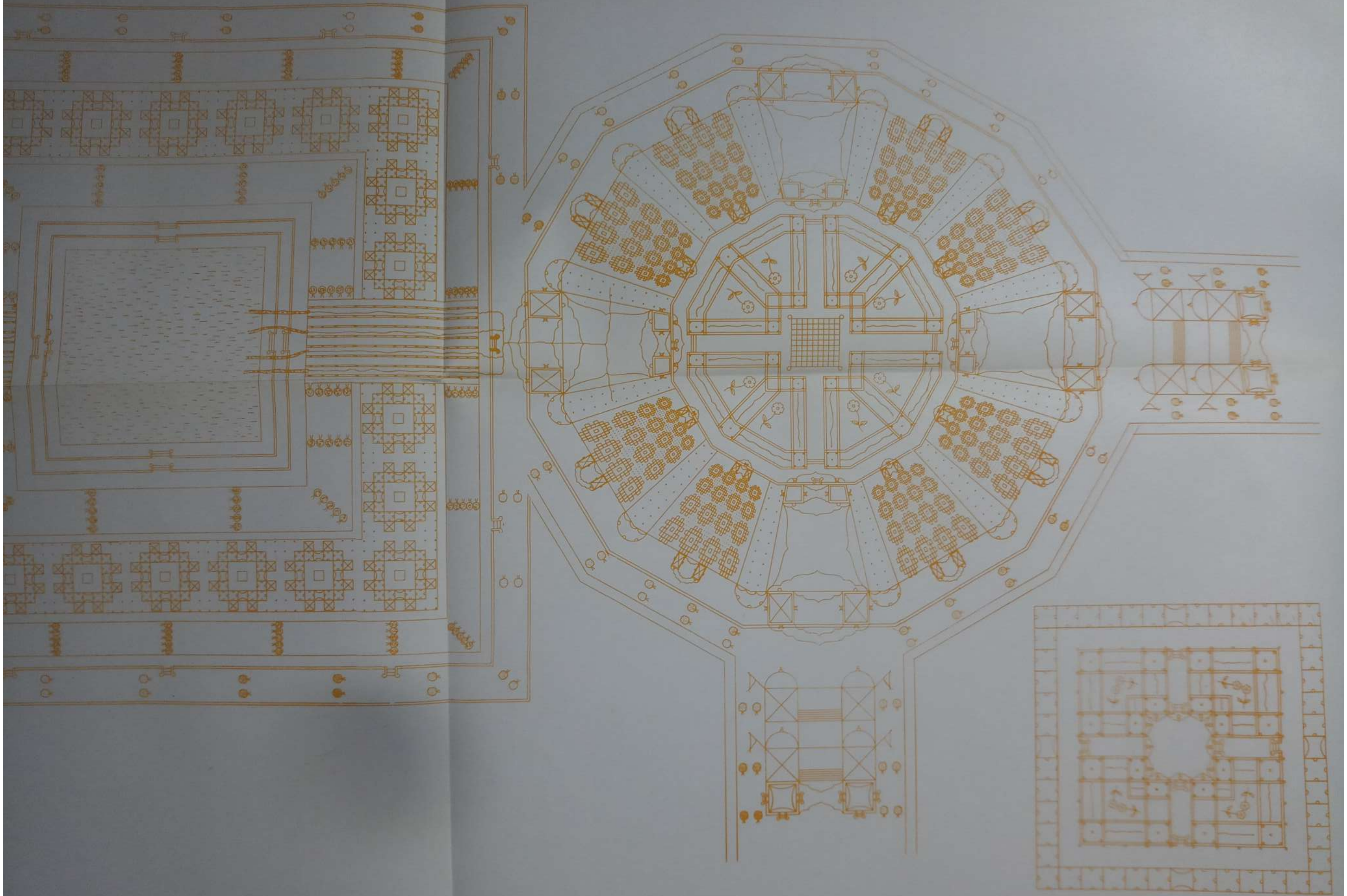

Nijanand App

४८. हजार हास की मोहोलात, जवेरों के मोहोल तथा खास

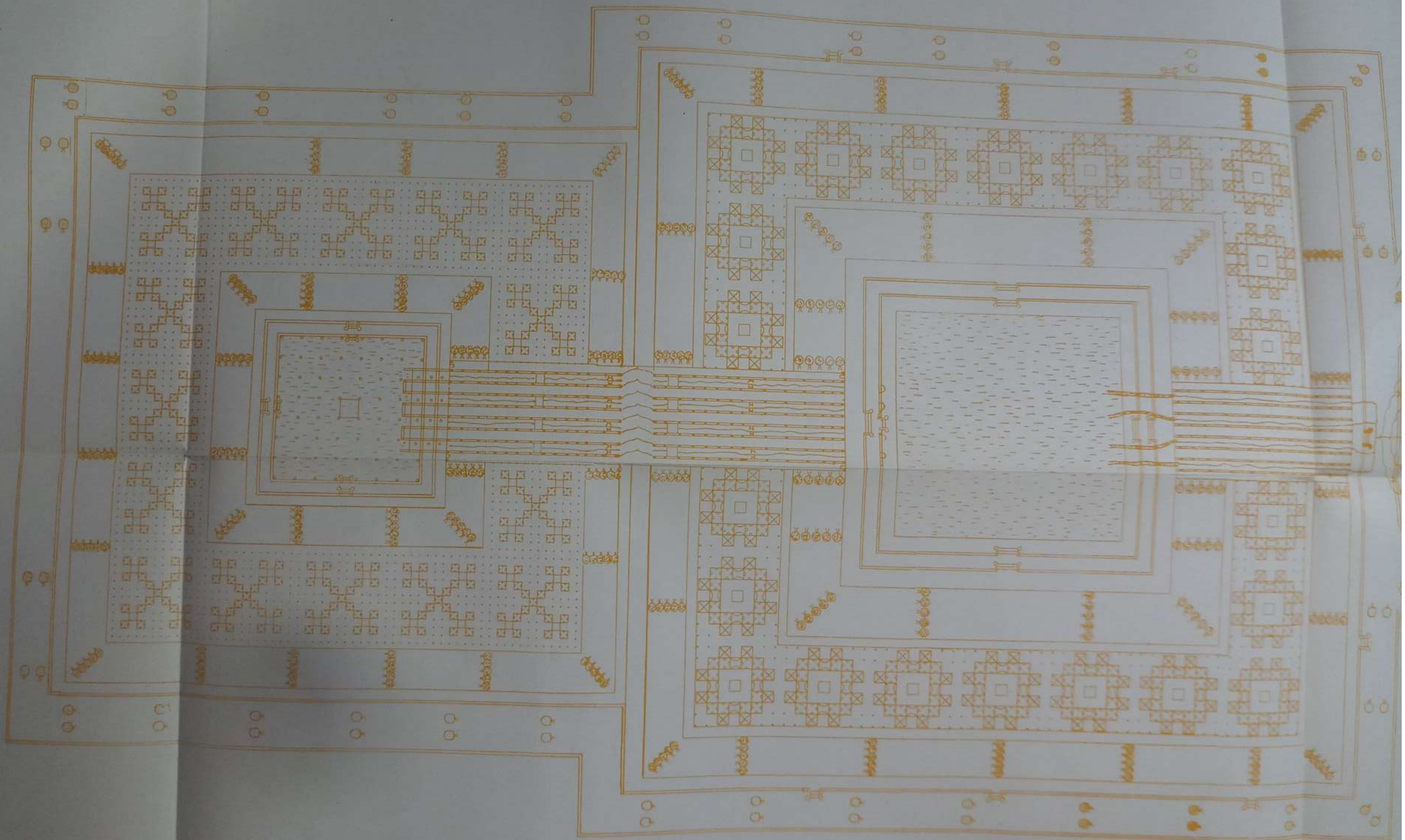

Nijanand App

४८ - हजार हांस की मोहोलात, जवेरों के मोहोल तथा खास मोहोल

पुखराज की चांदनी के चारों तरफ ४०० कोस का छज्जा निकलकर नीचे जो ४०० कोस की रौंस आयी है, उसके ऊपर आया है। छज्जे की किनार पर कठेड़ा आया है। आगे ढलकता छज्जा आया है। भीतरी तरफ छज्जे की किनार पर कमर भर ऊंचा चबूतरा उठा है, जो ४०० कोस का चौड़ा और १००० हांस का लंबा गोलाई में आया है। एक हांस का ब्यान, मध्य में ५० कोस का दरवाजा है, जिसके भीतरी तरफ त्रिपोलिया आया है। एक गली १६-१/२ कोस की आयी है दरवाजे के दाएं-बाएं ५०-५० कोस की हवेली बराबर आयी है। हवेली के बाहर तरफ ५० कोस का लंबा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा हवेली से लगकर आया है। इस चबूतरे के तीन तरफ छज्जा और छज्जे पर कठेड़ा आया है। चबूतरे पर चार थंभ हैं जिनके ऊपर मेहराब आयी हैं। इस हवेली के दाएं-बाएं २५ कोस का त्रिपोलिया आया है, जिसमें थंभ आये हैं। एक गली ८-१/४ कोस की आयी है। इस गली के दाएं-बाएं एक-एक हवेली आयी है। इस हवेली के दाएं-बाएं हांस की हद ५० कोस पर आयी है। ५० कोस दूसरे हांस के लिए। इन १०० कोस में एक गोल गुर्ज आया है, जिसके बाहर तरफ तीन-तीन दरवाजे आये हैं। भीतरी तरफ दो हार थंभों की आयी है। जिसमें तीन गली है। एक गली ३३ कोस की आयी है। ऐसी बनक दरवाजे के दाएं-बाएं आयी है। एक हांस में चार हवेलियों की चार हारें आयी है। तो एक हांस की १६ हवेली हुई। हर एक त्रिपोलियों में हवेलियों के कोनों पर चौरस चबूतरे कमर भर ऊंचे आये हैं रंग मोहल की तरह, जिस पर २४ मेहराबें आयी हैं। बड़े त्रिपोलियों में बड़े चबूतरे और छोटे त्रिपोलियों में छोटे चबूतरे आये हैं। भीतरी तरफ बड़े दरवाजे के दाएं-बाएं चौरस चबूतरे (यानी गुर्ज) आये हैं। बाहरी गुर्ज की तरह से भीतरी तरफ भी गोल गुर्ज के सामने आठ मेहराबें चबूतरे पर आयी हैं। चबूतरा १०० कोस का लंबा और ३३ कोस का चौड़ा है जहां पर आठ थंभों पर आठ मेहराबें आयी हैं। तीन मेहराब भीतरी तरफ तीन मेहराब बाहिर वन की तरफ और एक-एक मेहराब दाएं-बाएं आयी हैं।

एक हांस की हवेली में जो सोलह हवेली आयी हैं। सो एक हवेली ५० कोस की लंबी चौड़ी आयी हैं। हवेली के एक तरफ ५० मोहल हैं चारों तरफ २०० मोहल आये हैं। भीतरी तरफ एक हार थम्भों की आयी है। थंभों की भीतरी तरफ तीसरे हिस्से में एक चौरस चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है। चबूतरे के चारों दिशा में सीढ़ियां हैं। सीढ़ियों को छोड़कर किनार पर थंभ व कठेड़ा आये हैं। थंभों की मेहराबों में हिंडोले आये हैं। चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां सब जोगबायी आयी है। चबूतरे को घेर करके चारों तरफ चार दरवाजे के सामने की जगह छोड़कर वन, बगीचे, फव्वारे आये हैं। इसी प्रकार सब हवेली आयी हैं।

नीचे से ऊंचाई ९८० भोम और ३९२००० कोस गृद ४ लाख, लंबाई-चौड़ाई एक लाख कोस की है। चारों तरफ से ४०० कोस का छज्जा आया है। बाहिर तरफ कठेड़ा आया है। छज्जे से कमर भर सीढ़ी चढ़कर पाल पर जाइये। इसके आगे ४०० कोस की रौंस आयी है। रौंस के आगे ५ वृक्ष बड़ोवन के १०००० कोस में आये हैं। इसके आगे २५०० कोस की एक सन्ध आयी है। बड़ोवन के आगे ७५०० कोस में जवेरों के मोहल आये हैं। नीचे जो फिलपाये हैं उन पर जवेरों के मोहल आये हैं। दो मोहलों के बीच त्रिपोलिया आया है। हर एक हवेली के चारों दिशा में ८ चबूतरे आये हैं। भीतर थंभों की हार, आगे कमर भर ऊंचे चबूतरे के किनारे पर थंभ, चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आदि आये हैं। ऐसी वनक सब मोहलों की आयी हैं। इन जवेरों के मोहलों के आगे २५०० कोस की सन्ध आयी है। आगे १०००० कोस में बड़ोवन के वृक्ष आये हैं। इनके आगे ४०० कोस की रौंस आयी है। इन सब हवेलियों की ऊंचाई २० भोम २१वीं चांदनी आयी है। यहां रौंस तक ३३३०० कोस होते हैं। पाल की रौंस से ताल की तरफ कमर भर नीचे सीढ़ियां उतरी हैं। १०० कोस की रौंस

Nijanand App

ताल को घेर करके आयी है। आगे ताल ३३२०० कोस का आया है। ताल के दूसरे तरफ १०० कोस की रौंस आयी है। ताल दोनों रौसों सहित ३३४०० कोस का हुआ। दूसरी रौंस से कमर भर ऊंची पाल आयी है। इस प्रकार से एक लाख कोस का हिसाब पूरा हुआ।

पश्चिम दिशा में एक देहलान ३२५०० कोस की लंबी और ८७५० कोस की चौड़ी आयी है। जिसमें चौड़ाई तरफ ८ थंभ ७ मेहराबें आयी हैं। एक मेहराब १२५० कोस की है और लंबाई तरफ १४ थंभ १३ सन्धें आयी हैं। एक सन्ध (मेहराब) २५०० कोस की आयी है। ८ थंभों की १४ हारें या १४ की ८ हारें पूर्व-पश्चिम आयी हैं। इस देहलान के आगे पीछे ४०० कोस की रौंस आयी हैं। इस रौंस से जल तरफ कमर भर की सीढ़ी १०० कोस की रौंस पर उतरी हैं। रौंस के आगे कमर भर नीचे जल का चबूतरा है। जिस पर कमर भर जल आया है। इस देहलान तथा जवेरों के मोहल तथा बड़ोवन के वृक्षों की एक ही छत आयी है जो बीस भोम की आयी है। पश्चिम तरफ पुखराज के छज्जे के नीचे होकर पुखराजी ताल की छत के अन्दर होकर छज्जे पर २० भोम ऊपर से चार चादरों में होकर पानी पुखराजी ताल में पड़ता है। पुखराजी ताल की चांदनी पर नहरें, बगीचे नहीं आये हैं। केवल एक नहर पश्चिम की देहलान के थंभों से उतरी है, जो चारो तरफ पानी पहुंचाकर हर भोम में फिर पूर्व के देहलान के थंभों में होकर हर भोम में पानी पहुंचाकर बंगला की चांदनी पर आयी है। जहां से दो नहरें हुई एक नहर तो चेहबच्चों द्वारा नीचे उतरकर फीलपायों के मुख से पानी निकालती है। जो बंगलो में आता है। फिर यहां से फिलपायों द्वारा तलहटी में पानी चला जाता है। दूसरी नहर से बंगलों की चांदनी से पुखराज और बंगला के बीच में जो ४०० कोस का चेहबच्चा आया है उसमें पानी गिरता है। पुखराजी ताल की छत पर जो देहलान आयी है। इस देहलान की जगह पर वन जवेरों के मोहल नहीं आये हैं।

५०० भोम की चांदनी पर बाहरी तरफ कठेड़ा घेर कर आया है आगे ७५ कोस की रौंस, आगे ५ वृक्ष बड़ोवन के, सन्धे चार हैं। एक सन्ध ८४६ कोस की है। चारों सन्ध ३३८४ कोस की आयी हैं। ८४६ कोस की सन्ध के आगे खास मोहल (फीलपायों की मोहलात) २५३८ कोस में आये हैं। एक मोहल की बाहरी किनार पर थंभ हैं आगे तीन मंदिर साथ-साथ में आये हैं, आगे थंभों की हार हैं, इसी प्रकार से दूसरी तरफ भी शोभा है। चार मोहल कोनों पर तथा एक मध्य में आएगा। चार दरवाजे चार दिशा में है। इसी प्रकार से पांचों मोहल आए है। आगे ८४६ कोस की सन्ध की आगे ५ बड़ोवन के वृक्ष आये हैं। वृक्षों के आगे ७५ कोस की रौंस आयी है। यहां तक की सब जगह ११११५० कोस की हुई। इसी प्रकार दूसरी पाल पर आयी है। पाल से कमर भर नीची रौंस १०० कोस की ताल के चारों तरफ घूमी है। तीन सीढ़ी उतर कर जल चबूतरे पर कमर भर पानी में स्नान करिये। खास मोहल की पांचवी चांदनी आयी है। चांदनी की चौड़ाई ११११५० कोस की आयी है। लंबाई चारों तरफ घेरकर आई है। चांदनी के बाहर चारों तरफ छज्जे निकले हैं। खास मोहल की चांदनी के पूर्व तरफ बैठकर पश्चिम तरफ देखें, तो ५०० भोम ऊपर तक देहलान ८७५० कोस की चौड़ी चली गई है। देहलान के तीनों तरफ छज्जा निकला है। दाएं-बाएं छज्जे के नीचे गोल तथा चौरस गुर्ज लगे हुए हैं ९८० भोम से १६ चादरों (धाराओं) द्वारा पानी अधबीच के कुण्ड में गिरता है। इस ताल से ७८४ स्तूनों द्वारा पानी नीचे उतरता है। सब जल अधबीच के कुण्ड के चबूतरा पर आ करके नलों द्वारा पानी तरहटी में पहुँचता है। तरहटी से सब पानी नहर के रूप में पूर्व तरफ चला जाता है।

Nijanand App

४९. हजार हांस की हवेली की चांदनी

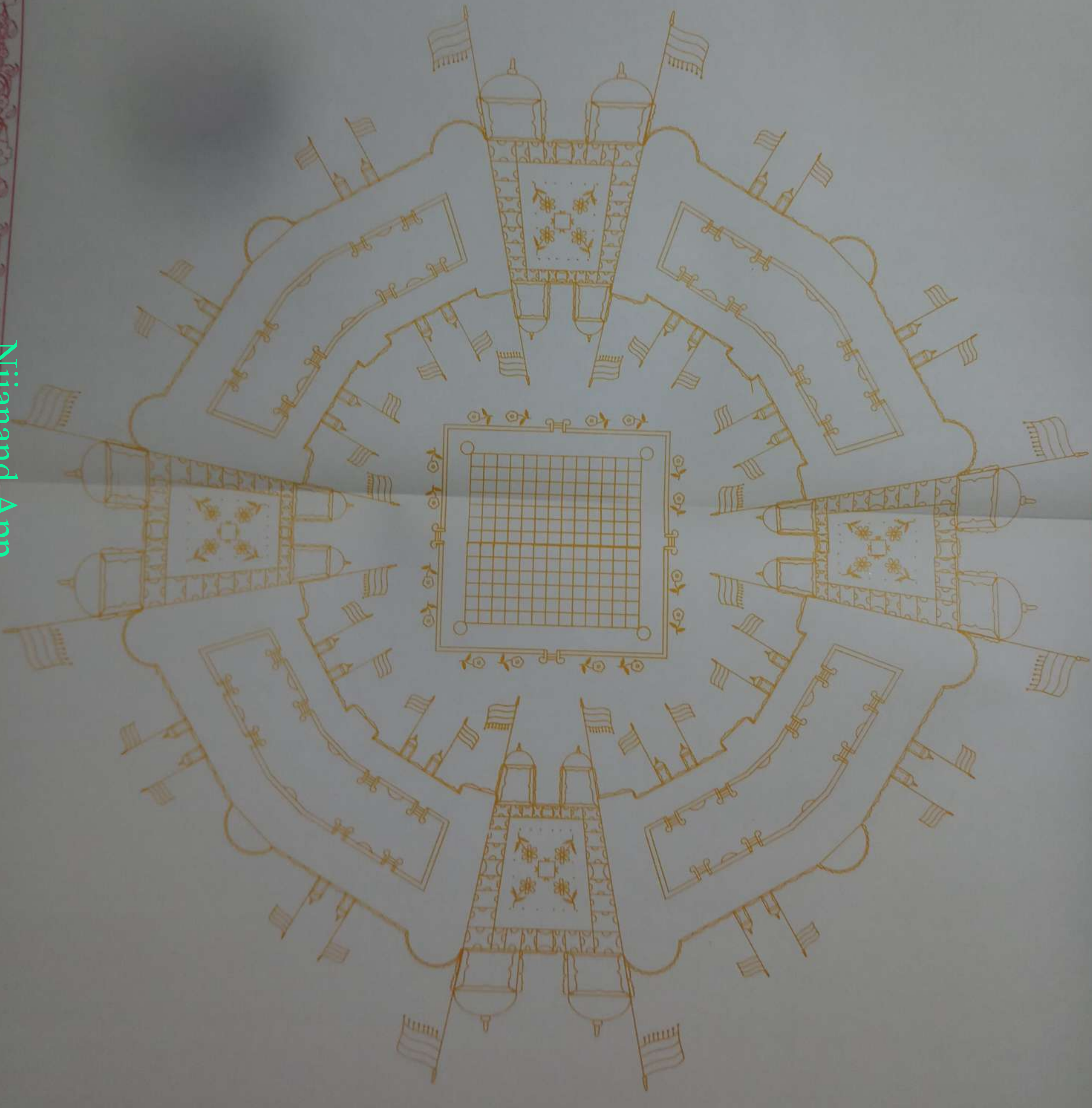

Nijanand App

४९ - हजार हांस की हवेली की चांदनी

हजार हांस की हवेलियां पांच भोम की हैं तथा सब पर एक छत आयी है। इस छत के बाहर भीतर तरफ भोम भर ऊंची दीवाल आयी है। हजार गोल गुर्ज यहां तक आये हैं, जिनकी ऊंचाई ६ भोम ७वीं चांदनी है। गोल गुर्जों को भी घेर करके चांदनी आयी है। २००० चौखूटे गुर्ज भी यहां तक आये हैं। सो यहां से चार-चार थंभ उठकर ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं। हर एक गुर्ज के बाहर तरफ कठेड़ा कांगरी आयी है। इनकी भी ऊंचाई ६ भोम ७वीं चांदनी आयी है। आठ मेहराबें चबूतरे की यहां तक आयी हैं। यहां से थंभ उठकर ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं। १००० अष्ट मेहराबी चबूतरे हैं। इन चौखूटे गुर्जों में तथा गोल गुर्जों में तथा अष्ट मेहराबी चबूतरे के बाहरी तरफ हर एक भोम में छज्जे निकले हैं। हर एक भोम के चौखूटे गुर्जों से अष्ट मेहराबी चबूतरे पर जा सकते हैं हर एक हांस में ४ हवेली हैं। चार रास्ते हुए। इसी को त्रिपोलिया करके कहा है सो १००० हांस के ४००० रास्ते हुए।

Nijanand App

५०. हजार हांस के मोहोल का एक बड़ा दरवाजा

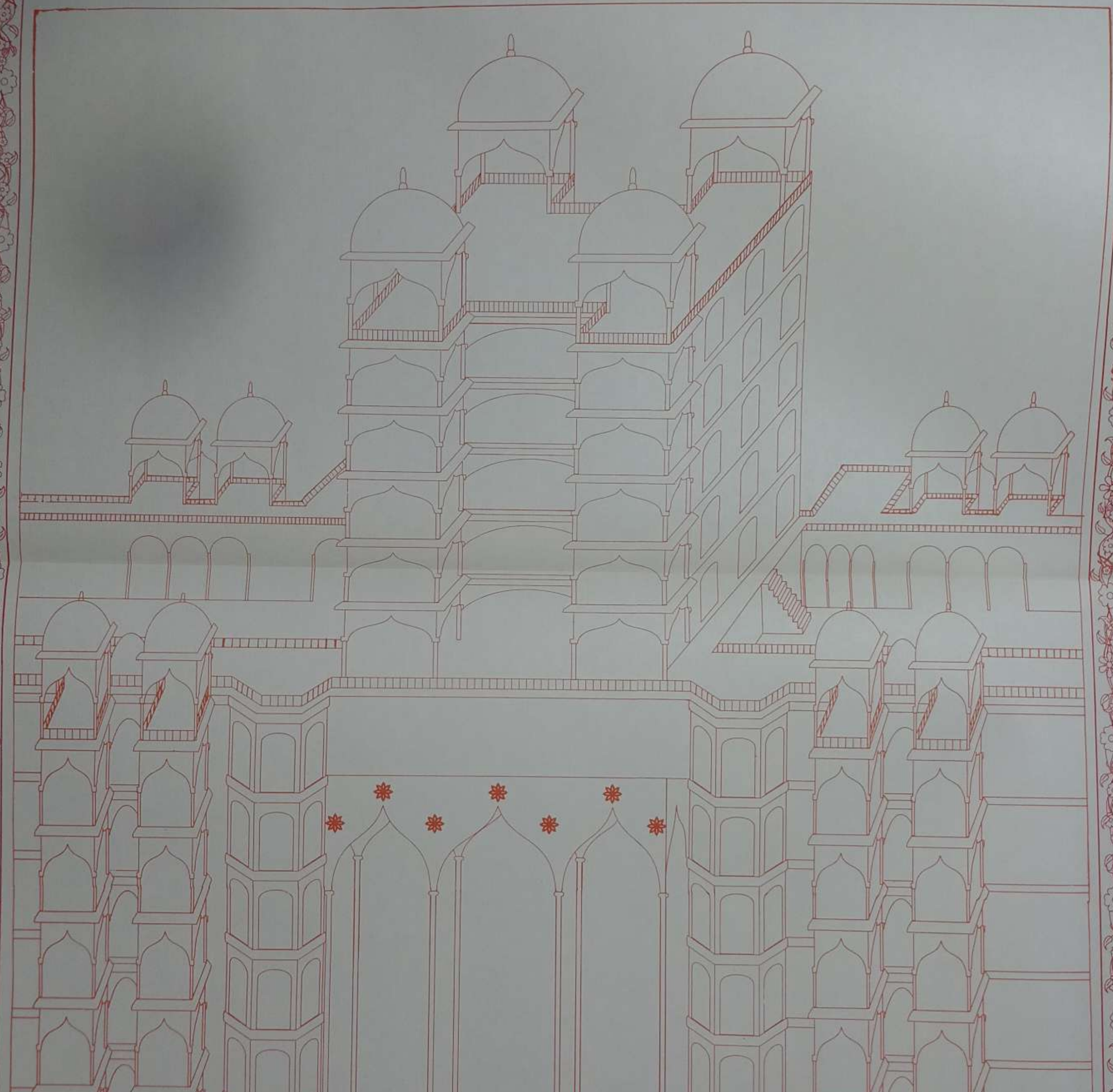

Nijanand App

५० - हजार हांस के मोहल का एक बड़ा दरवाजा

हजार हांस की मोहोलातों में चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं, जो ३०० कोस के चौड़े हैं। इनकी पांच भोम तक एक ही मेहराब आयी है। इस दरवाजे के बाहर की तरफ छज्जे पर १००-१०० कोस के दो चबूतरे कमर भर ऊंचे आये हैं, जिन पर चार-चार थंभ उठे हैं। इन चबूतरों की ऊंचाई पांच भोम तक की आयी है। दोनों चबूतरों के मध्य में १०० कोस का चौक आया है। ऐसे ही दो चबूतरे भीतरी तरफ भी आये हैं। दाएं-बाएं गुर्ज व त्रिपोलिया आये हैं। दाएं-बाएं त्रिपोलियों की ५-५ भोम, दरवाजे के बीच के चौक से सब दिखाई देते हैं। दरवाजे के दाएं-बाएं जो चार-चार हवेली आयी हैं, उनके ८ चबूतरे भी दिखाई देते हैं। ऐसी बनक चारों दरवाजों पर आयी हैं। हजार हांस की हवेलियों की ऊंचाई ५ भोम की, चारों बड़े दरवाजों की ऊंचाई १० भोम ११वीं चांदनी आयी है। २००० चौखूटे गुर्ज बाहर आये हैं वैसे ही भीतर २००० गुर्ज हैं। बाहर १००० गोल गुर्ज आये हैं। फिर यहां से चार-चार थंभ उठे। ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका शोभा दे रहे हैं, इनकी ऊंचाई पुखराज की चांदनी से १२ भोम ऊंची आयी है।

Nijanand App

५१. आकाशी मोहोल

Nijanand App

५१. आकाशी मोहोल

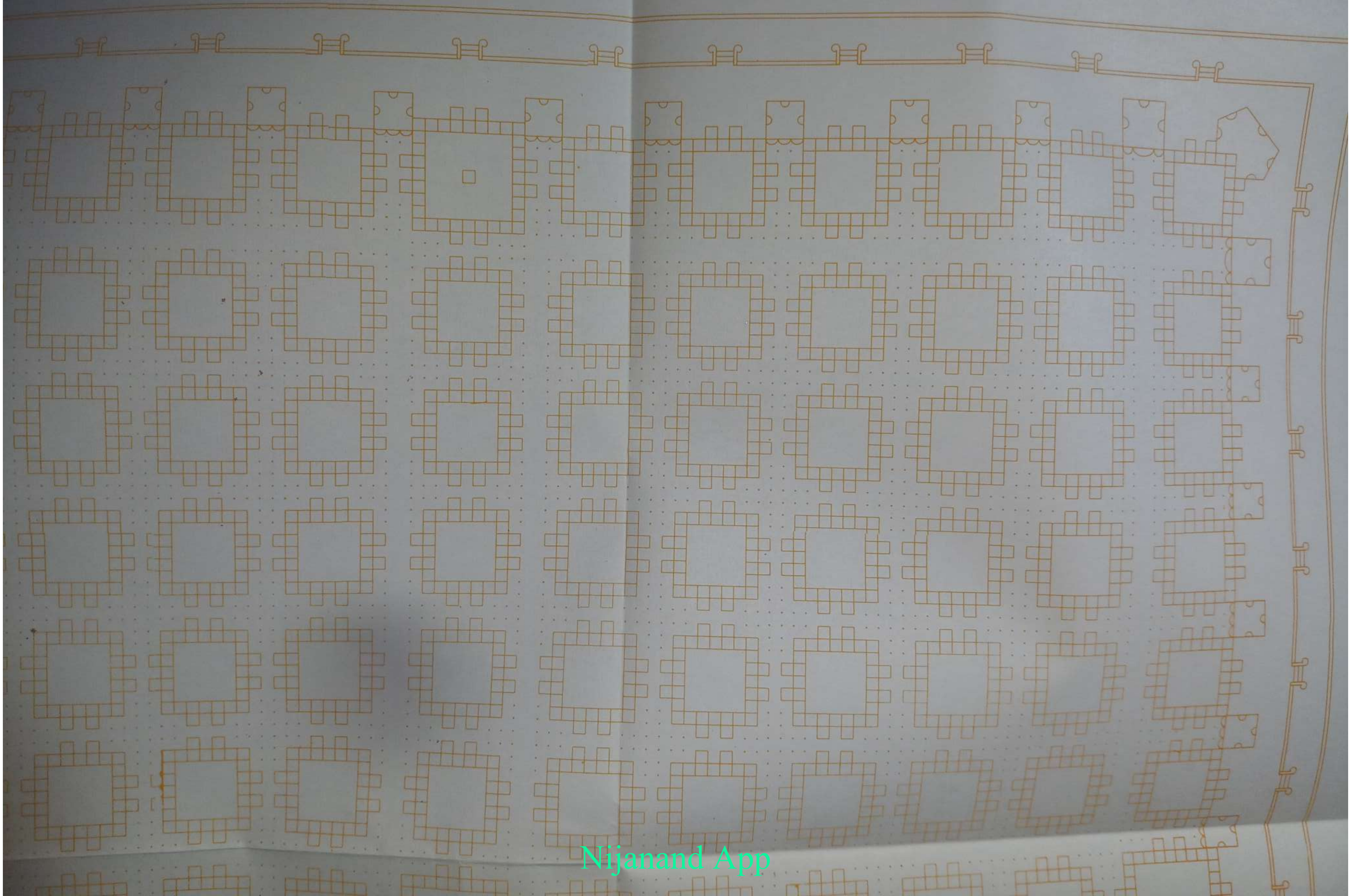

Nijanand App

५१ - आकाशी मोहोल

पुखराज की ४ लाख गृद चांदनी के मध्य भाग में एक चौरस चबूतरा खजाने के ताल के ऊपर ४४००० कोस का लंबा-चौड़ा बराबर तथा कमर भर ऊंचा आया है। इसके चारों तरफ चबूतरे से कमर भर नीचे सीढ़ी उतरी है। ४४००० कोस की चौड़ाई में बाग-बगीचे आये हैं, जिनमें नहरें-फव्वारे चेहेबच्चे चलते हैं। इस चबूतरे की किनार पर एक दिशा में १३ जगह पर कमर भर की सीढ़ी उतरी हैं। हर एक हवेली के दरवाजे के सामने ४०० कोस की जगह से सीढ़ी उतरी हैं। यहां पर कठेड़ा नहीं आया है। ऐसी ही हर हवेली के सामने सीढ़ी आयी है। बाकी जगह पर कठेड़ा आया है। ऐसी बनक चारों तरफ आयी है। कठेड़े से १००० कोस की दूरी पर १३ हवेली एक दिशा में आयी हैं। इस प्रकार से १३ की १३ हारें आने से कुल हवेली १६९ आयी हैं। इन हवेलियों के चारों तरफ १००० कोस की रौंस आयी है और कोने की हवेली के कोने पर एक गोल गुर्ज पांच पहल का आया है। १००० कोस का लंबा-चौड़ा और ३००० कोस की गृद आयी है इन गुर्जों में ५-५ दरवाजे आये हैं। गुर्जों ने हवेली की भोमों से मिलान किया है। हवेली की हर भोम से इस गुर्ज में आ जा सकते हैं। ऐसी बनक चारों कोनों पर आयी है।

एक दिशा में १३ हवेली आयी हैं। मध्य की हवेली ३६०० कोस की लंबी-चौड़ी है। बाकी १२ हवेली बची। हर एक हवेली २८०० कोस की लंबी-चौड़ी आयी है। ऐसे १३ हवेलियों में १२ त्रिपोलिया आये हैं। एक त्रिपोलिया ४०० कोस का, तो १२ त्रिपोलिये ४८०० कोस के हुए। दाएं-बाएं की दो रौंस २००० कोस में आयी हैं। तब सब ४४००० कोस हुए।

Nijanand App

५२. आकाशी मोहोल के दो दिशा की बड़ी हवेलियां

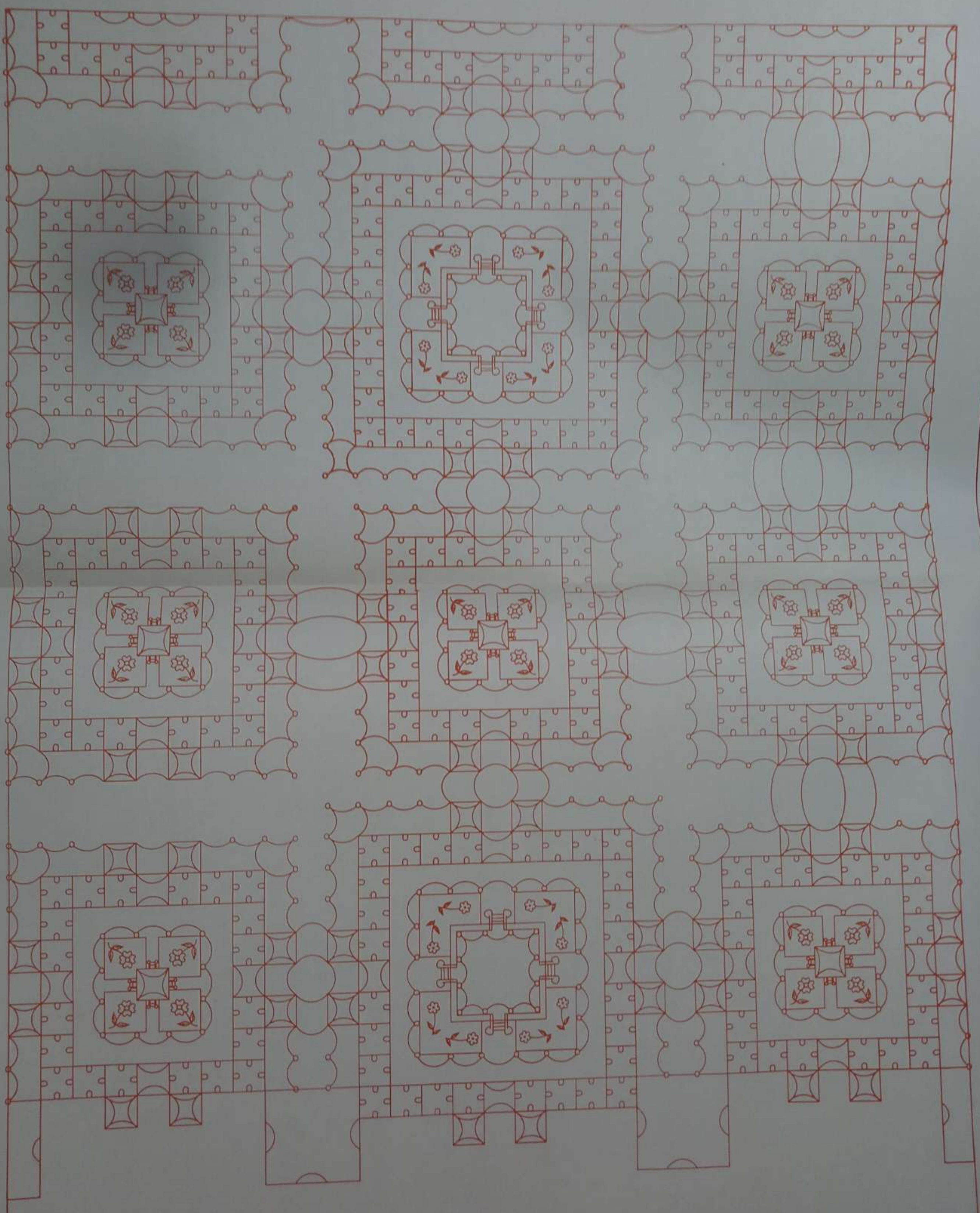

Nijanand App

५२ - आकाशी मोहोल की दो बड़ी हवेलियां

आकाशी मोहल की एक दिशा में १३ हवेलियां आयी हैं। मध्य की हवेली ३६०० कोस की लंबी-चौड़ी है। बाकी १२ हवेलियां बची। हर एक हवेली २८०० कोस की लंबी-चौड़ी आयी है। दो हवेलियों के बीच त्रिपोलिया आये हैं।

चारों दिशा की बड़ी हवेलियां ३६०० कोस की लंबी-चौड़ी हैं हवेली के मध्य में ४०० कोस का दरवाजा आया है। दरवाजे के बाहर रौंस पर दो गुर्ज चौखूटे १३३ कोस के लंबे-चौड़े बराबर आये हैं, जिन पर चार-चार थंभ उठकर आकाश तक चले गए हैं। बीच के हिस्से में १३३ कोस का दरवाजा आया है। दरवाजे के भीतर ४०० कोस का लंबा-चौड़ा चौक आया है। सो दाएं-बाएं गुर्जों के पीछे की तरफ है, वहां से ऊपर जाने को सीढ़ियां आयी हैं। ऐसी बनक बाकी तीनों तरफों के दरवाजे में आयी हैं। एक हवेली के तीन तरफ १३३ कोस का दरवाजा है, दरवाजे के दाएं-बाएं चौरस चबूतरे १३३ कोस के लंबे चौड़े बराबर आये हैं। बड़ा दरवाजा ४०० कोस का आया है। दरवाजे के दाएं-बाएं ४-४ मोहल आये हैं। एक-एक मोहल ४००-४०० कोस का आया है। ऐसी बनक हवेली के चारों तरफ आयी है। कोने का मोहल दो तरफ जवाब देता है। हवेली के भीतर की तरफ एक हार थंभों की आयी है। इसके भीतर कमर भर नीचे वन-बगीचे, नहरें, फव्वारे आये हैं। हवेली के तीसरे हिस्से में कमर भर का ऊंचा चौरस चबूतरा आया है। चारों तरफ उतरने को सीढ़ियां तथा चबूतरे के किनार पर थंभ आये हैं। थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। थंभों के ऊपर मेहराबें हैं, जिनमें हिंडोले आये हैं। चबूतरे पर गिलम और सिंहासन आया है।

एक हवेली की एक दिशा में ८ मोहल और एक दरवाजा आया है। एक मोहल ४०० कोस का लंबा-चौड़ा है। चारों तरफ मंदिर आये हैं, जिनके भीतर की तरफ थंभों की हार आयी है। तीसरे हिस्से में कमर भर ऊंचा चबूतरा हैं, जिस पर थंभ, मेहराबें और हिंडोले आये हैं। मध्य में गिलम, सिंहासन सब आये हैं। चबूतरों को घेर करके कमर भर नीचे बगीचे, नहरें, फव्वारे आये हैं। छोटी हवेली और बड़ी हवेली में कोई फर्क नहीं है। केवल दरवाजे के दाएं-बाएं छोटी हवेली में तीन-२ मोहल हैं। १३ हवेलियों की १३ हारें हैं तथा प्रत्येक दिशा के मध्य की हवेली बड़ी है और २५वीं मध्य की हवेली बड़ी आयी है।

Nijanand App

५३. मध्य की बड़ी हवेली

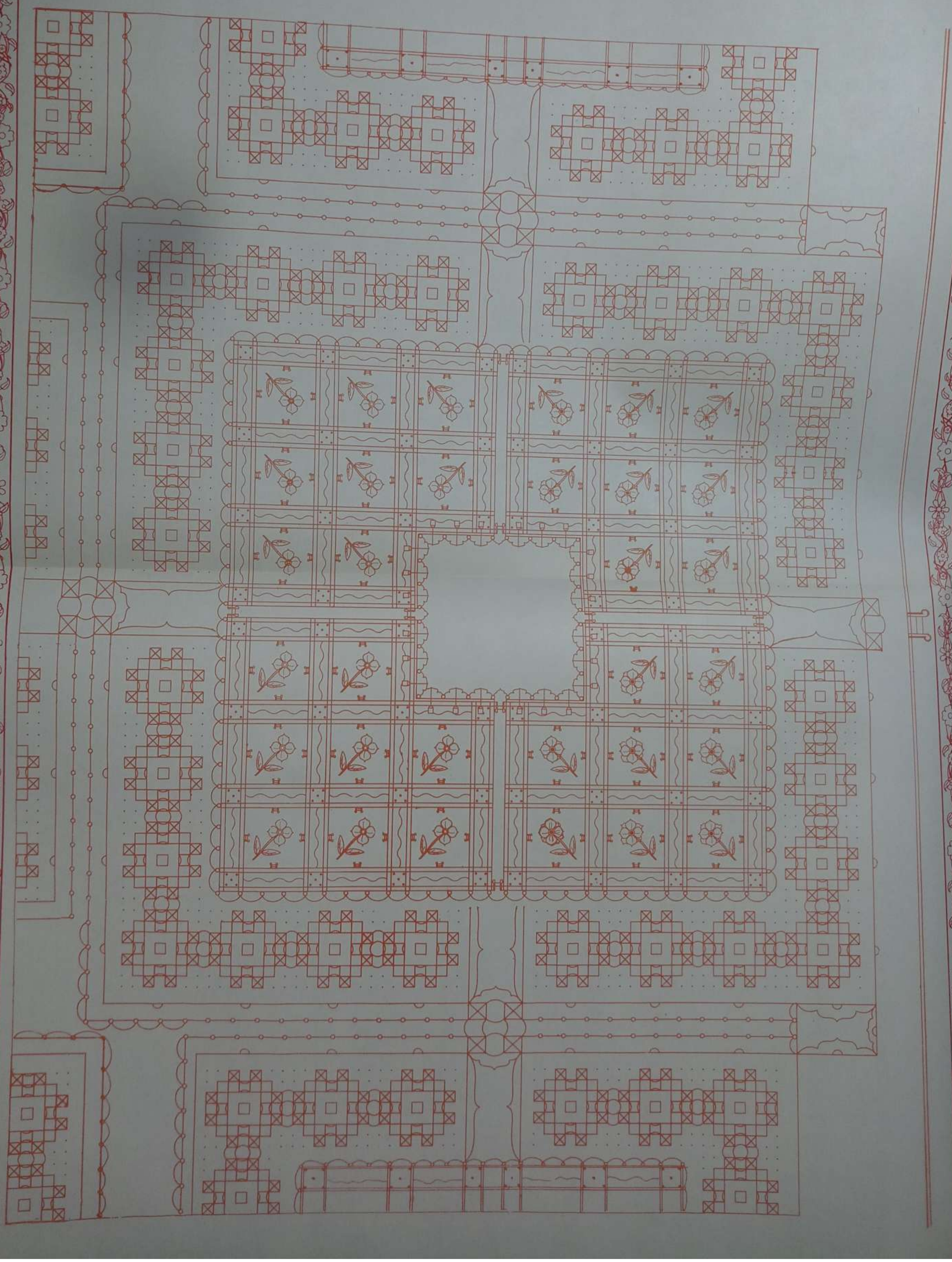

Nijanand App

५३ - मध्य की बड़ी हवेली

मध्य की बड़ी हवेली के बाहर की तरफ रौंस पर दो चबूतरे हैं। थंभों की हार नहीं आयी है और बाकी १२ हवेलियों के सामने दो-दो हार थंभों की लंबाई तरफ गई हैं। छोटी हवेली की जहां किनार आयी है, जिसमें ३ सन्धें आयी हैं। एक सन्ध १३३ कोस की है। तीन सन्ध के ४०० कोस हुए। बड़ी हवेली की दीवाल तक थंभ आये हैं परन्तु निशान बनाते समय बड़ी हवेली के सामने एक हार थंभों की और छोटी हवेलियों के सामने २ हारें दिखाई पड़ती हैं। इन सब हवेलियों की ऊंचाई १००० भोम और ४००००० कोस की होती है। एक रौंस पर २६ चौखूटे गुर्ज, ४८ त्रिपोलियों के गुर्ज, ४ गोल गुर्ज १००० भोम तक ऊपर चले गये हैं। नीचे तरहटी में जो पांच पेड़ उठे हैं, वो चारों पेड़ दिशा के पुखराज की चांदनी तक रह गए हैं। पांचवां पेड़ मध्य का है जो पानी से भरा हुआ है, वो आकाशी की चांदनी पर जो कमर भर का चबूतरा आया है। उसके नीचे से फूटा है। वहां से पानी निकलकर चांदनी पर आता है।

Nijanand App

५४. आकाशी मोहोल की चांदनी

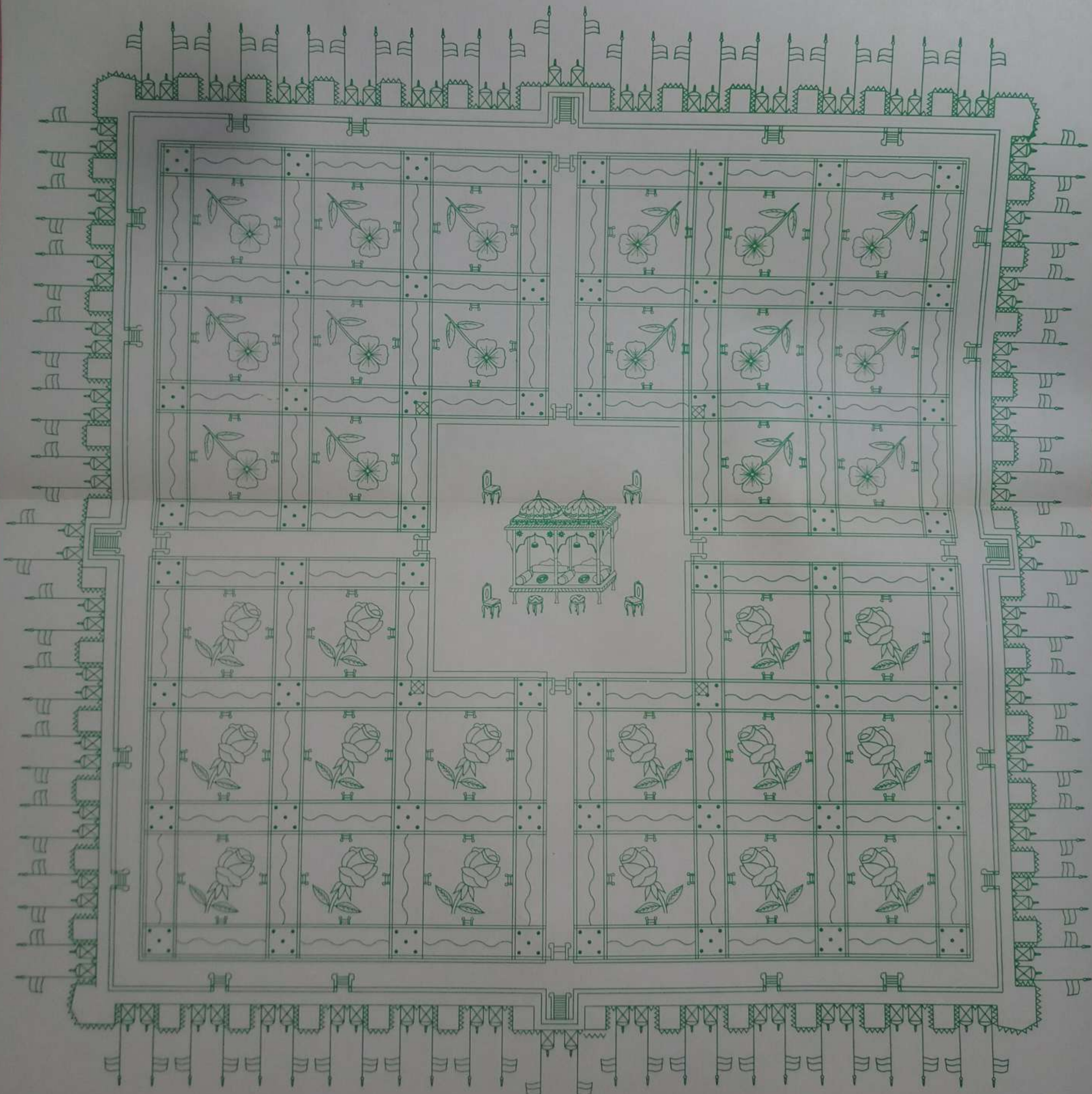

Nijanand App

५४ - आकाशी मोहल की चांदनी

जब आकाशी मोहल की १००० भोम पूरी हुई, तब ऊपर एक ही चांदनी आयी है। इस चांदनी के तीसरे हिस्से में कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ी उतरी है और बाकी में कठेड़ा आया है। चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आदि जोगबाई परिपूर्ण है। चांदनी पर बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारें आदि हैं और किनार पर ऊंची भोम भर की दीवाल आयी है और बाहरी तरफ १०४ चौखूटे गुर्ज आये हैं। गुर्जों पर थंभ उठकर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका आदि आये हैं। इस प्रकार से सब गुर्जों और ४८ त्रिपोलिया के गुर्जों की चांदनी यहां पर आयी हैं और गोल गुर्ज कोने के यहां तक आये हैं। घेरकर के सुन्दर कांगरी है। मध्य के चबूतरे के कोने में से चांदनी पर बड़ा पानी का पूर कई झरनों के समान निकलता है जो आकाशी के सब बगीचों में पानी पहुंचाकर पुखराज की चांदनी के बगीचों में पानी पहुंचाकर हजार हांस की मोहोलातों में पानी पहुंचा कर पूर्व को चलता है, तथा छज्जे के बीच में गुप्त रूप होकर पुखराजी ताल की चांदनी पर होकर ४ धाराओं में होकर पानी २० भोम से पुखराजी ताल में गिरता है।

Nijanand App

५५. घाटी की तरहटी एवं मोहोलात

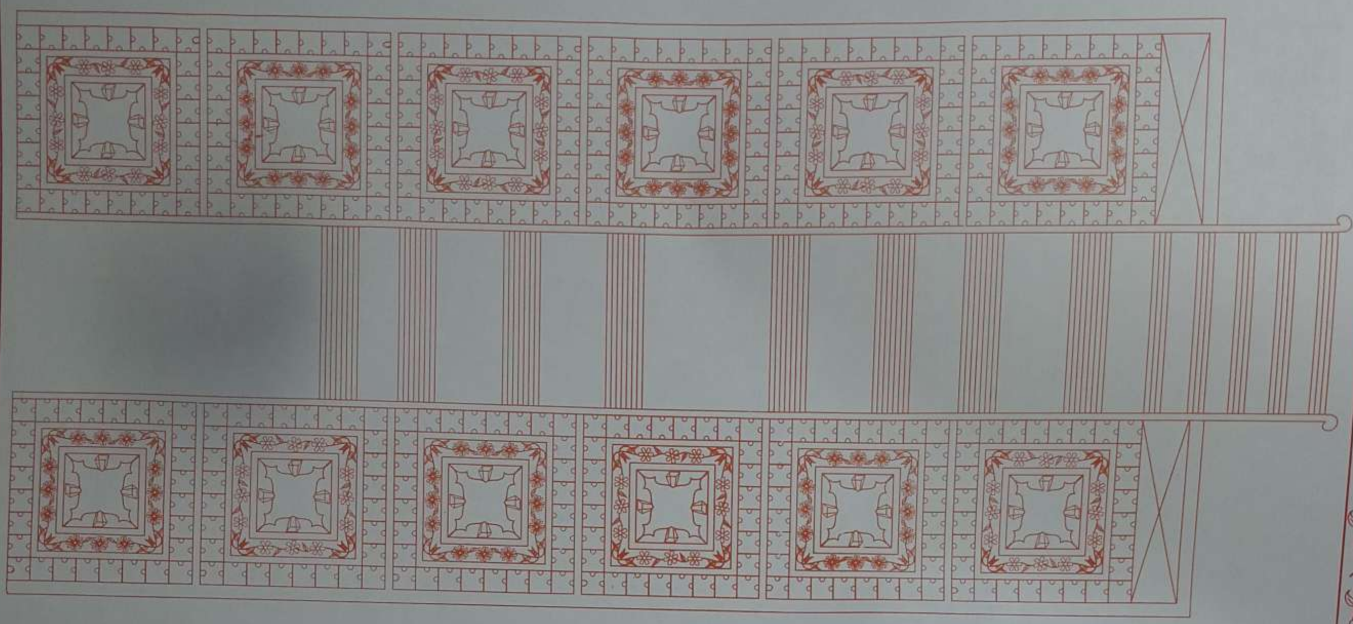

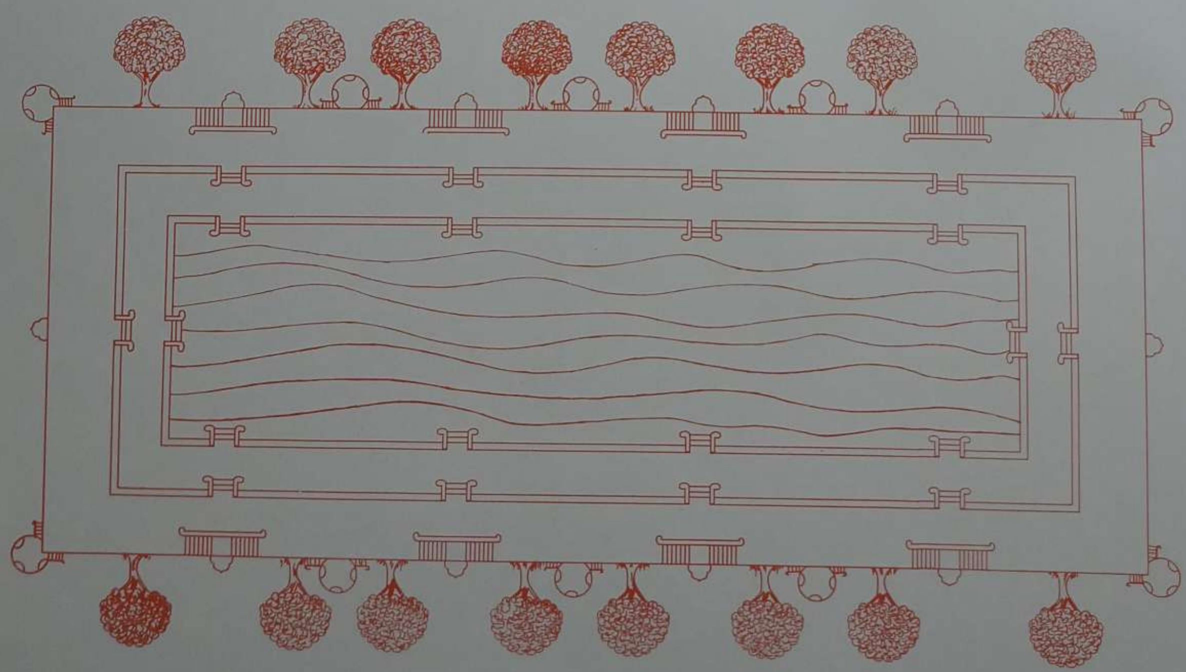

Nijanand App

५५ - घाटी की तरहटी एवं मोहोलात

घाटी की तरहटी की लंबाई चार लाख कोस और चौड़ाई चार सौ कोस है। दाएं-बाएं की रौंस से भोम भर ऊंची दीवाल उठी है। ऊपर दोनों दीवालों पर एक ही लंबी छत आयी है। इस दीवाल में हांस-हांस की हद पर गुर्ज आये हैं, जिन गुर्जों से ऊपर जाने को सीढ़ियां चढ़ी हैं। दो गुर्जों के मध्य जो दो दरवाजे आये हैं, उस दरवाजे के आगे भोम भर की सीढ़ियां तरहटी में ५० कोस की पाल पर उतरी हैं। पाल के आगे ५० कोस की रौंस आयी है। रौंस के आगे कमर भर नीचे २०० कोस में जल की नहर आयी है। नहर के दूसरे तरफ भी पहले ब्यान के मुताबिक शोभा आयी है। इस प्रकार से ४०० कोस का हिसाब हुआ। पुखराज की तरहटी की बाहरी दीवाल से लगकर घाटी की तरहटी में एक चेहबच्चा आया है, जो २०० कोस का लंबा-चौड़ा है। चेहबच्चे के चारों तरफ घेरकर ५० कोस की रौंस आयी है। रौंस को घेरकर ५० कोस की पाल भोम भर ऊंची आयी है। पाल के साथ लगकर ४०० कोस की चौड़ी रौंस आयी है जिस पर दो हारें वृक्षों की आयी है। यह पश्चिम की घाटी का ब्यान किया जा रहा है। इसी प्रकार से उत्तर की घाटी की शोभा है। घाटी का चबूतरा ४०० कोस का चौड़ा और ४ लाख कोस का लंबा आया है। सीढ़ियों का उतार-चढ़ाव ६ लाख कोस का आया है। दाएं-बाएं दो रौंसें आयी हैं, जिन पर दो वृक्षों की हारें आयी हैं और सामने भी रौंस आयी हैं। इन सीढ़ियों से चढ़कर चबूतरे पर आते हैं। अब चबूतरे की लंबाई की ओर से एक हांस लिया और चौड़ाई में तो ४०० कोस की जगह है। ४०-४० कोस की रौंस दोनों ओर छोड़कर बीच में ३२० कोस की जगह आयी है। इस जगह पर मंदिर आये हैं। एक मंदिर ११ कोस के बराबर आया है। चौड़ाई तरफ २९ मंदिर, लंबाई तरफ ३६ मंदिर आये हैं। यह एक हांस का बेवरा है। १००० हांसों में ऐसे ही मंदिर आये हैं। अब यहां से पश्चिम से पूर्व को चलें, तो पहली भोम केवल पहले हांस पर आयी है। दूसरे हांस पर दो भोम, तीन हांस पर तीन भोम। इस प्रकार ज्यों-ज्यों हांस बढ़ते गए हैं, उसी प्रकार भोमें भी बढ़ती गई। उधर घाटी के पूर्व में पश्चिम से पूर्व तक १००० हांसों में से ८९० हांस तक मंदिर आये हैं। ११० हांस अर्थात् ४४००० कोस की जगह गोल चबूतरे के बीच में बाकी रही। इस जगह की पूर्ति पांचवीं भोम के बाद जो छज्जे बढ़े हैं, उन्होंने की है। ८९० हांस के पूर्व तरफ पहला छज्जा ४४ कोस का छठी चांदनी से बढ़ा, तो ४४ कोस में पूर्व तरफ और ४० कोस दाएं-बाएं जो रौंस की जगह थी, वहां तक बढ़ा तो चौड़ाई में यहां से ३६ मंदिर हो गये। पहले २९ आये थे। ४४ कोस के छज्जे पर ११-११ कोस के लंबे-चौड़े मंदिरों की तीन हारें आयी हैं और ११ कोस में छज्जा रहा। छज्जे की किनार पर ३६ मंदिर की जगह में ३७ थंभ आये। फिर इसी प्रकार सातवीं भोम पर, फिर इन्हीं थंभों के ऊपर छत आयी है और आगे ४४ कोस का छज्जा बढ़ा। तो अब नीचे जो ४४ कोस का छज्जा था, वहां पर चार हारें मंदिरों की आ गयी। अब जो ४४ कोस का छज्जा निकला उस पर तीन हारें मंदिरों की आयी हैं। आगे ११ कोस का चौड़ा छज्जा है, जिस पर ३७ थंभ आये। इसी प्रकार से भोम-भोम पर छज्जे निकलते गए। आगे छज्जा रहा। पीछे मोहोलातें बनती गई। इसी प्रकार से सब छज्जे बढ़ते गए। २५० छज्जों के बाद एक लाख कोस पर छज्जों ने पुखराज के पेड़ से मिलान किया, जो ६६००० कोस का एक ही छज्जा आया है। पेड़ से ८९० हांस तक का अंतर ८८००० कोस का था। दोनों तरफ से ४४-४४ कोस का छज्जा निकलने से २५० भोम तक २२००० कोस

Nijanand App

तक जगह घेरी, तो बाकी २५० भोम के ऊपर एक छत घाटी की हुई । ८९० हांसों में से २५० हांस कम, क्योंकि भोम-भोम पर हांस कम होता गया तो यहां पर ६४० हांस पर पुखराज अर्थात् १४ मेहराबों की चांदनी पर और पूर्व तरफ भी पाट पड़ने से सब एक ही लंबी-चौड़ी छत आयी है । इसी प्रकार उपरा-ऊपर छज्जे निकलते गए । अन्त में ८९० भोम ऊपर जाकर पुखराज और घाटी की छत मिल गई है । सब छत एक हो गई है ।

एक हांस की चौड़ाई हमारे पास ३२० कोस की है क्योंकि दाएं-बाएं ४०-४० कोस की रौंस आयी है अर्थात् चौड़ाई में २९ मंदिर आये हैं । आगे छज्जे निकलने से मंदिर बढ़े हैं । चार-चार मंदिर बढ़ जाने से ३७ मंदिर और ३८ थंभ आये हैं । ८९० हांस तक २९ मंदिर की चौड़ाई आयी है । एक हांस में जो २९ मंदिर की चौड़ाई है उसमें केवल १०-१० तो दाएं-बाएं आये हैं बीच में ९ मंदिर की खाली जगह बची है । यहां पर मंदिर नहीं आये । यहां दूसरे हांस के पहली भोम में सब मंदिर आये हैं, दूसरी भोम में सब मंदिर नहीं आयें हैं । इसी प्रकार तीसरी हांस में दो भोमों में सब मंदिर आये हैं, परन्तु तीसरी भोम में ९ मंदिर नहीं आये । इसी प्रकार से हर एक हांस की आखरी भोम में बीच के ९-९ मंदिर छूटते गए । हर हांस की ९ मंदिर की खाली जगह पर सीढ़ियां ऊपर चढ़ी हैं एक हांस ४०० कोस का होने से एक हांस की सीढ़ियों का उतार-चढ़ाव ६०० कोस का आया है । एक कोस के मंदिर १००, जिनमें एक मंदिर की सीढ़ियां १०० हैं । १०० सीढ़ियों के ऊपर एक मंदिरी चांदा है । इस प्रकार एक कोस में ५०० सीढ़ी और ५० मंदिरी चांदे आये हैं । इसके ऊपर एक कोसी चांदा आया है । अब एक हांस के दो सौ कोस में दस लाख सीढी, एक लाख मंदिरी चांदे और २०१ कोसी चांदे आये हैं । इसके आगे एक हांस में बचे २०० कोस में एक ही चांदा आया है । इस प्रकार १००० हांस में एक अरब सीढ़ी, एक करोड़ मंदिरी चांदे, दो लाख कोसी चांदे और २०० कोसी चांदे १००० आये हैं ।

हर एक हांस के मध्य में ९ मंदिरों की चौड़ी सीढ़ियां छोड़कर दाएं-बाएं १०-१० मंदिर की चौड़ी और एक हांस की लंबी एक छत भोम पर आयी है । उन १०-१० मंदिरों के बाहरी तरफ दाएं-बाएं ४०-४० कोस का छज्जा आया है जो नीचे रौंस थी । ४०० कोस की छत के १३ हिस्से किए । ३१-३१ कोस की १३ सन्धें आयी हैं । छत पर एक-एक सन्ध में ४०-४० कोस दाएं-बाएं उत्तर-दक्षिण छोड़कर ३० कोस की जगह बीच में बची क्योंकि १० मंदिर की चौड़ाई के हिसाब से ११० कोस की आयी है तथा पूर्व-पश्चिम ३१ कोस की जगह छोड़कर इस जगह पर ४ थंभ उठे । ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका आये हैं अर्थात् १३ सन्ध में से १ सन्ध छोड़कर एक गुम्मट आया है, तो एक हांस पर ६ गुम्मट आये हैं । इस प्रकार से १००० हांस पर ६००० गुम्मट आये । दोनों तरफ १२००० गुम्मट आए हैं । इसी प्रकार से उत्तर की घाटी की शोभा है ।

Nijanand App

५६. बंगला तथा चेहेबच्चा

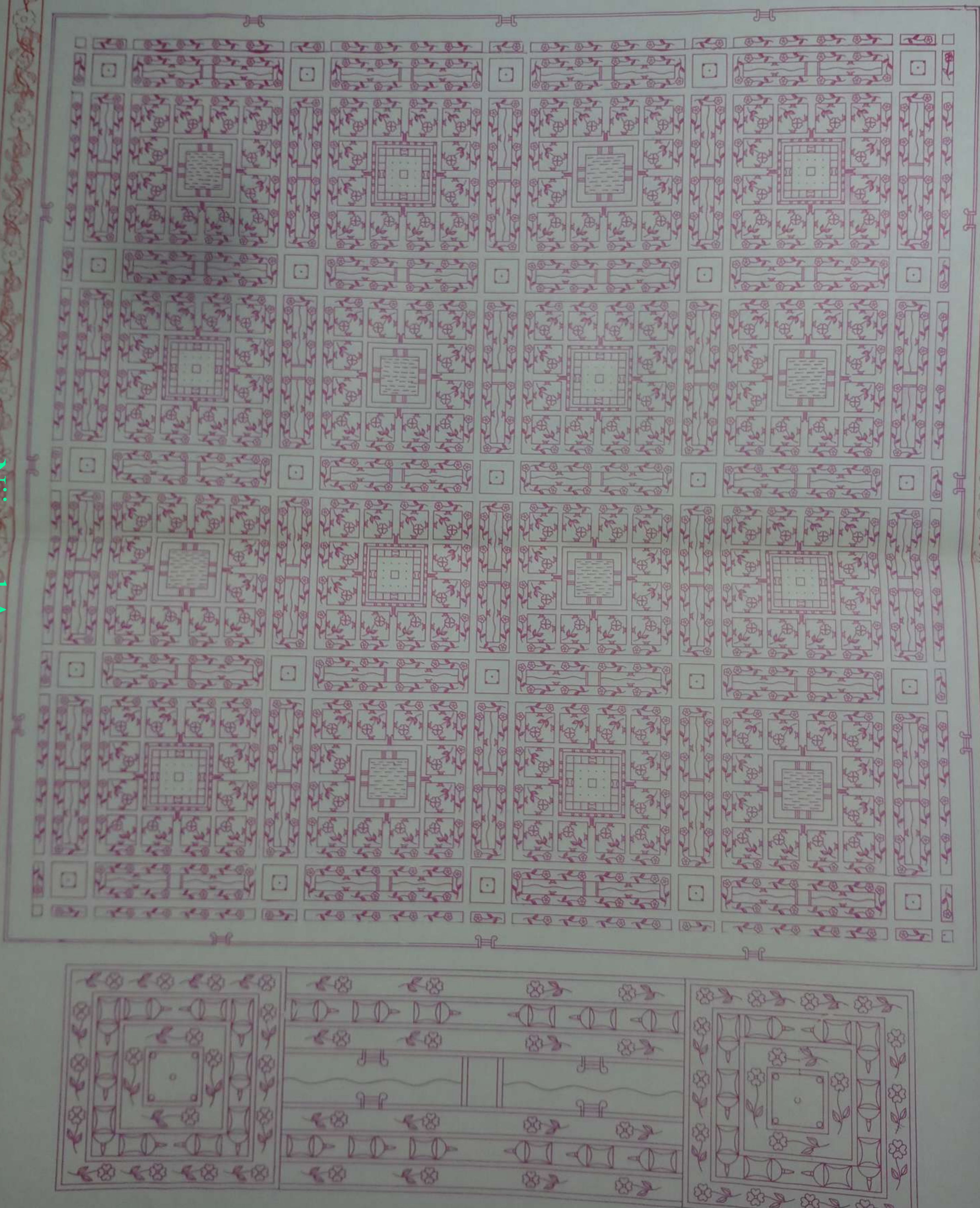

Nijanand App

५६ - बंगला तथा चेहेबच्चा

बंगलों के चबूतरे पर ३३३०० कोस के फीलपाए दाएं तरफ तथा इतने ही बाएं तरफ हैं । बीच में ३३४०० कोस की बंगलों की जमीन आयी है, जिसमें पहले १२५ कोस की रौंस चारों तरफ घूमकर आयी । जिस पर सीढ़ियां उतरी हैं आगे ३२० कोस में बंगला है, आगे २५ कोस में नहर, आगे ३२० कोस में चेहेबच्चा, आगे नहर, फिर बंगला, फिर नहर, फिर चेहेबच्चा। इसी प्रकार से ९७ नहरें आयी हैं तथा ४८ बंगलों की ४८ हारें तथा ४८ चेहेबच्चों की ४८ हारें आयी हैं । एक कोस ५ मंदिर के बराबर आया है ।

इस प्रकार एक बंगला की जगह १६०० मंदिर की आयी है, जिसमें ८०० मंदिर का लंबा-चौड़ा चबूतरा भोम भर ऊंचा आया है । चारों दिशा से भोम भर की सीढ़ी चबूतरे के ऊपर चढ़ी है । चबूतरे के किनार पर थंभों की हार आयी है । ५-५ मंदिर के फासले पर एक दिशा में १६० थंभ आये हैं । इस प्रकार चारों तरफ ६४० आये हैं । थंभों के बीच में कठेड़ा आया है । १०० मंदिर की जगह आगे चलकर एक हार मंदिरों की आयी है । इसे दरबार बोला जाता है । मध्य में एक मंदिर का दरवाजा हैं । दरवाजे के दाएं-बाएं ३००-३०० मंदिर आये हैं । एक दिशा में ६००, चारों तरफ के २४०० मंदिर हुए । भीतर एक थंभ की हार आयी है । इसके भीतर कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है । चारों दिशाओं से कमर भर की सीढ़ी चढ़ी है । चबूतरे के किनार पर थंभ आये हैं । ५-५ मंदिर की दूरी पर थंभों के बीच में कठेड़ा, चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आदि जोगबाई आयी है । श्री राज श्यामा जी सिंहासन पर तथा सखियां घेरकर कुर्सियों पर बैठती हैं । बंगलों की एक भोम में मंदिरों की ५ भोम आयी हैं । भीतर चबूतरे के थंभ और मंदिरों के बाहर तरफ के ५ भोम के ऊंचे थंभ आये हैं, जिससे बंगला बोला जाता है । मंदिर की हार के भीतर थंभों की हार है । इनको बंगले के मंदिर कहा जाता है । बंगलों की एक भोम में मंदिर १२००० आये हैं । बंगलों के पांचों भोमों के मंदिरों की संख्या (२५ भोम की) ६०००० हुई । बंगले के चारों तरफ बारह बगीचे आये हैं । आठ दिशा में चार कोनों पर । एक बगीचा ४०० कोस का लंबा-चौड़ा बराबर है । हर एक बगीचा के वृक्ष मंदिर-२ के फासले पर आये हैं । ऊंचाई भी मंदिर-२ की आयी है । बंगले के मंदिरों में इनकी छत मिली है । इन वृक्षों की ऊंचाई में ३० भोमें आयी हैं । हर एक बगीचे की हर भोम से चबूतरे पर बैठे श्री युगलस्वरूप के दर्शन कर सकते हैं, क्योंकि चबूतरे की छत नहीं आयी है । जहां बंगलों की चांदनी आयी है, वहीं पर इस चबूतरे पर छत आयी है। नहरें, चेहेबच्चे तथा फव्वारे बगीचों में शोभायमान हैं । ऐसी ही बनक सब बंगलों के बगीचों की आयी है ।

एक चेहेबच्चा १६०० मंदिर का लंबा-चौड़ा बराबर आया है । मध्य में ८०० मंदिर के लंबे-चौड़े चबूतरे पर ६०० मंदिर में ताल आया है यानी चेहेबच्चा आया है । चेहेबच्चे के चारों तरफ १००-१०० मंदिर की पाल आयी है । इस पाल की चारों दिशाओं में चार चांदे जल की तरफ उतरे हैं । कमर भर के जल चबूतरे पर स्नान करते हैं । पाल की दूसरी तरफ चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं, जो बगीचों में आयी हैं । पाल की किनार पर सब जगह कठेड़ा आया है । इस चेहेबच्चे के आगे-पीछे घेरकर ४००-४०० मंदिर के बगीचे आये हैं । इस प्रकार से १६०० मंदिर की जगह हुई । इस चेहेबच्चे की चारों दिशाओं में चार बगीचे और चार बगीचे कोने के हैं । इन बगीचों के वृक्षों की ऊंचाई ३० भोम की है । मंदिर भर की भोम है । नहरें, फव्वारे, चेहेबच्चे चलते हैं । ऐसे सब बगीचे आये हैं । ऐसी बनक सब चेहेबच्चों की आयी है । चेहेबच्चे को घेरकर कुल १२ बगीचे आये हैं ।

Nijanand App

५७. एक बंगला

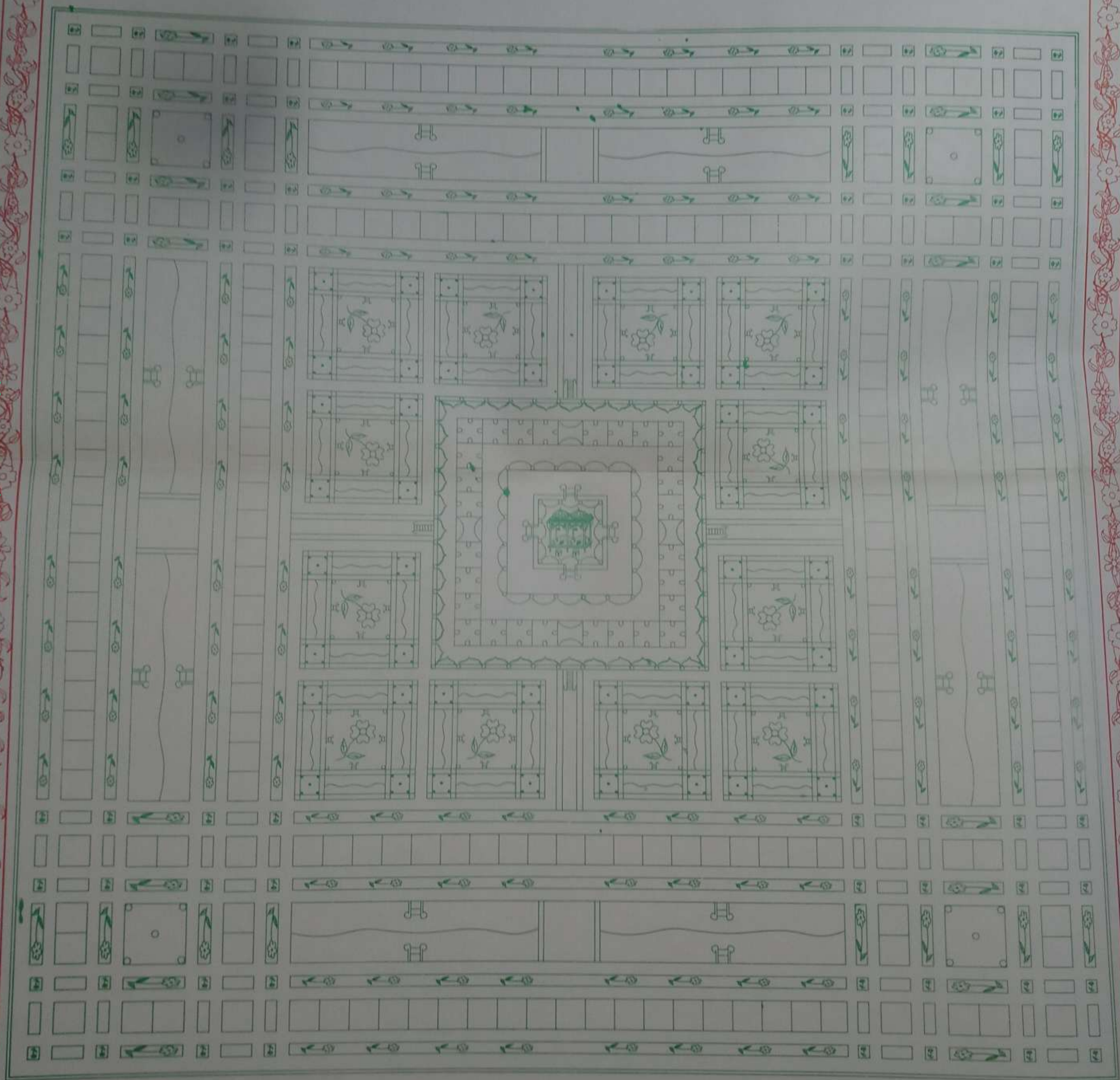

Nijanand App

५७ - एक बंगला

एक बंगले की जगह १६०० मंदिर की आयी है, जिसमें ८०० मंदिर का लंबा-चौड़ा चबूतरा भोम भर का ऊंचा आया है। चारों दिशा से भोम भर की सीढ़ी चबूतरे के ऊपर चढ़ी है। चबूतरे की किनार पर थंभों की हार आयी है। ५-५ मंदिर के फासले पर एक दिशा में १६० थंभ आये हैं। इस प्रकार चारों तरफ ६४० थंभ आये हैं। थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। १०० मंदिर की जगह में आगे चलकर एक हार मंदिरों की आयी है। इसे दरबार बोला जाता है। मध्य में एक मंदिर का दरवाजा है। दरवाजे के दायें बायें ३००-३०० मंदिर आये हैं। एक दिशा में ६००, और चारों तरफ के २४०० मंदिर हुए। भीतर एक थंभ की हार आयी है। इसके भीतर कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। चारों दिशाओं से कमर भर की सीढ़ी चढ़ी है। चबूतरे की किनार पर थंभ आये हैं। ५-५ मंदिर के फासले पर थंभों के बीच में कठेड़ा, चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आदि जोगबाई आयी है। श्रीराजश्यामा जी सिंहासन पर तथा सखियां घेर कर कुर्सियों पर बैठती हैं। बंगलों की एक भोम में मंदिरों की ५ भोम आयी है। भीतर चबूतरे के थंभ और मंदिरों के बाहर की तरफ के थंभ आये हैं जिससे बंगला बोला जाता है। मंदिरों की हार तथा भीतर के थंभों की हार को बंगले का मंदिर कहा जाता है। बंगलों की एक भोम में मंदिर १२००० आये हैं। बंगलों के पांचों भोमों के मंदिरों की संख्या (२५ भोम की) ६०००० हुई। बंगले के चारों तरफ बारह बगीचे आये हैं। इनमें वृक्ष मंदिर-मंदिर के फासले पर आये हैं। ऊंचाई भी मंदिर की आयी है। बंगले के मंदिरों में इन बगीचों की छत मिली है। हर एक बगीचे की भोम से आकर के चबूतरे पर बैठे श्री युगल स्वरूप के दर्शन मंदिरों की हर भोम से करिये, क्योंकि चबूतरे की छत नहीं आयी है। जहां बंगलों की चांदनी आयी है, वहीं पर इस चबूतरें पर छत आयी है। इस वास्ते मंदिरों की २५ भोम से होकर दर्शन कर सकते हैं।

बंगले की पांच भोम के ऊपर ८०० मंदिर की लंबी चौड़ी छत बराबर आयी है जिस पर ६०० मंदिर का लंबा चौड़ा एक चबूतरा कमर भर का ऊंचा आया है। इस चबूतरे के चारों कोनों पर चार थंभ आये हैं। ऊपर गुम्मट और कलश आये हैं। एक बंगले के चारों कोनों पर जो चार चेहबच्चे आये हैं, उन चारों चेहबच्चों से फव्वारे उठ कर एक दूसरे में पड़ते हैं। इस प्रकार से चारों तरफ से कमानें आकर कलश की नोक पर लग रही हैं। सब बगीचों के वृक्ष बंगलों की पांच भोम तक दिख रहे हैं तथा फीलपाये व बड़ोवन के सब वृक्ष इस ऊपर की छत को लग रहे हैं। यहां की अपरम्पार शोभा है।

एक बंगले के चारों तरफ बारह बगीचे आये हैं। ८ दिशा में तथा चार कोनों पर। एक बगीचा ४०० कोस का लंबा चौड़ा बराबर है। हर एक बगीचे के वृक्ष मंदिर-मंदिर के फासले पर आये हैं। ऊंचाई भी मंदिर-मंदिर की आयी है। इन वृक्षों की ऊंचाई में ३० भोमें आयी है। बंगलें की ८०० मंदिर की छत तक की भोम मंदिर-मंदिर की आयी है। नहरें, चेहेबच्चे तथा फव्वारे आये हैं। ऐसी ही बनक सब बंगलों के बगीचों की आयी है।

Nijanand App

५८. पुखराज पहाड़ का खड़ा दृश्य

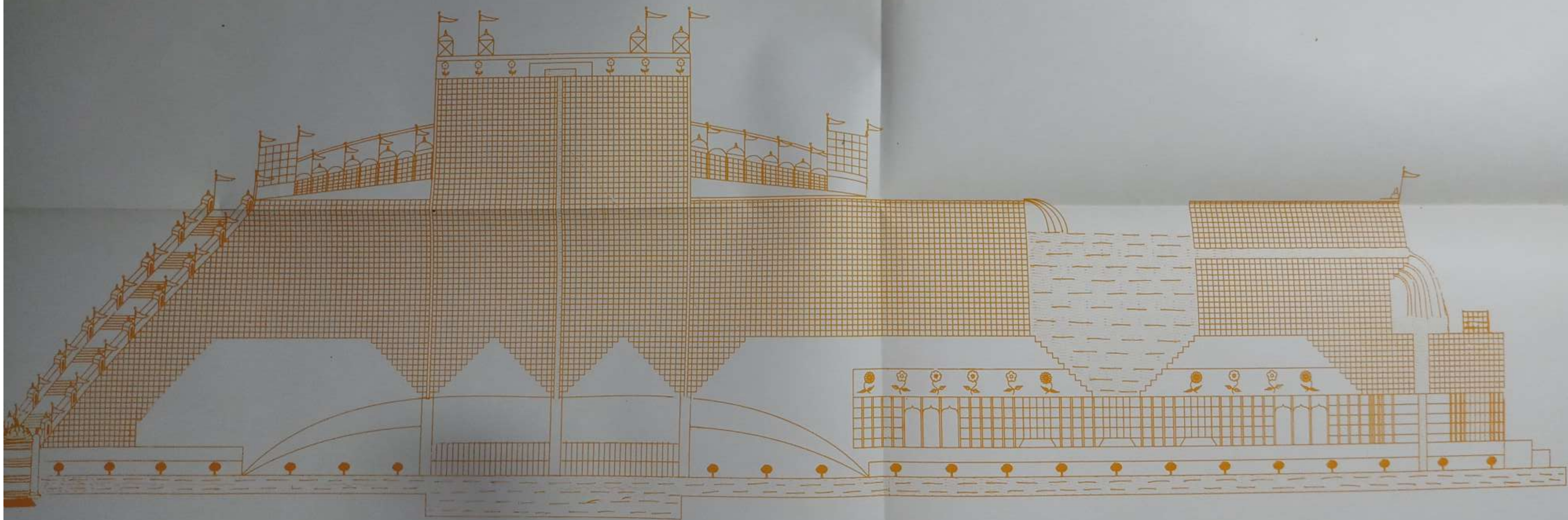

Nijanand App

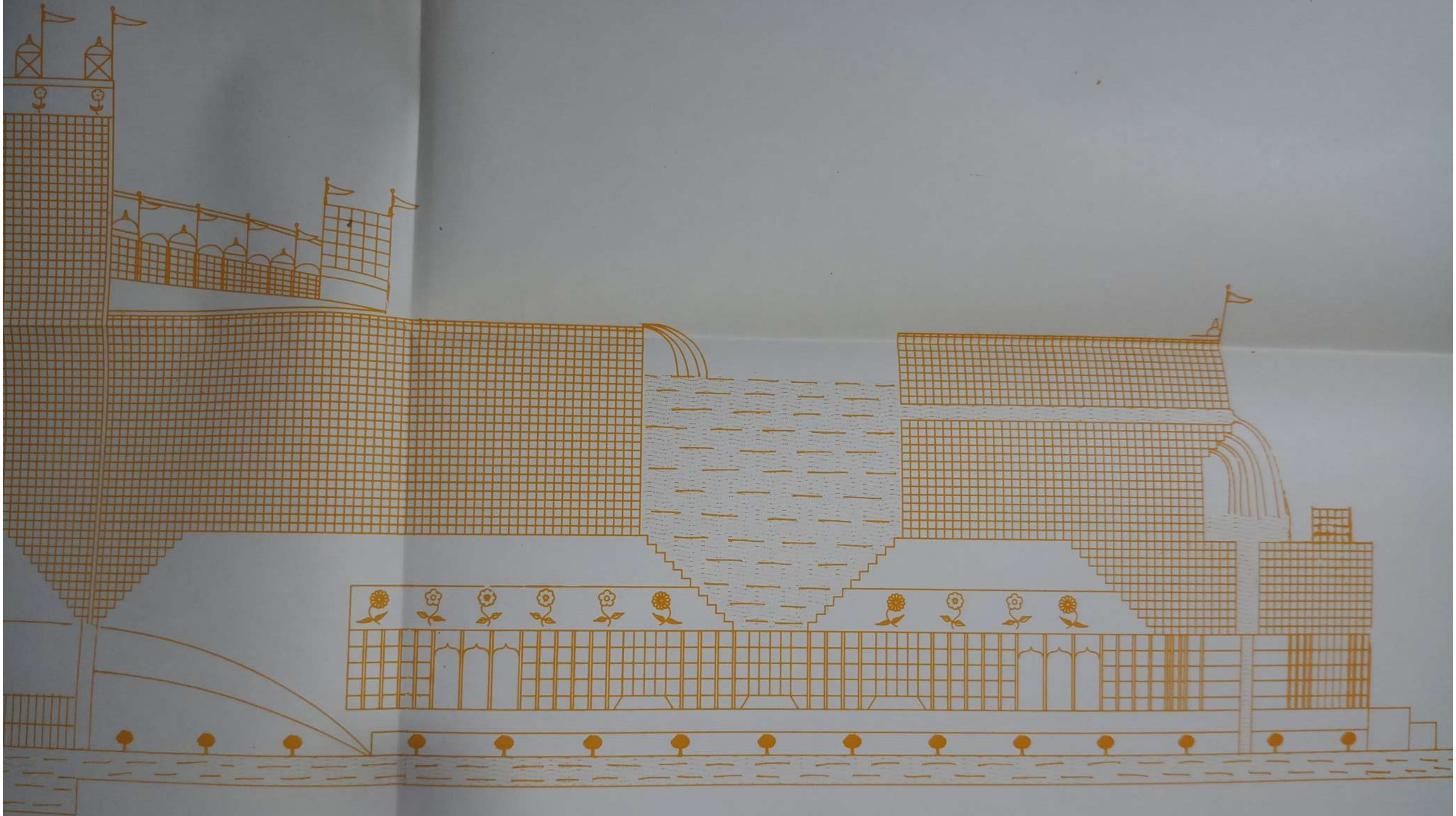

Nijanand App

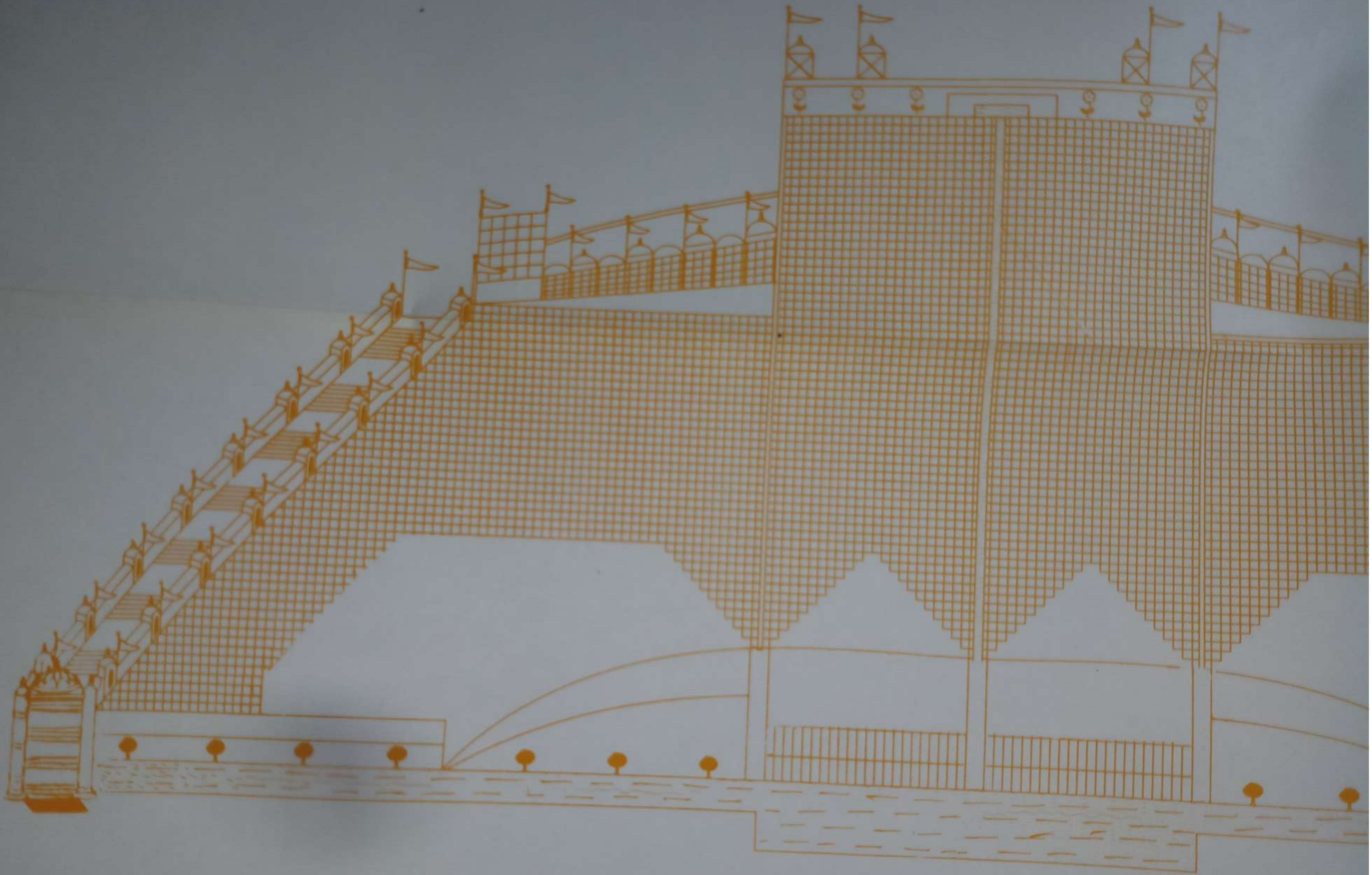

Nijanand App

५८-पुखराज पहाड़ का खड़ा दृश्य

चार लाख कोस की गिरद का एक चबूतरा है। उस चबूतरे पर पुखराज पर्वत चार लाख कोस का ऊंचा सुशोभित है। जिस चबूतरे पर पुखराज पर्वत आया है, उस चबूतरे की किनार से चार सौ कोस की जगह प्रदक्षिणा के लिये छोड़कर एक भोम भर ऊंची दीवाल फिरी है। उस दीवाल की एक हजार हांस है और हांसों की प्रत्येक सन्धि में एक-एक गोल गुर्ज है तथा हांस-हांस के मध्य भाग में नीचे तलहटी में उतरने के लिये दरवाजे हैं। उन दरवाजों से भोम भर की नीची सीढ़ियां उतरी हैं।

तलहटी को घेरकर हजार-हजार-बगीचों की ५२ हारें हैं। प्रत्येक बगीचे के मध्य में एक-एक फीलपाये (थंभ) घेर के आये हैं। इन बगीचों में नहरों, चेहबच्चों और फव्वारों की अपार शोभा है। इन बगीचों की भीतरी तरफ हजार-हजार मोहलातों की ५३ हारें आयी हैं। मध्य में तलहटी के तीसरे भाग में खजाने का ताल अर्थात् पानी का भण्डार है। उस ताल पर पांच पेड़ हैं। चार पेड़ चार तरफ और एक पेड़ बीच में है। उन पेड़ों पर मोहलातें हैं और खजाने के तालाब से चारों दिशा को चार नहरें निकली हैं। सो इन नहरों का जल चारों दिशा में जाता है। मध्य में जो पांचवां पेड़ है सो पेड़ पानी से भरा हुआ ऊपर आठ लाख कोस तक गया हुआ है। ऊपर आकाशी मोहोल की चांदनी में इस पेड़ का जल प्रकट हुआ है। जब आगे आकाशी मोहोल का वर्णन किया जायेगा तब इस पेड़ के जल का भी वर्णन किया जायेगा। जैसी मोहोलात पुखराज की तलहटी की है, वैसी ही मोहोलातें बंगलों की तलहटी की हैं।

जो नीचे से हजार हांस की दीवाल फिरी है और तलहटी में ५२ हजार थंभ गिरद फिरे हैं, ऊनके उपर यह गोल चबूतरा आया है। चबूतरे की किनार में फिरते कठेड़े हैं और प्रत्येक गुर्ज से चढ़ने उतरने के लिये सीढ़ियां लगी हैं। इस गोल चबूतरे के तीसरे हिस्से में चौकोण (चार कोनों वाला) भोम भर का ऊंचा चबूतरा है। इस चबूतरे के चारों ओर कठेड़ा है और चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं।इस चबूतरे की किनार से परिकरमा की जगह छोड़कर तलहटी से आये हुए पांचों पेड़ यहां से प्रगट हुए। यहां से उपरा-ऊपर पांच भोम तक ये पांचों पेड़ सीधे चले गये हैं। सो छठी भोम से पांचों पेड़ के छज्जे पृथक-२ बढ़ चले।

जैसे कि चार दिशा के चारों पेड़ के छज्जे मध्य के पेड़ की तरफ ग्यारह-२ ही कोस के निकले हैं इसी प्रकार से मध्य के पेड़ में से भी चारों दिशाओं को ११-११ ही कोस के छज्जे निकले हैं और एक दिशा के पेड़ से दूसरी दिशा के पेड़ों की तरफ १६-१/२-१६-१/२ कोस के छज्जे निकले हैं। १६-१/२-१६-१/२ कोस के छज्जे २५० भोम पहुंचने पर ४१२५ कोस की जगह पर छाया पहुंचाते हैं। उसके पश्चात् एक पाट (लम्बा छज्जा) १२३७५ कोस दूरी तक पहुंचने से इस तरफ से साढ़े सोलह हजार कोस की दूरी पर छाया हो जाती है। इतनी ही छाया दूसरी तरफ से होने से तैंतीस हजार कोस का हिसाब पूरा हो जाता है, और दिशाओं के पेड़ से पश्चिम-उत्तर की घाटी की तरफ ४४-४४ कोस के छज्जे निकले हैं। इसी प्रकार से दोनों घाटी से पेड़ की तरफ ४४-४४ कोस के छज्जे निकले है। और पूर्व के पेड़ से बंगले की तरफ ४४-४४ कोस के छज्जे निकले हैं। इसी प्रकार बंगले की चांदनी से भी पेड़ की ओर ४४-४४ कोस के छज्जे निकले हैं।

Nijanand App

पश्चिम उत्तर की घाटी के मोहोल, पेड़ के मोहोलों के बराबर सीधे चले गये हैं और जहां से पेड़ों से छज्जे बढ़ चले हैं, उन्हीं के बराबर से दोनों घाटियों के छज्जे बढ़ चले हैं। पुखराज का गोल चबूतरा और बंगलों का चौरस चबूतरा ये दोनों चबूतरे बराबर ऊंचे हैं। बंगलों के चबूतरों के तीन भाग हुए। बीच के बाग में तेईस सौ चार पृथक-पृथक भोम भर के ऊंचे चबूतरे हैं। चार चेहेबच्चों के बीच में एक बंगला तथा चार बंगलों के बीच में एक चेहबच्चे का दृश्य बन जाता है। दोनों तरफ के दो हिस्सों के तीन-तीन हिस्से हुए। मध्य के हिस्से में चार फीलपायों की फिरती कतारें हैं और दोनों तरफ के दो हिस्सों में ५-५ बड़ोवन के वृक्ष आये हैं। सभी बंगलों की ५ भोम और छठी चांदनी है। चांदनी की गिरद चार लाख कोस की है। चांदनी के मध्य में भोम भर का चेहबच्चा (तालाब) है। सर्व चांदनी पर एक भोम तक मोहोलातें हैं और ऊपर प्रत्येक भोम में तालाब की गिरद बढ़ी है तथा मोहोलातें सिकुड़ती चली गयी हैं। बंगलों की चांदनी से ताल के छज्जे पुखराज के पांचों पेड़ों की तरफ बढ़े हैं। इन आठों निशान के छज्जे एक लाख कोस तक ऊंचे बढ़े हैं।

पुखराज के पांच पेड़, पश्चिम-उत्तर दो तरफ की घाटियां और पुखराजी ताल ये आठ निशान हुए। इन आठों पहाड़ों के छज्जे छठीं भोम से बढ़ चले हैं। ढाई सौ भोम पहुंचने पर एक लाख कोस होता है। चबूतरे के ऊपर खड़े होकर देखने से १४ मेहराबें दिखायी देती है। आठ मेहराबें ५ पेड़ों की हुई हैं, ४ मेहराबें ४ दिशा में है और ४ मेहराबें बीच के पेड़ों पर है तथा दो मेहराबें पश्चिम की घाटी की हैं और दो मेहराबें उत्तर की घाटी की और दो मेहराबें बंगलों की हैं। यहां से आठों निशान मिलकर तीन लाख कोस तक उपरा-ऊपर १००० भोम होते हुए चले गये हैं। चार लाख कोस की ऊंचाई पुखराज पर्वत की हुई है और तालाब २० कम १००० भोम तक गया है। यहां से ताल के उपर २० भोम तक जवेरों के मोहल आये हैं।

पुखराज की चांदनी की किनार पर एक हांस की चौड़ाई लेकर हजार हांस की मोहोलात आयी है, जिसकी पांच भोम छठीं चादनी है। इसके चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं। चांदनी के बीच के तीसरे हिस्से में आकाशी मोहल आया है, जिसमें तेरह हवेलियों की तेरह हारें आयी हैं। चार दिशा की और एक बीच की हवेली बड़ी आयी है। इस आकाशी मोहल की एक हजार भोम, ४ लाख कोस की ऊंचाई आयी है। चांदनी के चारों तरफ घेरकर १०८ गुर्ज आये हैं। आकाशी मोहल के मध्य के पेड़ से पानी का पाईप आया हुआ है। चांदनी के मध्य में यह पानी का पाइप खुलता है जिसके द्वारा चांदनी के बगीचों, नेहरों तथा चेहबच्चों में पानी पहुंचता है। चांदनी से पानी उतरते-उतरते हजार भोम नीचे हजार हांस की मोहोलात की चांदनी पर आया। यहां पूरब के दरवाजे से गुप्त रूप में होकर बंगले की चांदनी पर चार नहरों के द्वारा बीस भोम ऊपर से पुखराजी ताल में पानी गिरता है। पुखराजी ताल से चार नहरों के रूप में यह पानी आकर अधबीच के कुण्ड में ४८० भोम ऊपर से १६ धाराओं में होकर गिरता है। यहां से पानी अधबीच के कुण्ड की तलहटी से पूरब दिशा में निकलकर ढपों चबूतरा एवं मूल कुण्ड की तलहटी से होते हुए आगे श्री यमुनाजी के रूप में जाहिर हुआ है।

Nijanand App

५९. श्री जमुना जी तथा सातों घाट, केल व वट का पुल

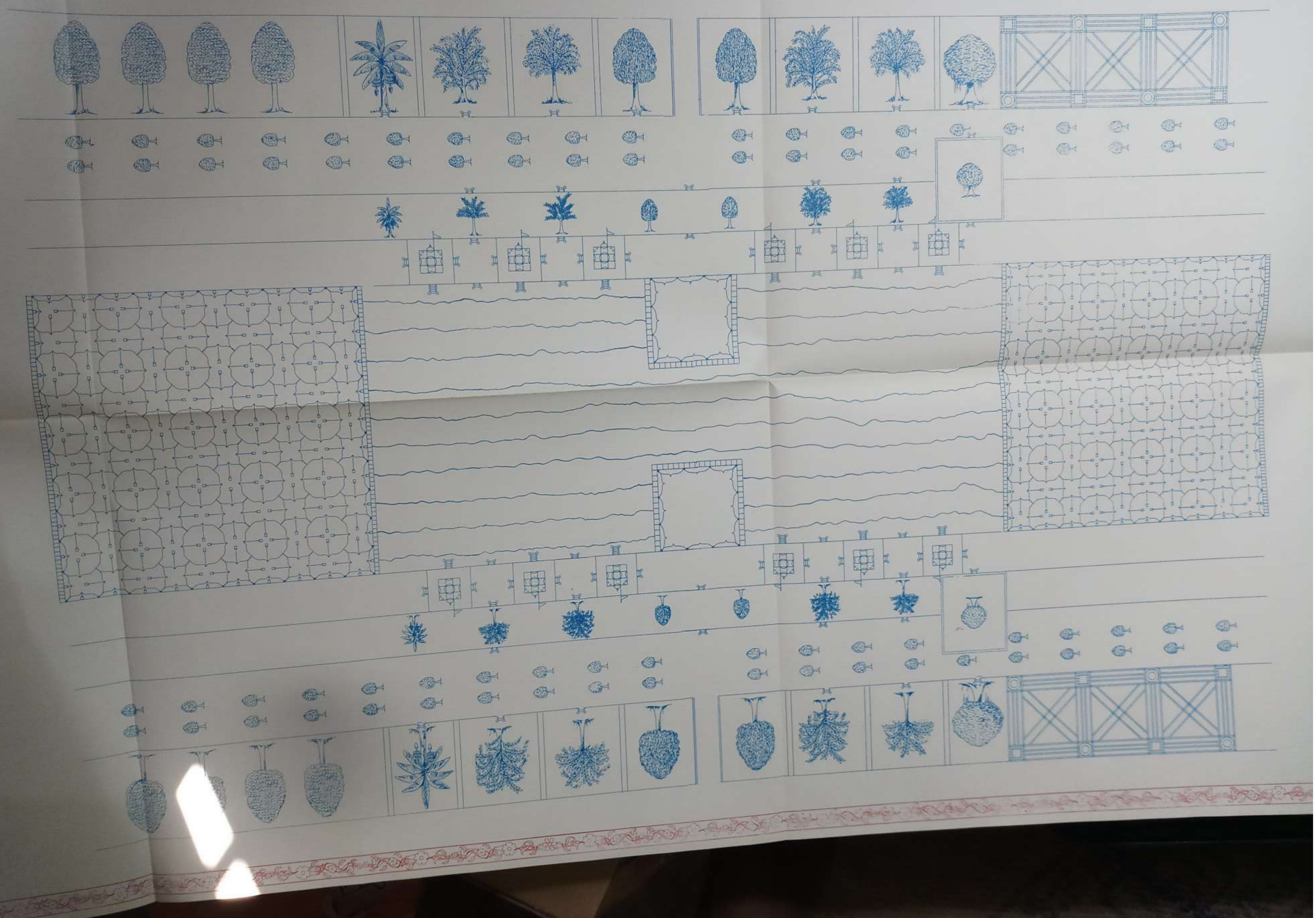

Nijanand App

जमुना जी तथा सातों घाट, केल व वट का पुल

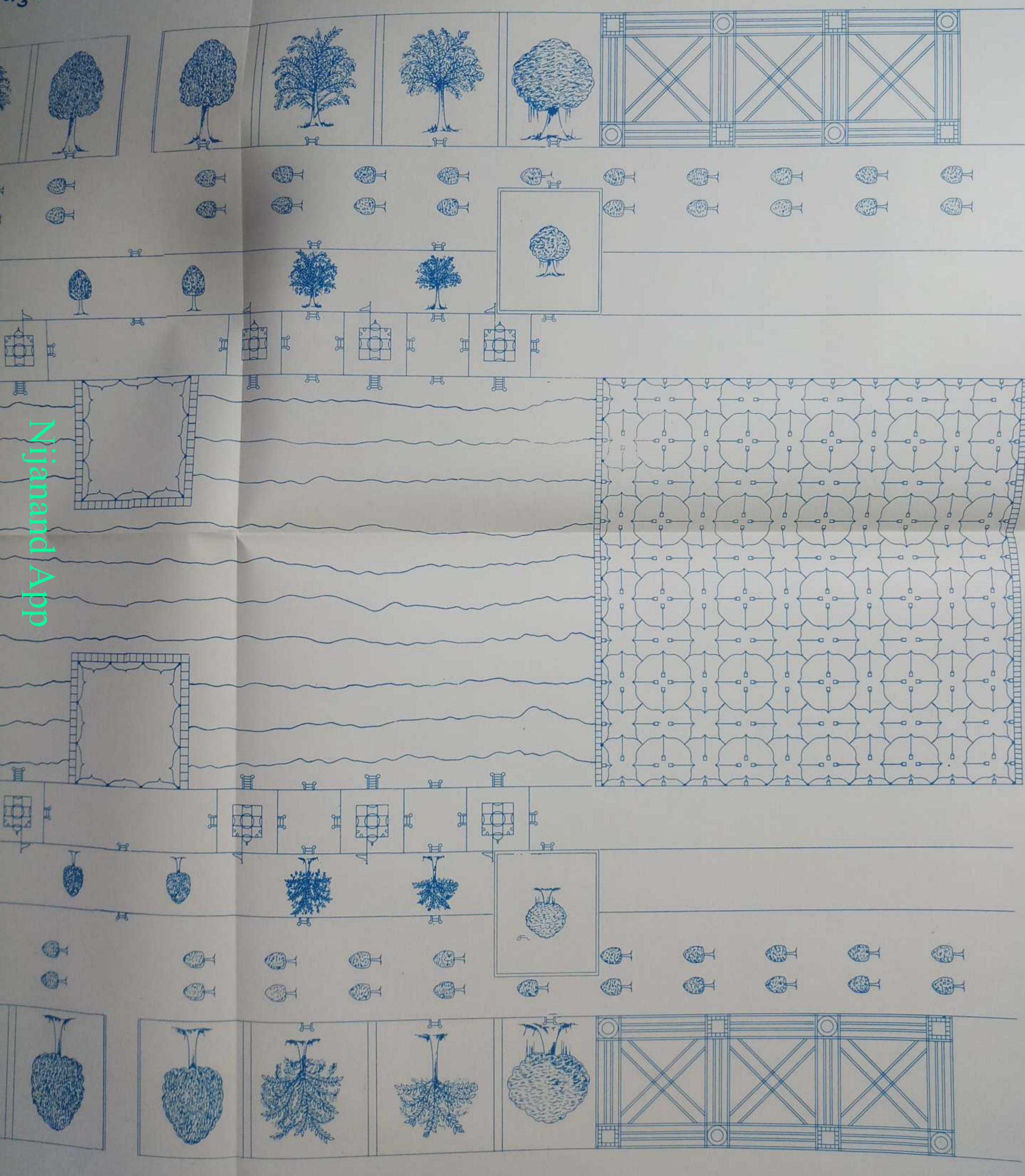

Nijanand App

५९. श्री जमुना जी तथा सातों घाट, के

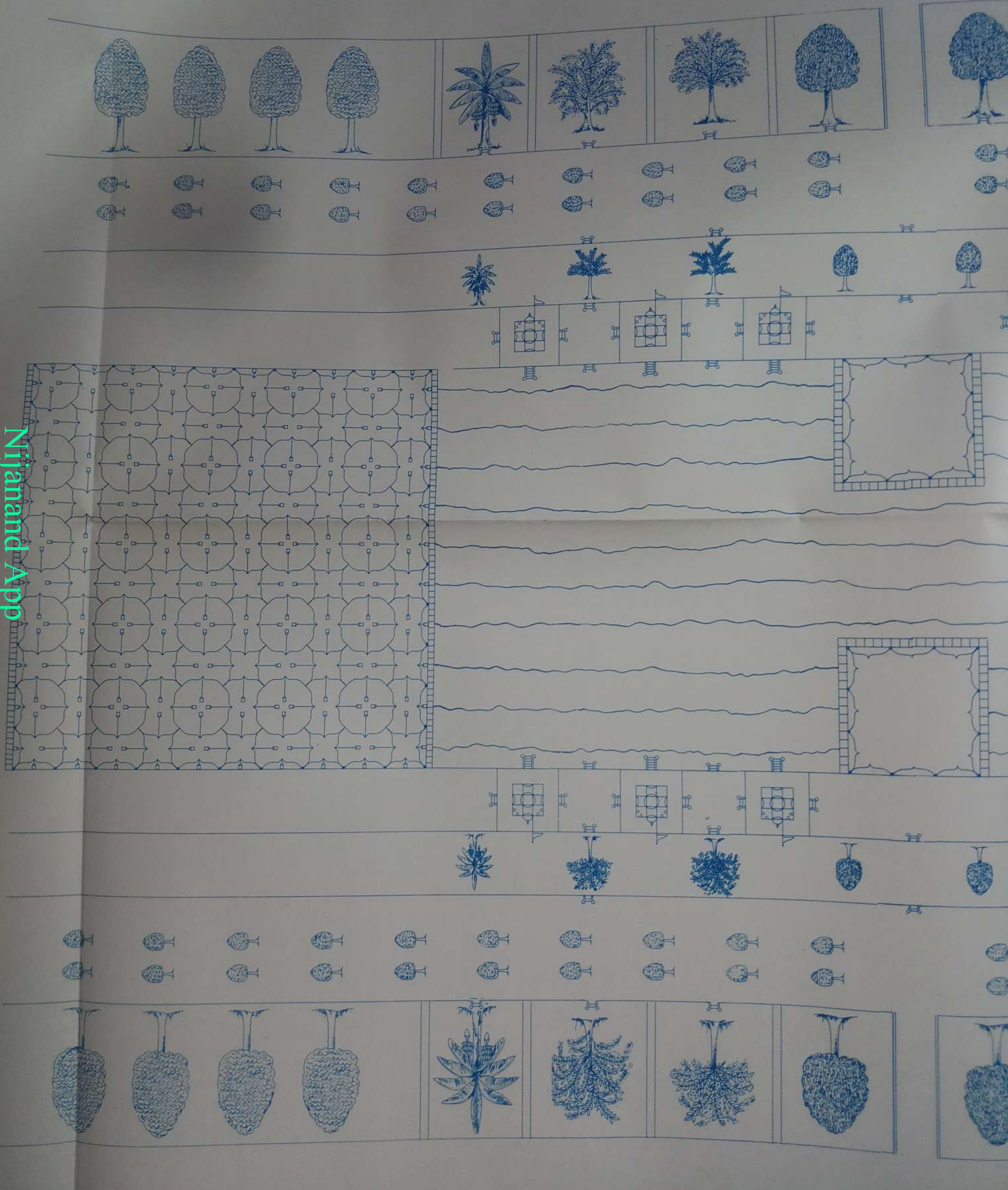

५९ - श्री यमुना जी, सातों घाट तथा केल व वट का पुल

मूल कुण्ड के पूर्व तरफ ९ मेहराबें आयी हैं। एक मेहराब ५०० मंदिर की आयी है। मध्य की मेहराब में जल के अन्दर ५ थंभ आये हैं, जो जमीन से उठे हैं। उन थंभों पर चार मेहराबें आयी हैं। इन घड़नालों से होकर यमुना जी पूर्व तरफ जाती हैं। दाएं-बाएं मेहराबों के सामने २५० मंदिर की रौंस, इस रौंस से कमर भर ऊपर २५० मंदिर की पाल तथा भीतरी तरफ १२५ मंदिर का कमर भर नीचा जल चबूतरा आया है। इसी प्रकार दूसरी तरफ भी आया है। मूल कुण्ड से तीन मेहराबों के सामने यमुना जी आयी हैं। पाल के दोनों तरफ कमर भर नीची ७५० मंदिर की वन रौंस या पुखराजी रौंस है, जिस पर दो वृक्ष आये हैं। इन वृक्षों की ऊंचाई दो भोम की आयी है। पाल के दोनों किनारों पर थंभों की हारें आयी हैं। लंबाई तरफ २५० मंदिर की दूरी पर थंभ आये हैं। ये थंभ मरोड़ तक (ईशान कोने तक) गये हैं। इन थंभों पर छत आयी है। पाल की चांदनी के तीसरे हिस्से में (८३ मंदिर की हद पर) चार थंभ उठे हैं और उनके ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकायें फहरा रही हैं। यह एक देहुरी हुई। पहली देहुरी मूल कुण्ड के साथ लगकर आयी है। मरोड़ तक पाल पर दस देहुरियां आई हैं। पाल से २५० मंदिर दूरी पर जो वृक्षों की हारें आयी हैं। उनकी डालें देहुरियों को उलंघ कर श्री यमुना जी के जल चबूतरे तक गयी हैं। इसी तरह से दूसरी तरफ देहुरियों के सामने देहुरी, सीढ़ियों के सामने सीढ़ियां, तथा थंभों के सामने थंभ आये हैं।

मूल कुण्ड से मरोड़ तक आधी यमुना जी ढपी हैं। यमुना जी के दाएं-बाएं पाल के थंभों पर १००० मंदिर की मेहराब आयी है। मूल कुण्ड, पाल तथा यमुना जी तक एक छत आयी है। इस छत पर पांच देहुरी पाल की देहुरी के सामने एक सीध में आयी हैं। आगे आधी यमुना जी खुली हैं। दोनों तरफ पाल पर थंभ व छत तथा देहुरियां आयी हैं। इस प्रकार मरोड़ तक कुल २५ देहुरी आयी हैं। यमुना जी के मरोड़ पर चार मोहल आये हैं। उन मोहलों की कमानों में हिंडोले लटके हैं। दो हिंडोले जल के ऊपर आये हैं। दो पाल पर हैं। चारों हिंडोलों की ताली जल पर पड़ती हैं। इस ईशान कोण से यमुना जी दक्षिण की तरफ मरोड़ खाती है। यहां से यमुना जी अक्षर धाम तथा परमधाम के चौदह घाटों की संधि में एवं केल तथा बट के पुल के नीचे से होकर अग्नि कोने तक पहुंची हैं और यहां से पश्चिम की ओर मरोड़ खाकर यमुना जी सोलह देहुरी के घाट के नीचे से होकर हौज-कौसर तालाब में जाती है।

ईशान कोण से केल के पुल तक, पाल पर दोनों तरफ ५ मेहल आये हैं, जिनकी संधि में चार चबूतरे आये हैं। मरोड़ से केल पुल तक की जगह में पुखराजी रौंस के बाद २५० मंदिर की रेती व ५०० मंदिर में महावन आया है।

केल का पुल ५०० मंदिर का लंबा-चौड़ा है। यमुना जी की जमीन पर ११ थंभों की ११ हारें उठी हैं, जिनकी छत यमुना जी के जल के बराबर आयी है। ये थंभ एक भोम पानी में डूबे हैं। ११ थंभों पर १० मेहराबें आयी हैं। यमुना जी चार धाराओं में आ रही हैं। अब यहां से १० घड़नालों द्वारा पानी दक्षिण तरफ दस धाराओं में होकर गया है। पुल की ऊंचाई पांच भोम छठी चांदनी आयी है। इन थंभों की छत पर ११ थंभों की ११ हारें आने से कुल थंभ १२१ हुए, जिसमें १०० चौक आये हैं। इन थंभों में २२० मेहराबें आयी हैं। इनमें

Nijanand App

२२० हिंडोले आये हैं। यह पहली भोम हुई। इसके उत्तर-दक्षिण किनार पर कठेड़ां आया है। इन थंभों पर छत पड़ गई। छत से ५० मंदिर का छज्जा चारों तरफ निकला है, जिसकी किनार पर थंभ आये हैं, थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। दूसरी भोम पर छज्जे के थंभों सहित १३ की १३ हारें थंभों की आयी हैं। छज्जों की मेहराब में हिंडोले नहीं आये हैं। इन मेहराबों को तथा छज्जे के चौकों को नहीं गिनते हैं। इस प्रकार चार भोम ऊपर गई हैं। पांचों भोम के ५०० चौक, ११०० मेहराबें और ११०० हिंडोले हैं। चांदनी पर चारों तरफ कठेड़ा आया है। मध्य में गिलम, सिंहासन आदि शोभायमान हैं। बट के पुल की शोभा भी इसी प्रकार आयी है।

अमृत वन के मध्य की रौंस के सामने यमुना जी के भीतर जल में १६ थंभ नीलवी रंग के आये हैं। भोम भर उठकर ये यमुना जी की रौंस के सामने आये हैं और इन पर छत आयी है, जिसमें ३-३ मेहराबें चारों तरफ आयी हैं। रौंस के साथ की मेहराब अक्सी आयी है। पाट-घाट १५० मंदिर का लंबा-चौड़ा आया है। एक मेहराब ५० मंदिर की है। इन मेहराबों में से तीन धारें यमुना जी की चली जाती हैं। तीन धारें अक्षर की तरफ के पाट-घाट के नीचे से जाती हैं। बीच में २०० मंदिर की जगह में चार धाराएं जा रही हैं। इन १६ थंभों की छत पर चारों तरफ किनारे पर १२ थंभ उठे हैं। बीच में थंभ नहीं आये। तीन तरफ थंभ के बीच कठेड़ा आया है। पश्चिम तरफ रौंस आयी है। चारों कोनों पर चार नीलवी के थंभ आये हैं। पूर्व तरफ दो थंभ माणिक के, दक्षिण तरफ दो थंभ हीरे के, पश्चिम तरफ दो थंभ पाच के, उत्तर तरफ दो थंभ पुखराज के आये हैं। इन १२ थंभों के ऊपर चांदनी को घेरकर कठेड़ा आया है।मध्य में गिलम, सिंहासन आया है। यमुना जी के दोनों ओर केल पुल से बट पुल तक जो पाल आयी है, उस पर पांच हारें बड़ोवन के वृक्षों की हैं, जिनमें चार संधि में चार चौक हैं और दो चौक दाएं-बाएं आये हैं। इस प्रकार ६ चौक हैं। पांच-पांच वृक्षों की ११ हारें, एक घाट की हद में पाल पर आयी हैं, जिसके ५५ वृक्ष हुए। ऐसे वृक्ष हर घाट पर हैं। एक घाट पर ४० चौक हैं। ११ वृक्षों के बीच में १० चौक हैं। ऐसे १० चौकों की ४ हारें होने से एक घाट की हद में ४० चौक हो जाते हैं। जिनमें से हर चौक में २४ वृक्षों की २४ हारों का बगीचा आया है। प्रत्येक घाट की हद में पाल की ५०० मंदिर लंबाई है और २५० मंदिर चौड़ाई है। हर घाट पर जो ५५ वृक्ष हैं, वो बड़ोवन के हैं। वे जिस घाट के सामने आते हैं, उसी का रूप धारण कर लेते हैं। इन वृक्षों की पांच भोम छठी चांदनी है। दो घाटों के बीच के रास्ते के सामने संधि में देहुरी यमुना जी की जल रौंस पर बनी है। इस कारण ७ घाटों में ६ संधियां (रास्ते) आने से ६ देहुरियां एक तरफ की रौंस पर हैं। इसी प्रकार दूसरी तरफ की रौंस पर भी हैं। यमुना जी की लंबाई मध्य पुखराज से लेकर मध्य हौज कौसर तक १८ लाख कोस आयी है।

पाल पर जो ४० चौक आये हैं, उनमें वृक्ष उस घाट के सामने के वन के अनुसार आये हैं। इन चौकों में हिंडोले लगे हैं और वृक्षों की डालियां जल के ऊपर लटकती हैं। केल घाट तथा बट घाट के वृक्षों की ५ भोम छठी चांदनी आयी है। बाकी के घाटों की दो भोम व तीसरी चांदनी आयी है।

Nijanand App

६०. वट का घाट

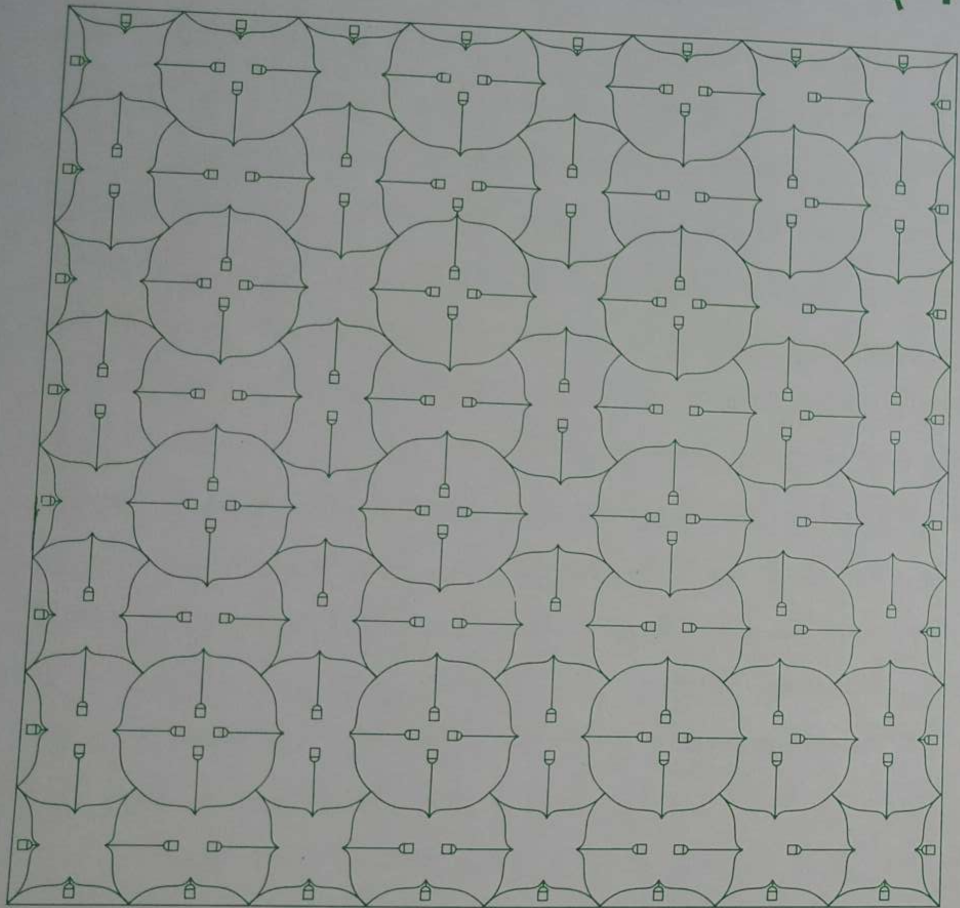

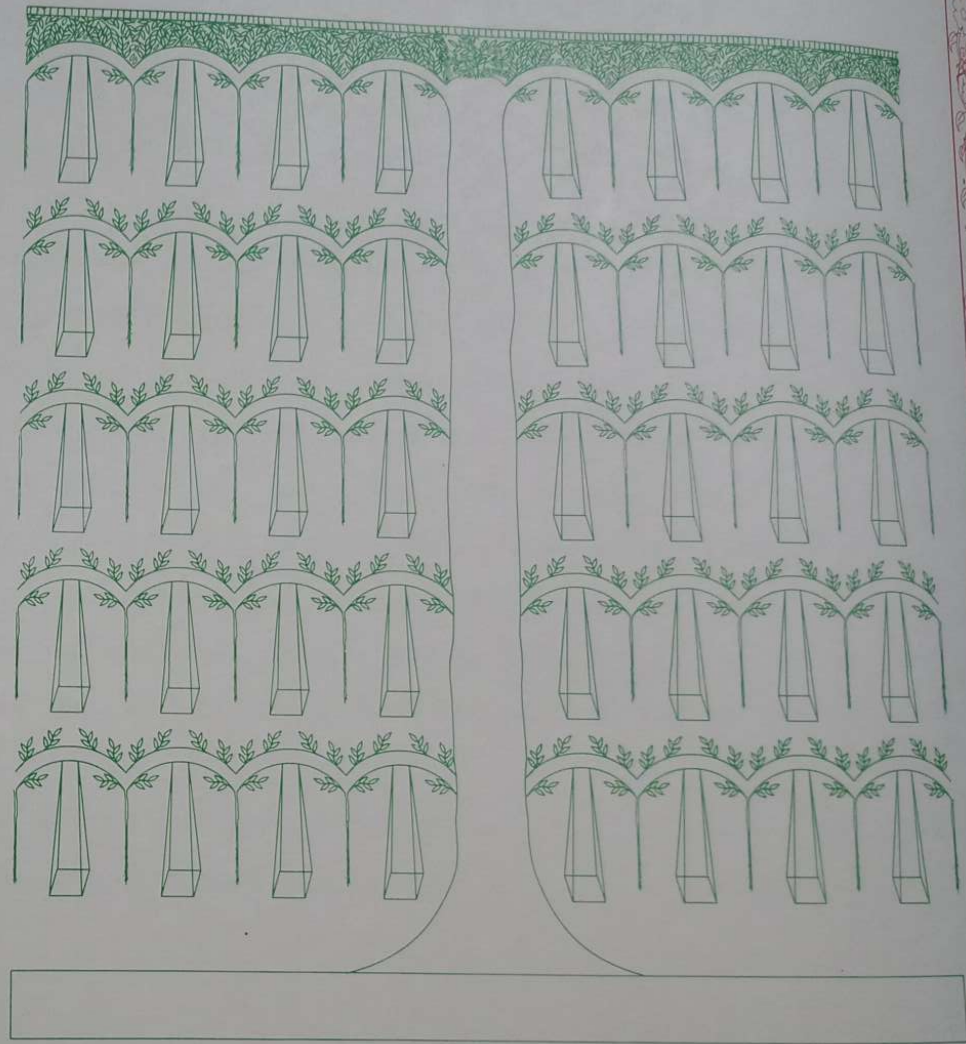

Nijanand App

६० - बट का घाट

नारंगी घाट और बट घाट के बीच में दो मंदिर की जो रौंस आयी है, वो रौंस यमुना जी तक गयी है। इस रौंस के साथ दक्षिण तरफ ५०० मंदिर की हद में वन की रौंस पर ५०० मंदिर का लंबा २५० मंदिर का चौड़ा एक चबूतरा कमर भर का ऊंचा पाल के साथ लगकर आया है। इस चबूतरे से वन की रौंस पर तीन तरफ सीढ़ियां उतरी हैं और तीनों तरफ कठेड़ा आया है। पाल और चबूतरा मिलकर ५०० मंदिर का लंबा-चौड़ा चौक बना। इस चौक के मध्य में बड़ का एक वृक्ष आया है, जिसके चारों तरफ ८० बड़वाईयां आयी हैं और एक बड़ मध्य में कुल ८१ हुए। जिससे ९ की ९ हारें आयी हैं। एक दिशा में ८ मेहराबें आयी हैं।चारों तरफ ३२ मेहराबें हुई। एक-एक मेहराब ६२-१/२-६२-१/२ मंदिर की आयी है। यमुना जी की रौंस तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी है और बाकी में कठेड़ा आया है। इसकी ऊंचाई पांच भोम छठी चांदनी है। हर भोम में मेहराबें आयी हैं जिनमें हिंडोले आये हैं। एक भोम के ६४ चौक आये हैं। ८ की ८ हारें आयी हैं और मेहराबें ८ की ९ हारें और ९ की ८ हारें आने से १४४ आयी हैं। पांचों भोमों के ३२० चौक हुए। मेहराबें ७२०, हिंडोले भी ७२० आये हैं। चांदनी के चारों तरफ कठेड़ा आया है। ऊपर जाने के वास्ते पेड़ों में सीढ़ियां आयी हैं। इन बड़वाइयों की मेहराबें आयी हैं। पूर्व तरफ एक मेहराब पुल के छज्जे के सामने आयी है। बाकी सब मेहराब श्री यमुना जी के जल चबूतरे पर आयी हैं और पश्चिम तरफ मेहराब बड़ोवन के वृक्षों से मिली है। वन की रौंस पर जो दो हारें बड़ोवन की आयी हैं। सो बट के उत्तर तरफ और दक्षिण तरफ १२५ मंदिर की दूरी पर आया है। बाकी जगह में २५० मंदिर पर आये हैं। दूसरी हार के वृक्ष अपने हिसाब माफक आये हैं। इस बट घाट के सामने ५०० मंदिर की दूरी पर कुंज-निकुंज आया है। इस कुंज और निकुंज के बीच में ५ हारें बड़ोवन की १२५ मंदिर-१२५ मंदिर के फासले पर आयी हैं। सो यह हारें पश्चिम तरफ गयी हैं। ऊंचाई ५ भोम की है। सो चौकी के साथ लगते हुए कुंज-निकुंज वन में होकर नैरित्य कोने के चेहेबच्चे के सामने होकर दक्षिण तरफ चले गए हैं। वहां जाकर हौज-कोसर की पाल को घेरा है। बट घाट के सामने यह जो ५ वृक्ष आये हैं। ५०० मंदिर की चौड़ाई में इसको बट का घाट करके कहा है। क्योंकि ये वृक्ष बट के आये हैं। जब दक्षिण तरफ गए तो बड़ोवन का रूप धारण किया है।

Nijanand App

६१. हौज-कौसर तालाब

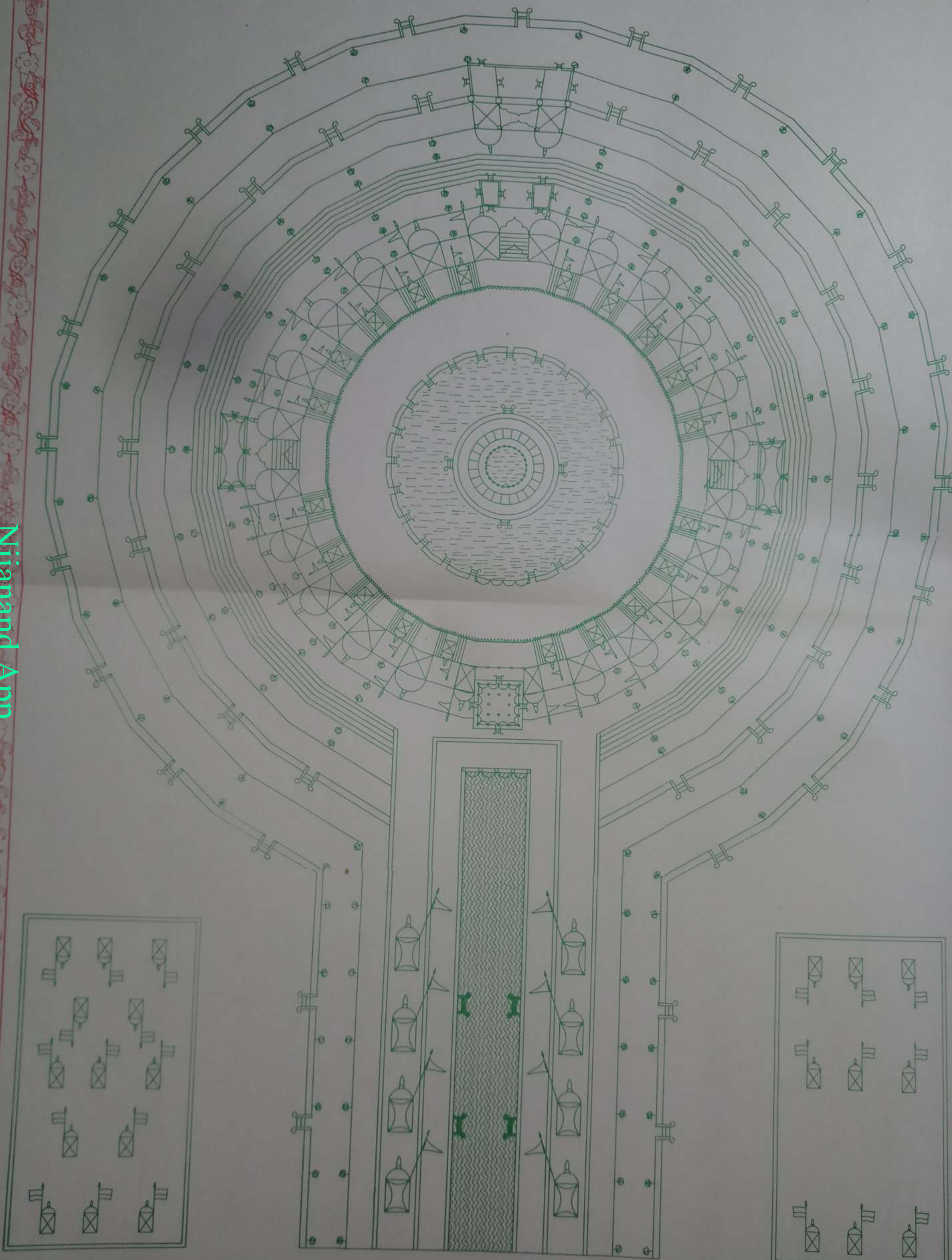

Nijanand App

६१ - हौज कौसर तालाब

हौज कौसर तालाब २१३३३ मंदिर का लंबा-चौड़ा है और ६४००० मंदिर की गृद (१२८ हांस की) आयी है। ५०० मंदिर की ढलकती पाल है। जिसमें से २५० में संकरमणिक सीढ़ियां आयी हैं। चौरस पाल १००० मंदिर में ५०० मंदिर में ताल की रौंस, ताल की रौंस के आगे ५७५० में ताल, आगे ६००० मंदिर में टापू मोहल, आगे ५७५० में ताल, ५०० में ताल की रौंस, १००० में पाल, ५०० ढलकती पाल, सब मिलाके २१३३३ मंदिर होते हैं। श्री यमुना जी का जल चार घड़नालों द्वारा अंदर प्रवेश होता है। श्री यमुना जी के दाएं-बाएं जो रौंस आयी है वो झरोखें के थंभों के सामने २५० मंदिर की चौड़ी और १००० मंदिर की लंबी रौंस आयी है। वह दोनों रौंसें उसी रौंस में आकर मिल गयी हैं। एक रौंस से दूसरी रौंस पर आ जा सकते हैं क्योंकि एक रास्ता हो गया है। श्री यमुना जी के सामने पाल में एक अक्सी मेहराब आयी है। उसमें दो दरवाजे आये हैं। एक दरवाजा तो १६ थंभों को घेर करके जो १२५ मंदिर की रौंस आयी है, उसमें हुआ और दूसरा दरवाजा पाल की मोहोलात में जाने के वास्ते आया है। इसी प्रकार दूसरी तरफ पाल के सामने दरवाजा आया है। श्री यमुना जी के दाएं-बाएं जो पाल आयी है वो ढलकती पाल में मिल गयी है। दाएं तरफ की पाल में मिलकर पश्चिम तरफ गयी है। ५०० मंदिर की पहले ढलकती पाल थी। २५० मंदिर की पाल मिलने से ७५० मंदिर की हो गयी। ढलकती पाल की सीढ़ियां पाल की रौंस तरफ की किनार तक आयी हैं। रौंस के सामने सीढ़ियां नहीं आयी हैं। इसी तरह दूसरी तरफ भी आयी हैं। श्री यमुना जी के दाएं-बाएं जो ७५० मंदिर की वन रौंस थी, वो ढलकती पाल से कमर भर नीचे ७५० मंदिर की आयी है। दाएं तरफ की रौंस दाएं तरफ घूम गई। बाएं तरफ की वन रौंस बाएं तरफ घूम कर पश्चिम में एक रौंस में मिल गई है।

पूर्व तरफ ४४ थंभ जल में डूबे हुए हैं। ९ थंभों की ५ हारें और ५ थंभों की ९ हारे आने से कुल ४५ थंभ होते हैं। मध्य में कुण्ड आने से एक थंभ नहीं आया है। पूर्व तरफ जो २५० मंदिर की रौंस आयी है, उसी रौंस के पूर्व तरफ जल में ५ थंभ आये हैं। जिनमें ४ मेहराबें आयी हैं। जिन मेहराबों में चार घड़नाले आये हैं और भीतरी तरफ जो ५०० मंदिर की रौंस आयी है। उस रौंस के ताल की तरफ ५ थंभ, चार घड़नाले आये हैं, उन्हीं से पानी निकलकर ताल में पड़ता है। ४४ थंभ जल में जो आये हैं, वे दिखाई नहीं देते हैं, क्योंकि ऊपर छत आयी है। इन ४४ थंभों की छत के ऊपर ३४ थंभ उठे। पूर्व की रौंस से कमर भर ऊंचा चबूतरा उठा। ७५० मंदिर का चौड़ा और लंबा तो चारों तरफ चला गया है। इस चबूतरे पर ५ थंभों की ७ हारें आयी हैं। यह सब थंभ १२५-१२५ मंदिर की दूरी पर आये हैं। लंबाई व चौड़ाई की एक ही दूरी है। पूर्व तरफ चार मेहराबें आयी हैं। ऊपर एक अक्सी मेहराब आयी है। इन थंभों को झरोखे के थंभ करके कहा है। पूर्व के झरोखों के थंभों के पश्चिम तरफ ५-५ थंभों की दो हारें और आयी हैं। मध्य में ५वीं हार आयी है। दो थंभ उत्तर तरफ और २ थंभ दक्षिण तरफ आये हैं। मध्य का थंभ नहीं आया है, क्योंकि यहां पर २५० मंदिर का लंबा-चौड़ा कुण्ड आया है। इस कुण्ड के चारों तरफ ८ थंभ आये हैं। इन थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। इस कुण्ड के चारों तरफ १२५ मंदिर की चौड़ी रौंस आयी है, जिस पर गिलम बिछी है। गिलम के किनारे पर चारों तरफ १६ थंभ आये हैं। इन १६ थंभों

Nijanand App

के चारों तरफ १२५ मंदिर की रौंस आयी है। इस रौंस के दक्षिण तरफ २ मंदिरों की हार और बीच में २-२ थंभों की हार आयी है और एक गली अंदर की तरफ आयी है। ऐसे ही उत्तर तरफ बनक आयी है। भीतरी तरफ ५ थंभ झरोखे के आये हैं। इन थंभों के दाएं-बाएं एक-२ मेहराब और आयी है। यह मेहराब १२५ मंदिर की चौड़ी आयी है। चार मध्य की, यह सब मिलाकर ६ मेहराबें घाट पर आयी हैं। इसी तरह ६ मेहराबें पूर्व तरफ भी आयी हैं। यहां पर मध्य के २५० मंदिर में एक थंभ नहीं आया है। यहां पर कुण्ड बना है। इसको घेर करके रौंस और थंभ आये हैं। इसको घेर करके फिर रौंस आयी है। जो ५ थंभ भीतरी झरोखों के हैं, सो इसी के सूत में घेर करके दीवाल आयी है। इस दीवाल में २५० दरवाजे आये हैं। ६ दरवाजे नहीं आये। तीन पूर्व तरफ, तीन दरवाजे तीनों दिशाओं में घाटों के भीतर जाने के लिए आये हैं। इस दीवाल तथा मंदिर की हार इन दोनों के बीच में एक गली चारों तरफ घूम करके आयी है। उत्तर, पश्चिम, दक्षिण दिशा में ऊपर पाल से सीढ़ी उतरी है। इस कारण से नीचे गली छोटी हो गई। यहां झुककर जा सकते हैं या फिर मंदिर से निकलकर फिर रौंस में आकर परिकरमा दे सकते हैं। भीतर तरफ ५ थंभ झरोखे के आये हैं। इन पर ४ मेहराबें आयी हैं। दो मेहराबें दाएं-बाएं की हैं। इन ६ मेहराबों के पश्चिम तरफ २५० मंदिर का चौड़ा ७५० मंदिर का लंबा एक चबूतरा आया है, जो इन झरोखों की जमीन के बराबर आया है। पश्चिम तरफ ४ थंभ आए हैं और ३ मेहराबें आयी हैं। एक मेहराब २५० मंदिर की आयी है। मेहराब के नीचे से रौंस पर कमर भर की सीढ़ी उतरी है। दाएं-बाएं दीवाल में अक्स आया है।

Nijanand App

६२. पाल अन्दर की मोहोलात

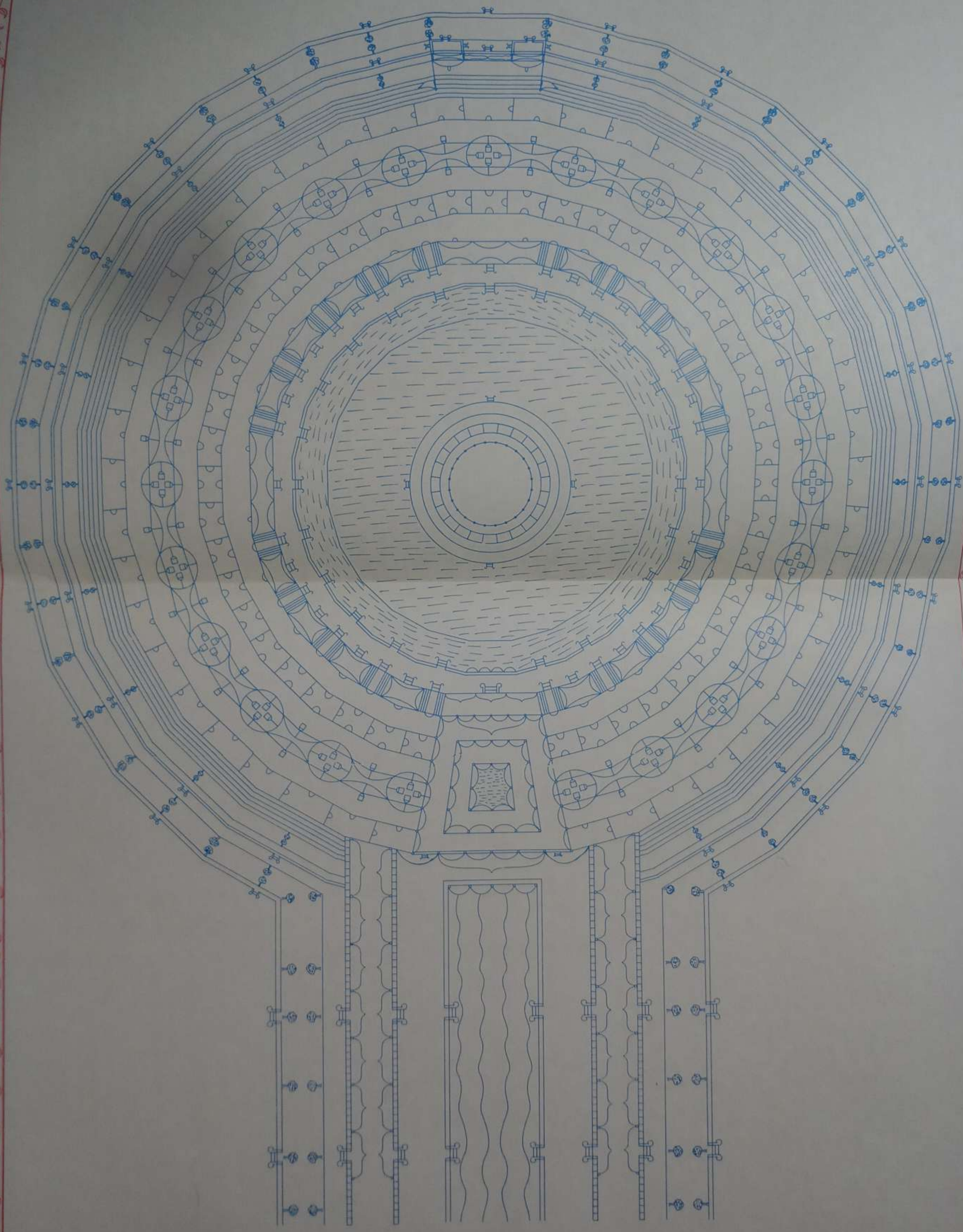

Nijanand App

६२-पाल अन्दर की मोहोलात

हौज कौसर की पाल में सबसे पहले २५० मंदिर की लंबी और १२५ मंदिर की चौड़ी मंदिरों की एक हार आयी है। आगे १२५-१२५ मंदिर की दूरी पर थंभों की हार आयी है। दूसरी थंभों की हार से भीतरी तरफ १२५ मंदिर की दूरी पर दूसरी मंदिरों की हार आयी है। ये भी २५० मंदिर का लंबा १२५ मंदिर का चौड़ा आया है। इसके आगे १२५ मंदिर की पड़साल आयी है। एक हार में २५६ मंदिर आए हैं। पूर्व तरफ तीन मंदिर नहीं आए हैं, क्योंकि पूर्व तरफ ७५० मंदिर का चौक आया है। दोनों हारों के कुल मंदिर ५०६ आए हैं। थभों की एक हार में २५४ थंभ आए हैं। दोनों हारों को मिलाकर कुल ५०८ थंभ आए हैं। बाहरी हार मंदिरों के दरवाजे देखने में तीन लगते हैं परन्तु हिसाब में दो हैं, क्योंकि बाहरी तरफ ढलकती पाल पर सीढ़ियां उतरी हैं। दूसरी हार में देखने में ४-४ दरवाजे हैं किन्तु गिनती में ३-३ आए हैं।

जिस तरफ २५० मंदिर की दीवाल आयी है, उस में १२५ मंदिर का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं ६२-१/२-६२-१/२ मंदिर की दीवाल आयी है तथा बगली दीवाल, जो १२५ मंदिर की आयी है, उसमें ६२-१/२ मंदिर का दरवाजा आया है और दाएं-बाएं ३१-१/४-३१-१/४ मंदिर की दीवाल आयी है। ७५० मंदिर के चौक के दाहिनी तरफ जो मंदिर चौक से लगकर आया है, उसमें से आधा मंदिर तो रौंस के सामने आया है और आधा ढलकती पाल की सीढ़ियों के आगे है।

Nijanand App

६३. सोलह देहुरी का घाट

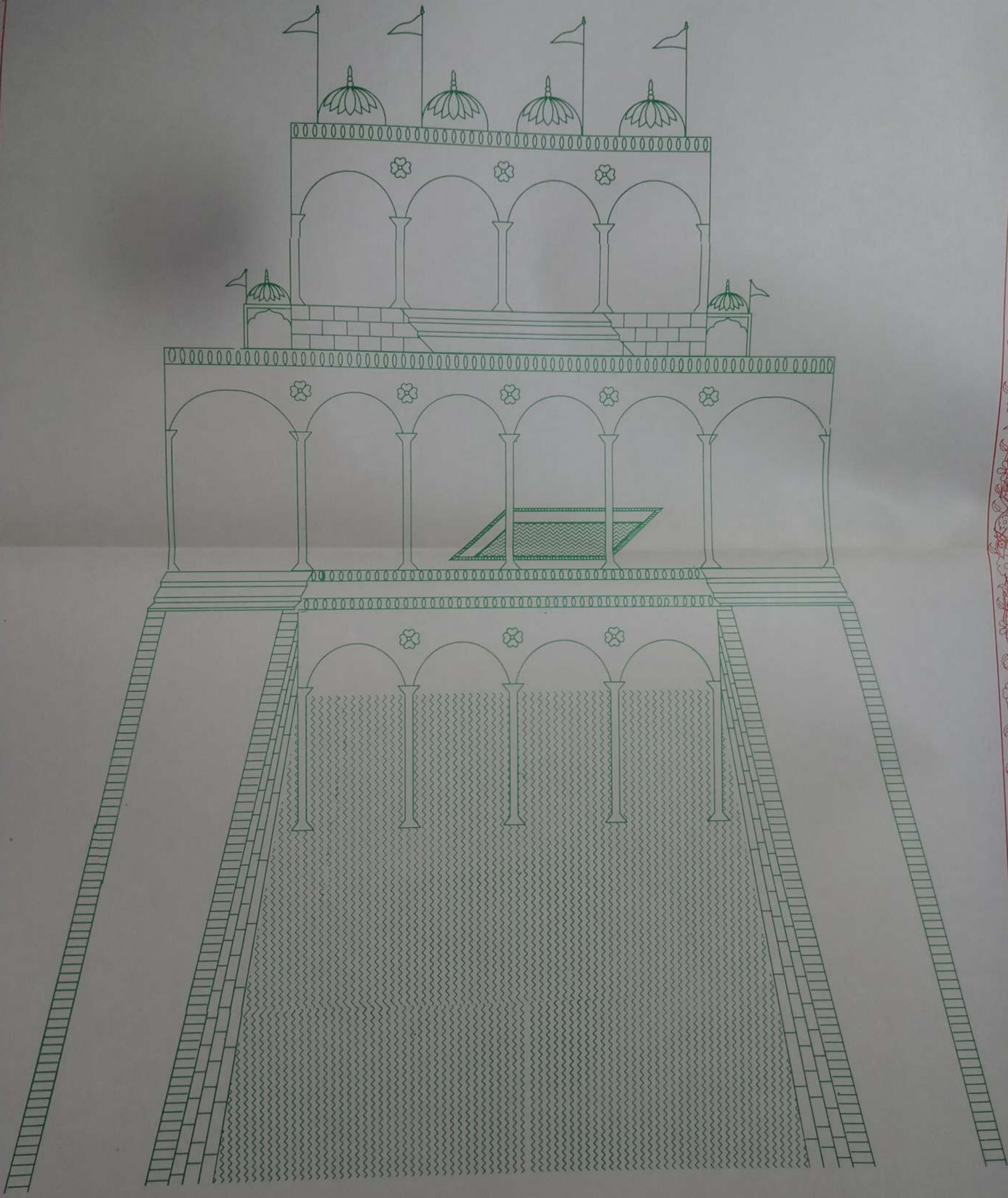

Nijanand App

६३-सोलह देहुरी का घाट

यह १६ देहुरी का घाट पूर्व तरफ आया है। पूर्व की तरफ ४४ थंभ जल में डूबे हुए हैं। ५ थंभों की ९ हारें आने से ४५ थंभ होते हैं। मध्य में कुण्ड आने से एक थंभ नहीं आया है। पूर्व में जो २५० मंदिर की रौंस आयी है, उस रौंस के पूर्व तरफ जल में ५ थंभ आए हैं, जिनमें ४ मेहराबें आयी हैं और चार घड़नाले आए हैं। भीतरी तरफ जो ५०० मंदिर की रौंस आयी है, उस रौंस के ताल तरफ (पश्चिम तरफ) ५ थंभ, चार घड़नाले आए हैं, उन्हीं घड़नालों से पानी निकलकर ताल में गिरता है। जो ४४ थंभ जल में आए हैं, वो दिखाई नहीं देते। क्योंकि ऊपर छत आयी है। इन ४४ थंभों की छत पर ३४ थंभ उठे हैं। पूर्व की रौंस से ७५० मंदिर का चौड़ा चबूतरा उठा है और लंबा चारों तरफ घूम गया है। इस चबूतरे पर ५ थंभों की ७ हारें आयी हैं। सब थंभ १२५-१२५ मंदिर की दूरी पर हैं। पूर्व तरफ ४ मेहराबें आयी हैं। इन थंभों को झरोखे के थंभ कहा है। इन थंभों के दाएं-बाएं एक-एक मेहराब और आयी है। यह मेहराबें तथा चार मध्य की सब मिलाकर ६ मेहराबें घाट पर आयी हैं इसी तरह ६ मेहराबें पश्चिम तरफ भी आयी हैं। मध्य की जो पांचवी हार आयी है, उसमें मध्य का थंभ नहीं आया हैं क्योंकि यहां पर २५० मंदिर का लंबा-चौड़ा कुण्ड आया है। इस कुण्ड के चारों तरफ ८ थंभ आए हैं, जिनमें कठेड़ा आया है। इस कुण्ड के चारों तरफ १२५ मंदिर की चौड़ी रौंस आयी है। रौंस पर गिलम बिछी है। रौंस के चारों तरफ १६ थंभ आए हैं। इसके आगे फिर रौंस आयी है जिसके दक्षिण तरफ दो मंदिरों की हार और बीच में दो थंभों की हार आयी है। पश्चिम तरफ की ६ मेहराबों के पश्चिम तरफ २५० मंदिर का चौड़ा ७५० मंदिर का लंबा चबूतरा आया है, जो इन झरोखों की जमीन के बराबर आया है। इससे पश्चिम तरफ ४ थंभ आए हैं, जिनमें तीन मेहराबें हैं। एक मेहराब २५० मंदिर की है। मेहराब के नीचे से रौंस पर कमर भर की सीढ़ी उतरी है।

नीचे जो १६ थंभ घेरकर आए थे, उसी पर ५०० मंदिर का लंबा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा उठा है। चारों तरफ १२५ मंदिर की रौंस चबूतरे से कमर भर नीची आयी है। चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ी रौंस पर उतरी है। चबूतरे को घेरकर कठेड़ा आया है। चबूतरे पर ५ थभों की ५ हारें आयी हैं कुल २५ थंभ आए हैं इन पर ४० मेहराबें आयी हैं इन पर छत आयी है छत के चारों तरफ कठेड़ा आया है इस छत में १६ चौक हैं एक चौक के दाएं-बाएं जगह छोड़कर मध्य में चार थंभ उठे ऊपर गुम्मट पर कलश, ध्वजा, पताकायें फहरा रही हैं। इस प्रकार १६ देहुरी आयी हैं। यमुना जी के पानी से तीन भोम चौथी चांदनी पर गुम्मट आए हैं। १६ देहुरी के चबूतरे के पश्चिम तरफ १२५ मंदिर की रौंस आयी है। उस रौंस के किनारे पर ७५० मंदिर का लंबा और २५० मंदिर का चौड़ा चबूतरा आया है इसके पश्चिम तरफ कठेड़ा आया है दक्षिण, उत्तर तरफ से सीढ़ियां उतरी हैं ताल की तरफ परकोटा है, परकोटे पर कांगरी है। चबूतरे की पूर्व किनार रौंस से मिली है। इस रौंस के दक्षिण-पश्चिम तथा उत्तर-पश्चिम के कोने पर १२५ मंदिर का जो चौक आया है, उस पर एक-एक देहुरी आयी है। चबूतरे के आगे दक्षिण तरफ जो १२५ मंदिर की रौंस है, इस रौंस से १२५ मंदिर की दूरी पर तीन हारें वृक्षों की आयी हैं।

Nijanand App

६४. तेरह देहुरी का घाट, झुण्ड का घाट तथा नवदेहुरी का घाट

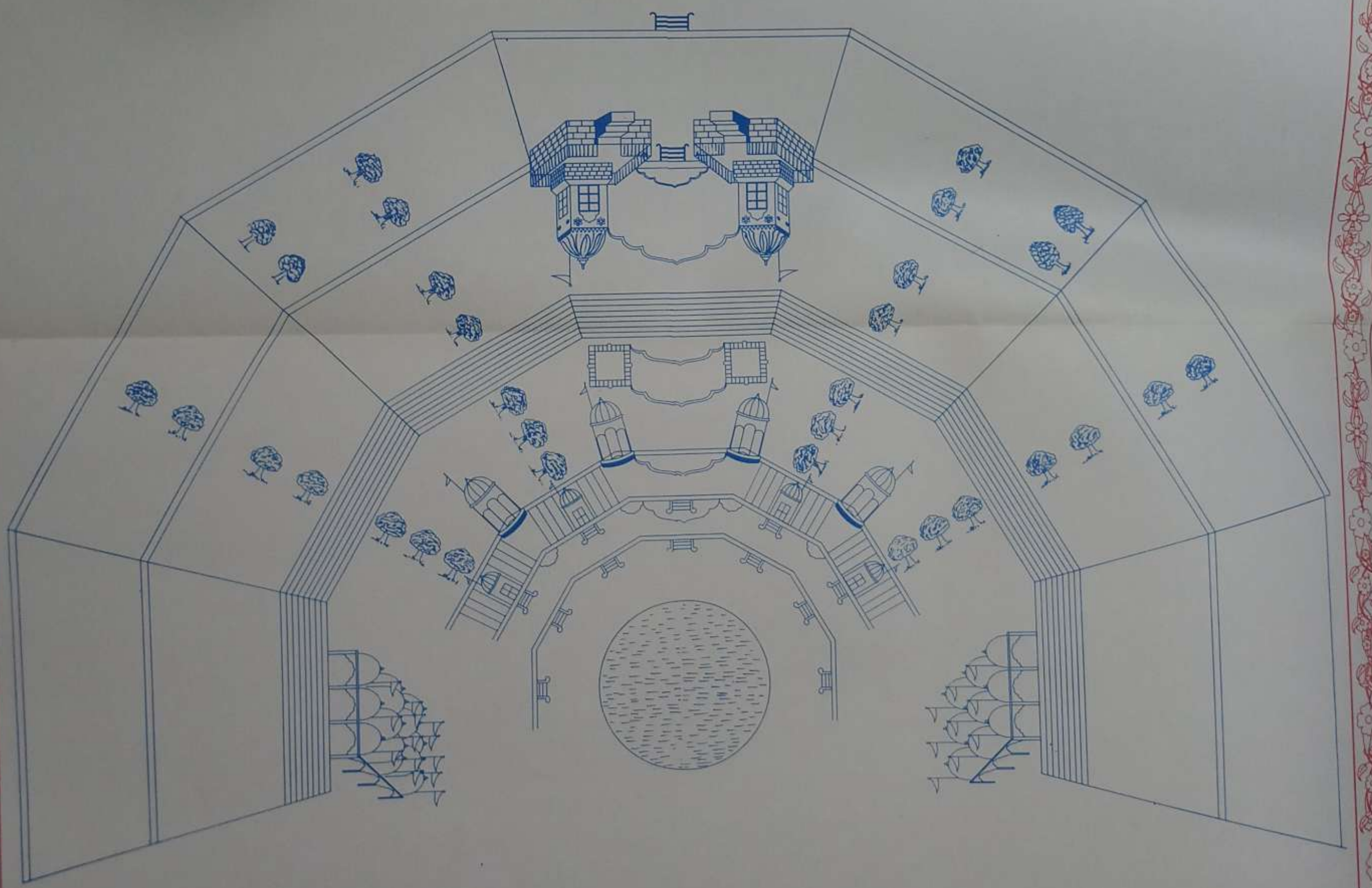

Nijanand App

६४-तेरह देहुरी का घाट, झुण्ड का घाट, नव देहुरी का घाट

तेरह देहुरी का घाट दक्षिण तरफ आया है। पश्चिम के झुण्ड के घाट से ३१ हांस दक्षिण तरफ छोड़कर ३२वां जो हांस है। उस हांस में १३ देहुरी का घाट आया है। ५०० मंदिर का लंबा २५० मंदिर का चौड़ा एक कमर भर ऊंचा चबूतरा पहले हिस्से में आया है। उस चबूतरा पर आठ थंभ आये हैं। चार थंभ दिशाओं में और चार थंभ कोना पर है। चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। लंबाई तरफ २५० मंदिर के फासलें पर थंभ आये हैं और चौड़ाई तरफ पूर्व-पश्चिम के थंभ १२५ मंदिर के अन्तर पर आये हैं। पूर्व-पश्चिम तरफ १२५ मंदिर में कमर भर की सीढ़ी बाकी में कठेड़ा आया है। नीचे जो आठ थंभ आये हैं। इन थंभों की छत के ऊपर आठ देहुरी नीचे वाले थंभों के ऊपर आयी है। आठ देहुरी के बीच में चार देहुरी आयी है। चार देहुरी के बीच में एक देहुरी आयी है। चार थंभ ऊपर उठ कर गुम्मट, कलश ध्वाजा, पताका आदि जोगबाई आयी है। इसी प्रकार से सब देहुरियों के ऊपर आये हैं। इस घाट के आगे २५० मंदिर की रौंस, रौंस के आगे २५० मंदिर में सीढ़ियां तथा देहुरी आयी है। सीढ़ी के आगे ७५० मंदिर का लंबा २५० मंदिर का चौड़ा चबूतरा आया है यह चार हिस्से पूरे हुए। सीढ़ियां उतर कर २५० मंदिर के चौक में जाइये। आगे कमर भर की सीढ़ी उतरकर ५०० मंदिर के जल रौंस पर आइये। इस जल चबूतरे से भोम भर की सीढ़ियां नीचे को गयी हैं। इस जल रौंस से कमर भर की सीढ़ी उतरकर १२५ मंदिर के चौड़े जल चबूतरा पर आइये।

उत्तर तरफ के ९ देहुरी के घाट के पश्चिम तरफ ३१ हांस की बीच में जगह छोड़कर ३२वें हांस के मध्य भाग में पहले हिस्से में २५० मंदिर का लंबा-चौड़ा चौक बीच में आया है। इस चौक के दाएं बाएं २५० मंदिर के लंब-चौड़े दो चौक चबूतरे कमर भर ऊंचे आये हैं। एक चबूतरा की एक दिशा में चार हिस्सा भये। १२५ मंदिर का बीच में दरवाजा आया है। इस दरवाजा के आगे कमर भर की सीढ़ी रौंस पर उतरी है। इस दरवाजा के दाएं-बाएं दो दीवारे हैं। एक दीवार ६२-१/२ मंदिर की दाहिनी तरफ इसी प्रकार से ६२-१/२ मंदिर की दीवार बाएं तरफ आयी है। इसी तरह से चारों दिशा में ८ दीवारें बनी हैं चारों दरवाजे के सामने सीढ़ियां आयी हैं। इसी तरह से दूसरे चबूतरे पर वनक आयी है। दोनों चबूतरों पर १६ वन दीवारें आयी हैं और आठ मेहरावें आयी हैं और दो मेहरावें बीच में आयी हैं। एक भोम में कुल दस मेहरावें आयी हैं। इसी प्रकार उपरा-ऊपर ५ भोम छट्ठी चांदनी आयी है। चबूतरा तथा सीढ़ियां तले की ही भोम में आयी हैं और भोम में नहीं आयी है। छट्ठी चांदनी पर चारों तरफ़ कठेड़ा शोभा ले रहा है। दो चबूतरा के बीच में जो चौक आया है। उसके पीछे तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सामने तरफ पड़साल आयी है। इसी तरह से दूसरे चबूतरे पर, दूसरे हिस्सा में पड़साल, तीसरे हिस्सा में सीढ़ियां और देहुरी और चौथे हिस्से में २५०-२५० मंदिर लंबे-चौड़े १२८ चादें आये हैं। एक हिस्सा २५० मंदिर का है। पड़साल, देहुरी, चबूतरे, रौंसों का ब्यान ९ देहुरी के घाट में ब्यान किया गया है।

उत्तर तरफ नव देहुरी का घाट आया है। १६ देहुरी से ३१ हांस छोड़कर ३२वें हांस में नव देहुरी का घाट उत्तर तरफ आया है। ढलकती सीढ़ियों के साथ चौरस पाल पर यह घाट आया है। ५०० मंदिर का लंबा २५० मंदिर का चौड़ा एक कमर भर ऊँचा चबूतरा उठा। चबूतरे के चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। बाकी में कठेड़ा आया है।

Nijanand App

इस चबूतरा पर आठ थंभ आये हैं। चार दिशा में चार कोना में इन थंभों पर आठ मेहराबें आयी हैं। पूर्व-पश्चिम तरफ १२५-१२५ मंदिर की, उत्तर-दक्षिण तरफ २५०-२५० मंदिर की, दो मेहराबें आई हैं चबूतरे के मध्य से चारों दिशा में पालपर कमर भर की सीढ़ि उतरी है। ऊपर लंबी एक ही छत आयी है। चारों तरफ घेरकर कठेड़ा आया है तीन देहुरी पूर्व कठेड़ा के साथ और तीन देहुरी पश्चिम कठेड़ा के साथ और तीन देहुरी मध्य चांदनी पर आई हैं तीन-तीन की तीन हारें आयी हैं। नीचे चार थंभ उठे। ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं। इसी घाट की चौड़ाई के सामने दो हारे वृक्षों की आयी है। ऊपर चांदनी पर जाने के लिए थंभों में सीढ़ियां आयी हैं। इस घाट के दक्षिण तरफ २५० मंदिर की पड़साल आयी है। तीसरी हार पड़साल के सामने आयी है। इस पड़साल के रौंस के सामने २५० मंदिर तक इन सीढ़ियों के दाएं-बाएं पाल पर दो देहुरी आयी हैं। इन दोनों देहुरियों पर १० मेहरावें आयी हैं। चार-चार मेहराबें दो देहुरी की है और दो मेहराबें दोनों देहुरीयों के मध्य में आयी हैं। अर्थात सीढ़ियों पर आयी है। इन सीढ़ी के तीन तरफ कठेड़ा आया है। दो कठेड़ा दाएं-बाएं देहुरी में और एक कठेड़ा ताल तरफ आया है। इन सीढ़ियों व दाएं-बाएं देहुरी के आगे २५० मंदिर लंबा-चौड़ा एक चांदा (चबूतरा) आया है। इस चबूतरा के दाएं-बाएं तरफ से सीढ़ी उतरी हैं। ६२-१/२, ६२-१/२ मंदिर की जगह में, और सामने ताल तरफ कठेड़ा आया है। यह चबूतरा भीतर से पोला है और रौंस से कमर भर का ऊंचा है। जिसमें चार थंभ दक्षिण तरफ आये हैं। ऊपर तीन मेहरावें आयी हैं। सो मेहराबें खुली है। इसी के सामने दीवार में तीन मेहराबें आयी हैं। दाएं-बाएं की मेहराब अक्शी है। इस अक्शी मेहराब में १२५ मंदिर का दरवाजा आया है। जिससे मंदिरों में जाया जाता है। बीच की जो मेहराब है। सो खुली आयी है। ऊपर से भोम भर की सीढ़ी उतरी है। सो इसी उत्तर की मेहराब के थंभ तक आयी है। पूर्व-पश्चिम की तरफ की दीवार के मेहराब का अक्स आया है, क्योंकि दूसरी तरफ से सीढ़ी उतरी है दरवाजे नही आये हैं। इन तीनों चोकों की जिमि एक समान आई हैं। ऊपर छत आयी है। ऊपर से जो सीढ़ियां उतरी हैं, सो बीच के चौक के उत्तर की मेहराब तक आयी है। २५० मंदिर की जगह को उलंघ कर आगे कमर भर की सीढ़ी ताल की रौंस पर उतरी है। सो रौंस ५०० मंदिर की चौड़ी है। इसी रौंस से हाथ लगता जल आया है। इस रौंस से कमर भर की सीढ़ी उतर करके जल चबूतरो पर जाइये। यह जल चबूतरा १२५ मंदिर का चौड़ा आया है यहां पर नाभी तक जल है इसी जल चबूतरे से सीढ़ियां नीचे भोम तक गयी हैं।

Nijanand App

६५. चौरस पाल के ऊपर देहुरी एवं वृक्ष

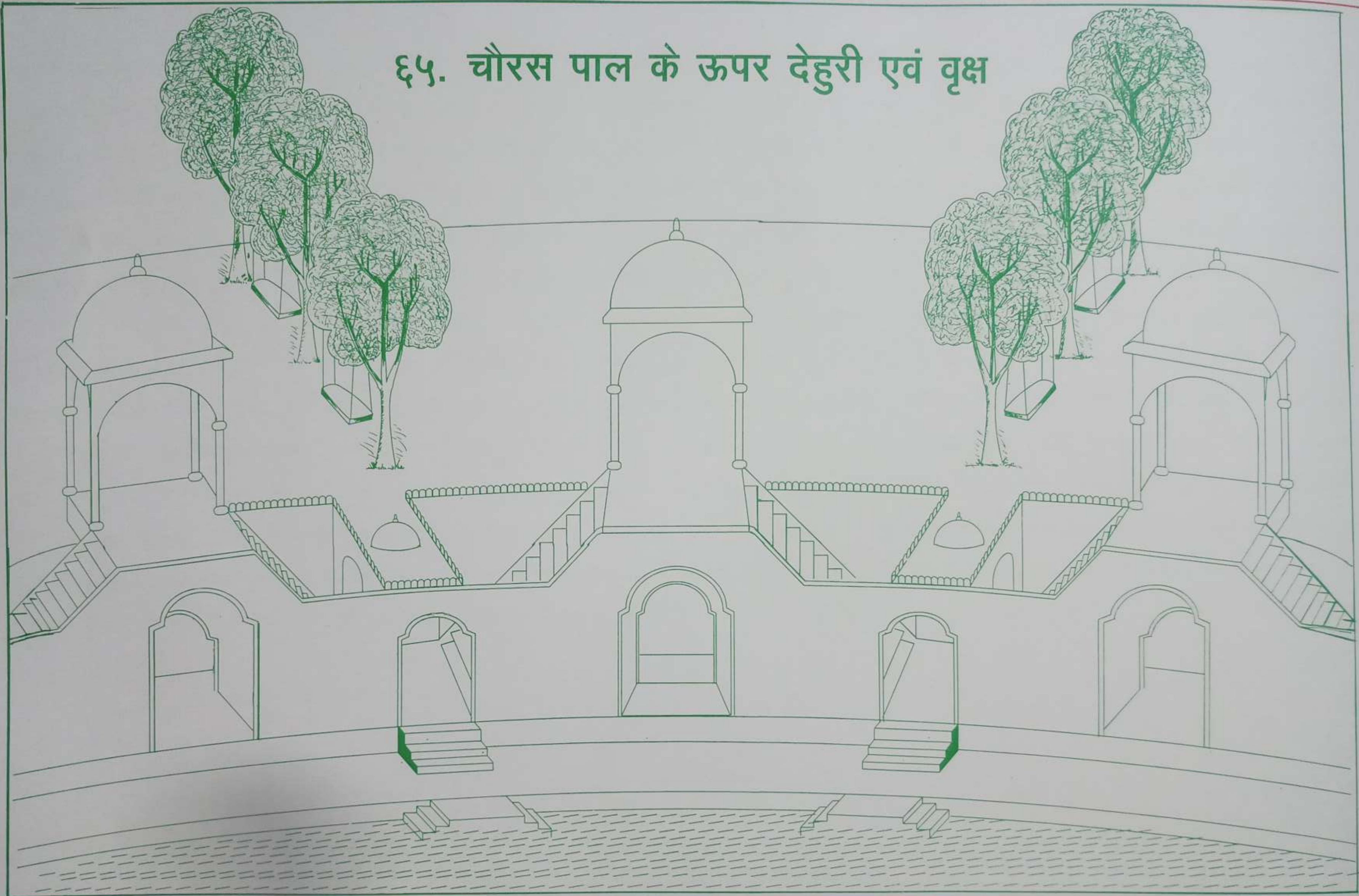

Nijanand App

६५-चौरस पाल के ऊपर देहुरी एवं वृक्ष

दो हांस के मध्य भाग में जो हांस का पहल आया है, सो चौरस पाल की दीवाल से ताल तरफ ५०० मंदिर जाकर आगे २५० मंदिर में देहुरी आयी है। १२५ मंदिर दाहिने हांस के लिए और १२५ मंदिर बाएं हांस के लिए हैं। इस २५० मंदिर की लंबाई-चौड़ाई की हद में चार थंभ ऊपर उठे हैं। ऊपर ४ मेहराबें, ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका आदि सब आए हैं। इस देहुरी के आगे ताल तरफ २५० मंदिर का लंबा-चौड़ा एक चांदा आया है। चांदे के दाएं-बाएं तरफ से ६२-१/२-६२-१/२ मंदिर में दोनों तरफ से सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों के एक तरफ दीवाल है तथा , दूसरी ताल तरफ कमर भर ऊंची दीवाल पर कांगरी है। चांदे के सामने ताल तरफ कठेड़ा आया है। यह चांदा भीतर से पोला आया है। यह एक हांस की बनक है। ऐसे ही १२८ हांसों की देहुरियों की बनक आयी है। यही १२८ बड़ी देहुरियां है।

इस चौरस पाल के ऊपर ३ हारें वृक्षों की आयी हैं। एक हार १२८ वृक्षों की होती है। इसी तरह ३ हारें आयी हैं। ये वृक्ष हांस के मध्य भाग में आए हैं। एक वृक्ष तो ढलकती पाल की सीढ़ियों के साथ आया है। दूसरा वृक्ष २५० मंदिर की दूरी पर, तीसरा वृक्ष दूसरे वृक्ष से २५० मंदिर दूर आया है। तीसरे वृक्ष के दाएं-बाएं १२५-१२५ मंदिर की दूरी पर देहुरी के कोने हैं। तीनों हारों के कुल वृक्ष ३८४ होते हैं। जिसमें १२ वृक्ष तीनों घाटों के कम होते हैं। तब सभी वृक्ष ३७२ हुए। ढलकती पाल के वृक्षों का हिसाब पहले हो चुका है। इन वृक्षों की ऊंचाई ५ भोम की आयी है। सबकी मेहराबें एक दूसरे से मिली हैं।

सब मेहराबों में हिंडोले आए हैं। जो दो देहुरी के बीच में वृक्ष आया है, इसकी डाली ने ११२५ मंदिर जाकर जल चबूतरे तक छाया डाली है। इन डालों को पकड़कर जल में कूदते हैं। पाल की ३ सन्धें आयी हैं। एक सन्ध घाट के नीचे एक हार मंदिर की और एक गली आयी है। दूसरी सन्ध पड़साल के नीचे दो गली है। तीसरी सन्ध देहुरी नीचे मंदिरों की एक हार और १२५ मंदिर की एक गली आयी है। इस प्रकार चांदों को छोड़कर ७५० की पड़साल के नीचे मंदिर, थंभ, गलियां आदि जोगबाई आयी हैं।

Nijanand App

६६. टापू मोहोल

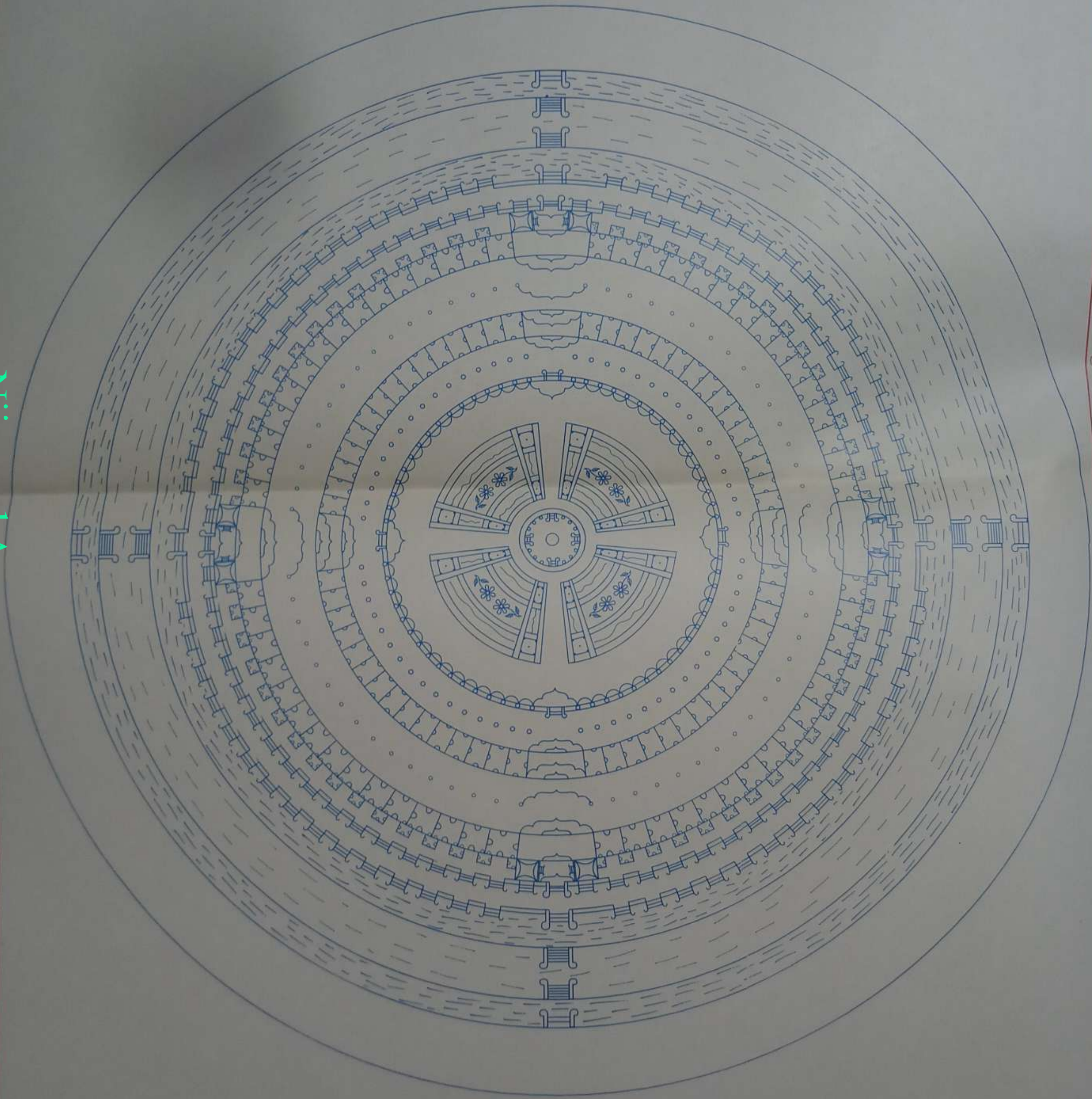

Nijanand App

६६-टापू मोहोल

ताल के मध्य भाग में ६००० मंदिर का लंबा-चौड़ा टापू मोहल आया है। इस टापू पर मोहोल आए हैं। चारों तरफ पानी आया है। पहले १२५ मंदिर की चौड़ी ताल की पाल आयी है, जिससे कमर भर की सीढ़ी जल चबूतरे पर उतरी है। जल चबूतरे से चारों तरफ से सीढ़ियां उतर कर जमीन तक गयी हैं। इस रौंस से हर मंदिर के दरवाजे के सामने से सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। बाकी में कठेड़ा आया है। इस रौंस से आगे कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। इस चबूतरे से रौंस पर कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं, बाकी में कठेड़ा आया है। कठेड़े से २५० मंदिर की दूरी पर एक हार मंदिरों की आयी है, जिसके ६४ पहल हैं। चारों दिशा के जो चार पहल हैं, उसमे से एक ७५० मंदिर का लंबा है। इन पहलों में दरवाजे आए हैं। प्रत्येक मंदिर २५० मंदिर का लंबा और १२५ मंदिर का चौड़ा आया है। इस प्रकार ६४ पहल में ६० मंदिर आए हैं।

६२-१/२ मंदिर की जगह एक मंदिर से और ६२-१/२ मंदिर की जगह दूसरे मंदिर से ली। इस १२५ मंदिर की जगह के सामने एक चौरस गुर्ज आया है, जिसमें ५ दरवाजे आए हैं। तीन दरवाजे तीन दीवालों में और दो दरवाजे मंदिर में जाने के लिए आए हैं। इसी प्रकार से तीन भोम ऊपर तक गया है। दो गुर्जों के बीच में जो १२५ मंदिर का चौक आया है। इस चौक में वन आया है। वन भी तीन भोम तक चला गया है। इन गुर्जों और वनों के आगे १२५ मंदिर की रौंस चारों तरफ परिकरमा के लिए है। एक मंदिर के दरवाजे देखने के ६ और गिनती के ५ आए हैं। दो दरवाजे गुर्जों में जाने के लिए, एक भीतर तरफ, एक वन तरफ और दो पाखे की दीवाल में हैं, परन्तु गिनती में केवल एक दरवाजा आया है।

एक दिशा का मंदिर जो ७५० मंदिर का लंबा आया है। इसमें २५० मंदिर का दरवाजा आया है। इस दरवाजे के दाएं-बाएं २५०-२५० मंदिर की दीवाल है, जिसकी बाहरी तरफ २५० मंदिर के लंबे-चौड़े दो चबूतरे आए हैं। चबूतरा कमर भर का ऊंचा, तीन तरफ सीढ़ियां और कठेड़ा आया है। चबूतरे पर चार थंभ हैं, जिन पर चार मेहराबें आयी हैं। इसी प्रकार से दूसरा चबूतरा आया है। बीच के चौक पर २ मेहराबें आयी हैं। कुल १० मेहराबें आयी हैं।

इन मंदिरों से १२५ मंदिर आगे चलकर चौंसठ थंभों की एक हार आयी है। इन थंभों के आगे एक हार मंदिरों की आयी है। यह मंदिर भी २५० मंदिर का लंबा और १२५ मंदिर का चौड़ा आया है। चारों दरवाजों के सामने एक थंभ से दूसरे थंभ तक ७५० मंदिर की जगह आयी है। बाकी २५० मंदिर की दूरी पर आए हैं। भीतरी मंदिरों की हार में भी ६० मंदिर और चार दरवाजे आए हैं। इन मंदिरों से १२५ मंदिर आगे एक हार थंभों की आयी है उसमें भी ६४ थंभ हैं। इसके भीतरी तरफ १२५ मंदिर की दूरी पर एक कमर भर का ऊंचा चबूतरा है, जिस पर ६४ थंभ आए हैं। थंभों के बीच कठेड़ा आया है। चारों दिशाओं से कमर भर की सीढ़ी उतरी हैं। यह चबूतरा ३७५० मंदिर का लंबा-चौड़ा है। इस चबूतरे के बीच में तीसरे हिस्से में पानी का कुण्ड आया है। इस कुण्ड के चारों तरफ ६२५ मंदिर का बगीचा घूमकर आया है। बाग के दाएं-बाएं की जगह पर गिलम बिछी है। किनार पर कठेड़ा आया है। यह कुण्ड और बगीचा केवल नीचे की भोम में ही आए हैं। इस टापू मोहोल की तीन भोमें तथा चौथी चांदनी आयी है।

Nijanand App

६७. टापू मोहोल की चांदनी

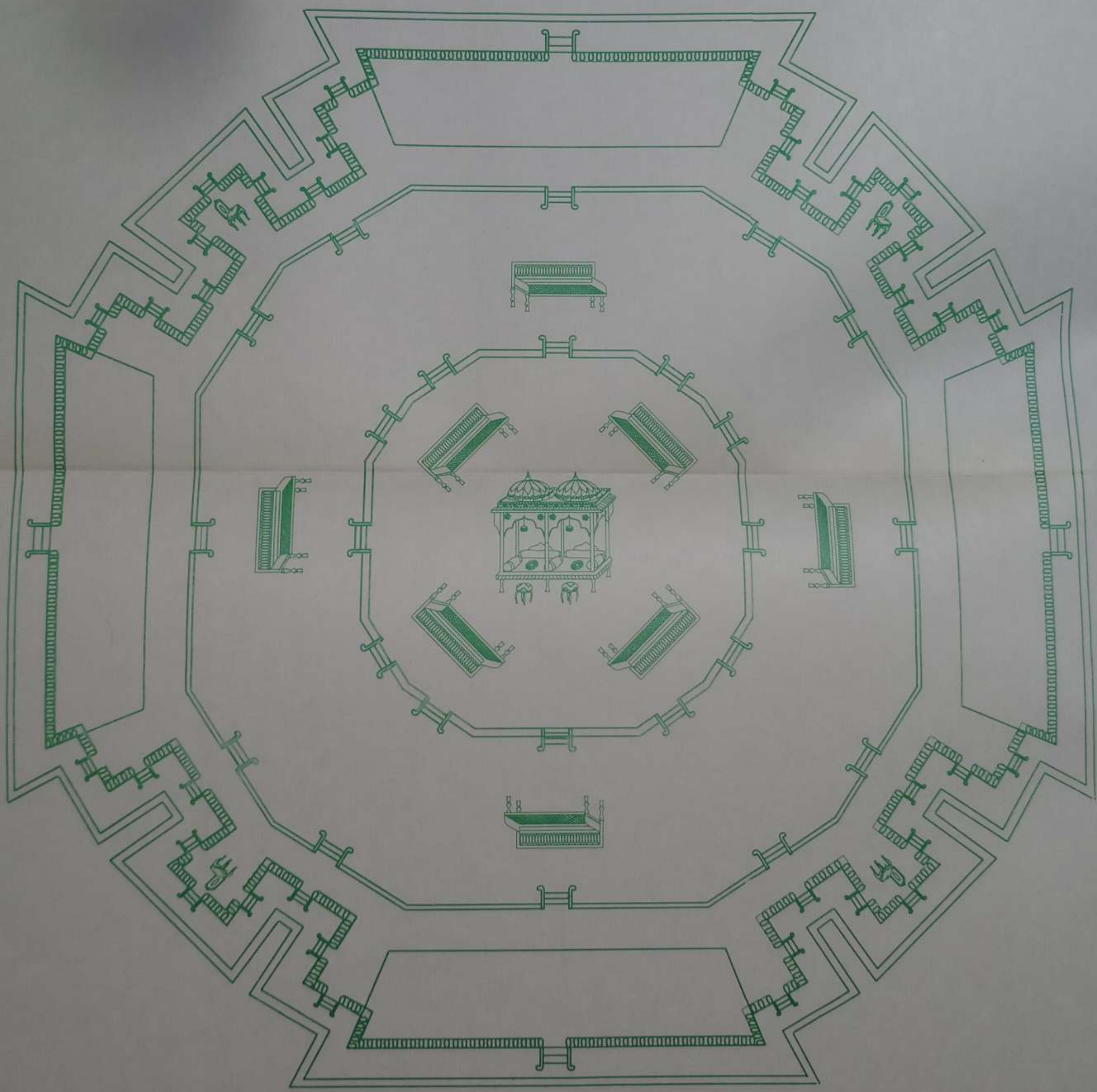

Nijanand App

६७-टापू मोहोल की चांदनी

टापू मोहल की ऊंचाई तीन भोम की आयी है। ५२५० मंदिर की लंबी-चौड़ी चांदनी आयी है। इस चांदनी के मध्य भाग में एक गोल चबूतरा कमर भर का ऊंचा आया है। यह ३७५० मंदिर का लंबा-चौड़ा बराबर आया है। गृद ११२५० मंदिर की आयी है। इस चबूतरे की चारों दिशाओं में कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। बाकी सब जगह पर कठेड़ा आया है। चबूतरे पर गिलम बिछी है। गिलम पर सिंहासन बिना छत्री का आया है। श्री राज श्यामाजी तथा सखियां सुदि चौदस को यहां पधारते हैं। इस चांदनी के चबूतरे पर ६००० कुर्सियां रखी हैं। एक-२ कुर्सी पर २-२ सखियां बैठती हैं। चांदनी की बाहरी किनार के साथ लगकर ३००० कुर्सियां रखी हैं। एक-एक कुर्सी पर ४-४ सखियां बैठती हैं। चांदनी की किनार पर कमर भर का ऊंचा चबूतरा घेर करके आया है। ६० गुर्ज चारों दिशा के और दरवाजों के सामने वाले चौखूंटे गुर्जों की चांदनी टापू की चांदनी के चबूतरे के माफक आयी है। इस चबूतरे के भीतरी तरफ हांस-हांस के मध्य भाग में कमर भर की सीढ़ियां चांदनी पर उतरी हैं। बाकी जगह में चारों तरफ कठेड़ा आया है। यह चबूतरा १२५ मंदिर का लंबा टापू मोहोल के बाहरी मंदिरों की हार पर आया है। इस चबूतरे की बाहरी किनार पर नीचे की दीवाल के ऊपर लाल माणिक की कांगरी सवा हाथ की ऊंची आयी है। गुर्जों के तीनों तरफ तथा दीवाल पर तथा नीचे जो बड़े चार दरवाजों के दाएं-बाएं २-२ चबूतरे व नीचे के चौक पर जो छत आयी है सो उपरा-ऊपर आयी है। इस ७५० मंदिर की चांदनी की किनार पर लाल माणिक की कांगरी है। गुर्ज की चांदनी की एक दिशा १२५ मंदिर की है। तीनों तरफों की किनार लेने से ३७५ मंदिर की जगह होती है। एक गुर्ज की चांदनी के किनार पर २०० कुर्सियां रखी हैं। पौने दो मंदिर की जगह पर एक कुर्सी आयी है। एक कुर्सी पर एक-एक सखी बैठती है। एक गुर्ज पर २०० सखियां बैठती हैं। ६० गुर्जों पर १२००० सखियां विराजमान हैं। ७५० मंदिर की लंबी २५० मंदिर की चौड़ी चौखूंटे गुर्जों की चांदनी आयी है। इस चांदनी पर बैठक नहीं होती है। इस चांदनी के दाएं-बाएं १२५ मंदिर की लंबी और ६२-१/२ मंदिर की चौड़ी गुर्ज की चांदनी आयी है। ये दोनों मिलाकर एक गुर्ज का हिसाब हुआ। १०० सखी एक तरफ तथा १०० सखी दूसरी तरफ बैठती हैं। बीच की ७५० मंदिर की चांदनी खाली है। इस प्रकार से चारों दरवाजों की बनक आयी है। मध्य के चबूतरे तथा किनारे के चबूतरे की ऊंचाई बराबर आयी है। लाल माणिक की कांगरी से कुर्सियां ऊंची हैं।

इस हौज-कौसर तथा टापू मोहल की बनक एक हीरे की आयी है। मोहल, थंभ, मंदिर, पाल, हिंडोले, वृक्ष, घाट, रौंसें, सीढ़ियां, देहुरी, चांदे तथा ताल की जमीन तथा टापू-मोहल तथा सब जोगवाई एक हीरे के अंदर है। सन्ध किसी जगह नहीं हैं। १२८ देहुरियां हैं जिसमें दोनों तरफों के हांसों के रंग मिले हैं। हौज-कौसर के बाहर वन रौंस से लेकर भीतरी जल रौंस तक ३००० मंदिर होते हैं। जिस पर २५० मंदिर का एक गलीचा है। ऐसे १२ गलीचे आए हैं। हर एक गलीचे का रंग अलग-२ आया है। फिर एक गलीचे में २७ रंग आए हैं। १२ गलीचे में जो एक गलीचा है वो ९ मंदिर ३६ हाथ का होता है। इस प्रकार से हर एक गलीचे में २७-२७ गलीचे आए हैं। उन २७ में जो एक गलीचा आया है वह नव रंगों का है।सो नवरंग नवरस से शोभायमान हैं। वह ९ रस प्रेम रस में विराजमान हैं। सो प्रेम रस श्री राजजी महाराजजी के अंदर विराजमान है। जब इन स्थानों का पारावार नहीं पाया जाता है तो श्री राजजी के अंदर जो हौज-कौसर तथा अनंत २५ पक्ष विराजमान हैं, उसका क्या ब्यान किया जाए। कुल ३२४ गलीचे हैं। एक गलीचा ९ रंग का तब सब रंग २९१६ होते हैं। टापू मोहोल में भी १२८ रंग दिखाई देते हैं। यहां की शोभा अपरम्पार है।

Nijanand App

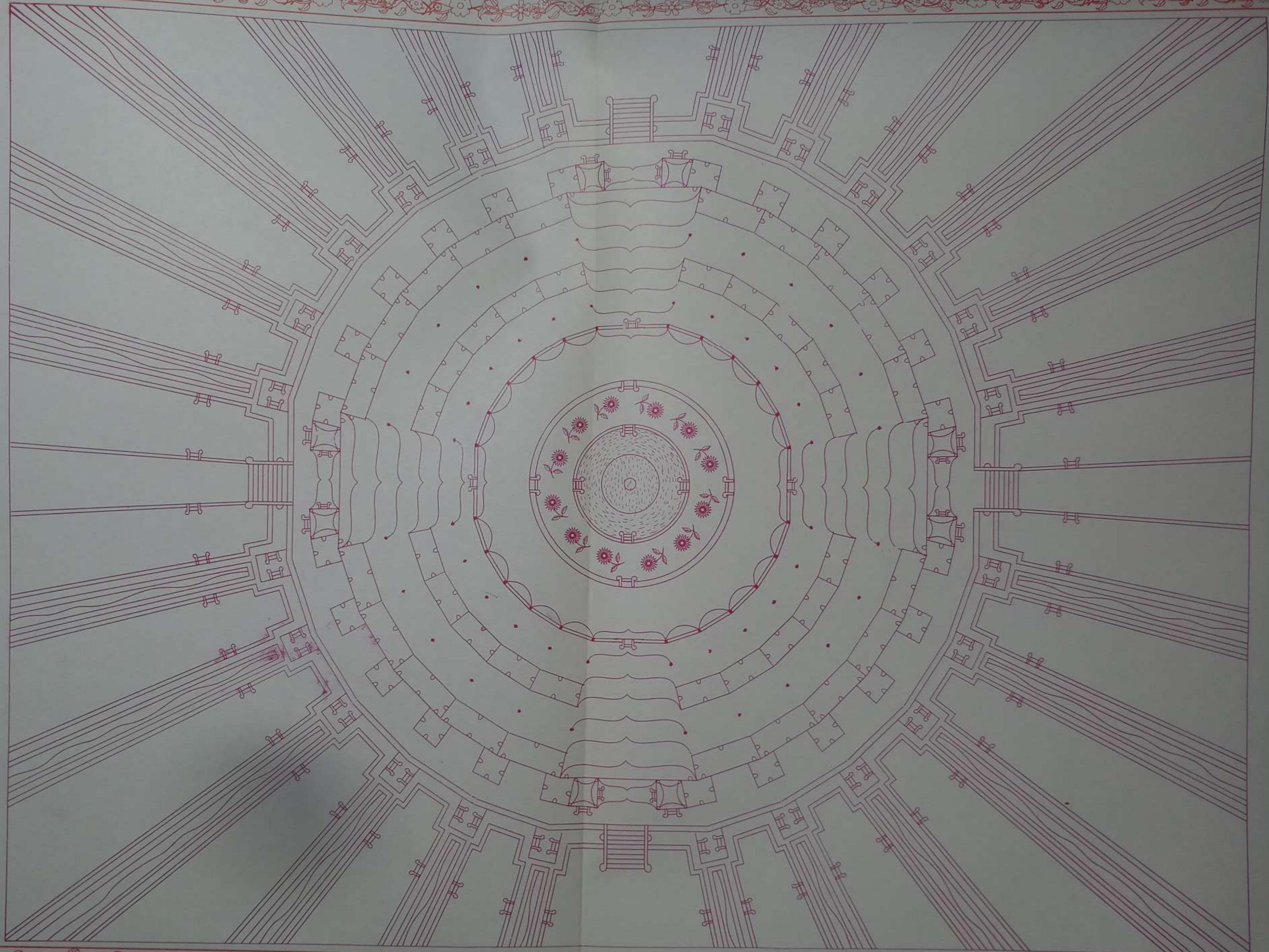

६८. चौबीस हांस का मोहोल

Nijanand App

६८-चौबीस हांस का मोहल

हौज-कौसर के दक्षिण तरफ जवेरों के मोहलों से लगकर चौबीस हांस का मोहल आया है। सबसे पहले जमीन से भोम भर का ऊंचा चबूतरा उठा है। किनारे पर कठेड़ा आया है। हर एक दिशा में २५० मंदिर की चौड़ाई लेकर भोम भर नीचे सीढ़ी उतरी हैं। किनारे से ५०० मंदिर की रौंस की जगह छोड़कर मंदिरों की एक हार आयी है, जिसमें २० मंदिर और ४ दरवाजे आए हैं। मंदिर ५०० मंदिर का लंबा और २५० मंदिर का चौड़ा आया है। दरवाजे का मंदिर १००० मंदिर का लंबा और २५० मंदिर का चौड़ा आया है। १२५ मंदिर एक हांस के तथा १२५ मंदिर दूसरे हांस के लेकर २५० मंदिर का लंबा-चौड़ा गुर्ज बना है जिसमें पांच दरवाजे आए हैं। तीन दरवाजे गुर्ज की तीन दीवालों में और दो दरवाजे मंदिरों में जाने के लिए आए हैं। इस प्रकार से २४ गुर्ज आए हैं। गुर्जों के बीच में २५० मंदिर की जगह है, जिसमें ८४ मंदिर का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं ८३-८३ मंदिर की दीवाल आयी है। दो दरवाजे गुर्जों में जाने के लिए, दो दरवाजे पाखे की दीवाल के आए हैं। इसी प्रकार देखने के ६-६ किन्तु गिनती के ५ दरवाजे हैं। इसी प्रकार से पांच भोम आयी हैं।

इन मंदिरों के भीतरी तरफ २५० मंदिर की दूरी पर एक हार थंभों की आयी हैं। थंभ हांस-हांस की दूरी पर आए हैं, जिससे कुल २४ थंभ हुए। इन थंभों की हार से २५० मंदिर आगे एक हार मंदिरों की है जिसमें २० मंदिर और ४ दरवाजे आए हैं। इनके दरवाजे देखने के ४ चारों दीवालों में हैं परन्तु गिनती में ३ क्योंकि पाखे की दीवाल का एक दरवाजा अगले मंदिर में भी गिना जाता है। इन मंदिरों की हार से २५० मंदिर आगे एक हार थंभों की आयी है। इन थंभों से २५० मंदिर आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा है, जिसके किनार पर थंभ, चारों दिशा में सीढ़ियां और बाकी में कठेड़ा आया है। चबूतरे के तीसरे हिस्से में पानी का कुण्ड आया है। कुण्ड के मध्य में पानी का स्तून ऊपर चांदनी तक गया है। पानी का कुण्ड केवल नीचे की भोम में आया है। चार भोमों में केवल चबूतरा है। चांदनी पर फिर कुण्ड आया है। एक हिस्से में कुण्ड के चारों तरफ बगीचे तथा चेहेबच्चे आए हैं। एक हिस्से में गिलम, सिंहासन और कुर्सियां आयी हैं।

Nijanand App

६९. बड़ा दरवाजा तथा जमीन पर बगीचों का द्रश्य

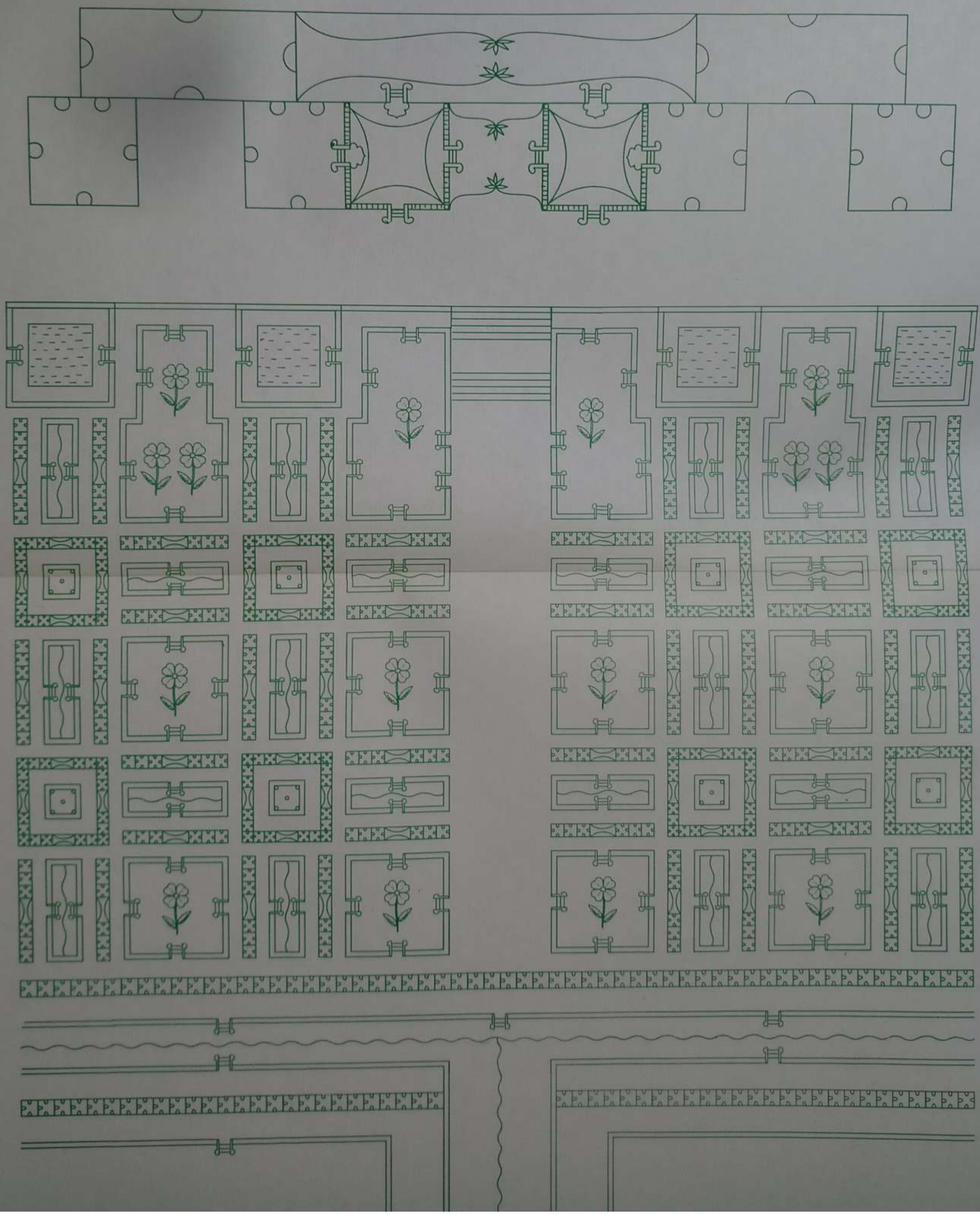

Nijanand App

६९-बड़ा दरवाजा तथा जमीन पर बगीचों का दृश्य

चौबीस हांस के मोहोल की एक दिशा में १००० मंदिर का लंबा और २५० मंदिर का चौड़ा जो दरवाजे का चौक आया है, उसमें २५० मंदिर का दरवाजा आया है और दाएं-बाएं ३७५-३७५ मंदिर की दीवाल आयी है। दरवाजों के सामने २५० मंदिर का चौक आया है। चौक के दाएं-बाएं दो चबूतरे कमर भर ऊंचे २५० मंदिर के लंबे-चौड़े आए हैं। चबूतरों से तीन तरफ सीढ़िया उतरी हैं। बाकी में कठेड़ा आया है। चबूतरे के कोनों में ४ थंभ उठे हैं। ऊपर छत आयी है। एक चबूतरे पर ४ मेहराब और ४ मेहराब दूसरे चबूतरे की तथा दो मेहराब दोनों चबूतरों के मध्य की है। कुल १० मेहराबें आयी हैं। इसके साथ ही १२५ मंदिर की जगह गुर्जों ने दाबी है। इस प्रकार की बनक उपरा-ऊपर ५ भोम तक चली गई है। इसी प्रकार से चारों दिशा में दरवाजे आए हैं।

२४ हांस का भोम भर का ऊंचा जो चबूतरा है, उस चबूतरे से लगकर कमर भर ऊंची रौंस पर २४ कुण्ड पानी के आए हैं। इन कुण्डों में पानी चादरों द्वारा ऊपर से गिरता है। सो ये कुण्ड गुर्जों के सामने आए हैं। कुण्ड की लंबाई -चौड़ाई ३३ कोस की और दाएं-बाएं ३३-३३ कोस की पाल आयी है। इस कुण्ड से नहर निकली है। नहर की चौड़ाई १०० कोस की, जिसका ब्यान ३३ कोस में नहर, और ३३-३३ कोस की पाल दोनों तरफ आयी है, जो कमर भर ऊंची आयी है। नहर भोम भर की गहरी आयी है। पाल के मध्य में ११ कोस में मोहोलात, मोहोलात के दोनों तरफ ११-११ कोस की रौंस आयी है। यही बनक दूसरी पाल पर आयी है। इन मोहोलातों की ऊंचाई २ भोम की है। मध्य में नहर खुली आयी है। नहर के आगे ३०० कोस जाकर १०० कोस का लंबा-चौड़ा ताल आया है, उसमें मिली है। ताल ३३ कोस का लंबा-चौड़ा है, ताल के चारों तरफ ३३ कोस की पाल आयी है। पाल के मध्य में ११ कोस में मोहोलात, मोहोलात के दोनों तरफ ११-११ कोसकी रौंस आयी है। यही बनक दूसरी पाल पर आयी है। इन मोहोलातों की ऊंचाई दो भोम की है। मध्य में नहर खुली है। मोहोलात दो भोम ऊंची है बीच में ताल खुला है। जल तरफ की रौंस से कमर भर की सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। ताल के चारों तरफ नहर चलती है। इस प्रकार से एक कुण्ड के सामने २४ ताल आए हैं। इसी प्रकार २४ कुण्डों के सामने २४-२४ ताल आए हैं। कुल ताल ५७६ हुए। बगीचों के वृक्षों की ऊंचाई भी दो भोम की आयी है। नहर के ऊपर तथा ताल के ऊपर छत नहीं है बाकी सब जगह चांदनी आयी है। २४ हांस के जो ४ बड़े दरवाजे हैं, उनके सामने बड़े बगीचे आए हैं। २५० मंदिर में दरवाजे के सामने २५० मंदिर में सीढ़ियां उतरी हैं। २५० मंदिर की चौड़ी कमर भर ऊंची रौंस सब तालों को घेर कर आयी है जो नहर की रौंस है, उसमें मिली है। इस रौंस के दाएं-बाएं बगीचे की लंबाई ३२५ मंदिर की आयी है। चौड़ाई ३०० मंदिर की आयी है। इसी प्रकार चारों दरवाजों के सामने बनक आयी है। १०० कोस = १२५ मंदिर का हिसाब आया है। जब सब ताल पड़ चुके तो ईशान कोने के दो तालों से दो नहरें निकली हैं जो ४०० कोस आगे चलकर दोनों तरफ घूमी है। एक नहर तो उत्तर होकर दक्षिण तरफ आयी है। दूसरी पूर्व होकर दक्षिण में दूसरी नहर में मिलकर जवेरों की नहरों में मिल जाती है। यह सब तालों को घेर करके नहर आयी है। इसी नहर में सब नहरें आकर मिली हैं तो बड़ी नहर कही गयी है। इस बड़ी ४०० कोस की नहर में १३३ कोस में पानी तथा १३३-१३३ में दोनों पालें है। पालों के मध्य भाग में मोहलात और दोनों तरफ रौंसें आयी हैं। यह मोहल दो भोम के आए हैं।

Nijanand App

७०. छठीं चांदनी

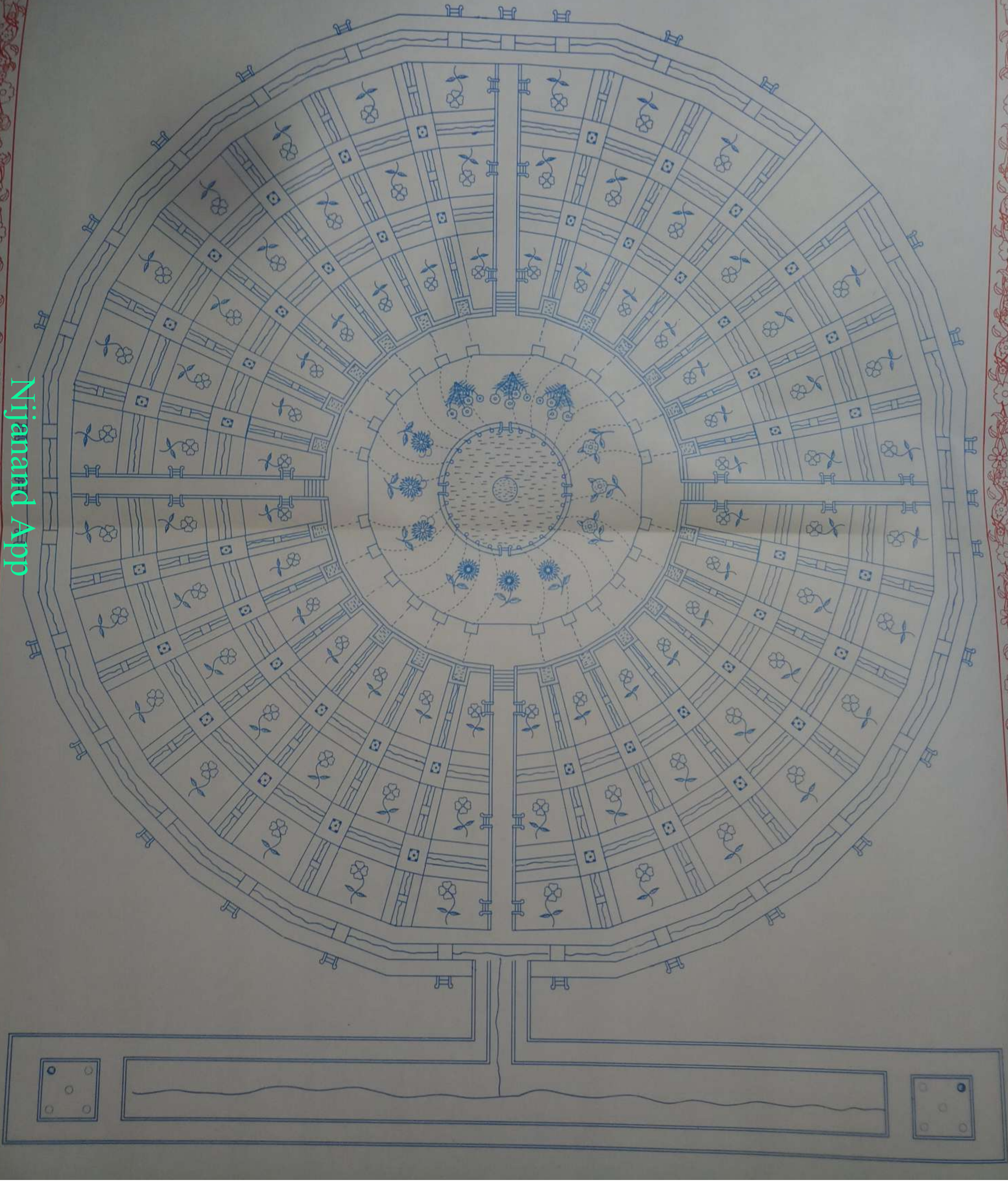

Nijanand App

७०-छठी चांदनी

चांदनी पर मध्य के कुण्ड में २५ फव्वारे आए हैं। २४ गुर्जों के सामने और एक मध्य में है। २४ फव्वारों का पानी कमानों द्वारा उछलकर गुर्जों के कुण्डों में पड़ता है। मध्य का फव्वारा उछल कर उसी में पड़ता है। कुण्ड से २४ नहरें निकली हैं, जो बगीचों में पानी देकर गुर्जों के कुण्डों में मिल जाती है। इन गुर्जों के कुण्डों के चारों तरफ चांदनी आयी है। इन कुण्डों के अंदर पानी होने से गुर्ज को कुण्ड कहा गया है। कुण्डों से पानी धाराओं में होकर चारों तरफ नीचे के जो जमीन पर कुण्ड हैं उनमें पड़ता है। चांदनी के कुण्ड कमर भर गहरे आए हैं। चबूतरे से कमर भर की सीढ़ियां चांदनी पर आयी हैं।

Nijanand App

७१. चौबीस हांस के मोहोल का खड़ा चित्र

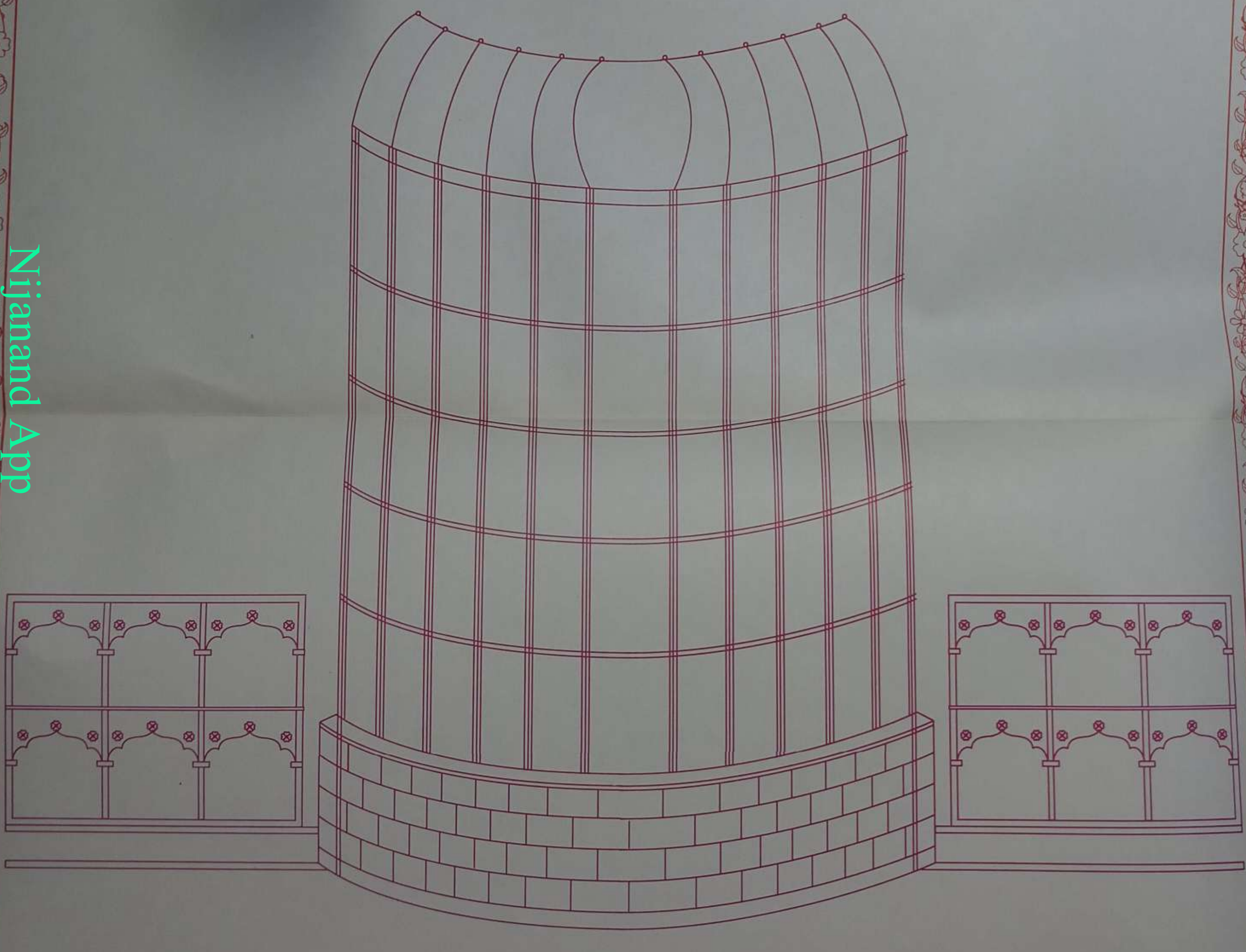

Nijanand App

७१-चौबीस हांस के मोहल का खड़ा चित्र

प्रथम जमीन से भोम भर का ऊंचा चबूतरा उठा है। किनारे पर कठेड़ा आया है। एक दिशा में २५० मंदिर की चौड़ाई लेकर भोम भर नीचे सीढ़ी उतरी है। इस तरह चारों दिशा में सीढ़ी उतरी हैं। किनार से ५०० मंदिर की रौंस की जगह छोड़ कर मंदिरों की एक हार आयी है। २० मंदिर और चार दरवाजें आये हैं। मंदिर ५०० मंदिर का लंबा और २५० मंदिर का चौड़ा आया है। दरवाजें का मंदिर १००० मंदिर का लंबा और २५० मंदिर का चौड़ा आया है। इस प्रकार से सब मंदिर और दरवाजें आये हैं। प्रथम मंदिरों की हार की गृद १४००० मंदिर की आयी है। लंबाई-चौड़ाई ४६६७ मंदिर की आयी है। १२५ मंदिर एक हांस से लिए १२५ मंदिर दूसरे हांस से लिए तब २५० मंदिर का लंबा-चौड़ा गुर्ज बना। जिसमें पांच दरवाजे आये हैं। तीन दरवाजे गुर्ज की तीन दीवारों में आये हैं। और दो दरवाजे मंदिरों में जाने के वास्ते आये हैं। इस प्रकार से चारों तरफ २४ गुर्ज आये हैं दो गुर्जों के बीच में २५० मंदिर की जगह आयी है। जिसमें ८४ मंदिर का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं ८३-८३ मंदिर की दीवार आयी है। दो दरवाजे दोनों पाखों की दीवारों में आये हैं। और एक दरवाजा भितरी तरफ आया है। दो दरवाजे दो गुर्जों में जाने के वास्ते आये हैं। इसी प्रकार से सब मंदिर आये हैं।

Nijanand App

७२. जवेरों की नहरों के नौ फिरावे

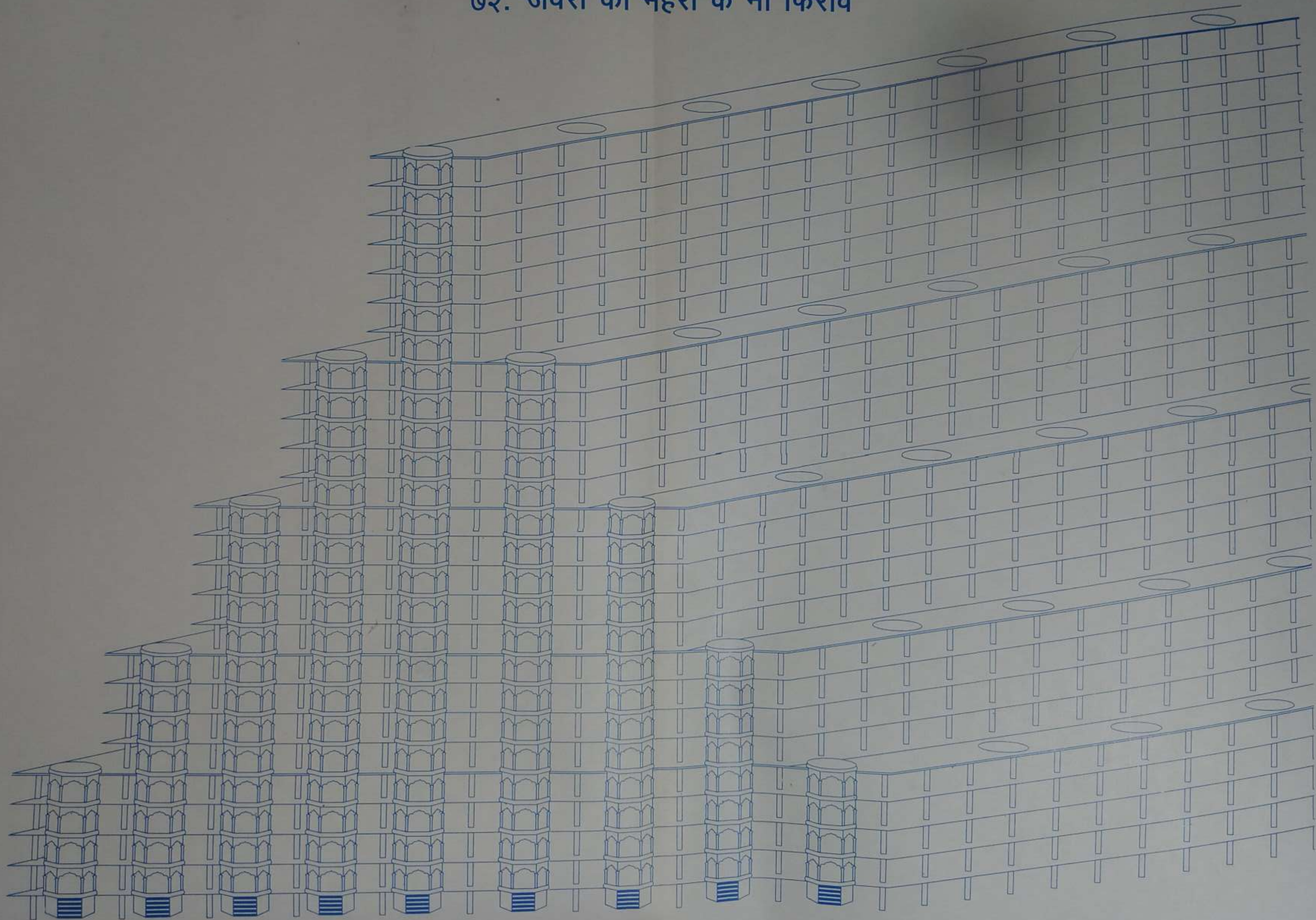

७२-जवेरों की नहरों के नव फिरावे

२४ हांस के मोहल के साथ दक्षिण तरफ जवेरों की नहरें आयी हैं। इन जवेरों की नहरों की चौड़ाई ४५०००० कोस की होती है। कुंजवन के साथ एक नहर आयी है, जो ४०० कोस की होती है। जिसके मध्य भाग में १०० कोस में पानी और १५०-१५० कोस की जगह दोनों तरफ जो रही, उसके ५० कोस में पाल और ५०-५० कोस की दोनों तरफ रौंस आयी है। यही बनक दूसरी तरफ भी आयी है। यह नहर चारों तरफ घूमकर फिर उसी जगह मिल गयी है। कुंज-निकुंज के साथ, पश्चिम चौगान के साथ बड़ोवन के साथ, लगकर पुखराज से ४५०००० कोस उत्तर होकर तथा अक्षर धाम से ४५०००० कोस दूर पूर्व होकर दक्षिण में आकर मिली है। इस नहर की पाल के ऊपर, जो कुंजवन के साथ आयी है। इसकी परिकरमा ६२२५००० कोस की हाती है। इस नहर के ५०००० कोस की दूरी पर दूसरी नहर आयी है। इसी प्रकार से ५०००० कोस जगह बीच-बीच में छोड़कर १० नहरें आने से ९ चौक बने हैं। चौड़ाई तरफ ५०००० कोस पर नहर आयी है, तो लंबाई (गृद) में १२५ नहरें आयी हैं जिसमें १२४ चौक आए हैं। ये चौक नहर सहित ५०००० कोस के लंबे चौड़े होते हैं। जहां पर चार नहरों के कोने जुड़े हैं। वहां चार चेहेबच्चे आए हैं। दो चेहेबच्चों के मध्य नहर में पुल आया है। इसी प्रकार से सब नहरें आयी हैं।

Nijanand App

७३. चार पहल की हवेली

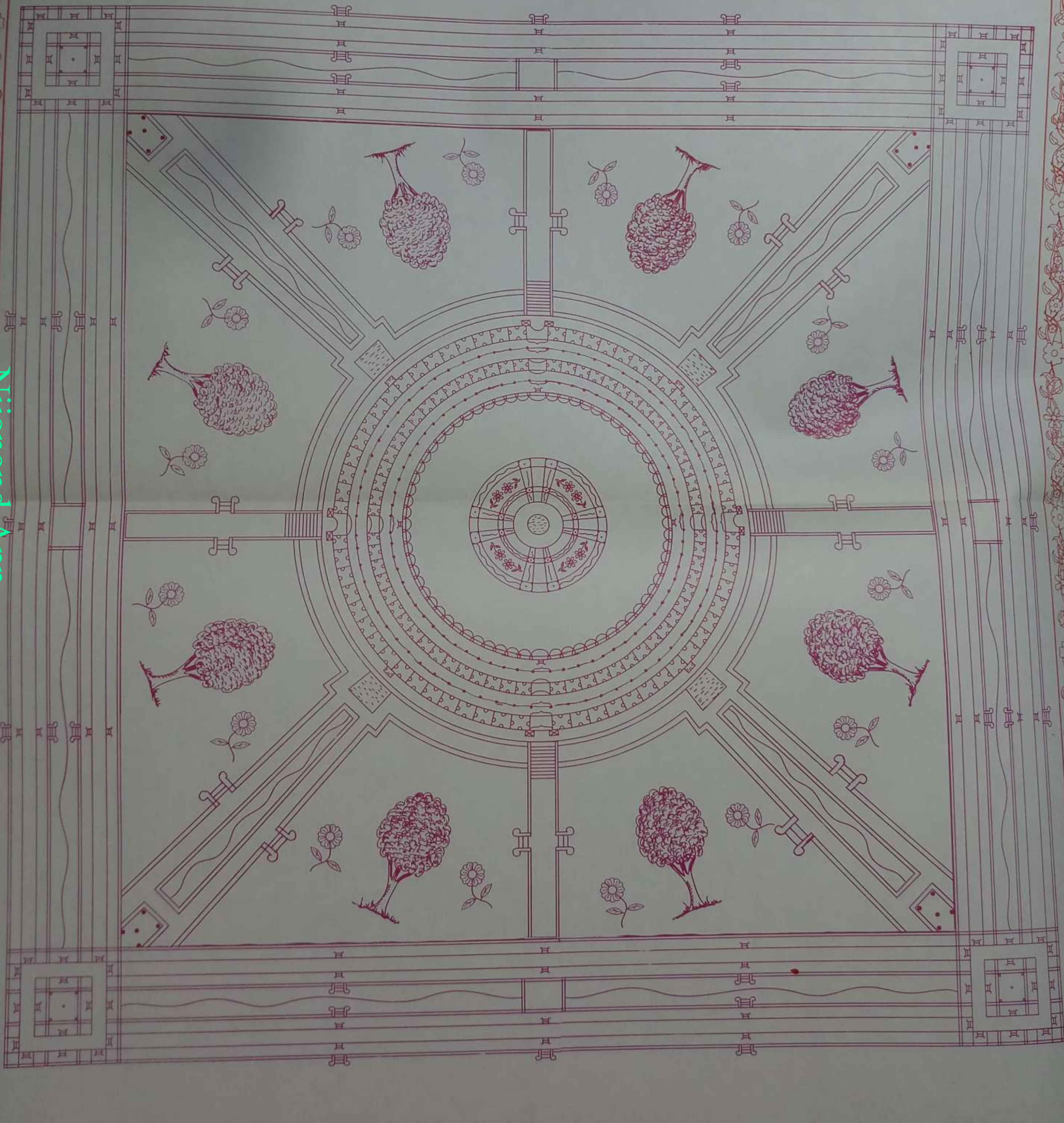

Nijanand App

७३-चार पहल की हवेली

जवेरों की नहरों के एक चौक के तीसरे हिस्से में १६६६७ कोस का लंबा-चौड़ा एक गोल चबूतरा भोम भर का ऊंचा आया है, जिसकी गृद ५०००० कोस की आयी है। चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की चौड़ाई १३३ कोस की आयी है। सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है। ४०० कोस की रौंस की जगह छोड़कर चार पहल की हवेली गोल घेर करके आयी है। इस हवेली के मध्य भाग में ४०० कोस का दरवाजा आया है। ऐसे चारों दिशा में आए हैं। इन दरवाजों के दाएं-बाएं ८-८ मोहल आए हैं। इन मोहलों के पाखे की दीवाल के साथ लगकर रौंस के बाहरी तरफ २०० कोस का लंबा-चौड़ा चौखूटा गुर्ज आया है। इसी प्रकार चारों कोनों पर चार गुर्ज आए हैं। मोहल तो गोलाई में हैं। गुर्ज लगने से चार पहल का मोहल कहा जाता है। एक हवेली में ६४ मोहल और ४ दरवाजे आए हैं।

इन मोहलों के भीतर ९०० कोस पर ६४ थंभों की एक हार आयी है। इन थंभों के भीतरी तरफ ९०० कोस दूर एक और मोहल की हार आयी है, जिसमें ६४ मोहल और चार दरवाजे आए हैं। एक मोहल में २८ मोहल आए हैं। इन मोहोलों की बनक बाहरी मोहलों के समान आयी है। इन मोहलों की हार के आगे ९०० कोस दूरी पर ६४ थंभों की एक हार आयी है। इन थंभों से ९०० कोस दूर आगे कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। चबूतरे की किनार पर चारों दिशा में सीढ़ियां हैं (बाकी में कठेड़ा शोभा लेता है)। इस चबूतरे की लंबाई-चौड़ाई ५०६७ कोस की और गृद १५२०१ कोस की आयी है। इस चबूतरे के तीन भाग हुए। मध्य के एक भाग में १६८९ कोस का चेहेबच्चा आया है। चारों दिशा में चार चांदे उतरे हैं। कमर भर की सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। चारों तरफ कठेड़ा आया है। इस चेहेबच्चे के मध्य भाग में पानी का एक स्तून (पाईप) आया है जो चांदनी पर जाकर खुला है। दूसरे हिस्से में दाएं-बाएं ८४४-१/२-८४४-१/२ कोस में बगीचा आया है, तीसरे हिस्से में ८४४-१/२-८४४-१/२ कोस में सुंदर गिलम बिछी है, जहां पर बैठक होती है। बगीचा और कुण्ड एक ही भोम में आया है। ऊपर की भोमों में चबूतरा व गिलम बिछी है, और सिंहासन आया है। चांदनी पर जाकर नीचे जितना चेहेबच्चा था, उतना ही लंबा-चौड़ा चेहेबच्चा (ताल) कुण्ड चांदनी पर बना है। चारों दिशा में ४ चांदो के दोनों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं। बाकी में कठेड़ा है। चेहेबच्चे के मध्य भाग में ५ फव्वारें आए हैं। ४ फव्वारों का पानी उछल कर चारों दिशा के कुण्डों में कमानों द्वारा पड़ता है। पांचवां उछलकर उसी में पड़ता है। अब कुण्ड से गुर्जों के सामने चार नहरें निकली हैं। इस प्रकार छत पर पानी देकर और छत के बीच में होकर पानी कुण्डों में आता है। इन गुर्जों के कुण्डों से पानी नीचे चबूतरे की दीवाल से लगकर जमीन से कमर भर ऊंचे कुण्डों में चार चादरों में होकर चारों दिशा में चारों कुण्डों में पड़ता है। चांदनी पर जो कुण्ड आये हैं, उनके चारों दिशा में चांदनी आयी है। इन चारों कुण्डों में से ४ नहरों में होकर पानी जाता है। ये मोहोल चार भोम के आए हैं।

Nijanand App

७४. एक मोहोल का दृश्य

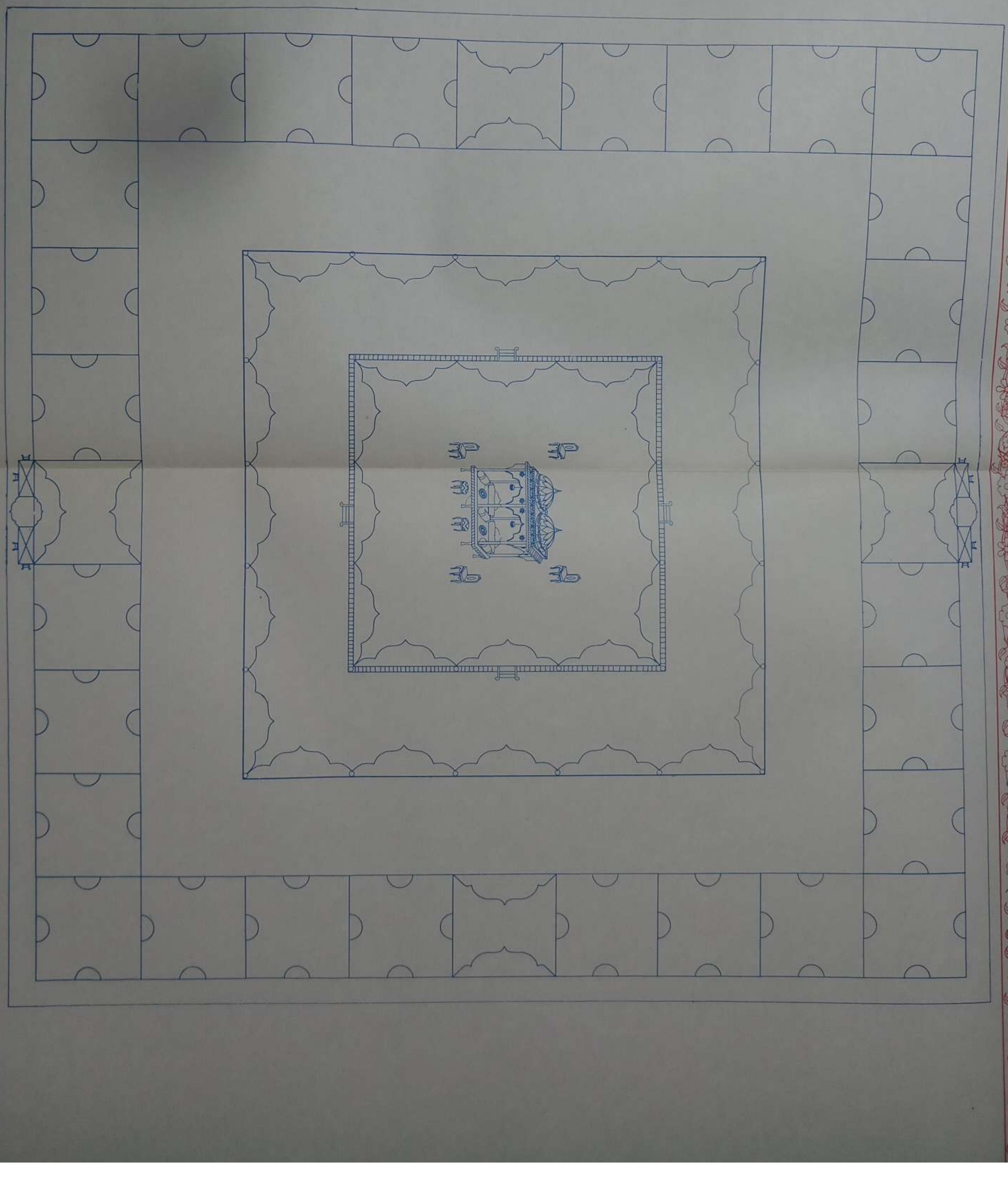

Nijanand App

७४-एक मोहोल का दृश्य

एक मोहल ९०० कोस का लंबा-चौड़ा बराबर है। एक दिशा में ९ मंदिर हैं तथा एक मंदिर १०० कोस का है। बाहर की तरफ मध्य में एक मंदिर का दरवाजा आया है। ३३ कोस का दरवाजा तथा दाएं-बाएं ३३-३३ कोस में चौखूटे दो गुर्ज आए हैं। दाएं-बाएं ४-४ मंदिर आए हैं, जिनमें ३३ कोस का दरवाजा है। हर एक मंदिर में देखने के ४-४ तथा गिनती के ३-३ दरवाजे हैं। हर मंदिर में पाखे का दरवाजा दोनों तरफ जवाब देता है। इसी प्रकार की बनक भीतरी तरफ आयी है। १०० कोस में दरवाजा है जिसमें ३३ कोस का दरवाजा तथा दाएं-बाएं ३३-३३ कोस के कमर भर ऊंचे चबूतरे आए हैं। इस दरवाजे के दाएं-बाएं ४-४ मंदिर आए हैं। पाखे में ६-६ मंदिर आए हैं। जिसमें एक मंदिर का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं ३-३ मंदिर आए है। हर मंदिर में देखने के ४-४ तथा गिनती के ३-३ दरवाजे आए हैं। एक भीतरी तरफ, दो पाखे में, एक दरवाजा दूसरे मोहल की तरफ बाहरी दीवाल में हैं, सो दूसरे मोहल में भी काम देता है। दो मोहलों के बीच में जो दीवाल आयी है, वो एक ही है। इस वास्ते पाखे में गुर्ज आदि नहीं आए है। एक मोहोल में २८ मंदिर और ४ दरवाजे आए हैं। इसके भीतर १०० कोस की दूरी पर एक कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है, जिसकी किनार पर १२ थंभ हैं, मध्य में गिलम, सिंहासन आदि आए हैं। यह एक मोहल का विस्तार है। ऐसे ही ६४ मोहल आए हैं।

Nijanand App

७५. आठ पहल की हवेली

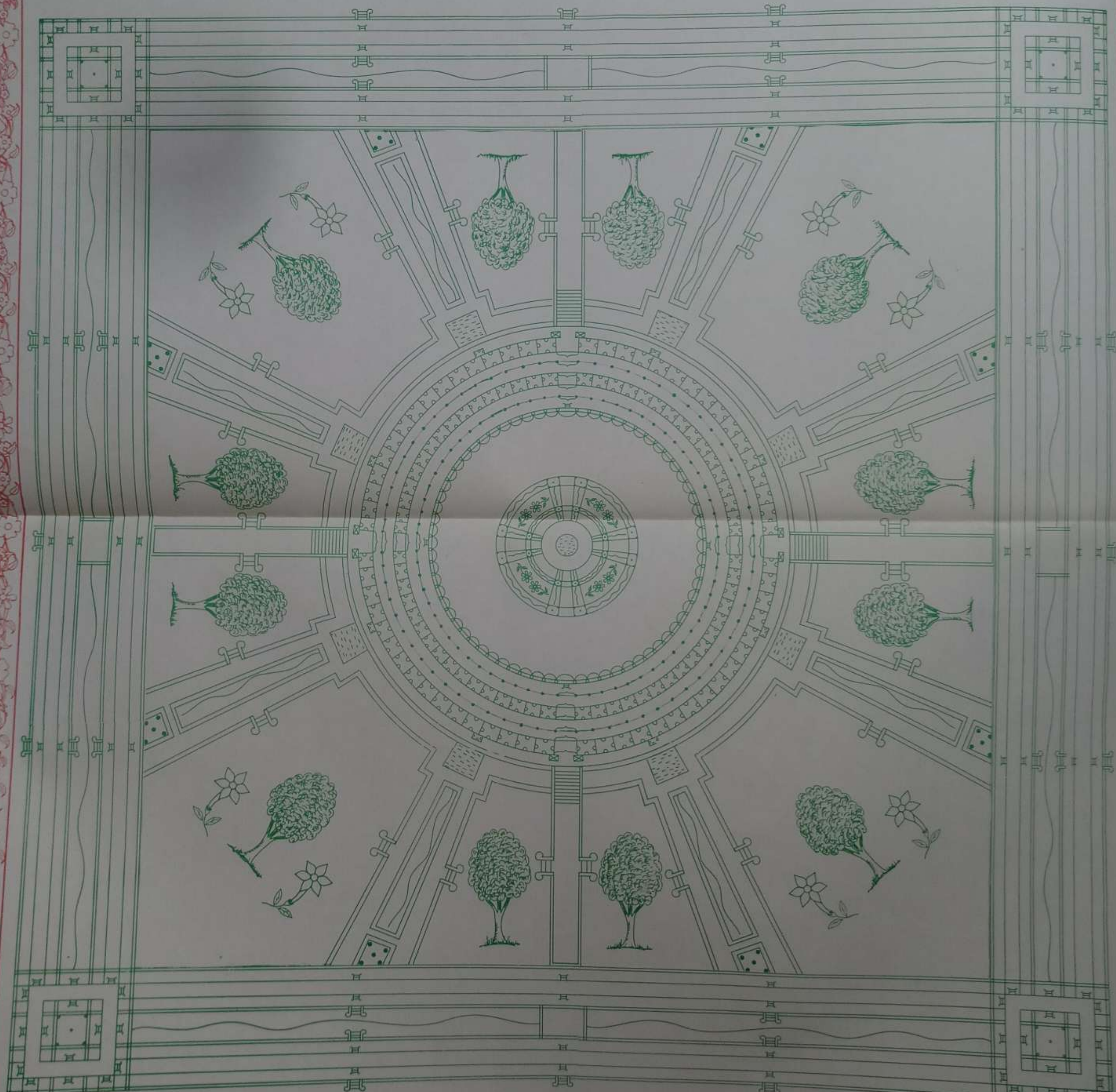

Nijanand App

७५-आठ पहल की हवेली

एक चौक ५०,००० कोस का है। इस चौक के तीसरे भाग में गोल चबूतरा भोम भर का ऊंचा आया है। चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है। इस चबूतरे के चारों तरफ ४०० कोस की रौंस जमीन से कमर भर ऊंची आयी है। इसमें आठ गुर्ज हैं, जो चौरस हैं। चारों दिशा में चार दरवाजे आए हैं। हर दरवाजे के दाएं-बाएं चार-चार मोहल की दूरी पर गुर्ज आए हैं। इसी तरह से चारों तरफ आए हैं। दो गुर्जों के बीच में आठ मोहल आए हैं। इनकी ऊंचाई भी आठ भोम की आयी है। चबूतरे पर रौंस की जगह छोड़कर मोहलों की पहली हार आयी है, जिसमें ६४ मोहल और चार दरवाजे आए हैं। फिर थंभों की एक हार आयी है। जिससे कुछ दूरी पर दूसरी मोहलों की हार आयी है। इसके बाद फिर थंभों की दूसरी हार आयी है जिसके आगे कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। इसके किनार पर थंभ आए हैं। थंभों के बीच कठेड़ा आया है। मध्य में तीसरे हिस्से में चेहेबच्चा आया है, जिसके मध्य में पानी का स्तून (पाईप) है, जो चांदनी पर जाकर खुला है। एक हिस्से में बगीचा है तथा एक हिस्से में गिलम, सिंहासन आदि आए हैं। आठ भोम नौवीं चांदनी आयी है। मध्य कुण्ड से चांदनी पर आठ कमानों द्वारा पानी गुर्जों के कुण्डों में पड़ता है, और बीच का एक फव्वारा उसी में पड़ता है। ऊपर से आठ चादरें गिरती हैं। नीचे रौंस पर ८ कुण्ड आए हैं। ८ कुण्डों के सामने ८ नहरें आयी हैं। आगे रौंस के साथ आठ चेहेबच्चे आए हैं। इस हवेली के चारों दिशा में आठ बगीचे आए हैं। वृक्षों की ऊंचाई नौ भोम की आयी है। इसमें बड़ोवन के वृक्ष आए हैं। इस फिरावे में कुल १२४ हवेली चारों तरफ घूमकर आयी है।

Nijanand App

७६. सोलह पहल की हवेली

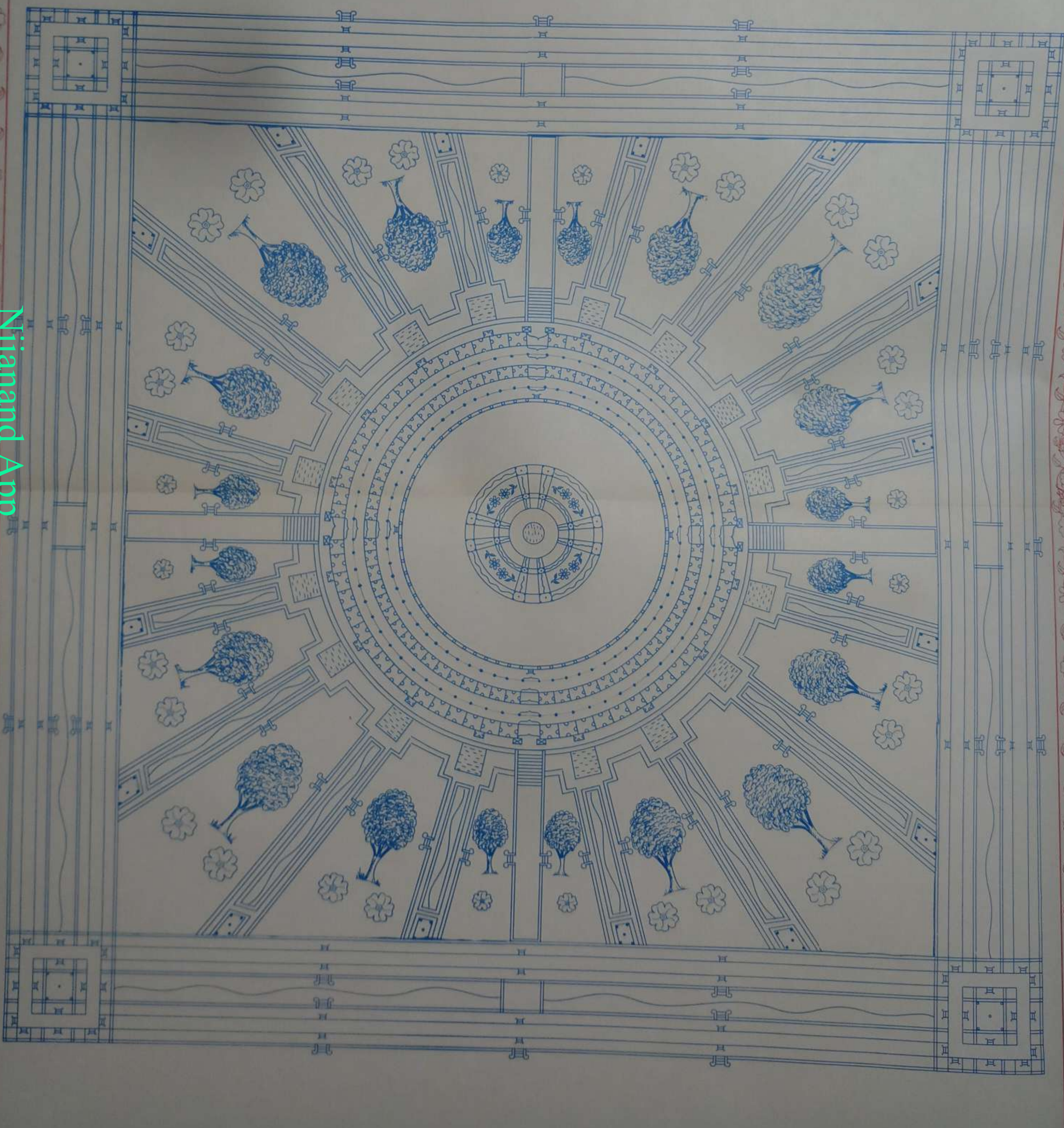

Nijanand App

७६-सोलह पहल की हवेली

एक चौक ५०,००० कोस का लंबा-चौड़ा आया है। इस चौक के तीसरे भाग में गोल चबूतरा भोम भर का ऊंचा आया है। चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है। इस चबूतरे के चारों तरफ ४०० कोस की रौंस जमीन से कमर भर ऊंची आयी है। इसमें १६ चौरस गुर्ज आए हैं। चारों दिशा में चार दरवाजे आये हैं। हर दरवाजे के दाएं-बाएं दो-दो मोहल की दूरी पर गुर्ज आये हैं। इसी तरह से चारों तरफ आये हैं। दो गुर्जों के बीच में चार मोहल आये हैं। इनकी ऊंचाई भी १६ भोम की आयी है। चबूतरे पर रौंस की जगह छोड़कर मोहलों की पहली हार आयी है। फिर थंभों की एक हार आयी है, जिसके आगे दूसरी मोहलों की हार आयी है। इसके बाद फिर थंभों की दूसरी हार आयी है। जिसके आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है, जिसके किनार पर थंभ आए हैं। थंभों के बीच कठेड़ा आया है। मध्य के तीसरे हिस्से में चेहेबच्चा आया है। जिसके मध्य में पानी का स्तून (पाईप) आया है, जो चांदनी पर जाकर खुला है। एक हिस्से में बगीचा है तथा एक हिस्से में गिलम, सिंहासन आदि आये हैं। १६ भोम तथा १७वीं चांदनी है। मध्य कुण्ड से चांदनी पर १६ कमानों द्वारा पानी गुर्जों के कुण्डों में पड़ता है और बीच के एक फव्वारे का पानी वापस उसी में पड़ता है। ऊपर से १६ चादरें (धारायें) नीचे रौंस पर १६ कुण्डों में गिरती हैं। १६ कुण्डों के सामने १६ नहरें आयी हैं। आगे रौंस के साथ १६ चेहेबच्चे आए हैं। इस हवेली के चारों दिशा में १६ बगीचे आए हैं ये वृक्ष मधुवन के आए हैं। एक फिरावे में कुल १२४ हवेलियां चारों तरफ घूमकर आयी हैं। वृक्षों की ऊंचाई १७ भोम की है चांदनी सबकी एक ही है।

Nijanand App

७७. बत्तीस पहल की हवेली

Nijanand App

७७-बत्तीस पहल की हवेली

एक चौक ५०,००० कोस का लंबा-चौड़ा है। इस चौक के तीसरे भाग में गोल चबूतरा भोम भर का ऊंचा आया है। चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है। इस चबूतरे के चारों तरफ ४०० कोस की रौंस जमीन से कमर भर ऊंची आयी है। इसमें ३२ चौरस गुर्ज आए हैं। चारों दिशा में चार दरवाजे आये हैं। हर दरवाजे के दाएं-बाएं एक-एक मोहल की दूरी पर गुर्ज आये हैं। इसी तरह से चारों तरफ आये हैं। दो गुर्जों के बीच में दो मोहल आए हैं। इनकी ऊंचाई ३२ भोम की आयी है। चबूतरे पर रौंस की जगह छोड़कर मोहलों की पहली हार आयी है। फिर थंभों की एक हार आयी है, जिसके आगे दूसरी मोहलों की हार आयी है, इसके बाद फिर थंभों की दूसरी हार आयी है। इसके आगे कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है, जिसके किनार पर थंभ हैं। थंभों में कठेड़ा आया है। मध्य के तीसरे हिस्से में चेहेबच्चा आया है, जिसके मध्य में पानी का स्तून (पाईप) आया है, जो चांदनी पर जाकर खुला है। एक हिस्से में बगीचा है तथा एक हिस्से में गिलम, सिंहासन आदि आए हैं। इसकी ३२ भोम ३३वीं चांदनी है। मध्य कुण्ड से चांदनी पर ३२ कमानों द्वारा पानी गुर्जों के कुण्डों में पड़ता है। ऊपर से ३२ चादरें (धाराएं) नीचे रौंस पर ३२ कुण्डों में गिरती हैं। ३२ कुण्डों के सामने ३२ नहरें आयी हैं। आगे रौंस के साथ ३२ चेहेबच्चे आए हैं। इस हवेली के चारों दिशा में ३२ बगीचे आए हैं। ये वृक्ष मधुवन के आए हैं। वृक्षों की ऊंचाई ३३ भोम की है। चांदनी एक है, क्योंकि चबूतरा भोम भर ऊंचा है।

Nijanand App

७८. चौंसठ पहल की हवेली

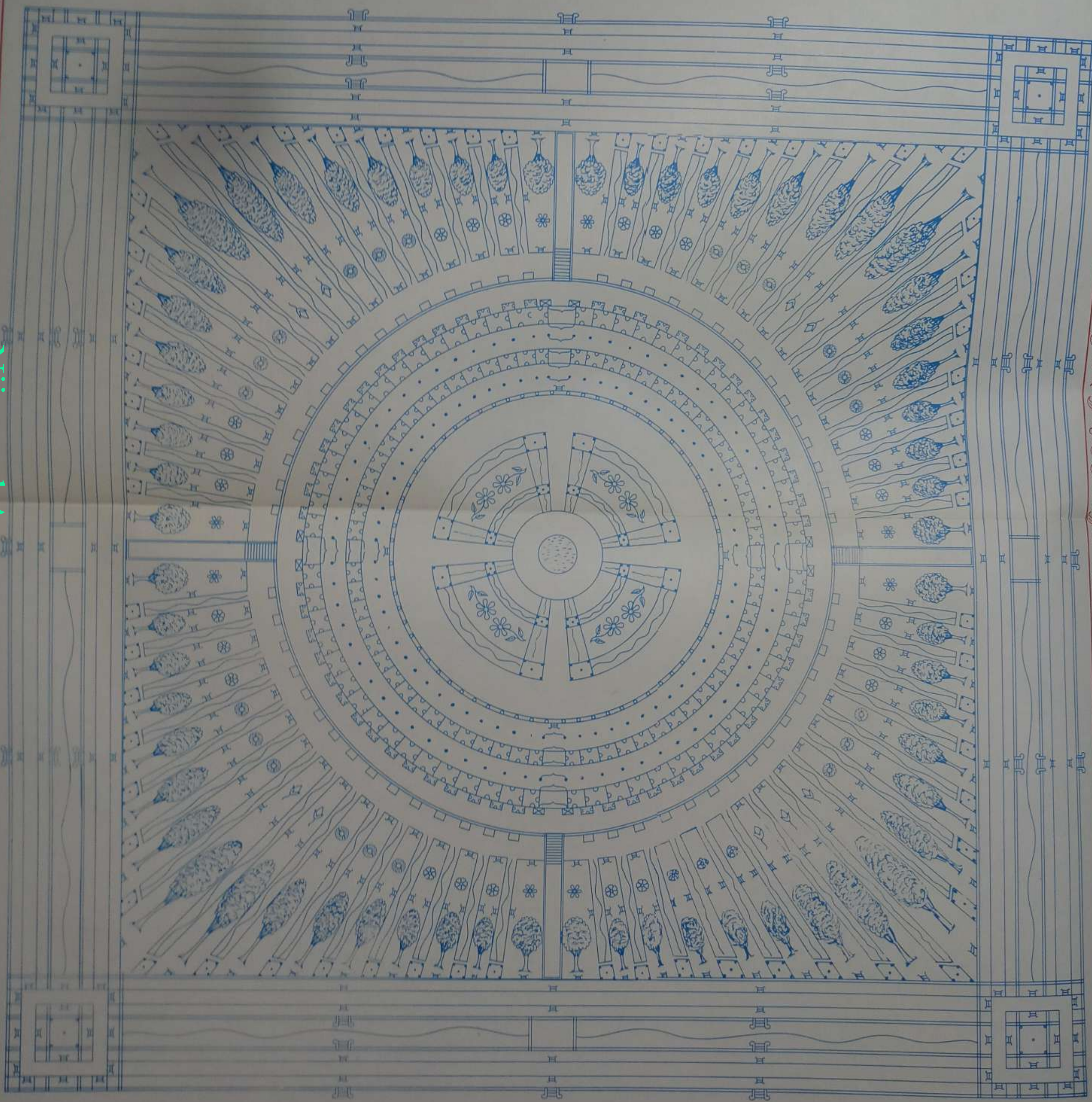

Nijanand App

७८-चौंसठ पहल की हवेली

एक चौक ५०,००० कोस का लंबा-चौड़ा है । इस चौक के तीसरे भाग में गोल चबूतरा भोम भर का ऊंचा आया है । चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है । इस चबूतरे के चारों तरफ ४०० कोस की रौंस जमीन से कमर भर ऊंची आयी है । इसमें ६४ गुर्ज आये हैं । चारों दिशा में चार दरवाजे आए हैं । हर दरवाजे के दाएं-बाएं एक-एक गुर्ज आये हैं । इसी तरह से चारों तरफ आए हैं । दो गुर्जों के बीच में एक मोहल आया है । इनकी ऊंचाई ६४ भोम की आयी है । चबूतरे पर रौंस की जगह छोड़कर ६४ मोहलों की पहली हार आयी है । फिर थंभों की एक हार आयी है, जिसके आगे दूसरी मोहलों की हार आयी है । फिर थंभों की दूसरी हार आयी है । इसके आगे कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है, जिसके किनार पर थंभ हैं थंभों में कठेड़ा आया है । मध्य के तीसरे हिस्से में चेहेबच्चा आया है, जिसके मध्य में पानी का स्तून (पाईप) आया है, जो चांदनी पर जाकर खुला है । एक हिस्से में बगीचा है तथा एक हिस्से में गिलम, सिंहासन आदि आए हैं । चौंसठ पहल की हवेली में ६४ भोम आयी हैं । मध्य कुण्ड से चांदनी पर ६४ कमानों द्वारा पानी गुर्जों के कुण्डों में पड़ता है । मध्य के फव्वारे का पानी वापस उसी में पड़ता है । ऊपर से पानी ६४ चादरों (धाराओं) में नीचे रौंस पर ६४ कुण्डों में गिरता हैं । ६४ कुण्डों के सामने ६४ नहरें आयी हैं आगे ६४ चेहेबच्चे आये हैं । इस हवेली के चारों दिशा में ६४ बगीचे आए हैं ये वृक्ष महावन के आये हैं वृक्षों की ऊंचाई ६५ भोम की है, परन्तु चांदनी बराबर आयी है, क्योंकि चबूतरा भोम भर का ऊंचा है । जिस प्रकार से ४-८-१६-३२-६४ पहल के मोहल का ब्यान हुआ है, उसी प्रकार ६४ पहल की हवेली के बाद ३२-१६-८-४ पहल की हवेली चारों तरफ घेरकर आयी हैं । इन दस नहरों का पानी (जो पहल की हवेलियों के बीच-बीच में आया हैं) एक हांस दक्षिण तरफ चलकर महानद में समा जाता है । जवेरों की नहरों का विस्तार ४,५०,००० कोस का है ।

Nijanand App

७९. जवेरों के मोहोल की चांदनी

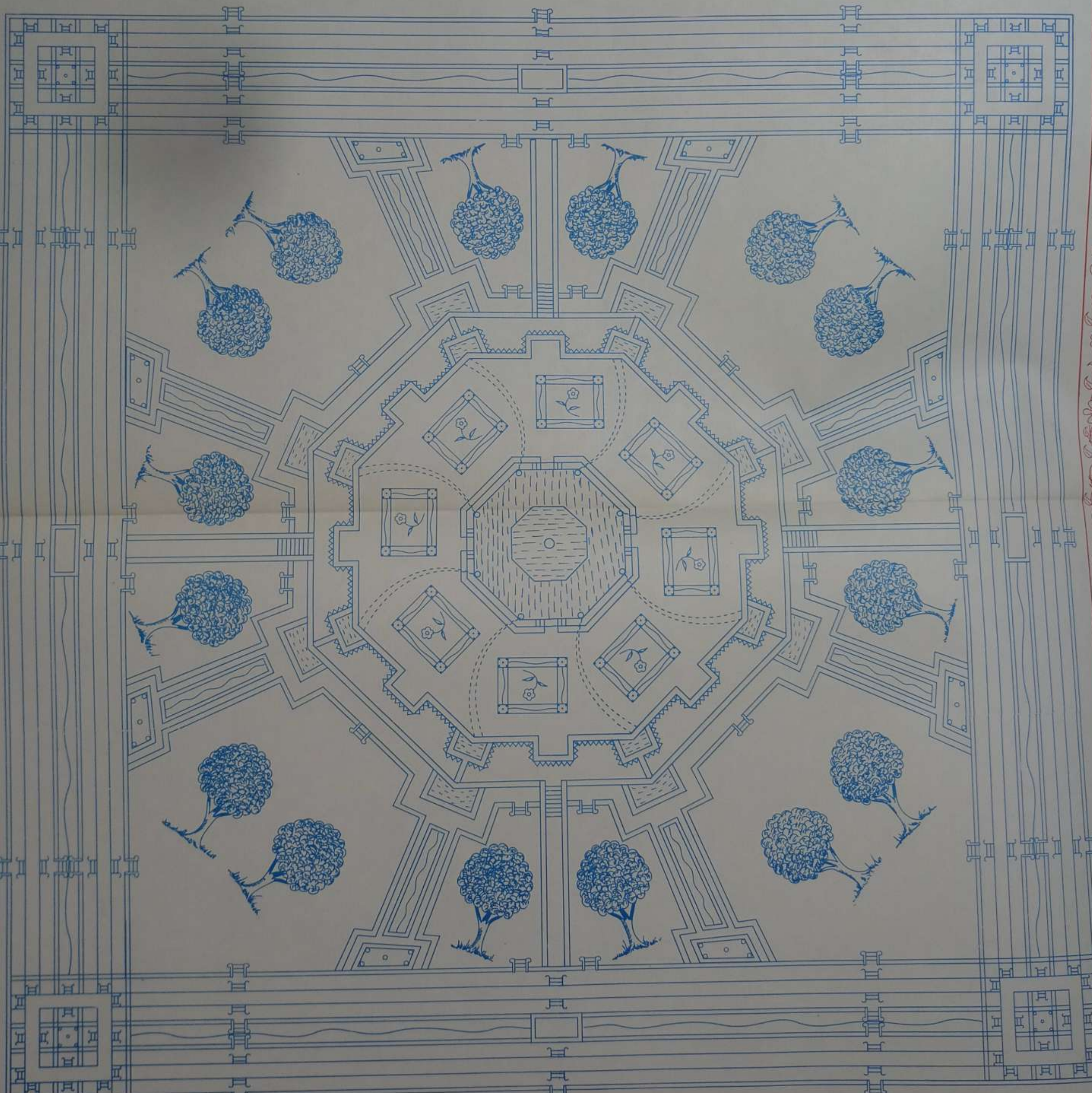

Nijanand App

७९-जवेरों के महलों की चांदनी

सभी जवेरों के महलों की चांदनी एक जैसी ही आयी है। फर्क केवल पहलों का ही है। आठ पहल के जवेरों की चांदनी का ब्यान कर रहे हैं। इसी प्रकार सभी समझ लेना चाहिए।

आठ पहल के जवेरों के महल की चांदनी पर चेहेबच्चों से ९ फव्वारे छूटते हैं। आठ फव्वारे तो चांदनी पर बने आठ गुर्जों के कुण्डों में कमानों (मेहराबों) के रूप में गिरते हैं। नवां फव्वारा चेहबच्चे के बीच में ऊपर चकरी खाकर गिरता है। चांदनी के गुर्जों के कुण्डों से आठ घड़नालों (धाराओ) के रूप में जमीन पर बने हुए आठ कुण्डों में नव भोम के ऊपर से गिरता है। इन कुण्डों से पानी आगे नहरों के रूप में होकर, मोहल के चारों तरफ बगीचों, नहरों तथा चेहबच्चों में होते हुए दक्षिण दिशा में बड़ी नहर के अन्दर मिल जाता है।

Nijanand App

८०. माणिक पहाड़

Nijanand App

८०-माणिक पहाड़

महानद से महानद तक २ करोड़ ३६-१/२ लाख कोस की लंबाई-चौड़ाई आयी है। इसके मध्य में ४८ लाख कोस की गृद का एक भोम ऊंचा चबूतरा उठा है। १२००० हांस की १६ लाख कोस लंबाई-चौड़ाई हुई। १०० कोस की चौड़ाई में चारों दिशा में सीढ़ियां उतरी हैं। बाकी जगह पर कठेड़ा आया है। ४०० कोस रौंस की जगह छोड़कर १२००० हांस की लंबी एक मंदिर की मोटी दीवाल आयी है। यह दीवाल एक मंदिर की मोटी है, जिससे इसका नाम मंदिरी दीवाल रखा गया है। चबूतरे के किनारे से ४०० कोस की जगह छोड़कर १२००० हवेलियों की कतारें आयी हैं। एक-एक भोम ४०० कोस की ऊंची आयी है। माणिक पहाड़ ४८ लाख कोस ऊंचा है अर्थात् १२,००० भोम आयी हैं। बारह हजार हांस में १२ हजार हवेलियों के बारह हजार दरवाजे आए हैं। चार दरवाजे चारों दिशा के बड़े आए हैं। १२००० दरवाजों के २४,००० चबूतरे हैं उन चबूतरों पर २४००० चौखूंटे गुर्ज शोभायमान हैं। हर हांस के कोने पर गोल गुर्ज आए हैं। इसके लिए ५० कोस एक हांस के लिए तथा ५० कोस दूसरे हांस के लिए, इस १०० कोस में गोल गुर्ज आया है, जिसमें ६-६ दरवाजें आए हैं। इस प्रकार, घेर करके १२००० गुर्ज आए हैं। दरवाजों के भीतर दो हार थंभों की चारों तरफ आयी हैं। जिसके आगे १२००० हवेलियां घेर करके आयी हैं। दो हवेलियों के दाएं-बाएं भी दो हार थंभों की आयी हैं। इस प्रकार फिर लंबाई तरफ दो हारें थंभों की, फिर हवेली आयी है। इसी प्रकार १२,००० हवेलियां लंबाई तरफ भी आयी हैं। तब कुल १४ करोड़ ४० लाख हुई। एक हवेली की लंबाई-चौड़ाई ३०० कोस की है। बड़े चार दरवाजों के भीतरी तरफ पहली हवेली चौरस आयी है, फिर गोल आयी है। इसी प्रकार से आती गई। ६००० गोल हवेली तथा ६००० चौरस हवेली आयी हैं। चौरस हवेली के दाएं-बाएं गोल हवेली और गोल हवेली के दाएं-बाएं चौरस हवेली आयी। एक थंभ की मोटाई एक मोहल जितनी आयी है। इन थंभों के अंदर अनेक प्रकार की मोहोलातें, मंदिर, कोठरियां, नहरें, चेहेबच्चे, बगीचे तथा फव्वारे शोभा ले रहे हैं। हवेली की एक-एक दिशा में ऐसे-ऐसे दस थंभ आए हैं। जहां चार हवेली के चार कोने आए हैं, वहां पर ९ चौक आए हैं। मध्य के चौक में कुण्ड आया है। इस चौक की चार मेहराबों में चार हिंडोले आए हैं। एक हार में १२००० कुण्ड आए हैं। इस प्रकार १२००० कुण्डों की १२००० हारें आयी हैं। एक कुण्ड से दूसरे कुण्ड तक गुप्त नहरें जाती हैं। इस प्रकार से सब हवेलियों को घेर कर नहरें आयी हैं। चार हवेलियों के कोने पर २४ मेहराबें आयी हैं। इस प्रकार सब कुण्डों पर २४-२४ मेहराबें आयी हैं। जहां दो हवेलियों के दरवाजे आमने-सामने आए हैं, वहां पर २४ मेहराबें आयी हैं। इसी प्रकार से सब दरवाजों की शोभा आयी है।

Nijanand App

८१. माणिक पहाड़ का बड़ा दरवाजा तथा हवेलियां

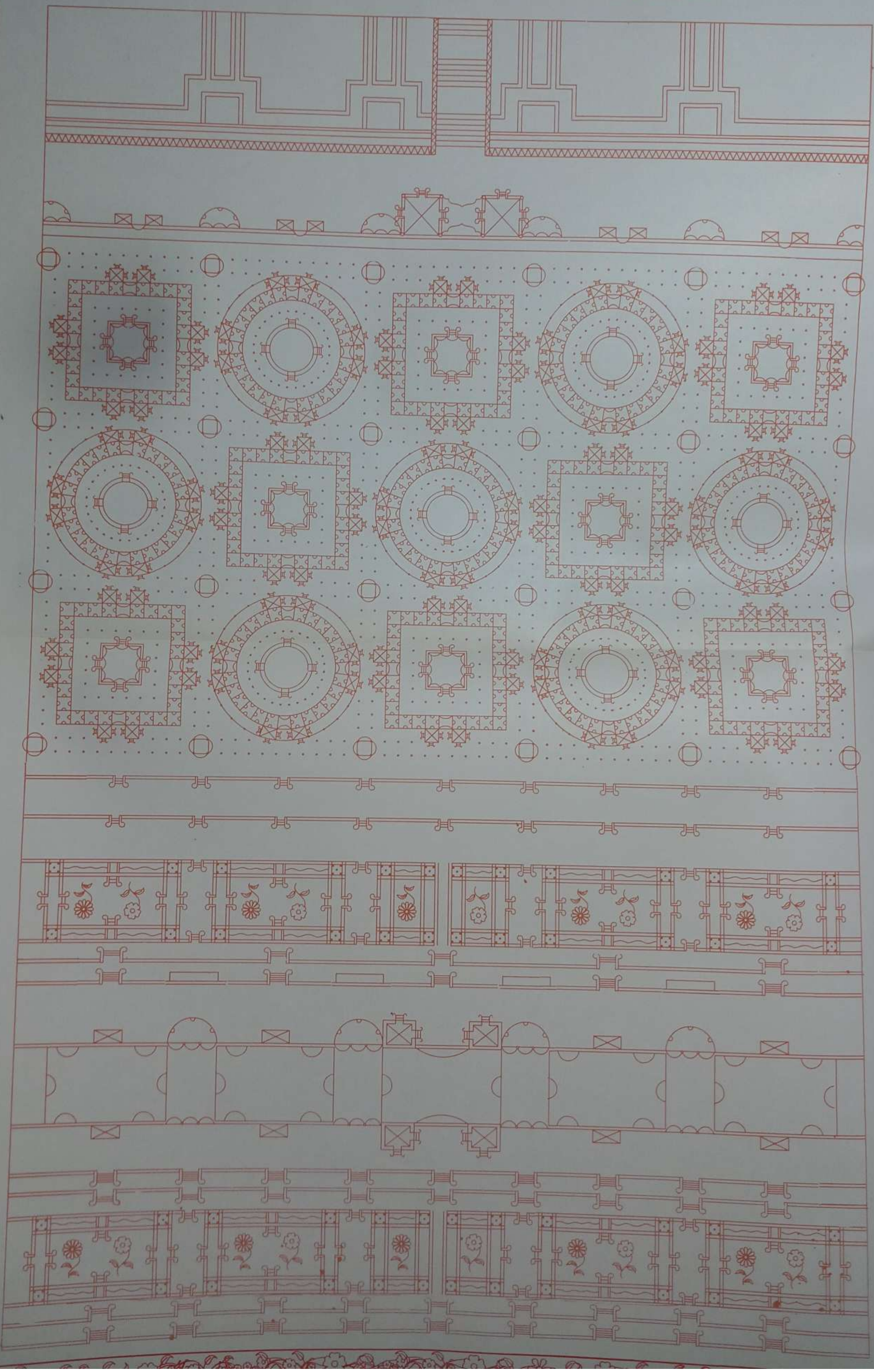

Nijanand App

८१-माणिक पहाड़ का बड़ा दरवाजा तथा हवेलियां

चारों दिशा के चार बड़े दरवाजे आए हैं जिसमें से हर एक दरवाजा ३०० कोस में आया है। मध्य में १०० कोस का दरवाजा है दरवाजे के दाएं-बाएं की १०० कोस की दीवाल के सामने बाहरी रौंस पर १००-१०० कोस के लंबे-चौड़े दो चौरस चबूतरे आये हैं चारों कोनों पर चार थंभ आए हैं एक चबूतरे के तीन तरफ सीढ़ियां हैं और तीन तरफ कठेड़ा आया है। इसी प्रकार दूसरे चबूतरे की शोभा आयी है। दोनों चबूतरों पर १० मेहराबें आयी हैं। चारों दरवाजों में ऐसी ही शोभा आयी है, जो इसी तरह चांदनी तक गयी है।

दरवाजे के भीतरी तरफ दो हार थंभों की चारों तरफ आयी है। इसके आगे १२,००० हवेली घेरकर आयी हैं। फिर आगे लंबाई तरफ दो हार थंभों की है फिर हवेली हैं। इस प्रकार १२००० हवेलियों की १२००० हारें आयी हैं। सब १४ करोड़ ४० लाख हवेली आयी हैं। दो हवेलियों के बीच में भी दो थंभों की हार आयी है। एक हवेली की लंबाई-चौड़ाई ३०० कोस की है। बड़े दरवाजे के भीतरी तरफ पहली चौरस हवेली आयी है। फिर गोल आयी है। इस प्रकार से आती गयी हैं। ६००० गोल हवेली और ६००० चौरस हवेली आयी हैं। चौरस हवेली के दाएं-बाएं गोल हवेली और गोल हवेली के दाएं-बाएं चौरस हवेली आयी है।

Nijanand App

८२. एक हवेली का दृश्य

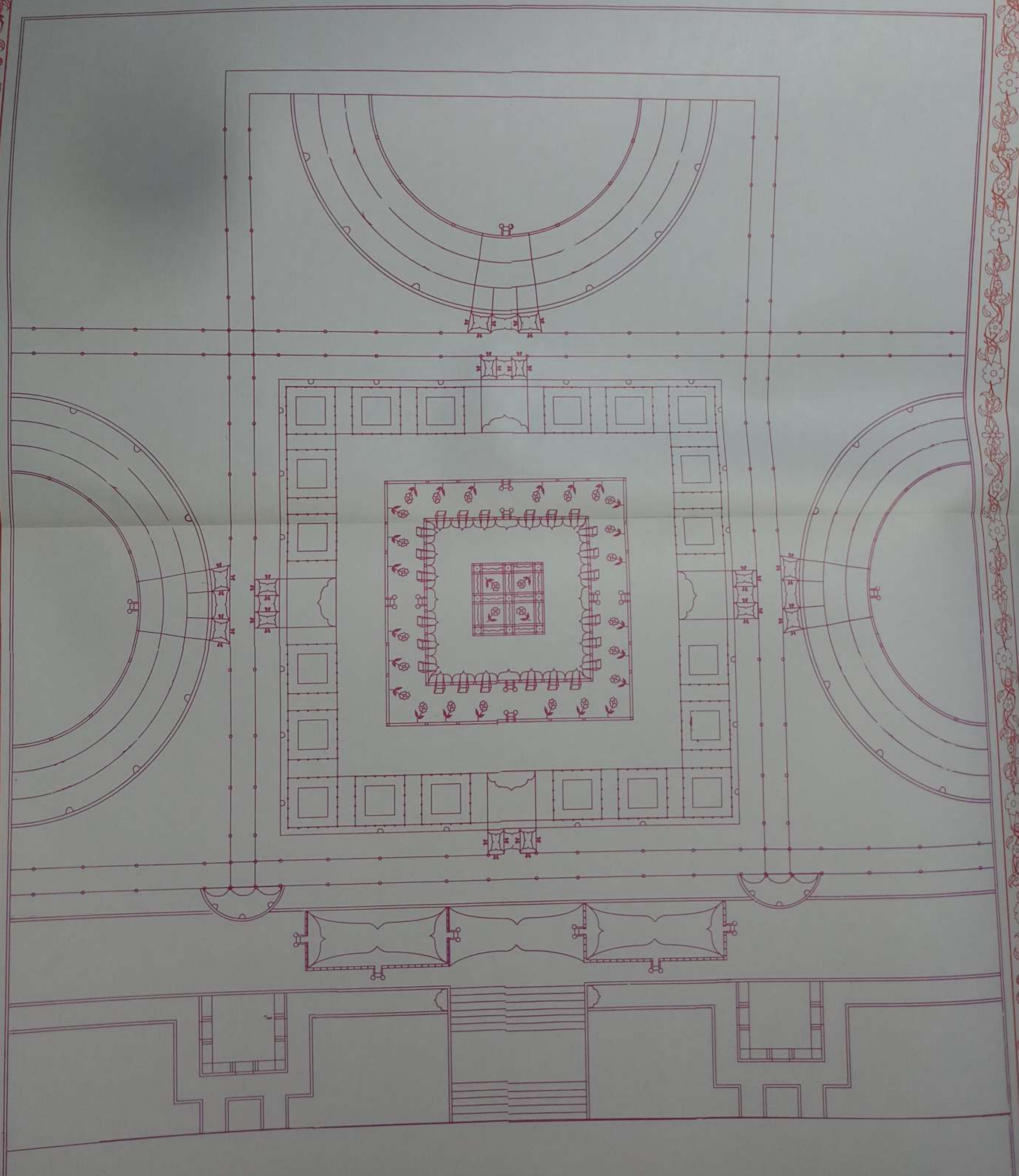

८२-एक हवेली का दृश्य

१२००० हवेलियों की १२,००० हारें आयी हैं, कुल १४ करोड़ ४० लाख हवेलियां हैं। एक हवेली ३०० कोस की लंबी-चौड़ी आयी है। इसकी बाहरी दीवाल पर अक्सी थंभों पर अक्सी मेहराबें आयी हैं। इस अक्सी मेहराब के बीच में तीन मोहल का हवेली का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं दो चबूतरे कमर भर ऊंचे एक-एक मोहल के लंबे-चौड़े आए हैं। इन चबूतरों पर तीन तरफ सीढ़ियां तथा कठेड़ा आया है। चारों कोनों पर चार थंभ आए हैं, जिनमें मेहराबें आयी हैं। इस प्रकार दूसरे चबूतरे पर भी आयी हैं। दो मेहराबें बीच की हैं। इस प्रकार कुल १० मेहराबें हुई। इन दरवाजों की ऊंचाई ३०० कोस की है। इसी प्रकार से चारों दिशा में शोभा आयी है। दरवाजे के भीतर दाएं-बाएं १५००-१५०० मोहल दिखाई देते हैं। एक दिशा के तीन हजार, तथा चारों दिशा के १२००० हुए। दो मोहलों के बीच में दो हारें थंभों की आयी हैं, जिसमें तीन गलियां होती हैं। इस प्रकार से सब मोहलों के दाएं-बाएं त्रिपोलिये आए हैं। जहां पर मोहलों के दरवाजे आमने-सामने आए हैं, वहां पर २४ मेहराबें आयी हैं। एक मोहोल के दाएं-बाएं १०-१० थंभ आए है। हवेलियों की भीतरी तरफ एक हार थंभों की आयी हैं। इन थंभों के आगे कमर भर नीचे १२००० बगीचे आए हैं, जो चारों तरफ घेरकर आए हैं। हर एक बगीचे में नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे आए हैं। इन बगीचों के आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है, जिसके किनार पर थंभ, थंभों में मेहराबें और हिंडोले आए हैं। चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ियां हैं, बाकी में कठेड़ा आया हैं। चबूतरे के तीसरे हिस्से में बाग, बगीचे, नहरें, फव्वारे आदि हैं।

एक हवेली के तीन हिस्से हुए। एक हिस्से में मोहल, दूसरे हिस्से में बाग-बगीचे,और तीसरे हिस्से में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। हवेली की छत ४०० कोस की आयी है। हवेली के अंदर १२,००० मोहल आए हैं, जिनकी ऊंचाई ३०० कोस की आयी है।

Nijanand App

८३. एक मोहोल की शोभा

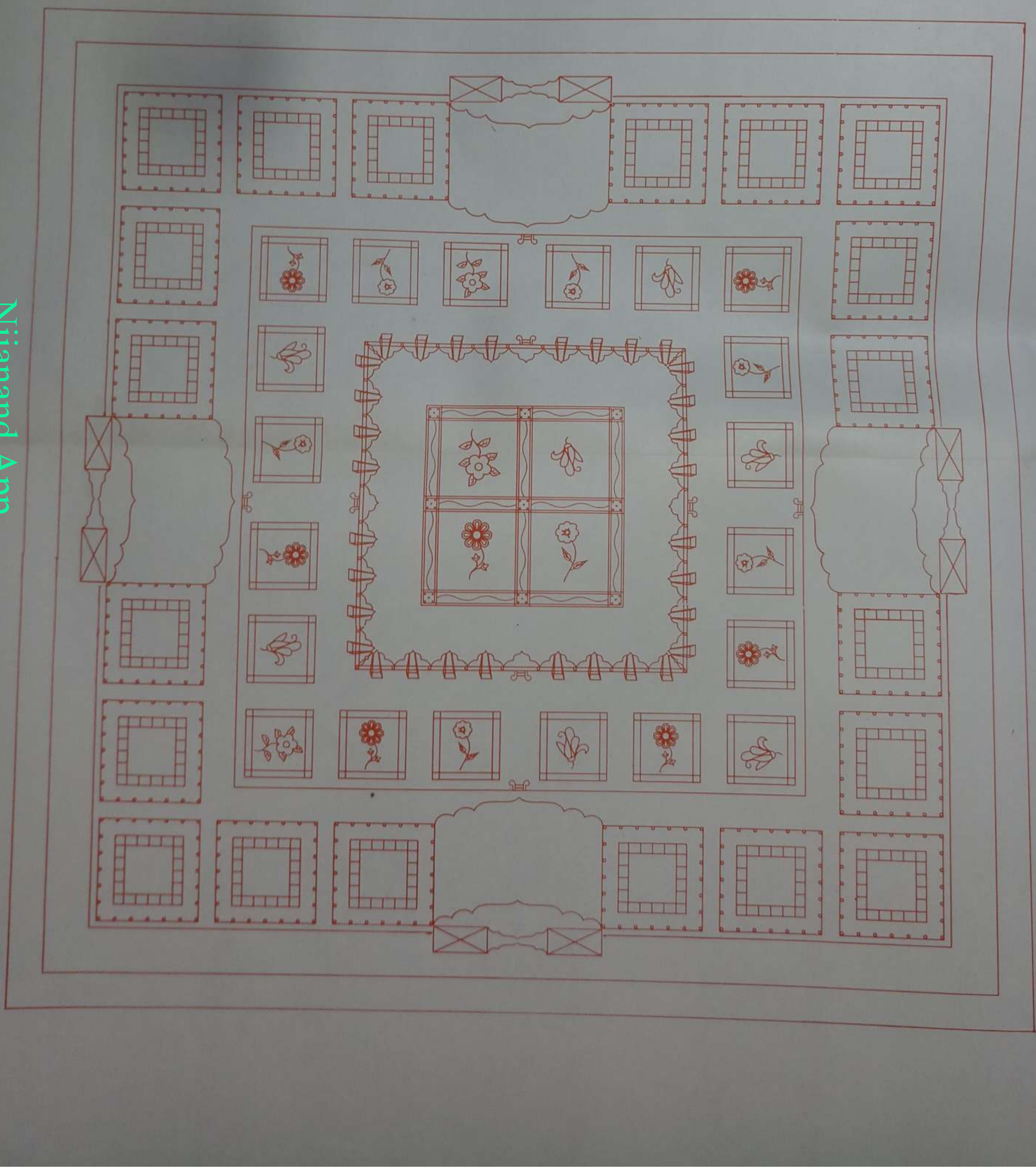

Nijanand App

८३-एक मोहल की शोभा

हर एक मोहल को घेर करके चारों दिशा में १०-१० थंभ आए हैं। चौड़ाई की तरफ भी दीवाल के किनारे पर दो थंभ अक्सी आए हैं। ऊपर अक्सी मेहराब आयी है। ऊपर तीन फूल आए हैं। ऊपर कांगरी, छज्जा और छत आयी है। इस मेहराब के मध्य भाग में ३ मंदिर का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं एक-एक मंदिर के लंबे-चौड़े दो चबूतरे आए हैं, जिन पर दस मेहराबें आयी हैं। इसी प्रकार हवेली की चारों दिशा में दरवाजे आए हैं। दरवाजे के भीतरी तरफ दाएं-बाएं १५००-१५०० मंदिर आए हैं। एक-एक दिशा में ३०००-३००० मंदिर आए हैं। चारों दिशा में १२००० मंदिर आए हैं। दो मंदिरों के बीच त्रिपोलिया आए हैं। इन मंदिरों के दरवाजे के सामने मोहल की दीवाल में दरवाजे आए हैं। मोहल के बाहरी तथा भीतरी तरफ एक-एक थंभों की हार आयी है। आगे कमर भर नीचे १२००० बगीचे घेरकर आये हैं। बगीचे के आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चारों तरफ कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। चबूतरे पर थंभ आए हैं। बीच में कठेड़ा आया है। चबूतरे के तीसरे हिस्से में बगीचे, नहरें तथा फव्वारे आये हैं। मोहल की ऊंचाई ३०० कोस की है। मोहल के अंदर १२००० मंदिर आये हैं। इन मंदिरों की ऊंचाई २०० कोस की है। मोहल की दीवाल के अक्शी थंभ तक सब मंदिर हैं।

Nijanand App

८४. एक मंदिर का चित्र

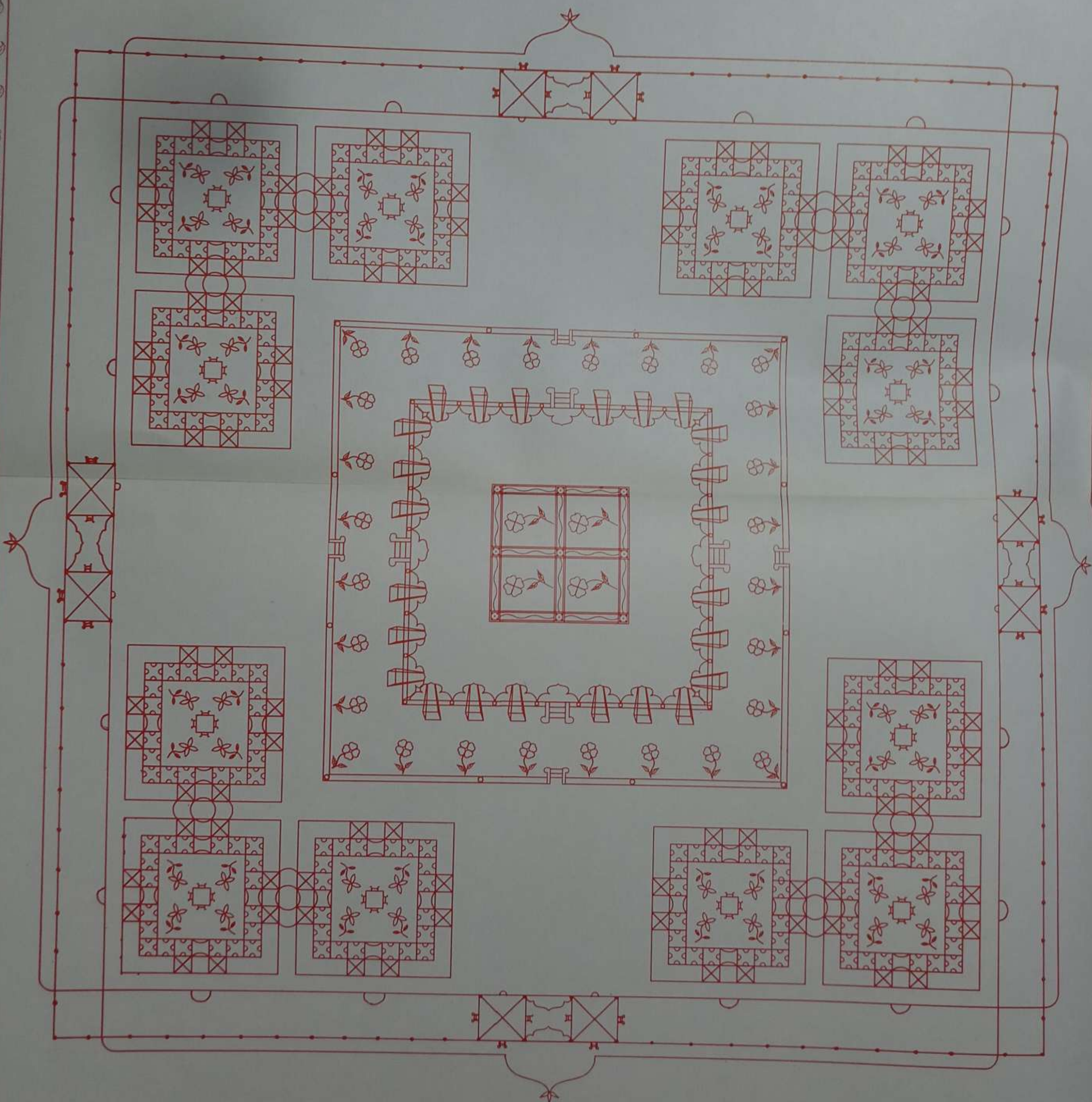

Nijanand App

८४-एक मंदिर का चित्र

हर एक मंदिर को घेर करके एक हार थंभों की आयी है। चौड़ाई की तरफ दीवाल के कोने पर दो अक्सी थंभ हैं, जिन पर अक्सी मेहराबें हैं। उन पर तीन फूल, कांगरी, छज्जा और छत आए हैं। इस दीवाल के मध्य में तीन कोठरियों का दरवाजा आया है। मध्य में एक कोठरी का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं एक-एक कोठरी का लंबा-चौड़ा चबूतरा आया है, जिस पर चार थंभ तथा मेहराबें आयी हैं। कमर भर ऊंचे चबूतरे से कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। इसी प्रकार, दूसरा चबूतरा आया है। दोनों चबूतरों पर १० मेहराबें आयी हैं। इसी प्रकार चारों दिशा में चार दरवाजे आये हैं। दरवाजे के दाएं-बाएं १५००-१५०० कोठरियां दिखायी देती हैं। एक दिशा में ३००० कोठरियां आयीं, तब चारों दिशा की १२००० कोठरियां हुई। दो कोठरियों के बीच में दो हार थंभों की आयी हैं, जहां पर आमने-सामने मंदिरों के दरवाजे आए हैं, वहां पर २४ मेहराबें आयी हैं। कोठरियों के आगे भीतरी तरफ एक हार थंभों की चारों तरफ आयी है। आगे कमर भर नीचे १२००० बगीचे आए हैं। दरवाजे के सामने बगीचे नहीं आए हैं। बगीचों के आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चारों तरफ कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। चबूतरे की किनार पर थंभ आए हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है। कोठरियों की छत १०० कोस की आयी है। मंदिर की छत २०० कोस की है। एक मंदिर के तीन हिस्से हुए। एक हिस्से में कोठरियां, दूसरे हिस्से में बगीचा और तीसरे हिस्से में चबूतरा आया है।

Nijanand App

८५. एक मंदिर के अन्दर कोठरियों का दृश्य

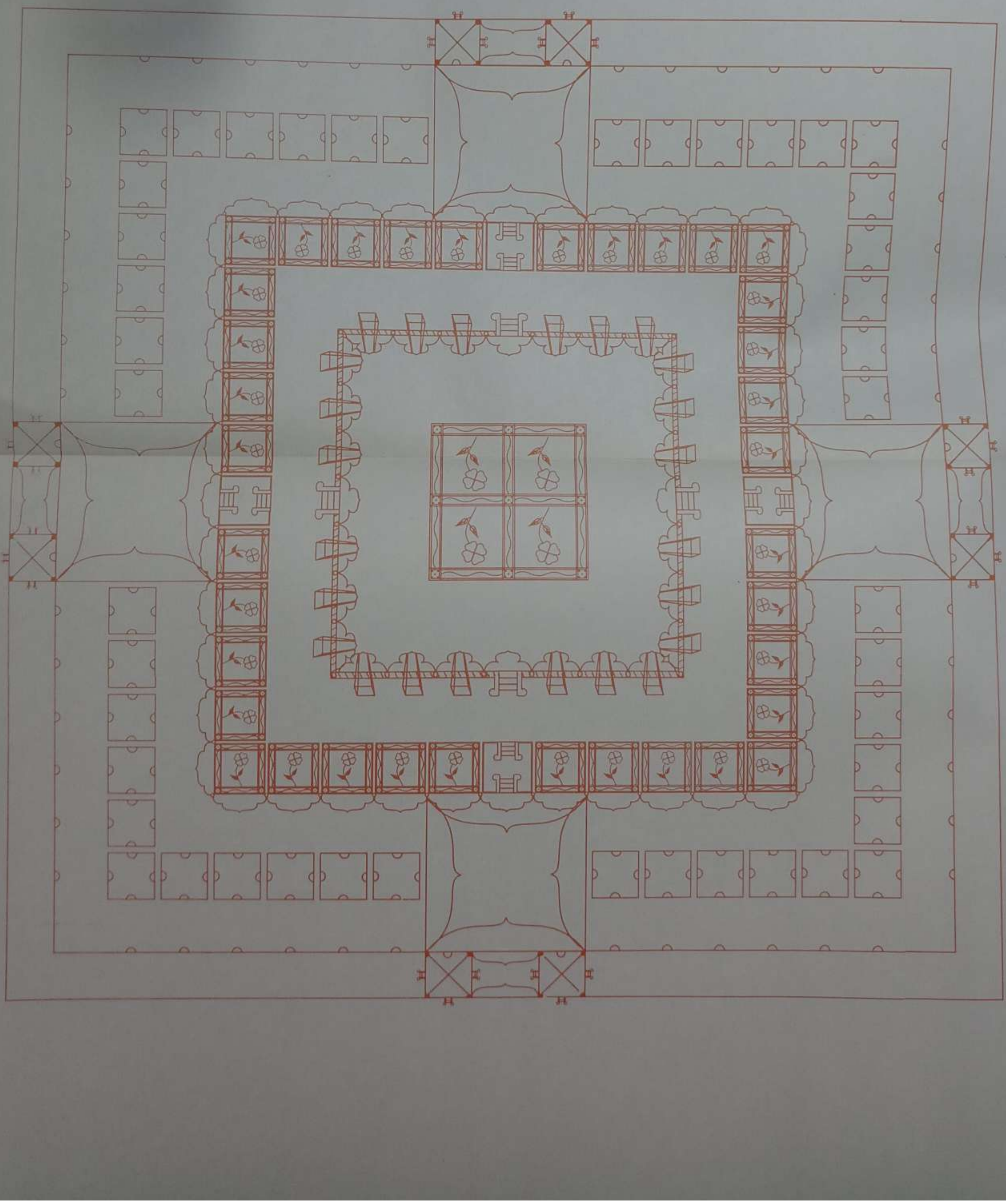

Nijanand App

८५-एक मंदिर के अन्दर कोठरियों का दृश्य

हर एक मंदिर को घेर करके एक हार थंभों की आयी है। इस प्रकार से चारों तरफ जानिये। चौड़ाई की तरफ की दीवाल के कोने पर दो अक्शी थंभ आये हैं। ऊपर अक्शी मेहरावें आयी हैं। ऊपर तीन फूल, कांगरी, छज्जा और छत आदि सब आये हैं। जमीन से २०० कोस की ऊंचाई पर इस दीवाल के मध्य भाग में तीन कोठरियों का दरवाजा आया है। मध्य में एक कोठरी का दरवाजा आया है। दायें-बायें एक-एक कोठरी का लंबा-चौड़ा चबूतरा आया है, जिस पर चार थंभ तथा मेहरावें आयी हैं। कमर भर ऊंचे चबूतरे से कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। इसी प्रकार का दूसरा चबूतरा आया है। दोनों चबूतरों पर दस मेहरावें आयी हैं। इसी प्रकार मंदिरों की बाहरी तरफ चारों दिशा में चार दरवाजे और भीतरी तरफ भी दरवाजे आये हैं। दरवाजे के भीतर जाइए तो दायें बायें १५००-१५०० कोठरियां दिखायी देती हैं। एक दिशा में तीन हजार कोठरियां आयी हैं। चारों दिशा की १२००० कोठरियां हुई दो कोठरियों के बीच में दो हार थंभों की आयी हैं। जहां पर आमने-सामने दरवाजे आये हैं, वहां पर २४ मेहरावें आयी हैं। इन कोठरियों के दरवाजों के आगे मंदिर की दीवाल आयी है। दरवाजे के सामने मंदिर की दीवाल में दरवाजे बने हैं। जिस तरह मंदिर की बाहरी तरफ थंभ आये हैं, उसी प्रकार कोठरियों के आगे भीतरी तरफ एक हार थंभों की चारों तरफ आयी है। आगे कमर भर नीचे बगीचे आये हैं। एक दिशा के ३००० बगीचे तो चारों तरफ के १२००० बगीचे हुए। दरवाजे के सामने बगीचे नहीं आये हैं। बगीचों के आगे कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। इसके चारों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं। चबूतरे की किनार पर थंभ आये हैं। सीढ़ियों को छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है। चबूतरे पर खड़े होकर देखिये तो कोठरियों की छत १०० कोस की आयी है। मंदिर की छत २०० कोस की आयी है और १२००० कोठरियां घेर करके आयी हैं। जैसे मोहल का ब्यान है वैसे ही मंदिर का ब्यान आया है। एक मंदिर के तीन हिस्से हुए। एक हिस्से में दायें-बायें कोठरियों की दीवाल आयी है। दूसरे हिस्से में बगीचा तथा तीसरे हिस्से में चबूतरा आया है।

Nijanand App

८६. माणिक पहाड़ की एक हवेली के बाहर का चित्र

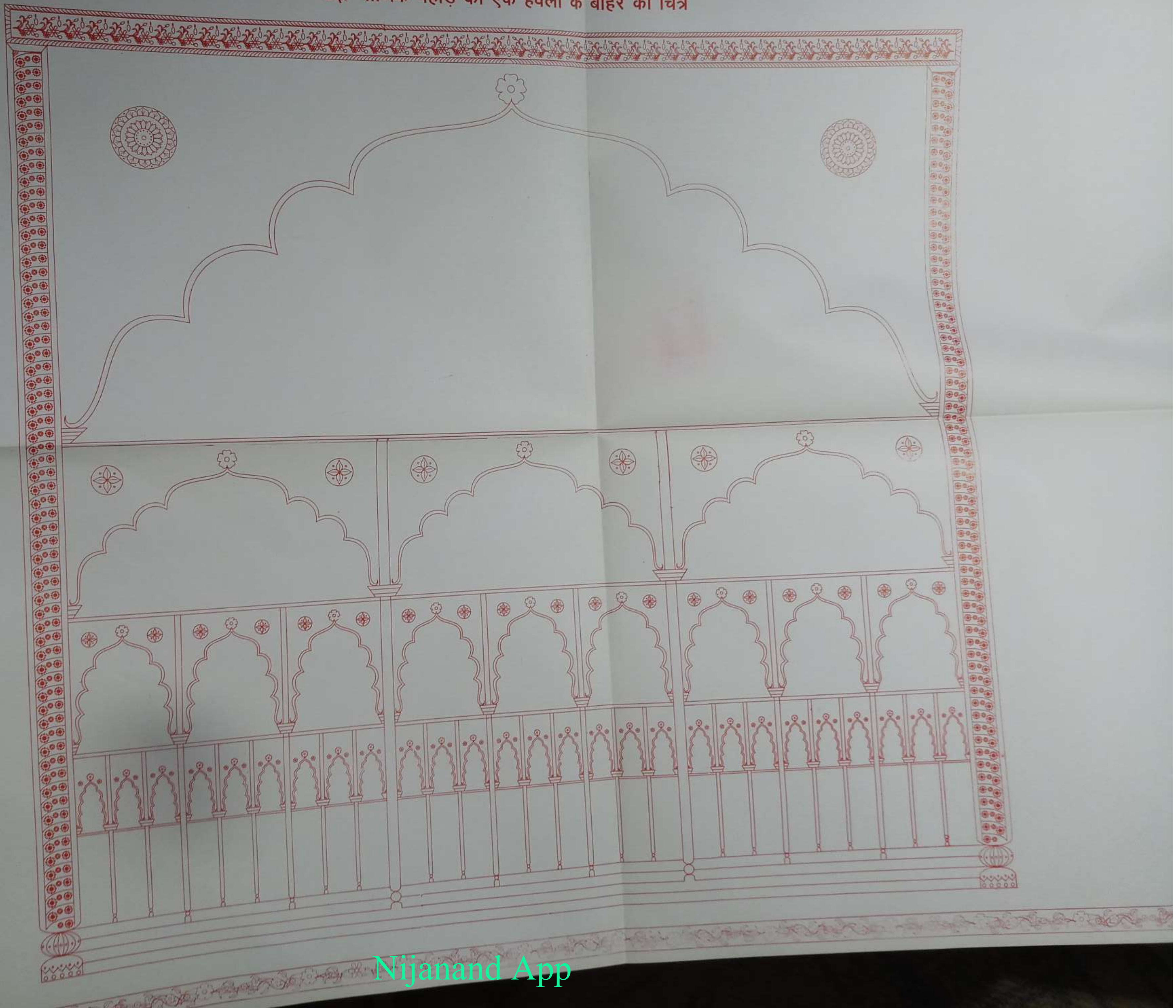

Nijanand App

८६-माणिक पहाड़ की एक हवेली के बाहर का चित्र

एक हवेली ३०० कोस की लंबी-चौड़ी आयी है, जिसकी बाहर की दीवाल पर पहले दो अक्सी थंभ आए हैं, जिस पर अक्सी मेहराब आयी है। ऊपर तीन फूल नगों के आए हैं। दो फूल दाएं-बाएं और एक मध्य में ऊपर आया है। ऊपर कांगरी, छज्जा और छत आयी हैं। इस अक्सी मेहराब की चौड़ाई ३०० कोस की आयी है। ऊंचाई ४०० कोस की आयी है। इस अक्सी मेहराब के बीच में तीन मोहल का हवेली का दरवाजा आया है, जिसमें एक मोहल का दरवाजा है और दाएं-बाएं दो चबूतरे कमर भर ऊंचे एक-एक मोहल के लंबे-चौड़े आए हैं। इस चबूतरे पर तीन तरफ सीढ़ी आयी है। सीढ़ियों की जगह छोड़कर तीन तरफ कठेड़ा आया है। चारों कोने पर चार थंभ आए हैं, जिनमें मेहराबें आयी हैं। इस प्रकार दूसरे चबूतरे पर भी आयी हैं। मध्य में दो मेहराबें हैं। इस प्रकार कुल दस मेहराबें हुई।

मंदिरों के अक्शी मेहराबों के विस्तार तक कोठरियों का विस्तार आया है। मोहलों के अक्शी मेहराबों के विस्तार तक मंदिरों का विस्तार आया है। हवेलियों के अक्शी मेहराबों तक मोहलों का विस्तार आया है और हवेली के छात की हद माणिक पहाड़ की प्रथम भोम तक आयी है। १०० कोस तक कोठरियों का विस्तार आया है। कोठरियों के ऊपर १०० कोस तक मंदिरों का विस्तार आया है। मंदिरों के ऊपर १०० कोस तक मोहलों का विस्तार आया है। मोहलों के ऊपर १०० कोस तक हवेलियों का विस्तार आया है। यह तो एक हवेली के एक भोम का ब्यान हुआ। ऐसी-ऐसी उपरा-ऊपर १२००० भोमें आयी हैं।

Nijanand App

८७. माणिक पहाड़ के भीतर माणिक मोहोल का दृश्य

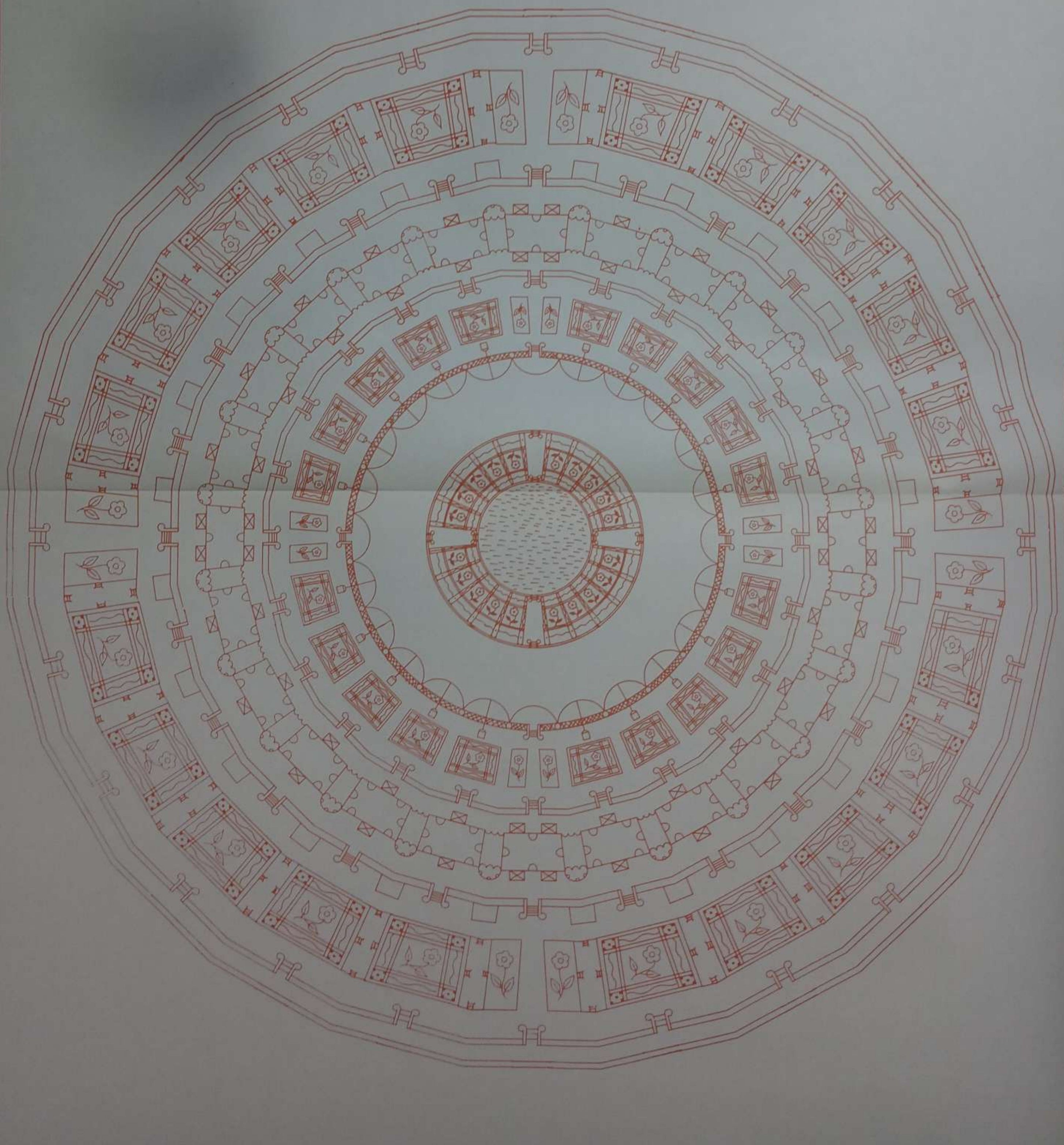

Nijanand App

८७-माणिक पहाड़ के भीतर माणिक मोहल का दृश्य

जहां १२००० हवेलियों की १२००० हारें पूरी हुई, वहां इस हवेली के साथ आगे थंभों की हार आयी है। इसके आगे कमर भर नीचे ५० कोस की चौड़ी रौंस है। इस रौंस से कमर भर नीचे ५० कोस की बगीचों की रौंस आयी है। इसके आगे कमर भर नीचे २०० कोस का चौड़ा बगीचा आया है। बगीचे के भीतरी तरफ कमर भर ऊंची रौंस है। इससे कमर भर ऊंची रौंस माणिक मोहल के चबूतरे से लगती हुई आयी है। हांस-हांस से कमर भर की सीढ़ी रौंस पर उतरी है। दो बगीचों की संधि में माणिक मोहल की तरफ की रौंस के साथ लगकर बगीचों की जमीन से कमर भर ऊंचा एक कुण्ड आया है। कुण्ड के सामने नहरें आयी हैं। इस प्रकार से १२००० कुण्ड और नहरें आयी हैं। माणिक मोहल की तरफ की रौंस से भोम भर का ऊंचा चबूतरा माणिक मोहल का, १२००० हांस का आया है। माणिक महल के चबूतरे से हांस के मध्य भाग से भोम भर की सीढ़ी उतरी है। इस चबूतरे के तीन हिस्से हुए। एक हिस्से के मध्य में चबूतरा आया है। दूसरे में इस चबूतरे को घेर कर भोम भर नीचे वन आए हैं। तीसरे हिस्से में माणिक मोहल आया है। १२००० हवेलियों के सामने १२००० मोहल आए हैं। एक मोहल के दाएं-बाएं त्रिपोलिये आए हैं। इस प्रकार १२००० त्रिपोलियों के सामने गोल गुर्ज आए हैं। हर मोहल के ५ दरवाजे और एक झरोखा आया है। झरोखा भीतरी बगीचों की तरफ आया है। इस माणिक मोहल की ऊंचाई १२००० भोम आयी है। भोम भर की सीढ़ी उतर कर भीतरी तरफ के बगीचे आए हैं। बाहरी व भीतरी तरफ दो रौंसें घेर कर आयी हैं। मध्य भाग में १२००० बगीचे आए हैं। बगीचों के बीच में नहरें, फव्वारे, चेहेबच्चे आए हैं। दूसरी भीतरी रौंस से आगे भोम भर ऊंचा चबूतरा है। हांस-हांस के मध्य भाग से भोम भर की सीढ़ी चढ़ी है। चबूतरे की किनार पर १२००० थंभ आए हैं। थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। इस चबूतरे के तीन हिस्से हुए। मध्य के हिस्से में पानी का स्तून (पाईप) आया है, जो टापू मोहल की चादंनी तक गया है। दूसरे हिस्से में कमर भर नीचे १२००० बगीचे आए हैं। तीसरे हिस्से में गिलम बिछी है। मध्य के स्तून (पाईप) से बारीक १२००० फुहारें पिचकारी की तरह छूटती हैं। इस चबूतरे के किनार पर जो १२००० थंभ आए हैं। इनकी ऊंचाई ११९८० भोम की आयी है। वहां पर मेहराबों में हिंडोले लगे हैं। मध्य के स्तून की जब ११९८० भोम पूरी हुई, तब चारों तरफ छज्जे निकले हैं। इन छज्जों के साथ माणिक मोहल के भी छज्जे निकलते हैं, जो आपस में मिल जाते हैं। नीचे से छत ११९८० भोम पर आयी है। अब इसके ऊपर २० भोमें मिलती हुई हैं, जिससे मध्य के स्तून के चारों ओर परिकरमा की जगह बन गई। जब १२००० भोमें पूरी हुई, तो चांदनी १६ लाख कोस की लंबी-चौड़ी आयी है।

Nijanand App

८८. माणिक पहाड़ पर टापू मोहोल तथा देहेलान

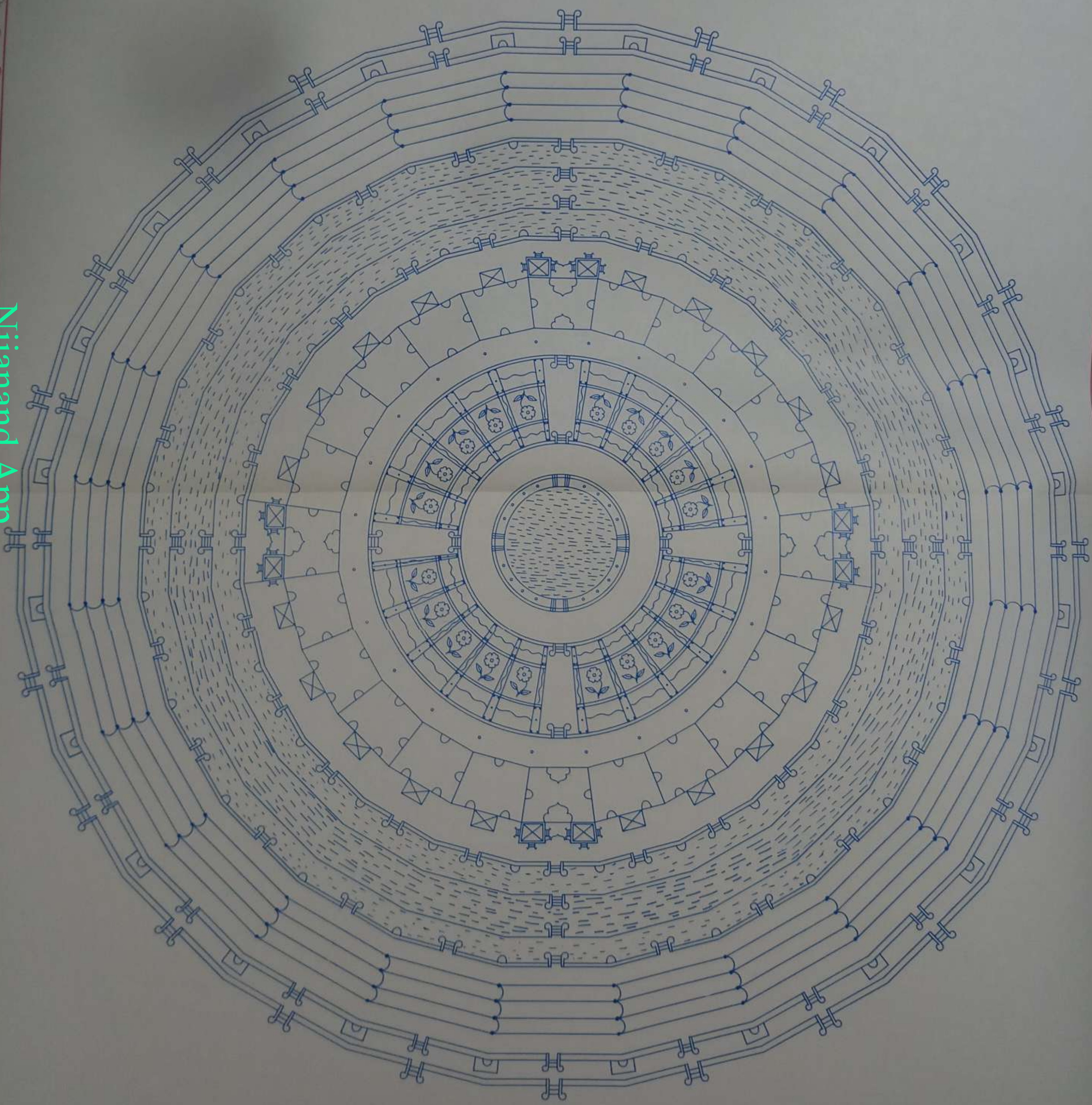

Nijanand App

८८-माणिक पहाड़ पर टापू मोहल तथा देहलान

माणिक पहाड़ की १२००० भोम पर चांदनी के मध्य में भोम भर का ऊंचा चबूतरा उठा है। यह चबूतरा नीचे के चबूतरे के ठीक ऊपर आया है, जो १२००० हांस का है, जिस पर १२००० थंभ आए हैं। उसकी चांदनी पर यह चबूतरा आया है। इसमें चारों तरफ ४०० कोस की जगह छोड़कर १२००० मोहल १२००० हांस में आए हैं। यह मोहल आपस में मिले हैं। प्रत्येक मोहल में ५ दरवाजे आए हैं तथा एक झरोखा बाहरी तरफ आया है। भीतर तरफ एक हार थंभों की आयी है। फिर १२००० बगीचे आए हैं। तीसरे हिस्से में पानी का स्तून आया है, जो नीचे से आ रहा है, जिसके ऊपर चांदनी पर कुण्ड बना है। एक भोम में १२००० झरोखे आए हैं। नीचे जो माणिक मोहल की जगह थी, ऊपर उतनी ही चौड़ाई में भोम भर चबूतरा १२००० हांस का उठा है। इस चबूतरे के दाएं-बाएं की रौंस की जगह छोड़कर चार हार थंभों की चारों तरफ घूमी है, जिस पर तीन मेहराबें आयी हैं। दाएं-बाएं देहलान की एक भोम आयी है और मध्य की देहलान पर दो भोमें आयी हैं। बीच में टापू का चबूतरा है इधर देहलान का चबूतरा है इन दोनों चबूतरों के बीच में पानी का एक ताल आया है, जो एक भोम का गहरा आया है। नीचे माणिक मोहल और चबूतरे के बीच में जो बगीचा आया है, उसकी चांदनी पर ताल आया है। टापू के चबूतरे से १२००० हांसों में कमर भर की सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। आगे जल चबूतरे से सीढ़ियां उतर कर जमीन तक गयी हैं। टापू के चबूतरे की पिठौर (दिवाल के बाहरी तरफ) में १२००० जालीद्वार लगे हैं, जिनसे पानी निकल कर ताल में पड़ता है। इसी प्रकार से देहलान के चबूतरे से जल की तरफ १२००० हांसों में कमर भर की सीढ़ी उतरी है। जल चबूतरे से सीढ़ियां ताल की जमीन पर गयी हैं। इस चबूतरे की पिठौर में १२००० जालीदार दरवाजे आए हैं, इन दरवाजों से होकर बाहरी जालीद्वारों से होकर ५० कोस की रौंस के साथ लगकर जो १२००० कुण्ड आए हैं, उन कुण्डों में चादरों द्वारा पानी पड़ता है, जो एक भोम की ऊंचाई से गिरता है। नीचे जिस जगह पर ४०० कोस के चबूतरे पर ५० कोस की रौंस के साथ लगकर १२००० कुण्ड आए हैं, उसी जगह के ऊपर कुण्ड आए हैं।

Nijanand App

८९. टापू मोहोल की चांदनी

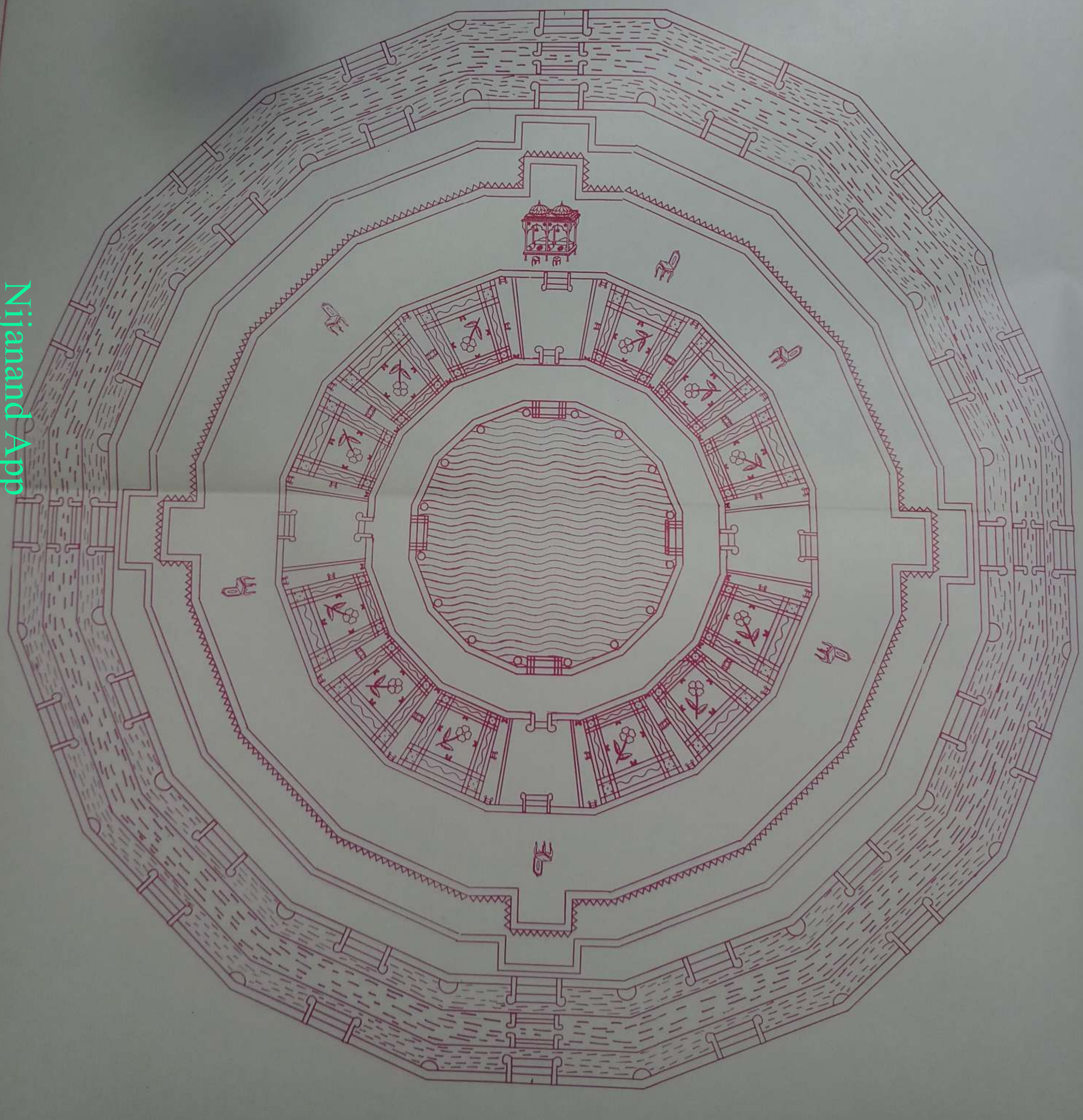

Nijanand App

८९-टापू मोहल की चांदनी

टापू मोहल की २० भोम और २१ वीं चांदनी है। नीचे से जो पानी का स्तून (पाईप) चला आ रहा है, वह चांदनी पर जाकर कुण्ड बना है। चारों दिशा से सीढ़ी जल चबूतरे पर उतरी हैं। बाकी जगह पर कठेड़ा घेरकर आया है। इसको घेर कर बगीचे आए हैं, जैसे नीचे थे। इन बगीचों के आगे तीसरे हिस्से में गिलम बिछी है, जिस पर सिंहासन आया है और घेरकर कुर्सियां रखी हैं। दो बगीचों के बीच में नहरें आयी है। कोनों में चेहेबच्चे आए हैं, तथा फव्वारे छूटते हैं। चारों तरफ घेर करके कठेड़ा शोभा ले रहा है।

Nijanand App

९०. माणिक पहाड़ की चांदनी

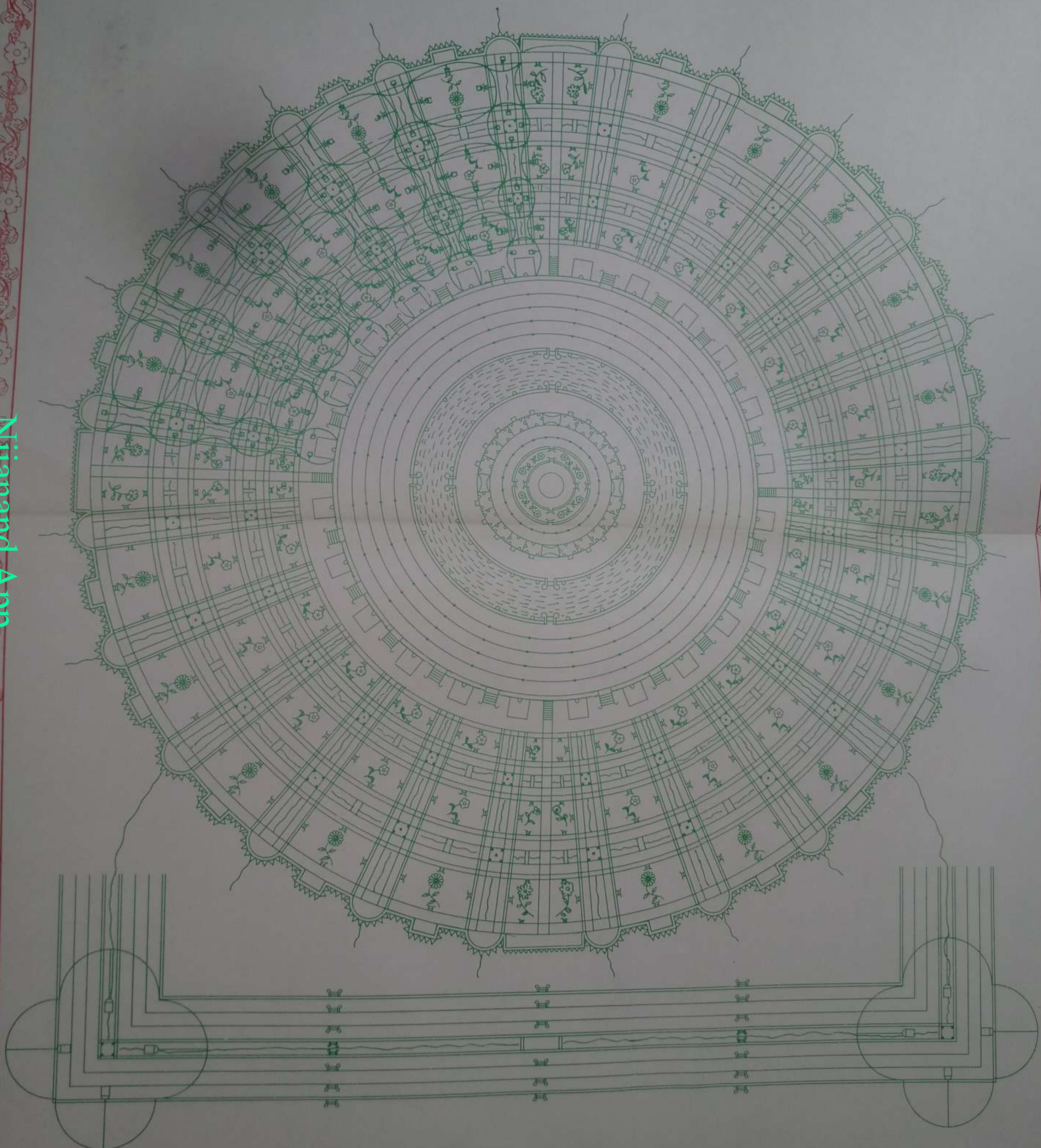

Nijanand App

९०-माणिक पहाड़ की चांदनी

ताल के पाल का भोम भर का ऊंचा चबूतरा आया है। इस चबूतरे से भोम भर नीचे जमीन से कमर भर ऊंची ५० कोस की चौड़ी रौंस चारों तरफ घूमी है। पाल के चबूतरे से १२००० हांसों के मध्य भाग से जो भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं, सो इस ५० कोस के चबूतरे पर उतरी हैं। इस रौंस की दो हांसों की सन्ध में ३३ कोस का लंबा-चौड़ा कुण्ड आया है। बगीचों की जगह से ऊंचा कुण्ड है। बगीचों की जमीन से कमर भर ऊंची इस कुण्ड के तीन तरफ ३३ कोस की रौंस फिरी है। इस प्रकार से हांस की सन्ध में १२००० कुण्ड आये हैं। इन्हीं कुण्डों में भोम भर ऊपर से चादरों द्वारा पानी पड़ता है। इस कुण्ड के आगे १०० कोस की चौड़ाई लेकर नहरें निकली हैं, जिसमें ३३ कोस की नहर और दाएं-बाएं ३३-३३ कोस की पाल आयी है। जो चांदनी की जमीन से कमर भर ऊंची है। पाल पर ११ कोस में फुलवाड़ी दाएं-बाएं ११-११ कोस की पाल आयी है, सो नहर कुण्ड में आती है। जहां १२००० हवेली खत्म हुई, वहीं यह कुण्ड आये हैं। इसी प्रकार से सब कुण्डों से पानी निकलकर नहरों द्वारा होकर कुण्डों में आता है। उस कुण्ड पर चार थंभ आये हैं जिसमें हिंडोले आये हैं। इन कुण्डों से नहरें सामने तरफ भी जाती हैं और दाएं-बाएं तरफ भी जाती हैं और थंभों में से होकर इस कुण्ड से पानी भोम भर नीचे जो कुण्ड आया है, उसमें चादरों द्वारा पड़ता है। इस प्रकार यहां पर १४ करोड़ ४० लाख कुण्ड आये है। हर कुण्ड से चारों तरफ नहरें चलती हैं। चांदनी पर सब नहरें २८ करोड़ ८० लाख होती हैं। इन नहरों तथा कुण्डों पर छतें आयी हैं। चार कुण्डों के बीच में एक बगीचा आया है और चार बगीचों के बीच में एक कुण्ड आया है। हर एक कुण्ड पर चार मेहराबें आयी हैं और कुण्ड के चारों तरफ नहरों पर मेहराबें आयी हैं। इस कुण्ड के थंभ से दूसरे कुण्ड के थंभ पर मेहराबें आयी हैं। इसी प्रकार सब कुण्डों पर जानना, हर एक मेहराब में हिंडोले लगे हैं। हर एक कुण्ड पर चार मेहराबें आयी हैं। हर एक बगीचे पर चार-२ मेहराबें आयी हैं। नीचे १४ करोड़ ४० लाख जो हवेलियां हैं उनमें हर एक हवेली के चारों तरफ त्रिपोलिया हैं। उन त्रिपोलियों की चांदनी पर नहरें आयी हैं। नीचे जो हर एक हवेली के कोनों पर कुण्ड आये थे, उनकी चांदनी पर यहां कुण्ड आये हैं। इन सब बगीचों और नहरों पर तथा कुण्डों पर एक ही छत बराबर, एक ही भोम की आयी है। १२ हजार कुण्डों से जो नहरें चली हैं सो एक लाईन से १२ हजार कुण्डों को उलंघ कर गुर्जों के कुण्डों में आती हैं। नीचे जो १२ हजार गोल गुर्ज आये हैं, उनकी चांदनी पर कुण्ड आये हैं, नहर का पानी आकर इसमें समाता है। फिर आगे चादरें गिरती है। इसी प्रकार १२ हजार लाइनों में बनक आयी है। १२ हजार कुण्डों से पानी नीचे उतरता है। थंभों से भी नीचे पानी उतरता है सो पानी नीचे उतरता-२ नीचे की भोम में बाहरी तरफ जो गोल गुर्ज आये हैं, उन गोल गुर्जों के सामने भीतरी तरफ जो कुण्ड आये हैं उन में आता है। उन कुण्डों से पानी नीचे होकर ४०० कोस की रौंस से नीचे होकर भोम भर ऊंचे चबूतरे की पिठौर में जो १२ हजार जालीद्वार आये हैं, उन जालीद्वारों से पानी निकलकर नीचे जो १२ हजार कुण्ड आये हैं, उनमें चादरों द्वारा पड़ता है।

Nijanand App

९१. माणिक पहाड़ की चांदनी तथा जमीन पर बगीचे, नहरें और महानद

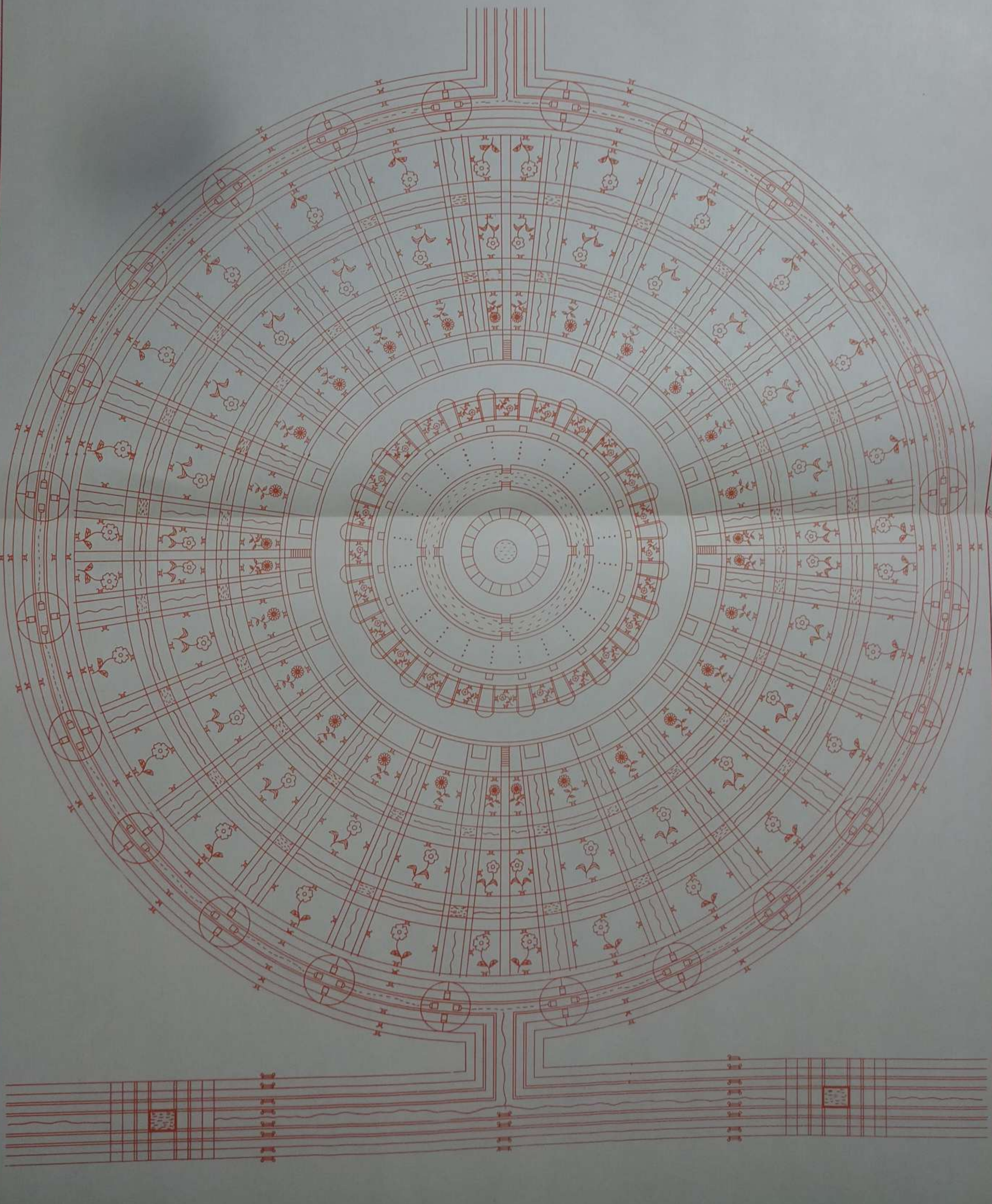

Nijanand App

९१-माणिक पहाड़ की चांदनी तथा जमीन पर बगीचे, नेहरें व महानद

महानद से महानद तक २ करोड़ ३६-१/२ लाख कोस की जगह होती है। अब इसके मध्य भाग में १६ लाख कोस के लंबे चौड़े माणिक पहाड़ के ऊंचे चबूतरे से महानद तक एक करोड़ दस लाख २५ हजार कोस की जगह आयी है। इसी प्रकार से दूसरी तरफ आयी है। माणिक पहाड़ का भोम भर का ऊंचा चबूतरा आया है। इस चबूतरे के नीचे चबूतरे की दीवाल के साथ लगकर दो हांस की सन्ध में कुण्ड आया है। इसी प्रकार से १२ हजार कुण्ड आये हैं। यह कुण्ड जमीन से कमर भर ऊंचे चबूतरे की दीवाल के साथ लगकर १०० कोस के लंबे-चौड़े आये हैं। इन कुण्डों के तीनो तरफ १०० कोस की चौड़ी रौंस घूमी है। यह रौंस सब कुण्डों को घेर करके आयी है। कुण्डों के सामने एक चबूतरा १०० कोस का चौड़ा और लंबा एक करोड़ १० लाख २५ हजार कोस का आया है, जो महानद में जाकर मिल गया है। इसी प्रकार से १२ हजार चबूतरे उसी प्रकार की लंबाई-चौड़ाई लेकर महानद में मिले हैं। चबूतरे के मध्य भाग में ३३ कोस में नहर है तथा ३३-३३ कोस की पाल हैं। पाल के मध्य में ११ कोस की फुलवारी है तथा दाएं-बाएं ११-११ कोस की रौंस आयी है। इसी प्रकार की बनक दूसरी पाल पर तथा १२ हजार नहरों की सभी पालों में आयी है। ३०० कोस के बाद १०० कोस का ताल आया है ३३ कोस में ताल का जल है तथा ३३-३३ कोस में चारों तरफ पाल आयी है। पाल के मध्य भाग में ११ कोस की जगह में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। दोनों तरफ ११-११ कोस की रौंस आयी है। ११ कोस के चबूतरे पर ९ कोस में मोहोल आया है और दाएं-बाएं एक-एक कोस की जगह रौंस रूप में आयी है जो चारों तरफ घूमी है। नहर की रौंस से आकर कमर भर सीढ़ी चढ़कर एक कोस की रौंस को पार कर और कमर भर की सीढ़ी उतरकर तालाब की ११ कोस की रौंस पर आये हैं। यहां से कमर भर की सीढ़ी उतर कर जल चबूतरे पर जाइए। आगे ताल की गहराई एक भोम की आयी है। इसी तरह से चारों तरफ से सीढ़ियां चढ़ी उतरी हैं। इस ताल के दाएं-बाएं और सामने नहरें आयी हैं। इस ताल के चबूतरे पर मोहलात आयी है। एक दिशा में चार अक्शी थंभ आये हैं। चार अक्शी थंभों पर तीन अक्शी मेहराबें आयी हैं। इन मेहराबों के बीच में एक हजार मोहोल आये हैं। एक मोहोल के बीच में अनेक मंदिर आये हैं। ताल के एक तरफ ३००० मोहोल हैं तथा चारों तरफ १२००० मोहोल हुए। इसी तरह ताल तरफ भी अक्शी चार थंभ आये हैं। तीन अक्शी मेहराबे आयी हैं। एक मेहराब में १००० मोहल और तीन मेहराबों में ३००० मोहल एक दिशा के, चारों तरफ १२००० हुए तथा जैसी बनक बाहिर है वैसी भीतर भी आयी है, इन मोहलातों की पांच भोम छठी चांदनी आयी है। हर एक भोम में ताल की जगह पर कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ी उतरी है। बाकी जगह पर कठेड़ा आया है। चबूतरे के मध्य में गिलम, सिंहासन सब आये हैं। इसी तरह की बनक चारों भोमों में आयी हैं। छठी चांदनी पर चारों तरफ घेर करके कठेड़ा आया है। यह तो एक ताल का ब्यान हुआ। इसी प्रकार एक ताल की लाइन में १२ हजार ताल आये हैं। इसी प्रकार १२ हजार की १२ हजार हारें आयी हैं। सब ताल १४ करोड़ ४० लाख आये हैं। हर एक ताल के चारों तरफ नहरें आयी हैं, जिसमें १४ करोड़ ४० लाख नहरें आड़ी, १४ करोड़ ४० लाख खड़ी आयी हैं। परिकरमा के वास्ते चार नहरों के बीच में एक बगीचा २०० कोस का लंबा-चौड़ा बराबर आया है। शुरू के बगीचे की यह लंबाई-चौड़ाई है। आगे-२ जैसे-२ हांस बढ़ते जायेगें, वैसे-२ बगीचे की लंबाई बढ़ती जायेगी। एक बगीचे में ३००० वृक्षों की ३००० हारें आयी हैं। इस बगीचे में अनेक प्रकार के चेहबच्चे फव्वारे आये हैं। वृक्ष

Nijanand App

भी अनेक प्रकार के आये हैं। इन वृक्षों की ऊंचाई ५ भोम की आयी है। एक बगीचे की डालियां दूसरे बगीचे से मिलती गयी है। नहरों के ऊपर छतें आती गयी है। इन बगीचों के चारों तरफ चार नहरें आयी हैं। हर एक नहर के मध्य भाग में पुल आया है। और दाएं-बाएं बगीचों में कमर भर की सीढ़ी उतरी है। ऐसे बगीचे १४ करोड़ ४० लाख आये हैं। इन सबकी ऊंचाई ५ भोम की आयी है। ऊपर सब चांदनी एक हो गयी है।

उत्तर की तरफ जो आखिर के ताल आये हैं। दोनों तालों में एक हांस उत्तर तरफ नहर चलकर दोनों नहरें दो तरफ घूमी हैं। एक तो उत्तर से पूर्व होकर दक्षिण में आयी है और दूसरी नहर उत्तर पश्चिम तरफ होकर दक्षिण में आकर मिली है। दोनों नहरें मिलकर एक रूप होकर दक्षिण तरफ एक हांस चलकर वन की नहरों में समाती हैं १२००० कुण्डों से जो १२००० नहरें चली आती हैं, सो महानद की पाल की रौंस के नीचे एक रूप होकर महानद में समाती हैं। तब मानो महानद एक समुद्र के समान शोभा लेता है। इस महानद के १२००० हांस हैं। एक हांस की चौड़ाई ५९१२ कोस की होती है। गृद ७ करोड़ ९ लाख ५० हजार कोस की होती है, और लंबाई-चौड़ाई २ करोड़ ३६-१/२ लाख कोस की होती है। माणिक पहाड़ के पास हांस की चौड़ाई ४०० कोस की थी। आखिर के हांस में इतनी वृद्धि हुई है, कि हांस ५९१२ कोस का हो गया है। इस महानद की चौड़ाई ३ हांस की आयी है। एक हांस के मध्य में महानद आया है, जिसके कोस ५९१२ होते हैं। एक हांस के दाएं-बाएं पालें आयी हैं, जिसके तीन भाग हुए, मध्य का जो भाग है, सो १९७१ कोस का इस मध्य के भाग में कमर भर ऊंची पाल आयी है, और दाएं-बाएं के हिस्से में कमर भर नीचे रौंस आयी है। इस पाल के हांस के मध्य भाग में कमर भर की सीढ़ी दोनों तरफ की दोनों रौसों पर आयी है। महानद की रौंस से कमर भर की सीढ़ी जल के चबूतरे पर उतरी है। यहां कमर तक पानी है। यहां पर खड़े होकर स्नान करिए। आगे सीढ़ियां जल की जमीन तक गयी हैं और दूसरी रौंस से बगीचे की तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी है। इसी प्रकार की बनक महानद के दूसरे पाल की तरफ आयी है। महानद के दाएं-बाएं दोनों तरफ कमर भर की ऊंची पाल है सो एक पाल की दोनों किनार पर थंभ एक भोम के ऊंचे उठे हैं और लंबाई तरफ १९७१ कोस के अन्तर पर थंभ आते गये हैं। इसी प्रकार चारों तरफ पाल पर थंभ आये हैं। चारों थंभों के बीच में एक चौक लंबा-चौड़ा १९७१ कोस का बराबर आया है। इसी प्रकार से दूसरी पाल पर थंभ आये हैं। ऊपर सब एक छत हो गयी है। इस कारण से महानद पर भी छत आयी है। दोनों पालों की मेहराबों में तथा एक महानद की मेहराबों में हिंडोले आये हैं। चार-२ हिंडोलों की ताली पड़ती है। ऊपर चादंनी पर जाना हो तो पालों के थंभों के बीच होकर जाइए। यहीं जाने का रास्ता है। इसकी ऊंचाई एक भोम की आयी है। महानद के साथ लगकर जो १२००० तालों की मोहलात आयी है, इस की ऊंचाई दो भोम की आयी हैं। इनके साथ लगकर १२००० तालों के जो मोहल आये हैं, इनकी ऊंचाई तीन भोम की है। इनके साथ लगकर जो मोहल आये हैं। सो इनकी ऊंचाई ४ भोम की आयी है। आगे जितने तालों के मोहलात पड़े, उनकी ऊंचाई पांच भोम की पड़ी है। बगीचों की ऊंचाई भी मोहोलों के समान है। भीतर की तरफ ४०० कोस का हांस है। ३३-३३ कोस की नहरें हैं। दाएं-बाएं फुलवाड़ी, रौंस आयी है। आगे ताल को घेरकर के मोहोल आया है, सो आगे-२ सब बढ़ते गये। महानद तक तो अपरम्पार विस्तार आया है। माणिक पहाड़ की चारों दिशा के दरवाजों के सामने चार रास्ते जो गये हैं, सो बगीचों के मध्य में १०० कोस की चौड़ाई लेकर कमर भर ऊंचे चले गये हैं, सो महानद की रौंस में जाकर मिले हैं। दाएं-बाएं आधा-आधा बगीचा आया हैं।

Nijanand App

९२. माणिक पहाड़ के बाहर जमीन पर बड़ोवन, मधुवन एवं महावन

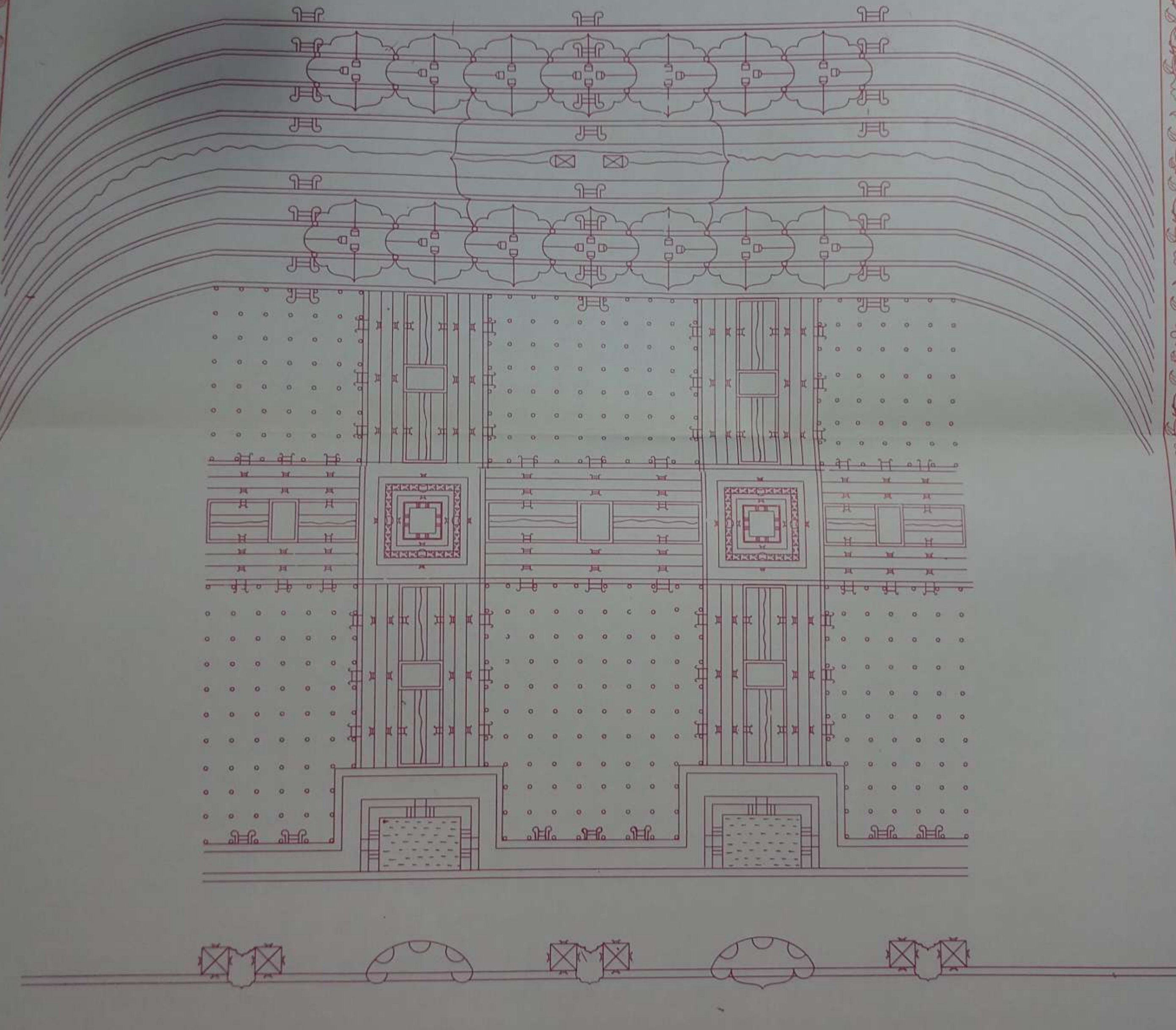

Nijanand App

९२-माणिक पहाड़ के बाहर जमीन पर बड़ोवन, मधुवन एवं महावन

महानद से लेकर महानद तक एक जो जवेरों की नहरों तथा दूसरी किनार पर वन मोहलात की तरफ लंबाई-चौड़ाई दो करोड़ ३६ लाख ५० हजार कोस आयी है। इतनी जगह जवेरों की नहरों तथा वन मोहलातों के बीच में चारों तरफ धाम व परमधाम को घेर करके आयी है। इस जगह में तीन वन आये हैं। जवेरों की नहरों के साथ बड़ोवन आया है। ३३ लाख ७८ हजार ५५० कोस की जगह में इनकी १२ हजार भोम आयी है। इसके साथ लगकर मधुबन, बड़ोवन की दुगुनी जगह में ६७ लाख ५७ हजार १०० कोस में आया हैं और ऊंचाई में २४००० भोम आया है। मधुवन के आगे महावन १ करोड़ ३५ लाख ३४ हजार ३०० कोस का आया है, और ऊंचाई ४८००० भोम की आयी है। यह बड़ोवन की जगह से चोगुनी जगह में आया है। बड़ोवन की ऊंचाई ४८ लाख कोस, मधुवन की ९६ लाख कोस और महावन की ऊंचाई एक करोड़ ९२ लाख कोस की आयी है। इन जवेरों की नहरों से १२०० कोस की दूरी पर नहर ४०० कोस की चौड़ी लंबाई तरफ घूमी है। जिस नहर में २०० कोस में पानी और १००-१०० कोस की पाल आयी है। पाल के मध्य में ३३ कोस की फुलवाड़ी के दाएं-बाएं ३३-३३ कोस की रौंस आयी है। यही बनक दूसरी पाल पर आयी है। इस नहर के आगे १२०० कोस की दूरी पर ४०० कोस की नहर घूमी है। २ करोड़ ३६ लाख ५० हजार कोस में सब ऐसी ही नहरें आयी हैं। चौड़ाई तरफ भी खड़ी नहरें १२००-१२०० कोस दूरी पर आती हैं। इन खड़ी नहरों की लंबाई २ करोड़ ३६ लाख ५० हजार कोस की आयी है। १२०० कोस का एक लंबा-चौड़ा चौक चार नहरों के बीच में आया है। इसी तरह सब चौक आते गये हैं, एक चौक के मध्य भाग में एक पेड़ आया है। पेड़ का थड़ (तना) एक भोम का ऊंचा चला गया है इस थड़ के बीच में से ऊपर को सीढ़ियां चढ़ी है। एक भोम ४०० कोस की ऊंची आयी है। एक भोम में कई मोहल, मंदिर, कोठरियां, नहरें, चेहबच्चे, फव्वारे आदि जोगबाई आयी है। माणिक पहाड़ की हवेली के समान, एक भोम में १२ हजार मोहोल, एक मोहल में १२ हजार मंदिर, एक मंदिर में १२००० कोठरियां आयी हैं। यह तो एक भोम का ब्यान हुआ। इसी प्रकार से बड़ोवन की १२००० भोम की, मधुवन की २४००० भोम की और ४८००० भोम की महावन की बनक आयी है। इन वृक्षों की डालियां सब आपस में मिली हैं। बडोवन से मधुवन, मधुवन से महावन में आ जा सकते है। नीचे आकर पेड़ के चारों तरफ नहर चलती है और कोनों पर चार चेहबच्चे आये हैं और चबूतरे के पास अपरम्पार बगीचे आये हैं, जिनकी ऊंचाई केवल एक भोम की ही आयी है, जिसमें नहरें, फव्वारे, चेहबच्चे आदि आये हैं। बड़े एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक १२०० कोस का अन्तर आया है। हर एक नहर के मध्य भाग में पुल आया है। बड़ोवन की एक ही भोम १२००० भोमों में आयी हैं और मधुवन की दो भोमें ही २४००० भोमों में आयी हैं और महावन की चार भोम ४८००० भोमों में आयी है।

Nijanand App

९३. माणिक पहाड़ के बाहर ताल, मोहोल तथा बगीचों की चांदनी

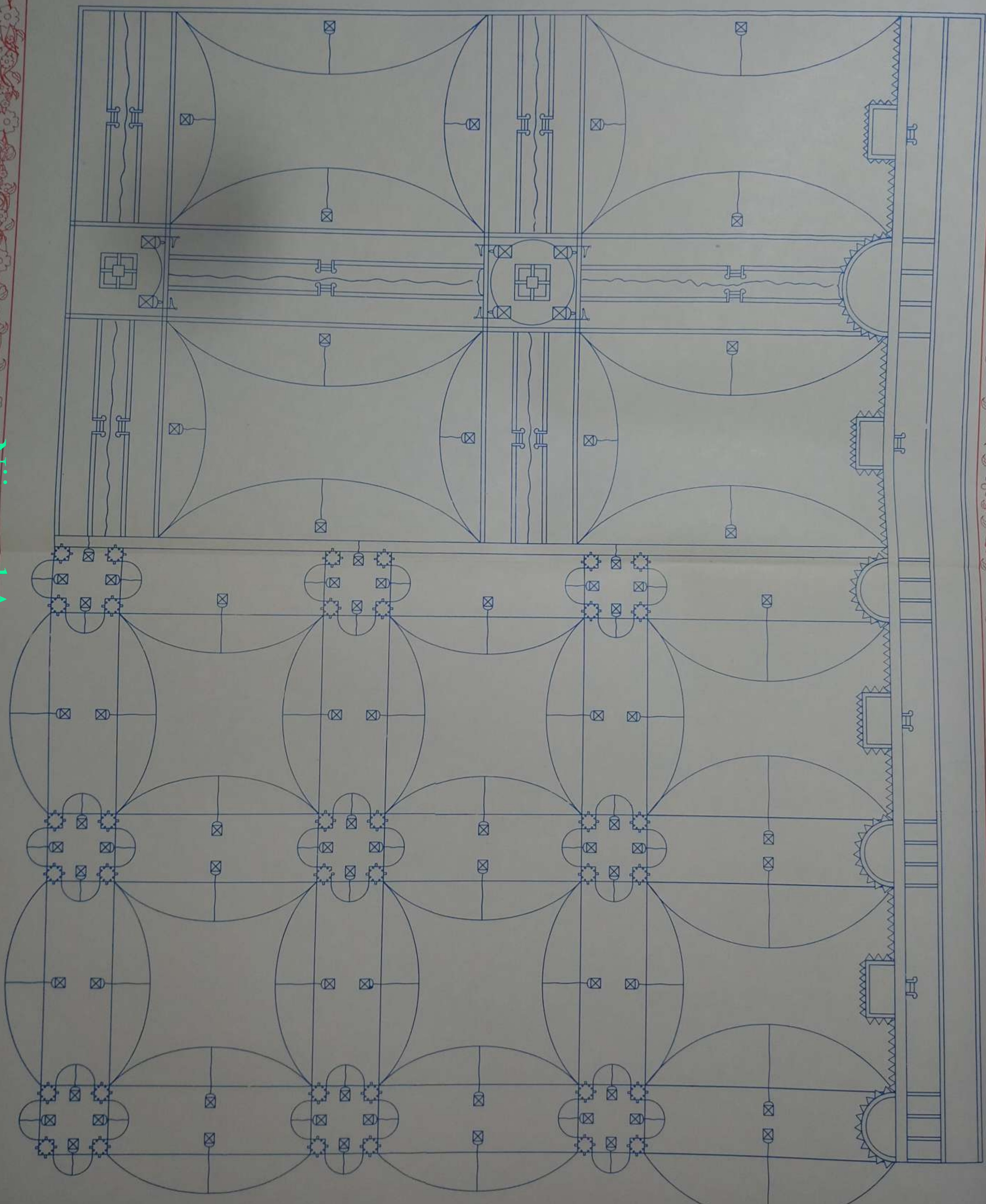

Nijanand App

९३-माणिक पहाड़ के बाहर जमीन पर ताल, मोहलों तथा बगीचों की चांदनी

माणिक पहाड़ के चबूतरे से ४०० कोस की दूरी पर ताल आया है । ताल के चबूतरे पर १२००० मोहोल आये हैं, जिनकी ऊंचाई ५ भोम तक आयी है परन्तु चार कोनों वाले जो मोहोल आये हैं सो बढ़ते-बढ़ते बारह हजार भोम से एक भोम कम, क्योंकि माणिक पहाड़ का चबूतरा एक भोम ऊंचा आया है । ये चारों कोनों वाले जो मोहोल हैं, एक-एक मोहल के भोम-भोम के छज्जे, झरोखे सब अलग-२ दिखायी देते हैं । यदि मोहोल के अन्दर जाइए तो कई मंदिरों, बगीचों, चेहबच्चों, नहरों और फव्वारों की शोभा दिखायी पड़ती है । इसी प्रकार से सब भोमें आयी हैं । इसी प्रकार से सब कोनों वाले मोहोल आये हैं । जब १२००० भोमें पूरी हुई तों चार मेहराबें होकर ऊपर एक छत हो गयी है । इन मेहराबों में चार महाबिलन्द हिंडोले आयें है । इनकी जंजीरें पांच भोम छठी चांदनी पर आयी हैं । एक हिडोले में १२००० सखियां व युगल स्वरूप बैठ कर झूलते हैं । इसी प्रकार से सब हिंडोलों में झूलते हैं । इसी प्रकार से चारों तरफ १२००० तालों पर बनक आयी है । १२००० भोम से माणिक पहाड़ की तरफ दो मेहराबें जाकर गोल गुर्जो से लगी हैं । माणिक पहाड़ की चांदनी से एक भोम कम नीचे इन दोनों मेहराबों में दो हिंडोले आये हैं, और दो-दो मेहराबें दाएं-बाएं जो चार-चार मोहोलों की चांदनी आयी है, उन पर आयी हैं । इन मेहराबों में भी हिंडोले आये हैं । दाएं-बाएं तरफ और पहाड़ इन पर नहरें आयी हैं । इन तीनों नहरों में एक नहर का ब्यान यह हैं ३३ कोस की नहर २२-२२ कोस की पाल दोनों कमर भर ऊंची आयी है । पाल के दोनों तरफ कठेड़ा आया है। इसी प्रकार की बनक दूसरे पाल पर आयी है । चारों मोहोलों की चांदनी पर मध्य में ३३ कोस का ताल आया है । ताल के चारों तरफ पाल आयी है । पाल के दोनों तरफ कठेड़ा आया है । माणिक पहाड़ की गुर्जो वाले कुण्डों से जो पानी गिरता है, सो नहरों में आता है । ताल के तीन तरफ नहर निकलती हैं । दो नहरें दाएं-बाएं जाती है । एक नहर ताल के पाल के नीचे कई धाराओं के रूप में गिरती है । एक भोम नीचे जो नहर आयी है, उस नहर में पानी जाता है । चारों कोनों पर जो मोहोल आये हैं, उससे भी पानी नीचे उतरता है । सब भोमों में पानी देकर नीचे ताल में आता है । इस ताल के चारों कोनों पर फिर एक-एक भोम मोहोल उठे हैं । चार मेहराबें बनकर ताल के ऊपर चांदनी आयी है और दो मेहराबें माणिक पहाड़ की गोल गुर्जो से मिली हैं । दो मेहराबें दाएं-बाएं मोहोलों से मिली हैं । इन तीनों नहरों की चांदनी हुई है । एक चांदनी के दोनों तरफ कठेड़ा आया है । इसी प्रकार से तीनों चांदनी पर आया है और ताल की चांदनी पर चारों कोनों पर चार गुमटियां आयी हैं । बाकी चारों तरफ कठेड़ा आया है । नीचे जो ताल है । उसकी चांदनी पर कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । जिससे कमर भर की सीढ़ियां चारों तरफ २२ कोस की रौंस पर उतरी हैं । बाकी में कठेड़ा आया है । चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां सब आयी हैं । अब नहर की चांदनी पर चले जाइए । यदि परिकरमा करनी है, तो नहर की चांदनी पर होके परिकरमा कर आइए । ऊपर चांदनी पर खड़े होकर सब जोगबाई दिखायी देती है । इसी प्रकार से चारों तरफ १२००० जो ताल आये हैं, उनकी भी ऐसी बनक आयी है ।

इस ताल के साथ दूसरा ताल आया है । ताल की पाल पर जो भोम भर की मोहलात आयी है, उसके चारों कोनों वाले चारों मोहोल एक भोम कम १२००० भोम सीधे चले

Nijanand App

९४. माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य

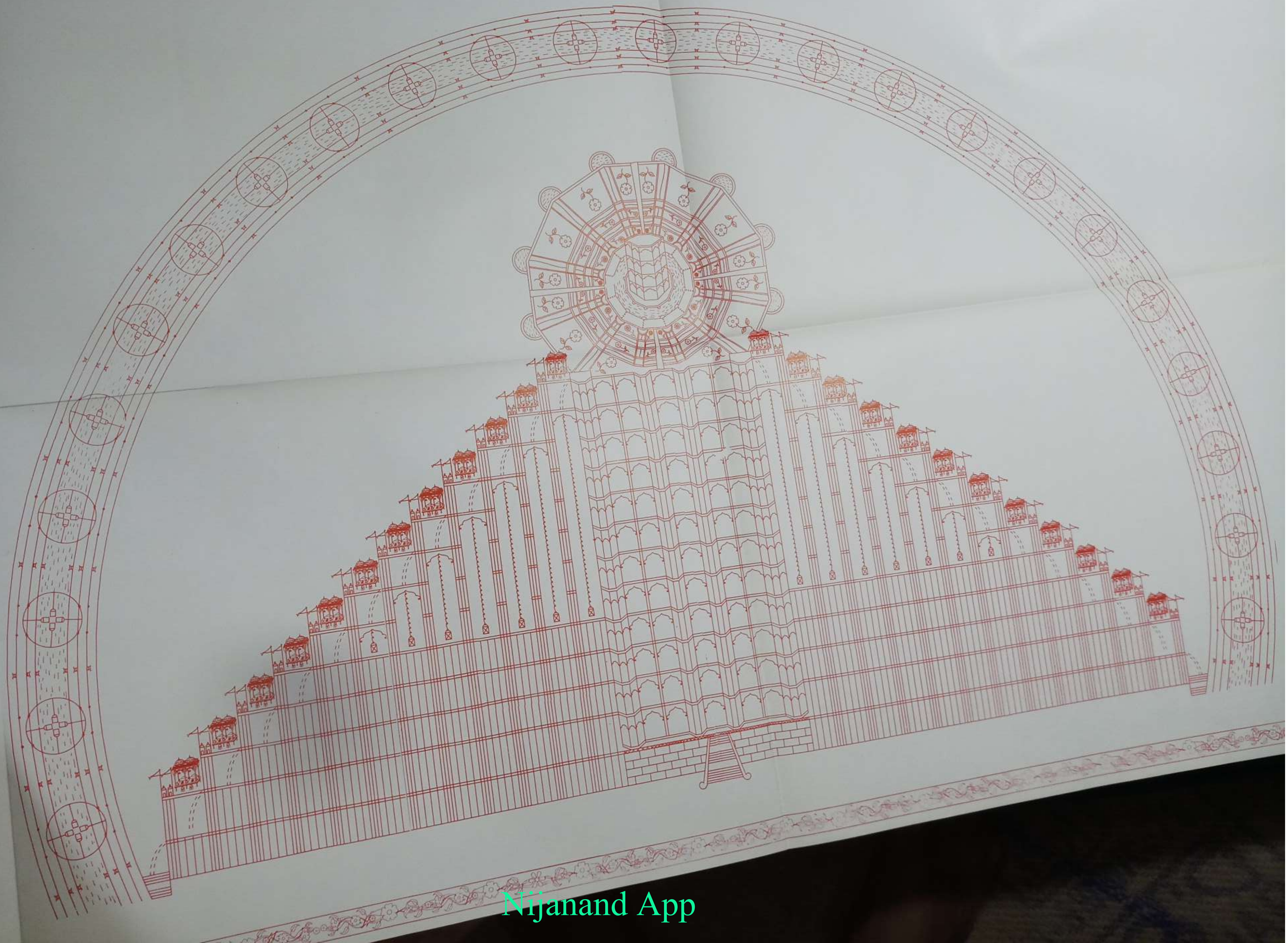

Nijanand App

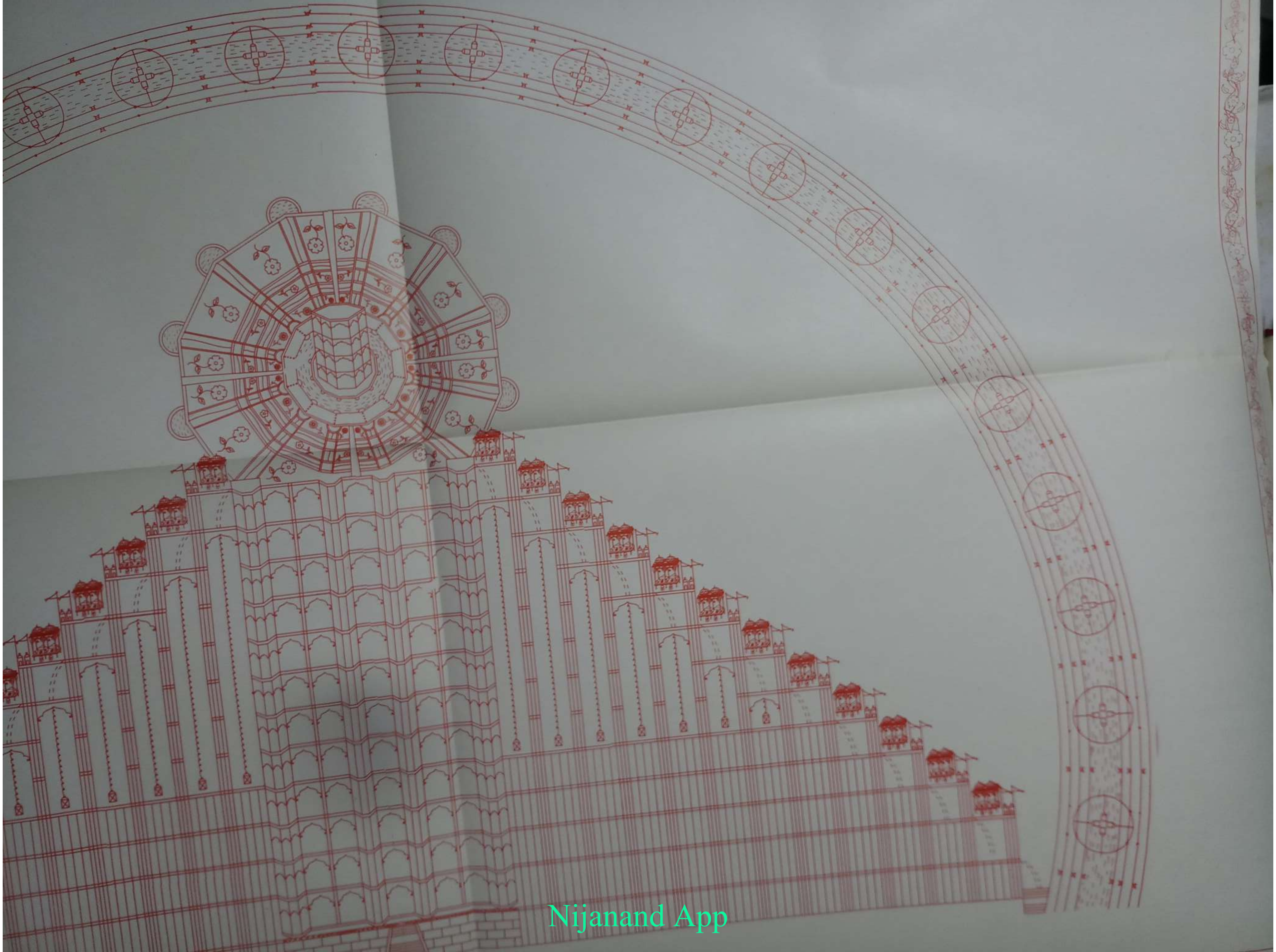

Nijanand App

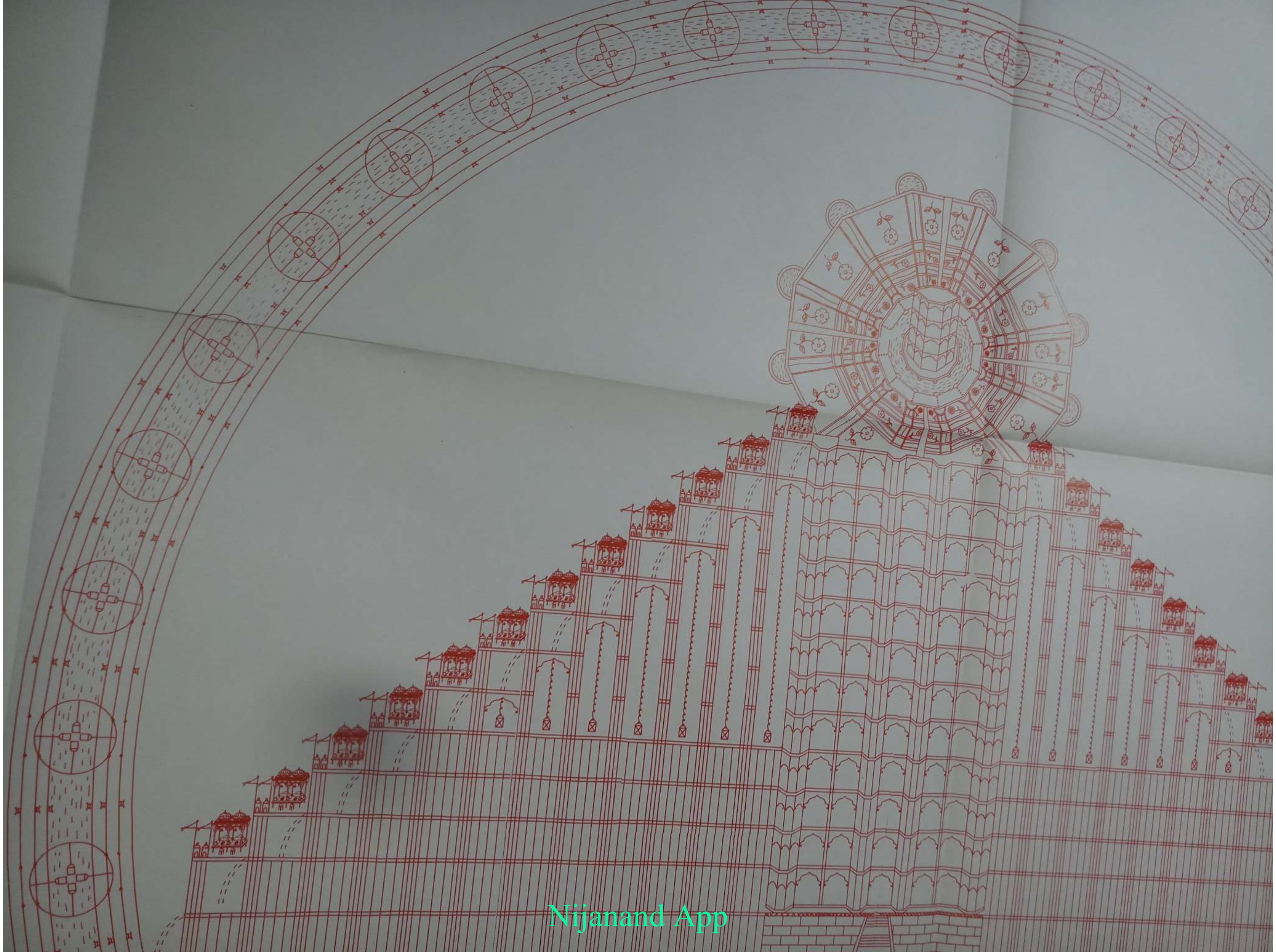

Nijanand App

९४-माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य

माणिक पहाड़ बारह लाख योजन अर्थात् ४८ लाख कोस ऊंचा और अड़तालीस लाख कोस की गिरद में है। ४८ लाख कोस की गिरद में जमीन से एक भोम भर ऊंचा चबूतरा है, जिसके किनारे पर कठेड़ा फिरता है। उस चबूतरे के १२००० हांस है। एक एक हांस चार-चार सौ कोस का है। उस चबूतरे की किनार से चार सौ कोस की जगह परिकरमा के लिये छोड़कर १२००० हवेलियों की कतारें आयी है। इन हवेलियों की उपरा-ऊपर १२००० भोमें हैं। एक-एक भोम चार-चार सौ कोस की ऊंची है और १२००० हांस के १२००० बड़े गोल गुर्ज हैं और १२००० हांस के १२००० हवेलियों के १२००० बड़े दरवाजे सुशोभित हैं और १२००० दरवाजों के चौबीस हजार चबूतरे हैं। उन चबूतरों पर २४००० चौखूटे गुर्ज शोभायमान हैं और भीतरी तरफ १२००० हवेलियों की १२००० पंक्तियां जगमगाती हैं। इस प्रकार प्रथम भूमिका में चौदह करोड़ चालीस लाख हवेलियां हैं। इसी प्रकार उपरा-ऊपर प्रत्येक भूमिका में यही संख्या है। हवेलियां इस प्रकार हैं कि एक चौरस एक गोल और एक चौरस तथा एक गोल है। इस प्रकार ६ हजार गोल और ६ हजार चौरस होने से चार चौरस के बीच में एक गोल और चार गोल के बीच में एक चौरस की शोभा देदीप्यमान है। इन हवेलियों के अन्दर की रचना देखिए। एक एक हवेली के अन्दर बारह हजार मोहोल हैं। बारह हजार मोहोल मं से प्रत्येक मोहोल के अन्दर बारह-बारह हजार मंदिर हैं। उन प्रत्येक मंदिर के अन्दर बारह बारह हजार कोठरियां हैं। उन सब कोठरियों के बीच में कमर भर ऊंचा-चबूतरा है। उन चबूतरों की किनार पर बारह हजार थंभ घेर के शोभायमान हैं। उन थंभों की मेहराबों में बारह हजार हिंडोले हैं। इसी प्रकार हवेलियों के और मोहोलों के बीच-बीच में कमर भर ऊंचे चबूतरे हैं और चबूतरों के चारों तरफ फिरते बगीचे शोभा बढ़ा रहे हैं और प्रत्येक चबूतरों की किनार पर बारह बारह हजार थंभ हैं और उन थंभों में हिंडोले लगे हैं तथा प्रत्येक बगीचों में नहरें, चेहबच्चे, फव्वारे, छूटते हैं। इसके अतिरिक्त बेशुमार शोभा परिपूर्ण है। जैसा एक हवेली का वर्णन लिख आये हैं, इसी प्रकार प्रत्येक हवेलियों के अन्दर जानिये और जैसा वर्णन एक भूमिका में है, इसी प्रकार का वर्णन प्रत्येक भूमिका में है। प्रत्येक दो हवेली के बीच में थंभों की दो हारें हैं।

Nijanand App

१५. वन की नहरें (मोहलातें)

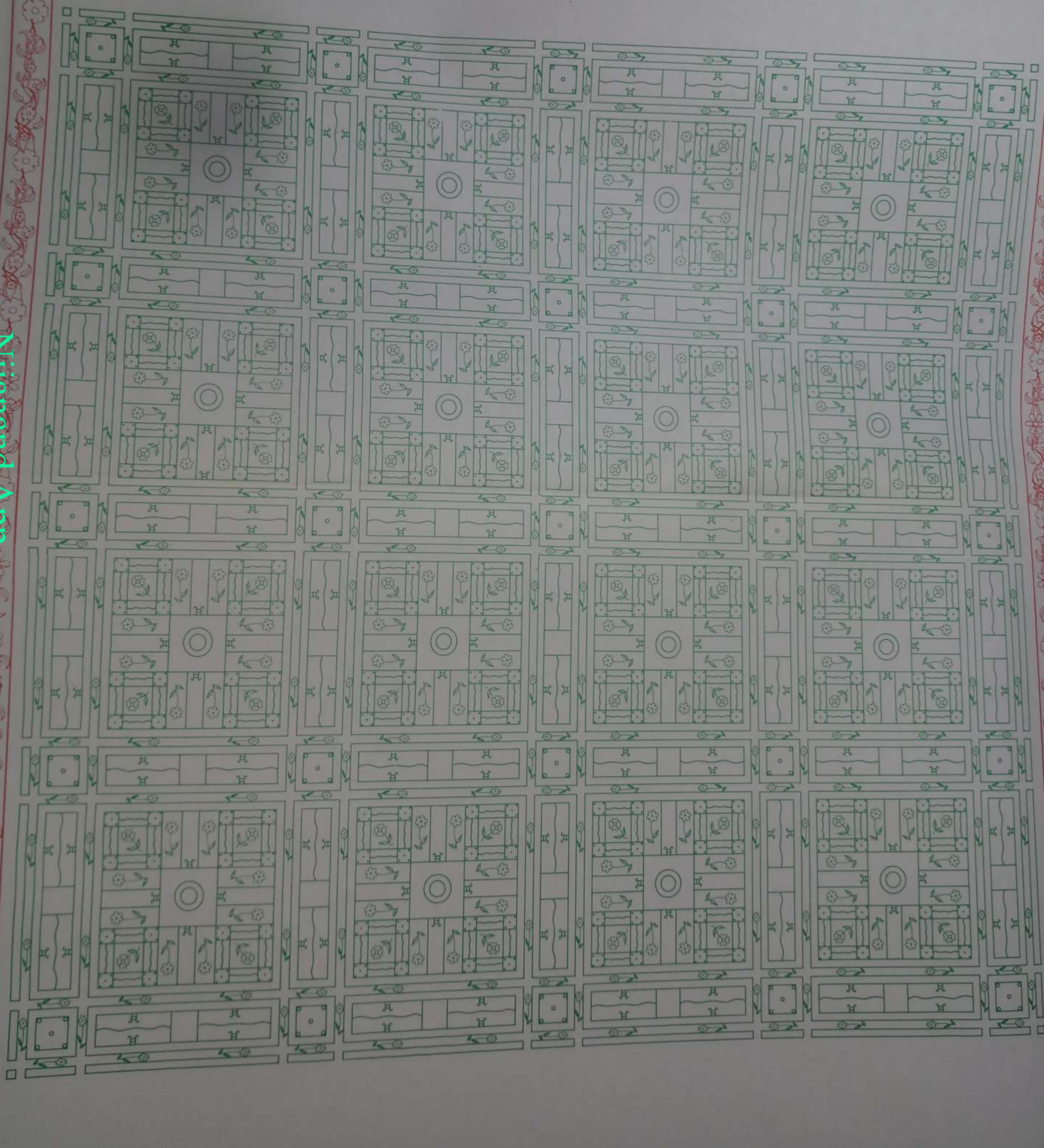

Nijanand App

९५-वन की नहरें (मोहोलातें)

महावन के साथ लगकर वन के मोहोल आए हैं। चौड़ाई १ करोड़ कोस की आयी है और लंबाई तो चारों तरफ धाम-परमधाम को घेरकर आयी है। महावन से लगकर इन वन के मोहलों के ३२ हांस आये हैं, जिसकी दो परिकरमा आयी है। एक महावन के साथ लगकर, दूसरी चार हार हवेली के साथ लगकर आयी है। चार हार हवेली की तरफ परिकरमा करें तो २१ करोड़ कोस की होती है और भीतरी तरफ महावन के साथ करें तो १५ करोड़ कोस की होती है। हांस की लंबाई ४८०००० लाख कोस की आयी है परन्तु बारीकी हिसाब से ४६ लाख ८७ हजार ५०० कोस की है। इसकी बनक बड़ोवन, मधुवन, महावन की भांति आयी है। वही १२०० कोस के अन्तर पर सब नहरें आयी हैं। एक नहर ४०० कोस की चौड़ी आयी है। नहर की बनक मधुवन, महावन की नहरों के समान आयी है। ४-४ नहरों के बीच में चौक आया है। उस चौक के मध्य भाग में ४०० कोस का लंबा चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चारों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं। बाकी में कठेड़ा आया है। चबूतरे के मध्य भाग में बड़ा भारी पेड़ आया है, जिसकी ऊंचाई ५ भोम की है परन्तु एक-एक भोम में १२००० भोमें आयी हैं। तब सब ६०००० भोमें हुई। एक भोम तक पहले थड़ (तना) चला गया है, जिसमें दरवाजे लगे हैं। ऊपर जाने को सीढ़ियां आयी हैं। एक भोम में माणिक पहाड़ की एक हवेली का विस्तार आया है। एक भोम में हजारों-लाखों, बाग-बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे, मोहल, मंदिर, कोठरियां चौक चबूतरे अपरम्पार आये हैं। ऐसी-ऐसी सब भोमें आयी हैं। १२००-१२०० कोस की दूरी पर सब पेड़ आते गए हैं। सब पेड़ों की भोमें एक दूसरे पेड़ से मिली हुई हैं। वन के मोहलों के सूत्रधार में बड़ोवन, मधुवन, महावन के सब वृक्ष आए हैं। जरा भी फर्क नहीं आया है। पेड़ों के चबूतरे के नीचे रौंस से लगकर बेशुमार बाग-बगीचे नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे आए हैं और वृक्ष भी अपरम्पार आए हैं। इन वृक्षों की ऊंचाई एक भोम की आयी है। इस प्रकार सब चबूतरों के चारों तरफ की बनक आयी है। हर वृक्ष के चारों तरफ चार नहर कमर भर ऊंची आयी हैं। नहरों के मध्य भाग में पुल आया है। चारों कोनों पर चार चेहेबच्चे आए हैं। एक भोम की ऊंचाई ४०० कोस की आयी है। तब ६०००० भोमों की ऊंचाई २ करोड़ ४० लाख कोस की होती है। इन सब पेड़ों की डालियां निकल करके सब एक ही छत हो गयी है। हर एक पेड़ पर आ-जा सकते हैं, जिस प्रकार से महावन का ब्यान आया है। वन की मोहोलातों का भी ब्यान उसी अनुसार आया है।

Nijanand App

१६. छोटी रांग (चार हार हवेली)

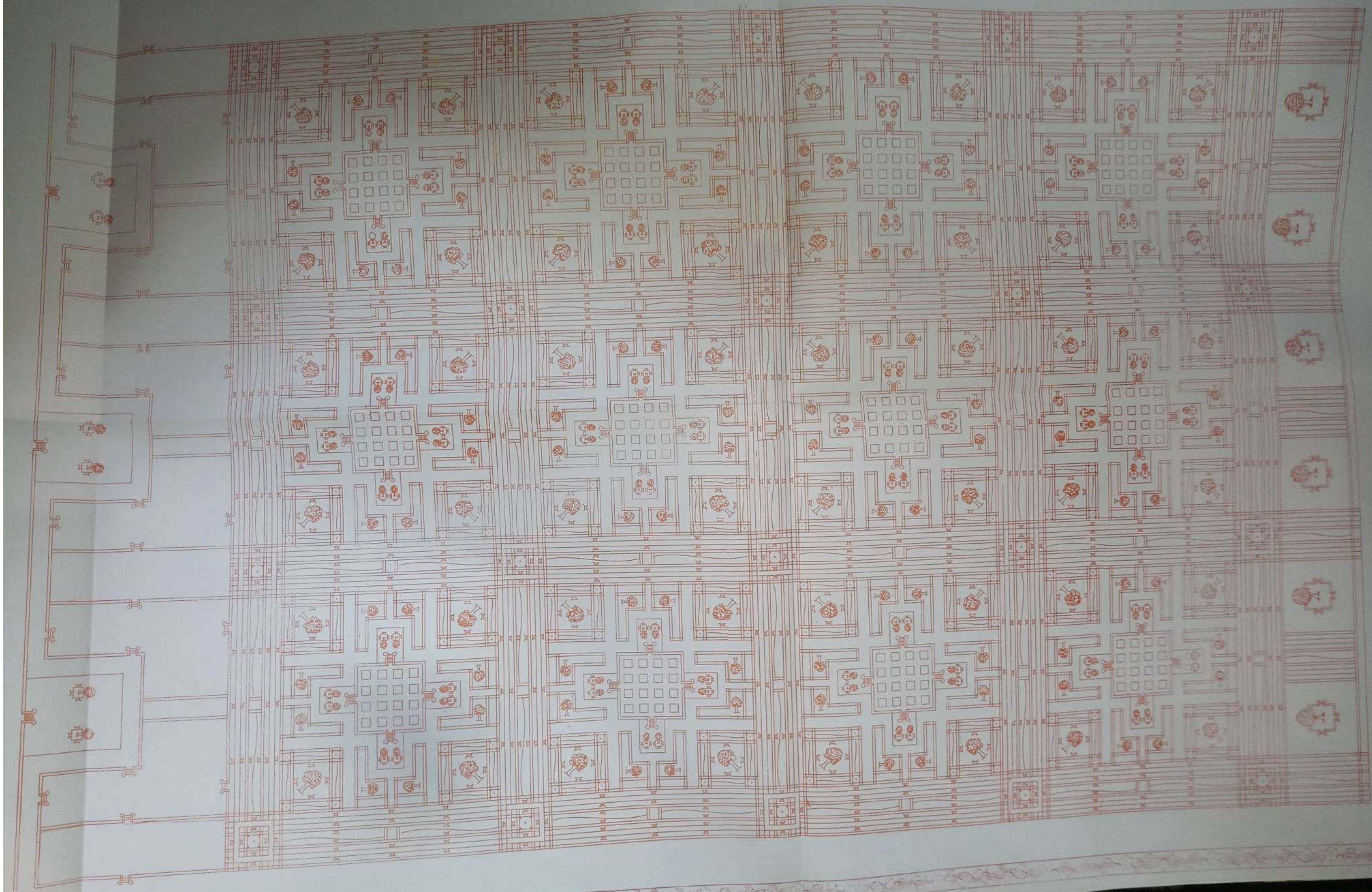

Nijanand App

१६. छोटी रांग (चार हार हवेली)

Nijanand App

९६. छोटी रांग (चार ह

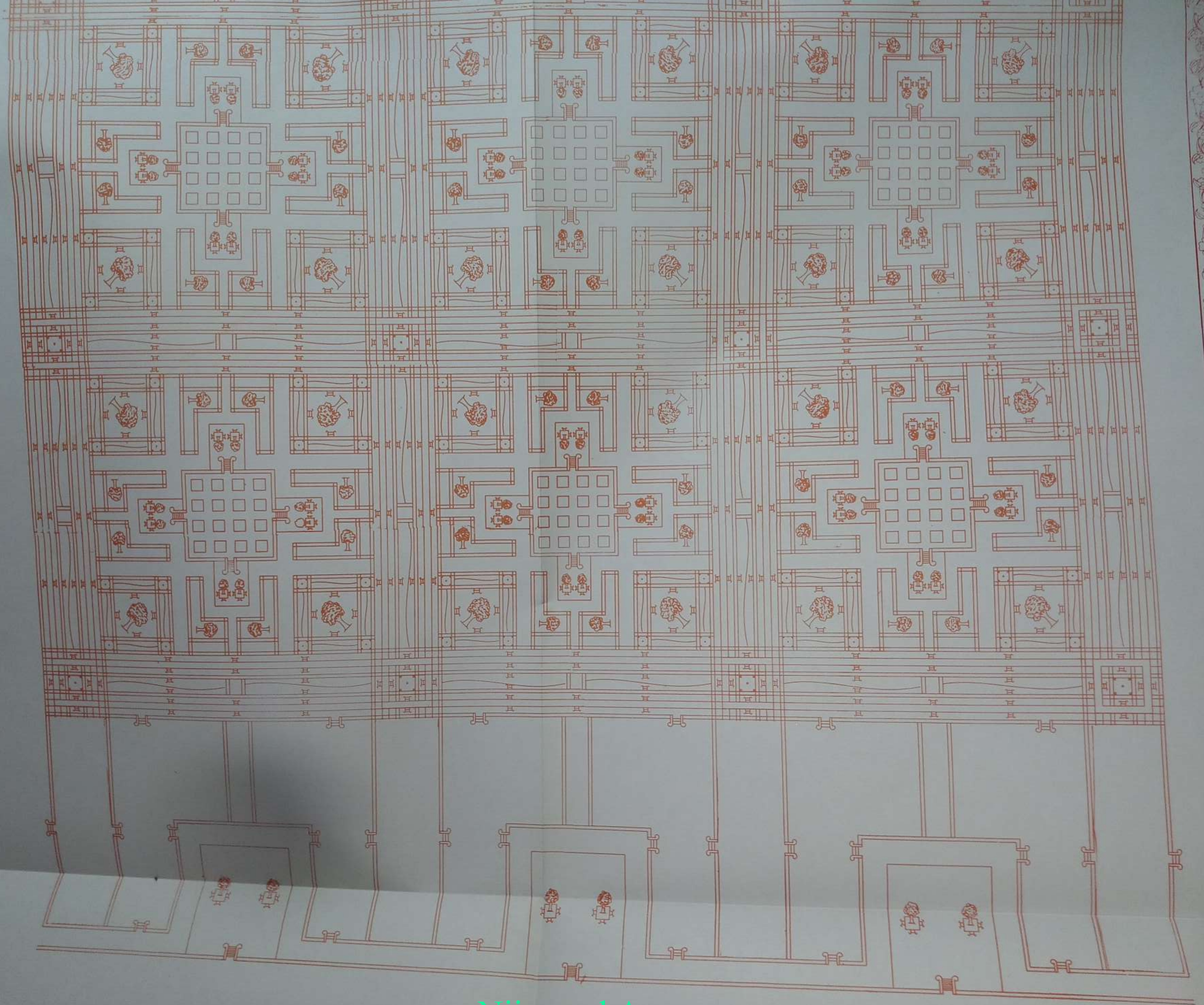

Nijanand App

९६-छोटी रांग (चार हार हवेली)

वन की नहरों के साथ लगकर चार हार हवेली आयी है। वन की नहरों के साथ लगकर बड़ी नहर आयी है, जो १२०० कोस की चौड़ाई में, ४०० कोस में नहर है और ४००-४०० कोस की दोनों तरफ पाल आयी है। उस पाल के तीन हिस्से हुए हैं। मध्य भाग में १३३ कोस की कमर भर ऊंची पाल आयी है। दोनों तरफ १३३-१३३ कोस की रौंस आयी है। जल रौंस से कमर भर सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। पाल के दोनों तरफ कठेड़ा आया है। इसी प्रकार बाएं तरफ की पाल आयी है। १२०० कोस की चौड़ी एक नहर हुई। लंबाई तरफ ३२ हांस आए हैं। एक हांस की लंबाई ६५ लाख ६२ हजार ५०० कोस की होती है। तब ३२ हांसों की लंबाई २१ करोड़ होती है। सवा दो करोड़ कोस की जगह छोड़कर फिर एक नहर १२०० कोस की चौड़ी पहले ब्यान माफक आयी है। लंबाई तरफ ३२ हांस आए हैं। पहल बड़े होते जाते हैं। सवा दो करोड़ कोस की जगह छोड़ कर तीसरी नहर १२०० कोस की आयी है। फिर २-१/४ करोड़ कोस जगह छोड़कर, फिर १२०० कोस की चौड़ी नहर आयी है। यह नहर लंबाई तरफ गयी है, जिसके ३२ हांस आए हैं। एक हांस की लंबाई में २ करोड़ ३३ लाख ३७ हजार ५०० कोस होते हैं। ३२ हांसों की लंबाई में ७५ करोड़ का हिसाब होता है। जैसे-२ आगे की तरफ जाते हैं, हांस बदलते जाते हैं। चौड़ाई तरफ हांस-हांस के मध्य में १२०० कोस की चौड़ी नहरें आयी हैं। पहले ब्यानानुसार चार नहरों के बीच एक चौक २-१/४ करोड़ का आया है। चौक के चारों तरफ एक नहर मध्य भाग में पटी है अर्थात् पुल आया है। चारों कोनों पर ४ चेहेबच्चे आए हैं। चार नहरों के बीच एक चौक आया है। एक हार में ३२ चौक आए हैं। यह तो लंबाई तरफ आए हैं और चौड़ाई तरफ ५ नहरों के बीच चार चौक आए हैं। सो चारों हारों के चौक १२८ हुए। इस हर एक चौक में एक-२ हवेली आयी है। तब चारों हारों के १२८ हवेली आयी है।

एक हवेली में १२००० की १२००० हारें आने से १४ करोड़ ४० लाख हवेली आयी हैं। एक लाईन में १२००० हवेली आयी हैं। ३२ हवेलियों की एक हार में ३ लाख ८४ हजार हुई। एक बड़ी हवेली में १४ करोड़ ४० लाख हवेली आयी हैं और सबकी ऊंचाई ५ भोम की है। तब सब हवेलियां ७२ करोड़ होती हैं। ऐसी-ऐसी चारों हारों की १२८ हवेली हैं। तब सब हवेली ९२ अरब १६ करोड़ होती हैं। यह बड़ी हवेली है। इस एक हवेली में १२००० हवेली आयी है। तब सब छोटी हवेली १ पदम १० नील ५९ खरब २० अरब होती हैं। एक हवेली त्रिपोलियों सहित ६२५ कोस की है।

एक हवेली के चारों तरफ ८ बगीचे आए हैं। ४ बगीचे चारों दिशा के और ४ बगीचे चारों कोनों में आए हैं। एक बगीचे की लंबाई-चौड़ाई ७५ लाख कोस की है। चारों दिशा के चार बगीचों में चार चांदनी चौक आए हैं। एक दिशा में जो एक बगीचा ७५ लाख कोस का आया है, उसके तीसरे हिस्से में २५ लाख कोस का एक चांदनी चौक आया है। इस चौक के मध्य में दो कमर भर ऊंचे चबूतरे आए हैं। इस चबूतरे के मध्य में दो वृक्ष हरे और लाल रंग के आए हैं। हवेली के दाएं तरफ हरे रंग का व बाएं तरफ का वृक्ष लाल रंग का आया है। रंग भवन के चबूतरे के समान साथ लगकर कमर भर ऊंची ४०० कोस की चौड़ी रौंस आयी है। यह चांदनी चौक के तीन तरफ घूमी है। फिर दीवाल के साथ लगकर चली गयी

Nijanand App

है। हवेली के मध्य भाग में जो त्रिपोलिया आया है। इसी त्रिपोलिया के सामने भोम भर की सीढ़ी उतरी है। ४०० कोस की चौड़ाई की जगह से ८०० की लंबाई तक सीढ़ियों के दाएं-बाएं परकोटे आए हैं। परकोटे की दीवाल पर सुंदर कांगरी आयी है। इन सीढ़ियों के सामने कमर भर ऊंची रौंस ४०० कोस की चौड़ी आयी है। दाएं-बाएं नीचे वन शोभा लेते हैं। यह रौंस जाकर पाल की नीचे की रौंस में मिल गई है और दो रौंसें बगीचे के दाएं-बाएं ४०० कोस की चौड़ी और कमर भर ऊंची आयी हैं। यह रौंस भी पाल के नीचे वाली रौंस में जाकर मिल गयी है। इसी प्रकार चारों तरफ चांदनी चौक आए हैं। एक हार में चांदनी चौक १२८ हुए। तब सब हारों के चांदनी चौक ५१२ होते हैं, जिनकी अपरम्पार शोभा है।

Nijanand App

९७. एक मोहोल का चित्र

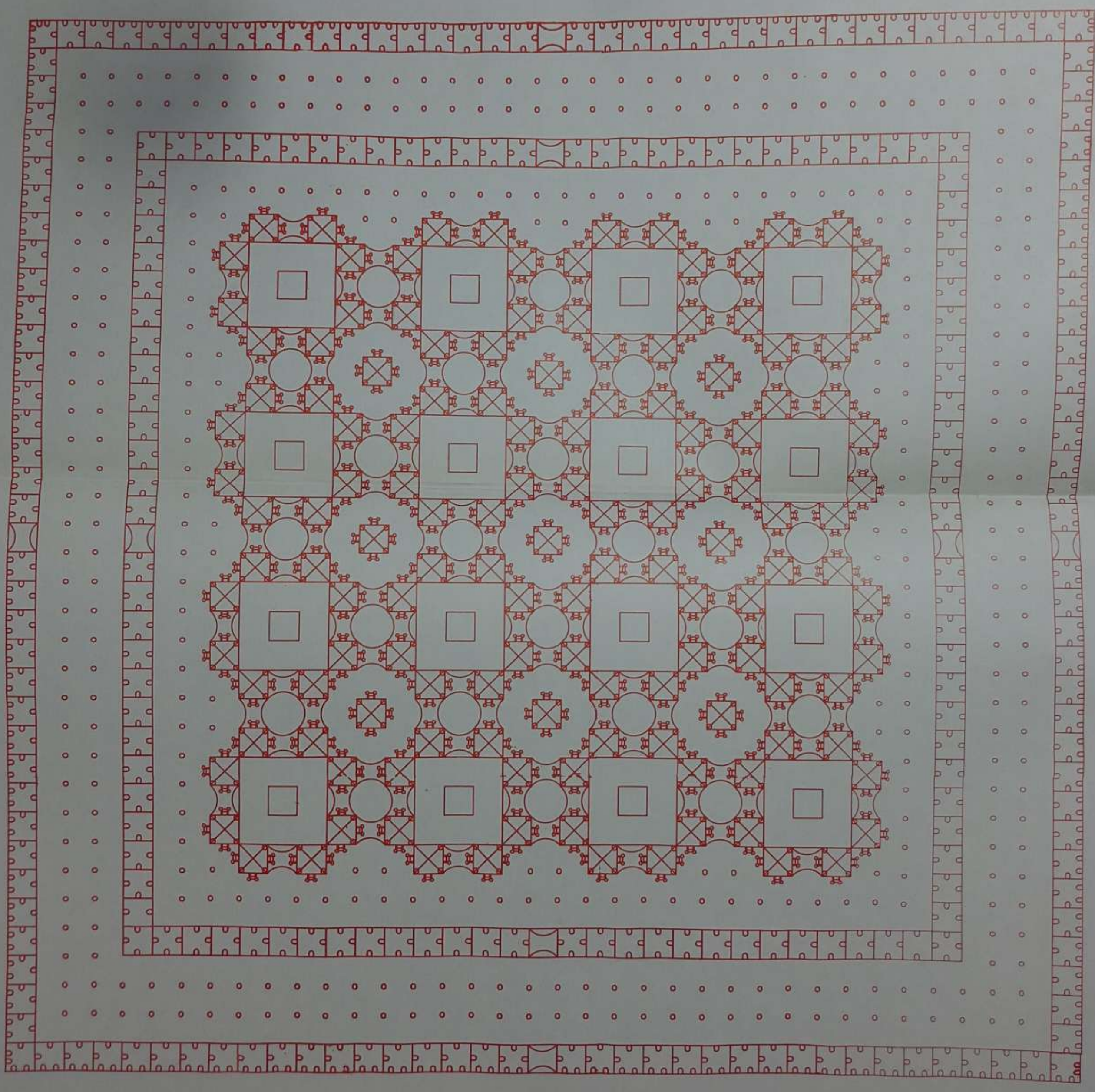

Nijanand App

९७-एक मोहल का चित्र

रांग के साथ वाला २-१/४ करोड़ कोस का जो एक चौक आया है उसके तीसरे हिस्से में ७५ लाख कोस का लंबा-चौड़ा भोम भर ऊंचा एक चौक चबूतरा आया है। चबूतरे की चारों दिशाओं से सीढ़ियां उतरी हैं। बाकी में कठेड़ा आया है। चारों तरफ ४०० कोस की रौंस छोड़कर एक हवेली आयी है। जिस बड़ी हवेली में १२००० हवेली एक तरफ आयी है। इस प्रकार से १२००० हवेलियों की १२००० हारें आयी हैं। तब सब हवेली १४ करोड़ ४० लाख होती हैं। ऊंचाई ५ भोम की आयी है, परन्तु एक भोम में १२००० भोमें आयी हैं। तब पांचों भोमों की ६०००० भोमें होती हैं। एक हवेली त्रिपोलिया सहित ६३५ कोस की होती है। ३१२-१/२ कोस में हवेली और ३१२-१/२ कोस में त्रिपोलिया आए हैं। रांग की ४००० हवेली के सामने यह सब हवेली आयी हैं। ४००० हवेली के २४००० हांस होते हैं। रांग की हवेलियों के त्रिपोलियों के तीन हांस और हवेलियों के दो गुर्ज और एक दरवाजा यह तीन हांस मिलकर एक हवेली के ६ हांस हुए। यह हवेली ७५ लाख कोस की है। इसके हांस २४००० होते हैं। रांग की एक हांस के सामने एक हवेली आयी है। एक गली के सामने यहां पर तीन गली आयी हैं, वहां रांग पर ४०० कोस की एक गली आयी है। यहां ३१२-१/२ कोस में तीन गली आयी हैं, क्योंकि भीतरी तरफ हांस छोटा आया है, परन्तु मेल दोनों का हुआ। मध्य भाग में यहां पर त्रिपोलिया आया है। ७ करोड़ २० लाख दाएं तरफ और इतनी ही हवेली त्रिपोलियों के बांयी तरफ आयी हैं। हवेली के मध्य भाग में १०४ कोस का दरवाजा आया है। दरवाजे के दाएं-बाएं १०४-१०४ कोस के चौड़े गुर्ज आये हैं। वो भी उपरा-ऊपर ६०००० भोम तक गए हैं। एक भोम की ऊंचाई ४०० कोस होने से ६०००० भोमों की ऊंचाई २ करोड़ ४० लाख की आयी है। हर एक हवेली के ८ चबूतरे और ४ दरवाजे आए हैं। दो-दो हवेलियों के दरवाजों पर २४ मेहराबें आयी हैं। ४ हवेलियों के कोने पर २४ मेहराबें आयी हैं। कमर भर ऊंचे चबूतरों पर त्रिपोलियों की एक गली १०४ कोस की होती है। इसी प्रकार से सभी हवेलियों के दरवाजे आए हैं। एक हवेली के अंदर एक तरफ १५०० मंदिर तो चारों तरफ के ६००० होते हैं। भीतर दो हार थंभों के आगे एक हार ६००० मंदिरों की आयी है जिसके आगे दो हार थंभो की आयी हैं। इसके भीतर १२००० मोहलों की १२००० हारें आयी हैं। दो मोहलों के बीच में त्रिपोलिया आए हैं। एक मोहल के अंदर १२००० मंदिरों की १२००० हारें आयी हैं। दो मंदिर के बीच त्रिपोलिया आया है। इसी प्रकार सब मंदिर आए हैं। एक मंदिर के अंदर १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी हैं। दो कोठरियों के बीच त्रिपोलिया आया है। इसी प्रकार सब मोहल आए हैं। यह एक हवेली क़ी भीतरी तरफ की एक भोम का ब्यान आया है। इसी प्रकार सब हवेलियों की भोमें आयी हैं। इन हवेलियों की ऊंचाई ६०००० भोम आयी है। एक भोम की ऊंचाई ४०० कोस की है तब सब ऊंचाई २ करोड़ ४० लाख होती है। ऊपर ७५ लाख कोस की लंबी-चौड़ी चांदनी शोभा लेती है। चारों हारों में सब १२८ हवेली शोभा लेती हैं।

एक हवेली के गृद ८ बगीचे आए हैं चार दिशा में और चार कोनों में एक बगीचे के वृक्ष १२००० हारों की १२००० हारें आयी हैं तब सब वृक्ष १४ करोड़ ४० लाख होते हैं। एक ये वृक्ष त्रिपोलियों के सामने आकर लगे हैं। ६२५ कोस के अंतर पर सब आए हैं। इस प्रकार से लंबाई-चौड़ाई तरफ चौक आए हैं। ८ बगीचों के वृक्ष एक अरब २० लाख होते हैं।

Nijanand App

हवेली के सामने दो बगीचे गिनें तो सामने और दाएं-बाएं जो एक बगीचा आया है, उसमें से १/२-१/२ लिया, तब लंबाई तरफ २४००० वृक्ष हुए और चौड़ाई तरफ १२०००, इसी प्रकार से २४००० की १२००० हारें आने से एक तरफ वृक्ष २८ करोड़ ८० लाख हुए। तब चारों तरफ के एक अरब १५ करोड़ २० लाख आए। इन वृक्षों की ऊंचाई ६०००० कोस आयी है। एक चौक ६२५ कोस का आया है। इस चौक में २०० वृक्षों की २०० हारें आयी हैं।तब इन छोटे चौकों में और कई वृक्ष भी आए हैं जिनका हिसाब नहीं है। इन चांदनी चौक की जगह में वृक्ष नहीं आए हैं। एक हार हवेली के ३६ अरब ८६ करोड़ ४० लाख वृक्ष आए हैं। तब चार हार हवेली के (१२८ हवेलियों के) १ खरब ४७ अरब ४५ करोड़ ६० लाख आए हैं। यह सब वृक्ष बड़े आए हैं, जिनकी ऊंचाई ६०००० भोम की आयी है। ऊपर चांदनी सब एक हो गयी है। वन की भोम से हवेली की भोम में जा सकते हैं। हवेली की भोमें तथा वन की भोमों एक साथ आयी हैं। चांदनी ९ करोड़ चौडाई की आयी है। हर एक बगीचे में नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे आदि जोगबाई की शोभा आयी है। रांग के सामने इन हवेलियों की हांस आयी है। रांग के गोल गुर्जों के सामने नहरों के बड़े चेहेबच्चे आए हैं।

Nijanand App

१८. बड़ी रांग

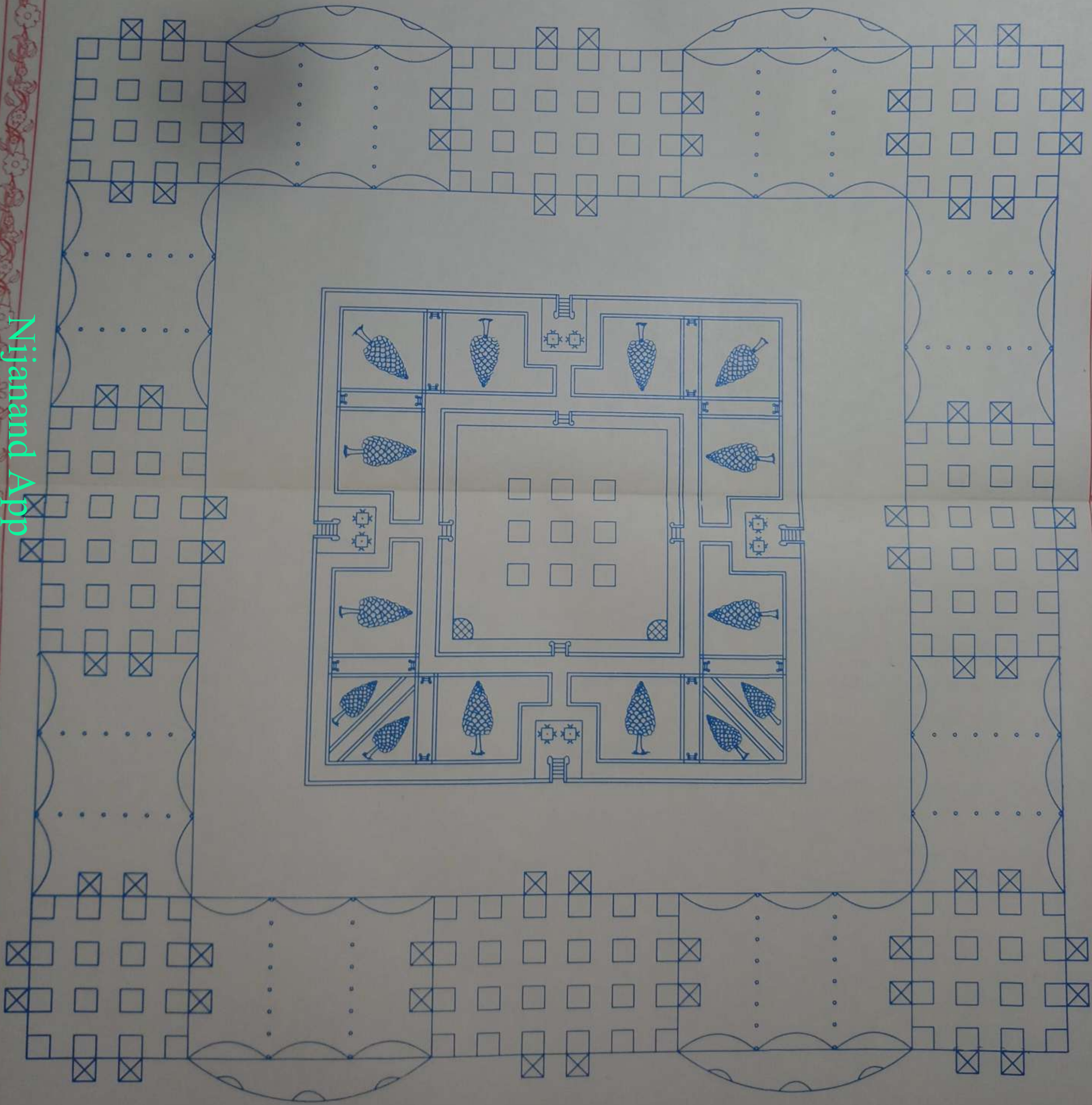

Nijanand App

९८-बड़ी रांग

छोटी रांग की चौथी हवेली बड़ी रांग के साथ लगकर आयी है। ७ करोड़ २० लाख दाएं और ७ करोड़ २० लाख हवेली बाएं तरफ छोड़कर मध्य के त्रिपोलियों से निकल कर ४०० कोस की रौंस छोड़कर आगे भोम भर सीढ़ियां उतर कर चांदनी चौक में आकर चांदनी चौक के सामने जो रौंस आयी है, उस पर पंहुचे। दाएं-बाएं कमर भर नीचे वन आया है। इसकी शोभा देखते हुए नहर की रौंस पर पहुंचे। रौंस से कमर भर सीढ़ी चढ़कर पाल पर होकर कमर भर सीढ़ी उतरकर रौंस पर आए। रौंस के आगे नहर के पुल पर होकर दूसरी तरफ रौंस पर पहुंचे। रौंस से कमर भर सीढ़ी चढ़कर पाल पर होकर पाल से कमर भर सीढ़ी उतरकर १२०० कोस की चौड़ी और ४ लाख कोस की लंबी रौंस पर आए। दाएं-बाएं वन आया है। यह रौंस त्रिपोलिया के सामने आयी है। ४ लाख कोस चलकर आगे कमर भर सीढ़ी चढ़कर दो मंदिर चौड़ी रौंस पर आए। ४०० कोस की चौड़ी सीढ़ियां चढ़कर भोम भर ऊंचे चबूतरे पर पहुंचे। चार हवेलियों का चबूतरा तथा रांग का चबूतरा एक बराबर आया है। इस चबूतरे की किनार पर कठेड़ा आया है। सीढ़ियों के दरवाजे की जगह छोड़कर इस कठेड़े के आगे १२०० कोस की चौड़ी रौंस चारों तरफ घूम करके आयी है। इस रौंस के आगे एक हवेली २ करोड़ ८८ लाख कोस की चौड़ी आयी है, और एक हांस २ करोड़ ९२ लाख कोस का होता है। जिस हवेली में १२००० हवेलियों की १२००० हारें आयी हैं। सब हवेली १४ करोड़ ४० लाख तले की भोम की हुई। ऐसी-२ उपरा-ऊपर १२००० भोमें आयी हैं। एक भोम की ऊंचाई १२००० कोस है। एक भोम में छोटी-छोटी १२००० भोमें आयी हैं। यह भोम १-१ कोस की है। तब इस हवेली की ऊंचाई नीचे से ऊपर तक १४ करोड़ ४० लाख कोस की आयी है। इन हवेलियों में १२००० की १२००० हारें आयी है। यह हवेली २४०० कोस की एक आयी है, जिसमें १२०० कोस की एक हवेली आयी है और १२०० कोस में त्रिपोलिया आया है। उस १२०० कोस के तीन भाग हुए। मध्य भाग में ४०० कोस का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं ४००-४०० कोस के चबूतरे आए हैं। चबूतरे कमर भर ऊंचे हैं। तीन तरफ कठेड़ा आया है। तीन तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी हैं। इसी प्रकार दूसरे चबूतरे की बनक आयी है। २ मेहराबें बीच के चौक पर आयी हैं। १२०० कोस की त्रिपोलिया में तीन गली आयी हैं। चार हवेली के कोनों पर २४ मेहराबें आयी हैं और दो हवेलियों के दरवाजे पर २४ मेहराबें आयी हैं। हवेली के सामने एक गली ४०० कोस की आयी है। हर एक हवेली के चारों तरफ ८-८ चबूतरे आए हैं। वो भी उपरा-ऊपर चले गए हैं। इसी प्रकार की बनक सभी हवेलियों में आयी है। १२०० कोस की जो एक हवेली आयी है। उसके सामने चबूतरे के नीचे १२०० कोस का चौड़ा और ४ लाख कोस का लंबा एक बगीचा आया है। और त्रिपोलियों के सामने १२०० कोस का चौड़ा और ४ लाख कोस का लंबा बगीचे की जमीन के समान एक रास्ता नहर तक चला गया है। इसी प्रकार सब १२००० हवेलियों के सामने १२००० बगीचे आए हैं तथा १२००० त्रिपोलियों के सामने १२००० रास्ते आए हैं। इसी प्रकार की बनक समुद्र की तरफ भी आयी है। १२००० हवेलियों की रौंस आयी है। इस रौंस पर २४००० गुर्ज और १२००० दरवाजों की मेहराबें ऊपर तक चली गई हैं। ऊपर जाकर २४००० गुर्जों पर गुम्मट आए हैं और १२००० दरवाजों पर सुंदर कमानें शोभा लेती हैं। इसी प्रकार से भीतरी रौंस पर समुद्र तरफ जोगबाई आयी है।

Nijanand App

९९. बड़ी रांग की हवेली

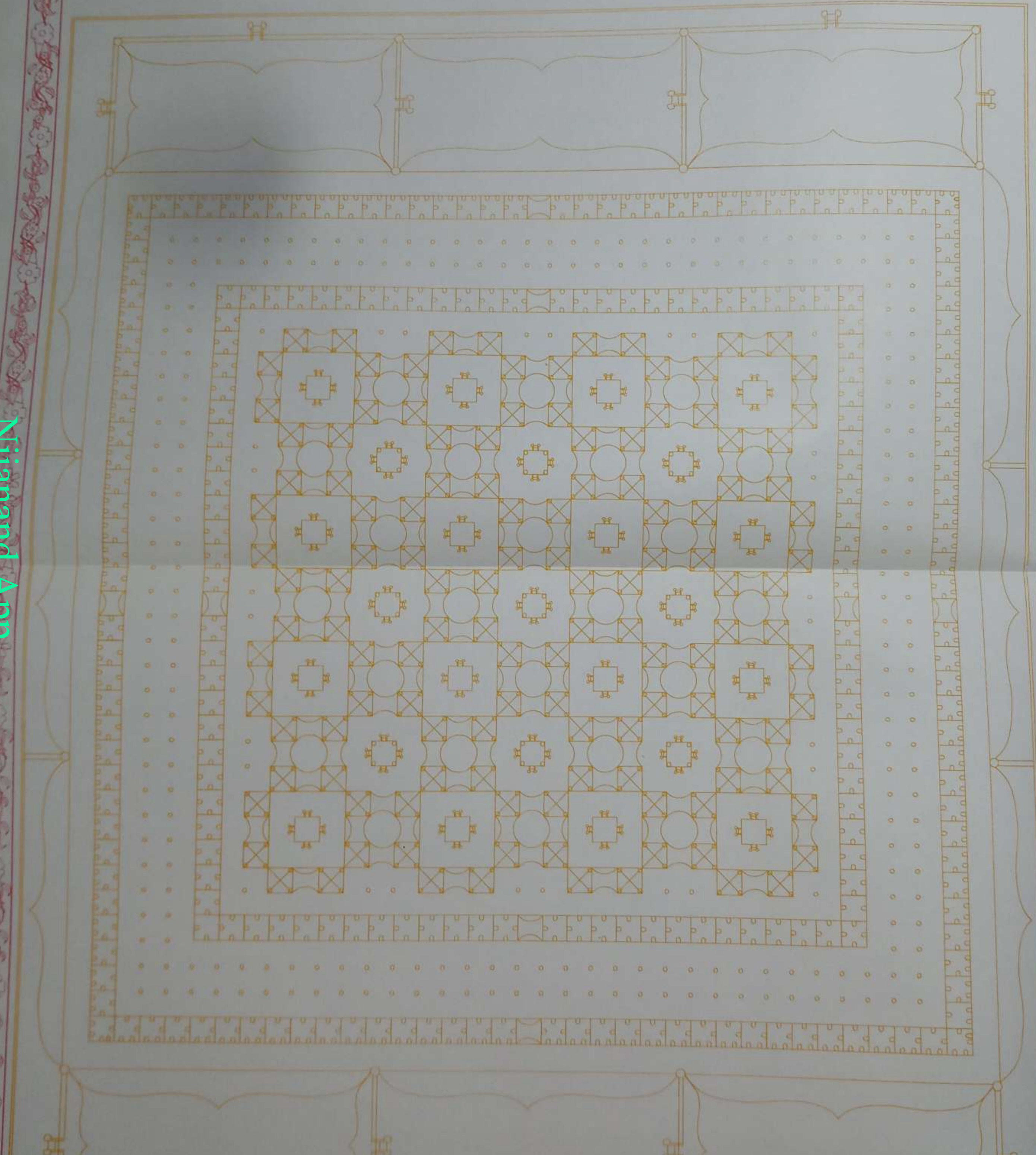

Nijanand App

९९-रांग की एक हवेली

एक हवेली के भीतर एक तरफ १५०० मंदिर आये हैं । चारों तरफ मंदिर ६००० आये हैं । भीतर एक हार थंभों की ६००० की आयी है । इसके भीतर ६००० थंभों की दूसरी हार आयी है । इसके आगे एक हार मंदिरों की आयी है । मंदिर, थंभों की ऊंचाई वैसे ही आयी है । इनकी भोमें उपरा-ऊपर १२००० गयी हैं । इसके भीतर १२००० मोहलों की १२००० हारें आयी हैं । दो मोहलों के बीच त्रिपोलिया आया है । इन मोहलों की ऊंचाई १२००० भोम की आयी है । इन मोहलों के भीतर १२००० मंदिरों की १२००० हारें आयी हैं । दो मंदिरों के बीच में त्रिपोलिया आया है । एक मंदिर के अंदर १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी हैं । दो कोठरियों के बीच में त्रिपोलिया आए हैं । अपरम्पार शोभा है । बाग, बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे, थंभ, मेहराबें, चबूतरे, हिंडोले बेशुमार आये हैं । माणिक पहाड़ की हवेलियों के समान विस्तार वाली हवेली आयी हैं । ये हवेली १५०० मंदिर (१२०० कोस) की लंबी-चौड़ी आयी है । जैसी एक हवेली है वैसी ही १४ करोड़ ४० लाख हवेलियां आयी हैं । जैसी एक भोम है, वैसी ही १२००० भोमें आयी हैं ।

ये शोभा खूबी देखते हुए हवेली के बाहर निकले समुद्र की तरफ इस हवेली के आगे १४०० कोस की चौड़ी रौंस चारों तरफ घूमी है । इस रौंस पर १२००० हवेलियों के दरवाजे तथा २४००० चौखूटे गुर्ज और १२००० त्रिपोलिया आए है । इस रौंस पर आगे कठेड़ा चारों तरफ आया है । जहां सीढ़ियों के दरवाजे आए हैं, वहां पर कठेड़ा नहीं आया हैं । हर एक हवेली के सामने भोम भर नीचे १४०० कोस का चौड़ा और ४ लाख कोस का लंबा एक बगीचा आया है । इस बगीचे में एक चांदनी चौक आया है । और त्रिपोलियों के सामने रौंस १४०० कोस की चौड़ी और ४ लाख कोस की लंबी आयी है । इसी प्रकार सभी हवेलियों के सामने बनक आयी है । इन बगीचों की जमीन से कमर भर ऊंची ४०० कोस की चौड़ी समुद्र की रौंस आयी है । इसी रौंस की जिमी माफक १२००० रौंसें, मध्य चांदनी चौक से आकर इस रौंस में मिल गयी हैं और १२००० रौंसें त्रिपोलियों के सामने आयी हैं । जो बगीचों की जमीन माफक आयी हैं । अगर उन रौंसों से आए तो कमर भर सीढ़ी चढ़ कर समुद्र की रौंस पर आ सकते हैं । इस रौंस से हाथ लगता जल है । समुद्र के एक तरफ से २४००० रास्तों के सामने समुद्र की रौंस से कमर भर की सीढ़ी २४००० जगह से चबूतरों पर उतरी हैं । इस जल चबूतरे पर कमर भर जल भरा है । समुद्र से एक तरफ २४००० घाट आए हैं बाकी में कठेड़ा लगा है । इस तरह से रौंस वन तरफ भी आयी है । चार हार हवेली की तरफ जो दीवाल आयी है । २ करोड़ ८८ लाख कोस की भीतरी तरफ की दीवाल आयी है । इस हवेली की भोम से २४०० की रौंस तक छज्जे गए हैं । छज्जों की किनार पर कठेड़ा आया है । हवेली की बाहरी तरफ तथा भीतरी तरफ इस रांग में ३२ हांस आए हैं । बाहरी चार हार हवेली की तरफ ३२ हवेली आयी है और ३२ गोल गुर्ज आए हैं । गुर्जों की लंबाई ४ लाख कोस की आयी है । २ लाख कोस इस हांस के लिए, २ लाख कोस उस हांस के लिए, इन ४ लाख कोस में गोल गुर्ज आया है, जिसमें ६ दरवाजे आए हैं । तीन बाहरी रौंस पर और ३ दरवाजे भीतरी तरफ, इन गुर्जों के सामने त्रिपोलिया आए हैं । एक हांस की चौड़ाई २ करोड़ ९२ लाख कोस की हुई । ऐसे ही ३२ हांस आए हैं ।

Nijanand App

१००. हवेलियों की त्रिपोलियों के मध्य की हवेली

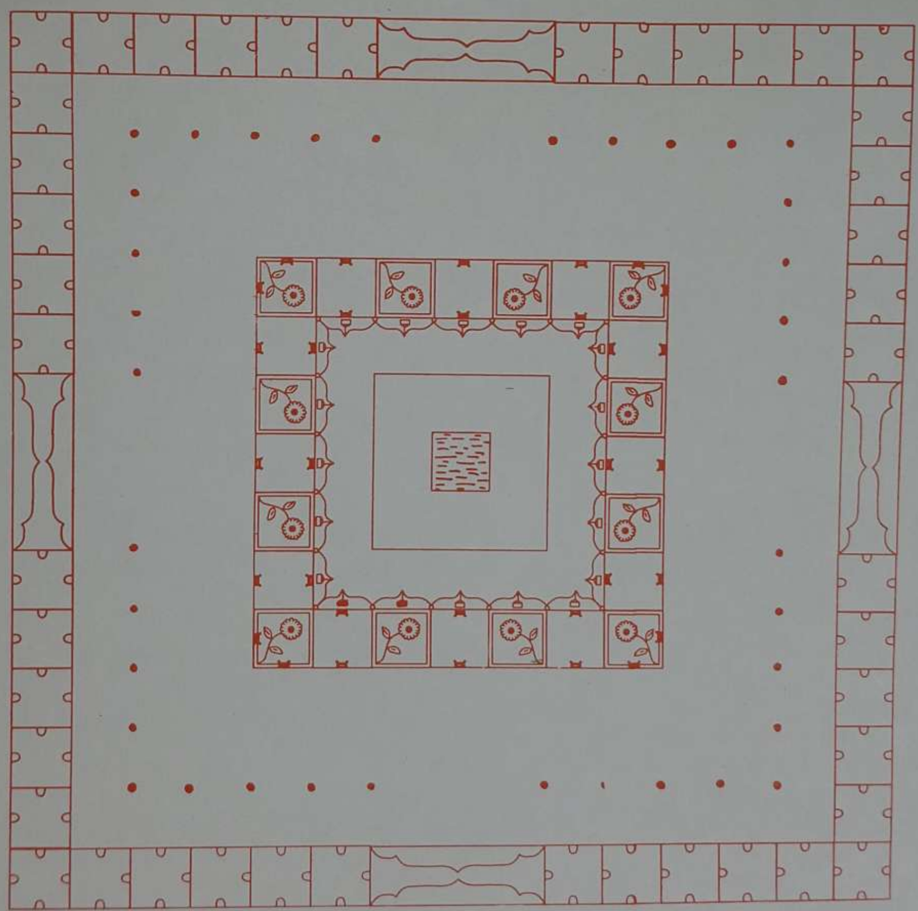

Nijanand App

१००-हवेलियों के त्रिपोलियों के मध्य की हवेली

एक बड़ी हवेली में ६०००-६००० हवेली दाएं-बाएं तरफ रही हैं। मध्य भाग में त्रिपोलिया आया है। मध्य में जहां चार त्रिपोलियों की चौकड़ी मिली है, वहां पर ४०० कोस का चौड़ा चौक आया है। उस चौक में हवेली आयी है। इस हवेली के चारों तरफ ४०० कोस की रौंस आयी है। मध्य में दरवाजा आया है। दरवाजे के बाहर रौंस पर दो चौरस चबूतरे आए हैं, जिन पर चार-चार थंभ आए हैं। ऐसी शोभा चारों तरफ के दरवाजों की आयी है। दरवाजे के अंदर हवेली में चारों तरफ मोहल आए हैं। इसके भीतरी तरफ एक हार थंभों की आयी है। इसके भीतर कमर भर नीचे वन, बगीचे, नहरें तथा फव्वारे आए हैं। हवेली के तीसरे हिस्से में कमर भर का ऊंचा एक चौरस चबूतरा आया है। चारों तरफ उतरने को सीढ़ियां तथा चबूतरे के किनार पर थंभ आए हैं। थंभों के बीच में कठेड़ा आया है। थंभों के ऊपर मेहराबें हैं, जिनमें हिंडोले आए हैं। चबूतरे पर गिलम, सिंहासन आए हैं। चबूतरे के मध्य में जल का एक स्तून (पाईप) आया है। वह स्तून आकाशी तक गया है। इस हवेली की बनक पुखराज की आकाशी की मध्य वाली हवेली के समान आयी है।

Nijanand App

१०१. एक सागर की हवेली की चांदनी पर टापू, मोहोल एवं ताल तथा देहेलान

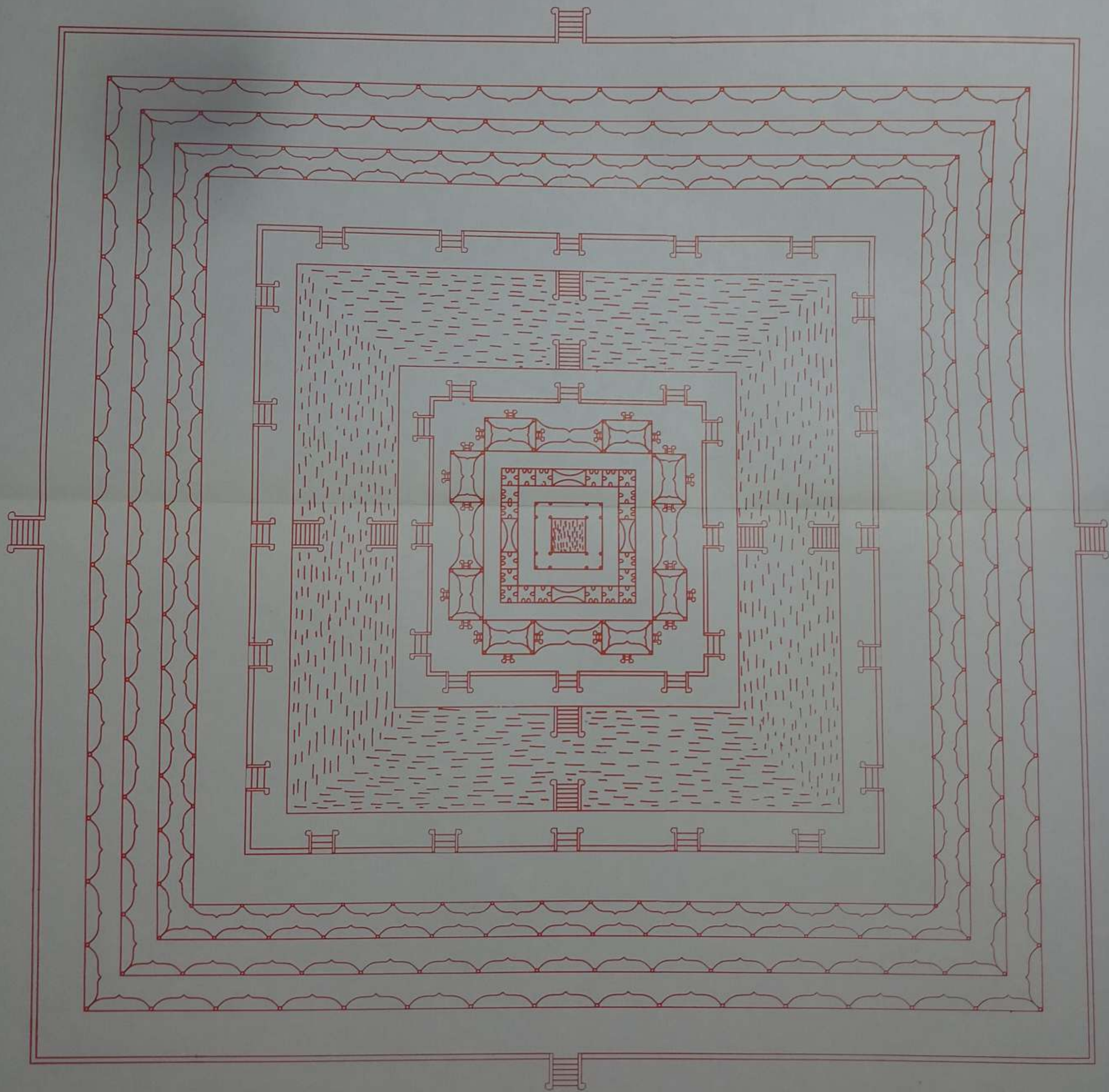

Nijanand App

१०१-एक सागर की हवेली की चांदनी पर टापू मोहोल एवं ताल

एक समुद्र की गृद १६ करोड़ कोस की आयी है। इस समुद्र के तीसरे हिस्से में अर्थात् १-१/४ करोड़ की जगह में १२००० टापूओं की १२००० हारें आयी हैं। १४ करोड़ ४० लाख सब टापू हुए। ४०० कोस में एक टापू और ४०० कोस में जल, फिर ४०० कोस में टापू, फिर ४०० कोस में जल आया है। इस प्रकार सब १२००० टापू हुए और बीच में १२००० जल की सन्धें आयी हैं। चार हार हवेली की तरफ १२००० हवेली आयी हैं। इस हवेली के बीच में ४००० हवेली आयी है, जिसकी २४००० मेहराबें हुई। हर हवेली में ६-६ मेहराबें हैं। ३-३ त्रिपोलियों की, २-२ गुर्जों की और १-१ मेहराबे दरवाजे की आयी है। इस प्रकार से १ हवेली की ६ मेहराबें हुई। ४००० हवेलियों की २४००० मेहराबें हुई। इन्हीं मेहराबों के सामने १२००० टापू आए हैं और १२००० बीच में जल की सन्धें आयी हैं। दो टापू के बीच में एक जल की सन्ध और दो जल की सन्ध में एक टापू आया है। कोई टापू तो ४७५ कोस का आया है, कोई ५०० कोस, कोई ५५० कोस और कोई ६०० का आया हैं। क्योंकि जैसे-२ हांस बढ़ता जाता है उसी प्रकार से हवेली बढ़ती है तथा उसी प्रकार से टापूओं की चौड़ाई भी बढ़ती जाती है। जैसे एक टापू की लंबाई-चौड़ाई ६०० कोस की आयी है, जिसके मध्य भाग में एक भोम भर ऊंचा चबूतरा तीसरे हिस्से में आया। बाकी एक हिस्से में दाएं-बाएं वन समझना, जो ७५-७५ कोस का आया है। एक हिस्से के १५० कोस हुए। तीन हिस्से के ४५० कोस का लंबा-चौड़ा चबूतरा हुआ। उसके चारों तरफ सीढ़ियां उतरीं। बाकी सब जगह कठेड़ा आया है। आगे १०० कोस की रौंस चारों तरफ घूमी है। दोनों तरफ के २०० कोस की रौंस हुई। आगे २५० कोस की एक हवेली आयी है, जिसमें ८४ कोस का दरवाजा आया है। बाकी ८३-८३ कोस के दाएं-बाएं चौक चबूतरे कमर भर ऊंचे आए हैं। रांग की हवेली के समान सब जोगबाई आयी है। चबूतरों पर ८ थंभ हैं। उनके ऊपर १० मेहराबें आयी है। उपरा-ऊपर १२००० भोमें गयी हैं। एक भोम १२००० कोस की और एक-एक भोम में १२००० भोमें उपरा-ऊपर आयी हैं। सो ये भोमें छोटी आयी है। एक-२ टापू की ऊंचाई १४ करोड़ ४० लाख की होती है। एक हवेली के भीतर दो हार मंदिरों के बीच दो हार थंभों की आयी है। एक हार मंदिरों की ६००० की आयी है और थंभ की हार भी ६००० की आयी है। रांग की हवेली के समान सब जोगबाई आयी है। इन थंभों की हार के भीतर १२००० मोहलों की १२००० हारें आयी हैं। त्रिपोलियों सहित उपरा-ऊपर भोमें एक हवेली की एक भोम में आयी हैं। एक मोहल के अंदर १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी हैं। दो कोठरियों के बीच त्रिपोलिया आये हैं। बाग-बगीचे, चेहेबच्चे, नहरें, हिंडोले सब जोगबाई रांग की हवेली की भांति आयी है। टापू की जोगबाई रांग की हवेली से छोटी है परन्तु है सब जोगबाई बराबर। इस भोम पर चबूतरे से चारों तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों के दाएं-बाएं परकोटा, परकोटे पर कांगरी आयी है। चारों तरफ ८ बगीचे आए हैं। चार बगीचे ४ दिशा में तथा चार बगीचे चारों कोनों पर आए हैं। दिशा के एक बगीचे में १६६ मंदिर के लंबे-चौड़े चांदनी चौक आए है। इसमें दो चबूतरे, हरा-लाल वृक्ष सब जोगबाई रंग भवन जैसी आयी है। वहां पर जोगबाई छोटी है। यहां पर बड़ी आयी है। इसी प्रकार से चारों तरफ आयी है। इस बगीचे की जमीन से कमर भर ऊंची जल रौंस आयी है। चांदनी चौक में जो रौंस है, वह इसी रौंस में आकर मिल गयी है। दाएं-बाएं दो रौंस बगीचे की संधि की आयी है। सो रौंस कमर भर नीचे आयी है। जल रौंस के आगे कमर भर सीढ़ी जल के चबूतरे पर उतरी है। इसी प्रकार की जोगबाई चारों तरफ आयी है।

Nijanand App

१०२. हवेली के टापू मोहोल की चांदनी

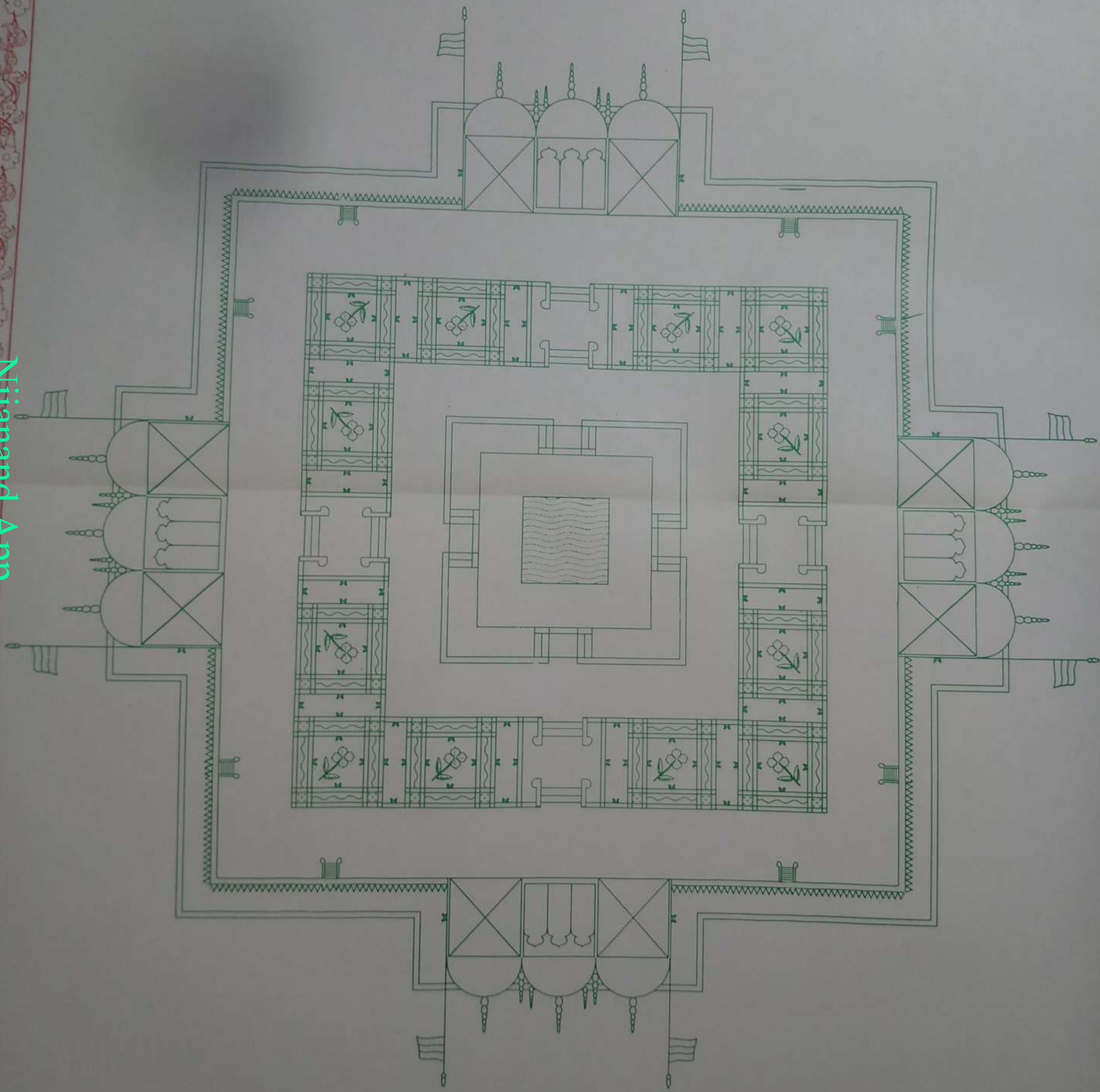

Nijanand App

१०२-हवेली के टापू मोहोल की चांदनी

मध्य में तीसरे हिस्से में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चारों तरफ चबूतरे से सीढ़ी उतरी है। बाकी चारों तरफ कठेड़ा आया है। चबूतरे के मध्य में गिलम पर सिंहासन, कुर्सियां रखी हैं। चबूतरे के चारों तरफ वन-बगीचे, नहरें, फव्वारे अपरम्पार बेशुमार आए हैं और चारों तरफ किनार पर भोम भर की ऊंची दीवाल आयी है। दीवाल चौड़ी है, परिकरमा के वास्ते। चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ी उतरी है। उस दीवाल में भीतरी तरफ कठेड़ा चारों तरफ आया है। बाहरी तरफ दरवाजों की कमानें आयी हैं। उस कमान पर कंगूरे हैं तथा बीच-बीच में कांगरी आयी है। कंगूरों पर कलश, ध्वजा, पताका, बेरखे सब आए हैं तथा कांगरी पर ध्वजा, पताका सब आए हैं। इस कमान के दाएं-बाएं चौरस गुर्ज भी यहां तक आए हैं जो इस दीवाल से मिले हैं। यहां से ४ थंभ उठे है, जिनके ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब आए हैं। बाकी सब जगह पर कांगरी आयी है। इस प्रकार की बनक चारों तरफ शोभा देती है। इन टापूओं के छज्जे भोम-भोम पर रांग से मिले हैं। दरवाजों के सामने दरवाजे आए हैं। चबूतरों के सामने चबूतरे आए हैं। सब जोगबाई मिलती है। यह एक तरफ टापू का ब्यान हुआ। इसी प्रकार से १४ करोड़ ४० लाख सब टापू आए हैं। चारों तरफ किनार पर ४८००० दरवाजे और ९६००० चौरस चबूतरे आए हैं। यह एक सागर के टापू का ब्यान है। इसी प्रकार से आठों समुद्रों के टापू का ब्यान आया है।

Nijanand App

१०३. एक सागर के चारों तरफ का दृश्य

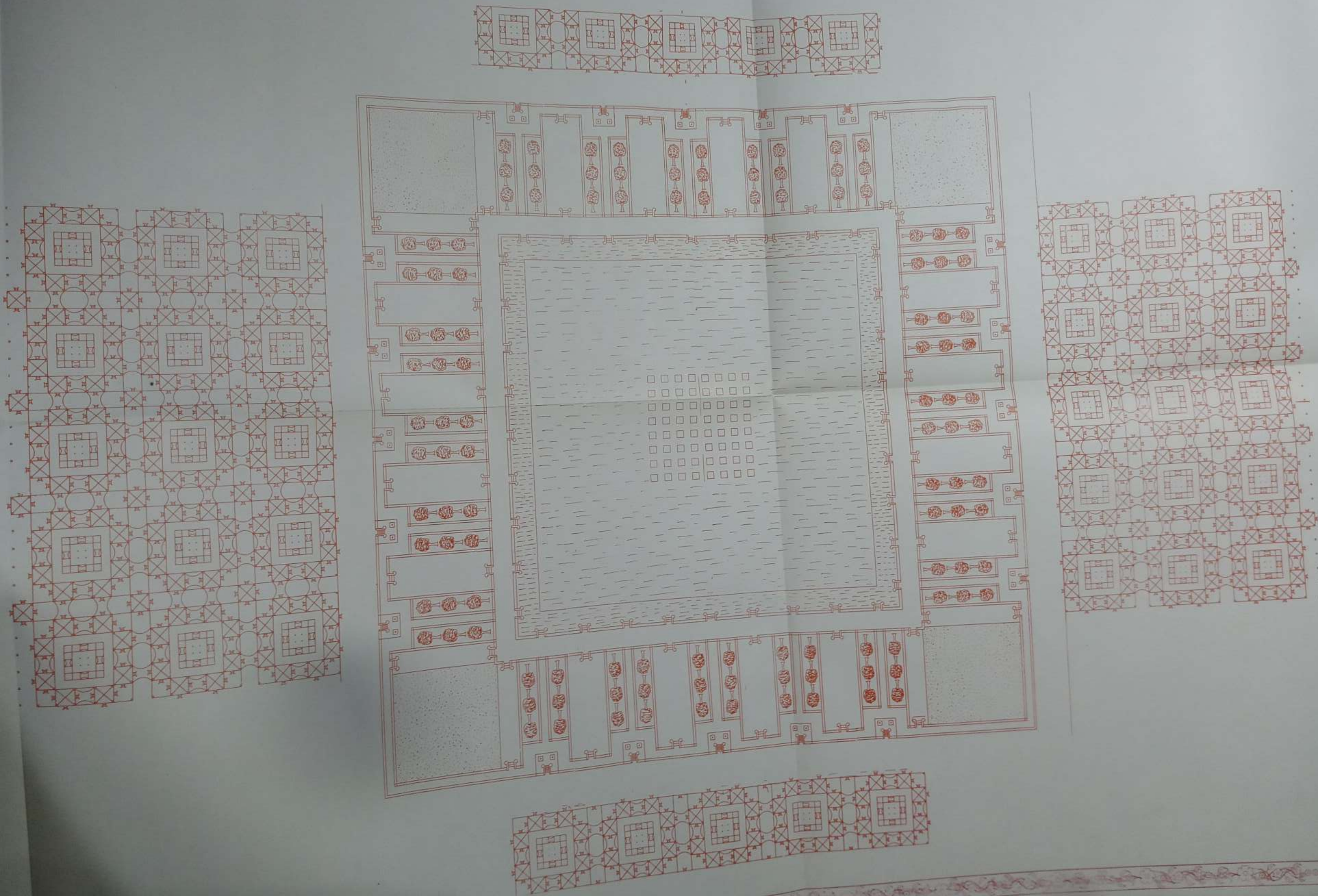

Nijanand App

१०३-एक सागर के चारों तरफ का दृश्य

मध्य में समुद्र आया है। इसके चारों तरफ ४०० कोस की रौंस आयी है। इस रौंस के एक तरफ ४ लाख कोस लंबे १२००० बगीचे आए हैं। ऐसे ऐसे १२००० बगीचे चारों तरफ आए हैं। इन बगीचों से भोम भर का ऊंचा चबूतरा यानी पाल चारों तरफ आयी है। उन पाल की चारों दिशा में चार हवेली बड़ी भारी आयी है। एक-२ हवेली में १२००० हवेली आयी हैं। पहले ब्यानानुसार सब जोगबाई आयी है। एक समुद्र के चारों तरफ ९६००० घाट आए हैं व ४८००० बगीचे आए हैं और ४८००० ही चांदनी चौक आए हैं और ४८००० हवेलियों के दरवाजे आए हैं। ९६००० चौरस गुर्ज आए हैं। गुर्जों पर ध्वजा और पताकायें शोभा ले रही हैं। समुद्र के चारों कोनों पर ४-४ लाख कोस के लंबे-चौड़े चौक आए हैं। ये चौक गोल गुर्जों और त्रिपोलियों के सामने आए हैं जो भोम भर नीचे बगीचों के साथ लगकर आए हैं। इन चौकों में दौड़ना, खेलना होता है। समुद्र के चारों तरफ चार महाहवेली आयी हैं। दो हवेली दो पाखे की जमीन की तरफ भी जवाब देती हैं। हर एक समुद्र के चार हार हवेली के हांस की तरफ दो घड़नाले आए हैं। एक से पानी निकलता है। रौंस के तले होकर ४ लाख बगीचों की लंबाई के तले होकर गोल गुर्ज की पाल के नीचे होकरआगे ४ लाख कोस की लंबाई तरफ जाकर चार हार हवेली के दाएं-बाएं जो चेहेबच्चे हैं, उनमें जाकर नहर मिलती है। सो यह पानी सब जगह पंहुचता है। सब जगह पानी पंहुचकर वापिस लौटकर दूसरी तरफ के घड़नाले में होकर समुद्र में समाता है। बाहर की हवेली की तरफ पीठ करके खड़े हों, जो ३६०० कोस की कही है मुख समुद्र की तरफ करें तो बाएं तरफ के घड़नाले से जल निकलता है। एक समुद्र के बाहरी तरफ भी ४ लाख कोस का लंबा और १८०० कोस का चौड़ा एक बगीचा है। ऐसे १२००० बगीचे आए हैं। भोम भर ऊंची पाल आयी है। पाल पर १८०० कोस की रौंस और महा हवेली आयी है। इस एक हवेली में १२००० हवेली आयी हैं। आगे २००० कोस की रौंस आयी है। इस रौंस पर हवेली के दाएं-बाएं गोल गुर्ज आए हैं। एक गुर्ज की लंबाई ६ लाख कोस की आयी है। भीतरी बनक के समान हवेली के आगे भोम भर नीचे बगीचा आया है जो ४ लाख कोस लंबा और २००० कोस का चौड़ा है। ऐसे १२००० बगीचे आए हैं। हर एक बगीचे में चांदनी चौक है तथा चांदनी चौक के मध्य से एक रौंस चली गयी है। आगे कमर भर सीढ़ी उतर कर बेहद भूमिका में जाइए। इस भूमिका का कोई पारावार नहीं है। बाग, बगीचे, चेहेबच्चे, नहरें, फव्वारे, मोहल, मंदिर पहाड़ अपरम्पार हैं। हिसाब से बाहर हैं। इसी बड़ी रांग में ८० महाहवेली आयी हैं। ३२ हवेली तो चार हार हवेली की तरफ ३२ हांसों में आयी हैं और ३२ गोल गुर्ज आए हैं और ३२ हवेली बाहर बेहद भूमिका की तरफ आयी हैं। ३२ हांसों में ३२ गोल गुर्ज हांस-हांस पर आए हैं, और १६ हवेली पाखे में आयी हैं। ८ समुद्र की, ८ जमीन की पाखों में आयी हैं। इस प्रकार सब ८० हवेली आयी हैं। एक हवेली का ब्यान किया गया है। इसी प्रकार सब हवेलियों की बनक है। एक हवेली के सामने समुद्र का विस्तार है। दाएं-बाएं दो गोल गुर्ज आए हैं। इनके सामने त्रिपोलिया और भोम भर नीचे १२००० बगीचे आए हैं। इसी प्रकार ८ समुद्र के सामने और ८ जमीन के सामने १६ हवेली और ३२ गुर्ज आए हैं। १६ हवेली और आयी हैं। ये हवेली पाखे की हवेलियों के सामने आयी हैं। जिस प्रकार की बनक भीतरी तरफ आयी, उसी प्रकार की बनक बाहरी तरफ हवेली की आयी है। इन सब हवेलियों की ऊंचाई १२००० भोम तक गयी है। जिस प्रकार एक समुद्र का ब्यान किया गया है, उसी प्रकार ८ समुद्रों की शोभा आयी है।

Nijanand App

१०४. हवेली की चांदनी पर ताल, बगीचों एवं गुमटियों का चित्र

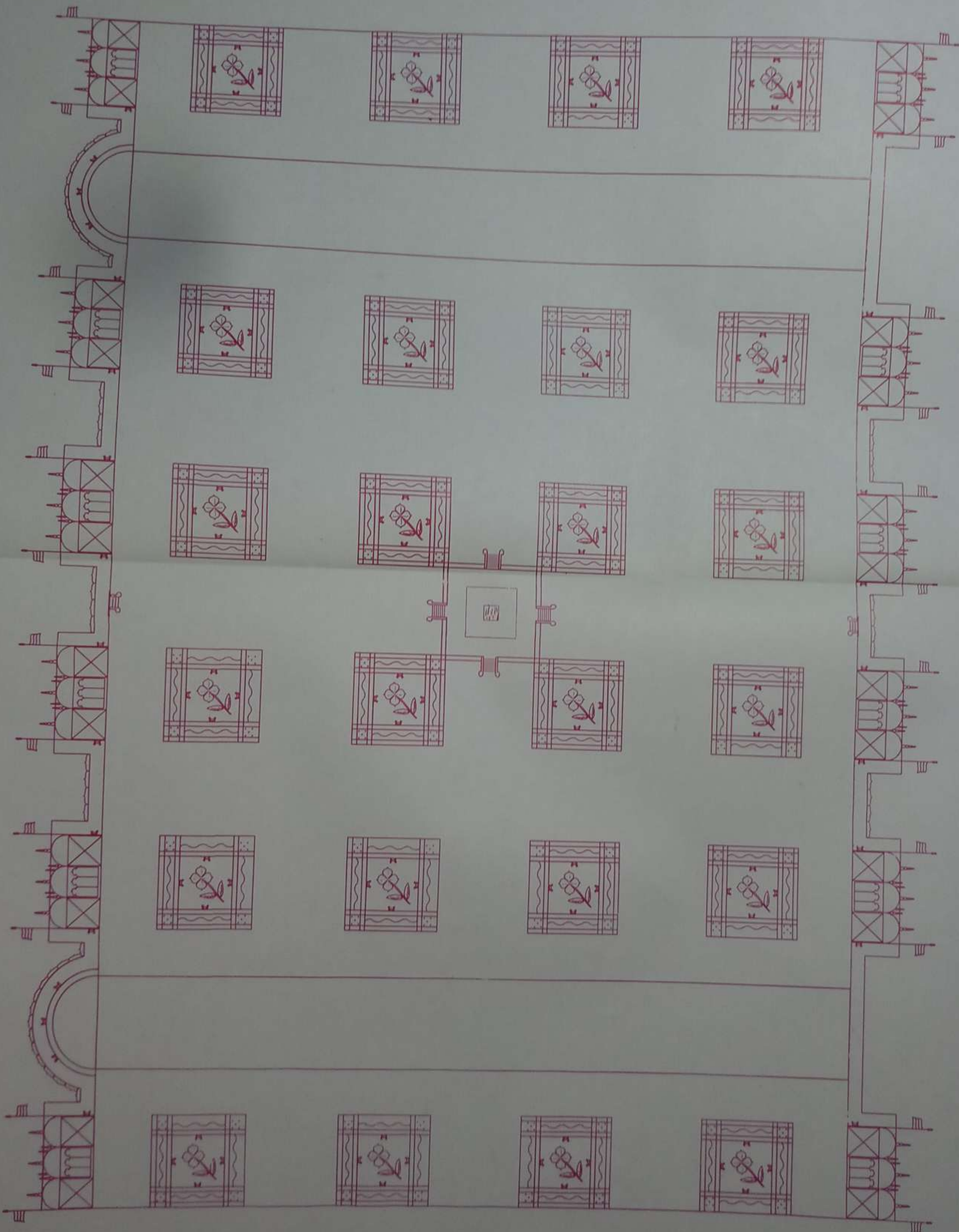

Nijanand App

१०४-हवेली की चांदनी पर ताल, बगीचे एवं गुमटियों का चित्र

चांदनी के मध्य के तीसरे हिस्से में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चारों तरफ चबूतरे से सीढ़ी उतरी है। बाकी चारों तरफ कठेड़ा आया है। चबूतरे के मध्य में गिलम है तथा उसके ऊपर सिंहासन और कुर्सियां रखी हैं। चबूतरे के चारों ओर वन, बगीचे, नहरें, फव्वारे, अपरम्पार आये हैं। चारों तरफ किनार पर ऊंची भोम भर दीवाल आयी है। दीवाल चौड़ी परिकरमा के वास्ते है। चारों दिशा में भोम भर सीढ़ी उतरी है। उस दीवाल में भीतर की तरफ कठेड़ा चारों तरफ आया है। बाहरी तरफ दरवाजों की कमानें आयी हैं। उस कमान पर कंगूरे तथा बीच-बीच में कांगरी आयी है। कंगूरों पर कलश, ध्वजा, पताका, वेरखे आदि सब आये हैं और कांगरी पर भी ध्वजा पताकायें सब आयी हैं। इस कमान के दायें बायें चौरस गुर्ज भी यहां तक आये हैं जो इस दीवाल से मिले हैं। यहां से चार थंभ उठे हैं, जिनके ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकायें सब आयी हैं। बाकी सब जगह पर कांगरी आयी है। इस प्रकार की बनक चारों तरफ शोभा देती है।

हरेक हवेली की चारों दिशा में चार बड़े द्वार हैं। और छोटे दरवाजों का शुमार नहीं है। हवेलियों के अन्दर का वर्णन पूर्व में आ गया है। जैसी एक हवेली की रचना है, उसी प्रकार सम्पूर्ण हवेलियों की रचना है। इन रांग, मोहोंलातों के दरवाजों के दोनों तरफ दो दो चौखूंटे गुरज और हर एक दरवाजे के ऊपर अनन्त आश्चर्यजनक श्रृंगारों से विभूषित कमानें शोभा बढ़ा रही हैं। उन कमानों पर रत्न जड़ित स्वर्णकुम्भ (कलश) सुशोभित हैं। इसी प्रकार रांग की बाहरी किनार एवं भीतरी किनार की हवेलियों के प्रत्येक चौरस गुर्जों के ऊपर रत्न जड़ित गुम्मट हैं। उन गुम्मटों पर हिरण्य (सोने की) कलशें हैं तथा उन कलशों पर ध्वजा पताकायें फहराती हुई आकाश के साथ आलिंगन कर रही हैं। यह आनन्दमयी शोभा देखते ही बनती है, किन्तु इसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। इन हवेलियों की चांदनी पर कांगरी ऐसी प्रतीत होती है, मानों साक्षात् देहधारी विद्युत की ही बस्ती बसी हो और बाहर भीतर दोनों किनार में गुम्मटों की कतारें ऐसी मालूम होती है जैसे अंसख्यों सूर्य अपनी किरण रूपी सेना लिये हुए दिव्य ब्रह्मपुरी की चौकी कर रहे हैं।

Nijanand App

१०५. चांदनी पर एक बगीचे का दृश्य

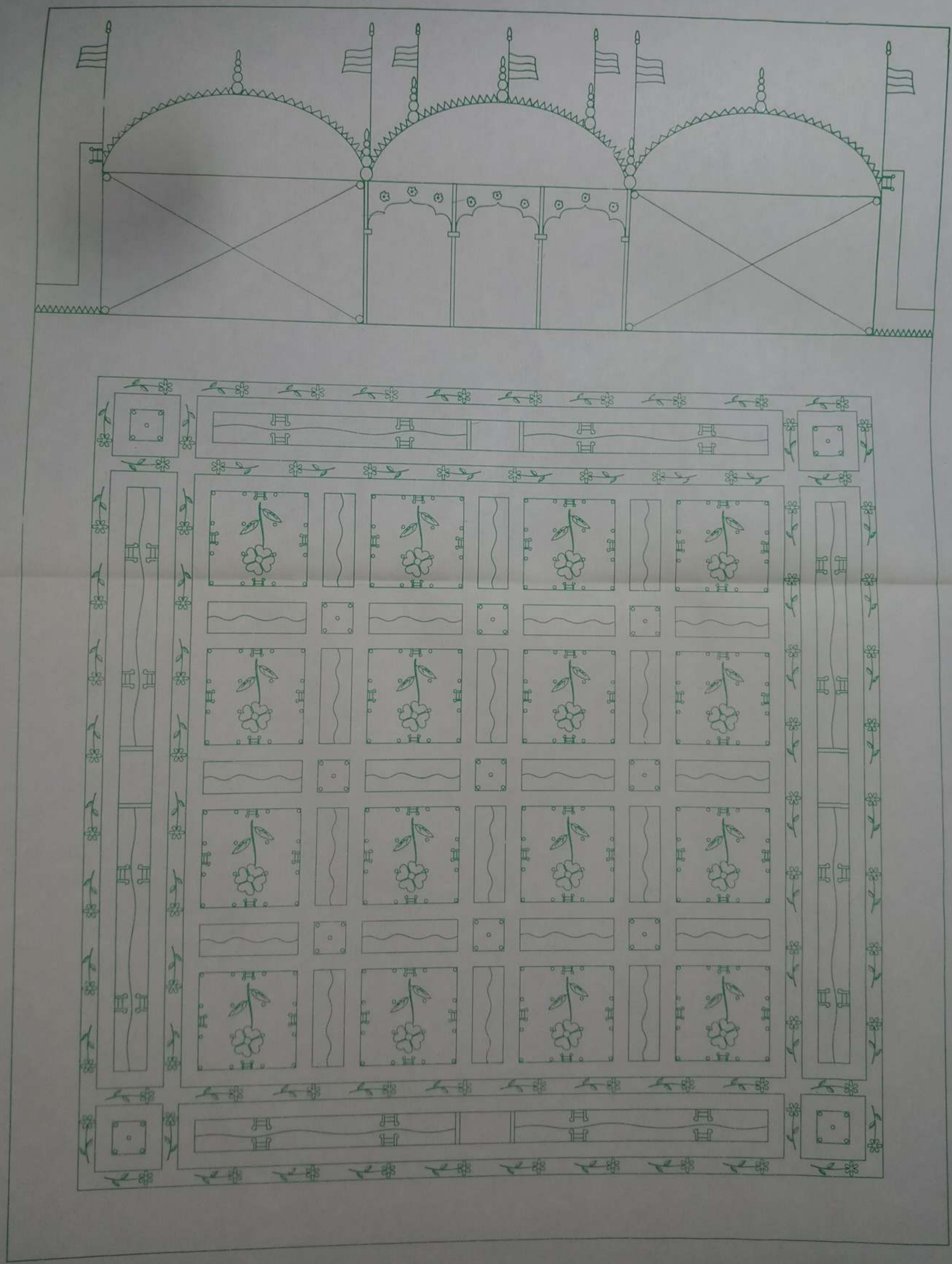

Nijanand App

१०५-चांदनी पर एक बगीचे का दृश्य

बड़ी रांग की हवेलियों की चांदनी पर रंगमहल की चांदनी जैसी शोभा आयी है। हवेली की चांदनी की जगह पर कई प्रकार के वृक्ष आये हुए हैं। गलियों की चांदनी की जगह पर नहरें, फुलवाड़ी तथा रौंसे आयी हैं। हवेलियों के कोनों की चांदनी की जगह में चेहबच्चे आये हुए हैं। बड़ी रांग की चांदनी के बाहरी एवं भीतरी तरफ भोम भर ऊंची मोटी दीवाल आयी है। उस दीवाल में बड़े दरवाजों के ऊपर मेहराबें हैं तथा उनके ऊपर कंगूरे, कांगरी एवं झण्डा पताकाओं की अपार शोभा हो रही है। दरवाजे की मेहराब के दायें बायें चबूतरे की मेहराब आयी है । इनके ऊपर भी कंगूरे, कांगरी एवं ध्वजा पताकाओं की अपार शोभा हो रही है। बड़ी रांग की चांदनी की शोभा शब्दातीत है।

Nijanand App

१०६. एक जिमी की शोभा

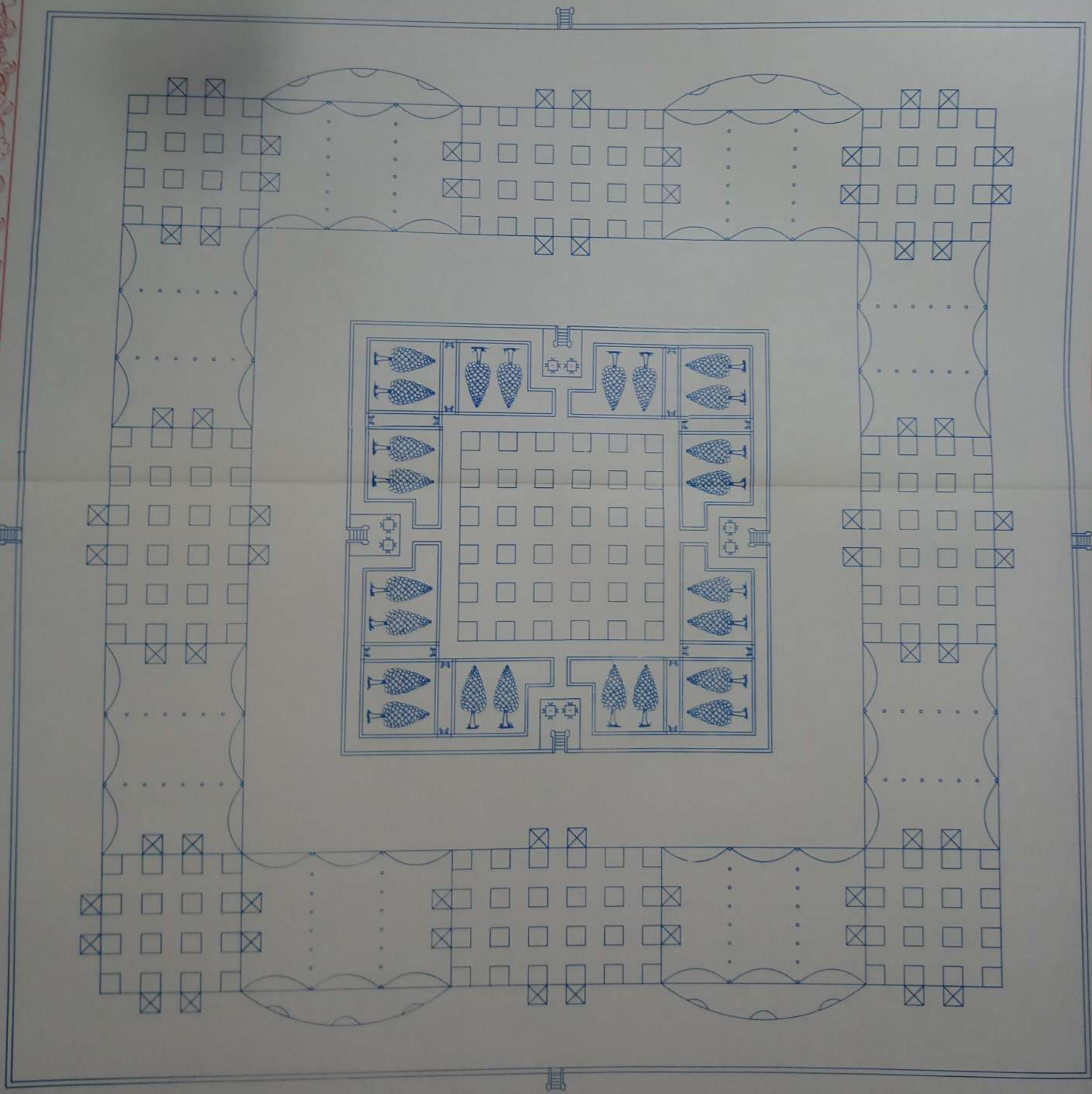

Nijanand App

१०६-एक जिमी की शोभा

दो सागरों के बीच एक जमीन और दो जमीन के बीच एक सागर आया है। आठ समुद्रों के बीच आठ जमीन आयी है। आठों जमीन में एक जमीन का ब्यान किया गया हैं। इसी प्रकार सबका जानना। एक समुद्र की जितनी लंबाई-चौड़ाई की जगह है, इतनी ही जगह एक जमीन की आयी है। १६ करोड़ की गृद और ४ करोड़ की लंबाई-चौड़ाई सब आयी है। एक जमीन के चारों तरफ १६०० कोस की चौड़ी रौंस आयी है। इन रौंस के चारों तरफ ४८००० बगीचे हैं। ४ लाख कोस का लंबा १२०० कोस का चौड़ा एक बगीचा आया है। जितनी बड़ी हवेली है, उतनी ही बगीचे की चौड़ाई आयी है। ऐसे सब बगीचे आये हैं। बगीचे से भोम भर ऊंची पाल आयी है। उस पर एक महाहवेली आयी है। एक हवेली में १२ हजार हवेली आयी हैं। इसी प्रकार से चारों तरफ बनक आयी है। जिस प्रकार की जोगबाई सागर के चारों तरफ आयी है, उसी प्रकार सब जोगबाई जमीन के चारों तरफ आयी है। कुछ अन्तर नहीं है। जैसे सागरों के चारों कोनों पर चार चौक खाली आये हैं इसी प्रकार से जमीन के चारों कोनों पर ४ लाख कोस का लंबा चौड़ा गोल गुर्ज के सामने, चौक आया है। इस १६०० कोस की रौंस के आगे एक हवेली आयी है। मानिन्द रांग की हवेली के समान है कुछ अन्तर नहीं है। इस हवेली की जोगबाई सब वृक्षों की आयी है। एक हवेली के अन्दर १२००० की १२००० हारें आने से १४ करोड़ ४० लाख हवेली आयी है। एक-एक भोम में १२०००-१२००० भोम उपरा-ऊपर आयी है। इनकी ऊंचाई एक-एक कोस की आयी है। एक हवेली २८०० कोस की भीतरी तरफ की आयी है। बाहरी तरफ की हवेली ३६०० कोस की आयी है जैसे-२ हांस बढ़ता जाता है, हवेली भी बढ़ती जाती है। २८०० कोस की हवेली जिसमें १४०० कोस में हवेली और १४०० कोस में त्रिपोलिया आये हैं। त्रिपोलिया में भी तीन गली आयी हैं। इस प्रकार १२००० हवेलियों में १२००० त्रिपोलिया आये हैं। इसके मध्य की गली में होकर प्रवेश किया। ६००० हवेली चलकर चारों तरफ त्रिपोलियों की चौकड़ी पड़ी। मध्य की गली में एक हवेली आयी है। चारों तरफ मोहल और भीतर तरफ बाग-बगीचे आये हैं। मध्य भाग में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। चबूतरे पर थंभ व कठेड़ा आया है। इस चबूतरे के तीसरे हिस्से में एक जल का स्तून (पाईप) आया है। मानिन्द आकाशी मोहल की २५वीं हवेली जो मध्य भाग में आयी है। इसी प्रकार इसकी बनक आयी है। हर हवेली के एक तरफ एक हिस्से में दरवाजे तथा दो हिस्से में दाएं-बाएं गुर्ज आये हैं और भीतर तो गली में चबूतरे आये हैं। यदि एक हवेली के भीतर जाइए तो दो हारें मंदिरों की हैं और मंदिर के बीच दो हारें थंभों की आयी हैं। भीतर तरफ दो हार थंभों की आयी हैं। मंदिर की हर हार में ६००० मंदिर आये हैं। थंभों की एक हार में ६००० थंभ आये हैं। इसके आगे १२००० मोहलों की १२००० हारें है और दो मोहलों के बीच त्रिपोलिया आया है। एक मोहल के अन्दर जाइए तो १२००० मंदिरों की १२००० हारें आयी हैं। यदि एक मंदिर के अन्दर जाइए तो १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी हैं। हर मोहलों, मंदिरों, कोठरियों के बीच में त्रिपोलिया आया है। बाग-बगीचे, नहरें, चेहबच्चे सब जोगबाई मोहलों, मंदिरों, और कोठरियों में आयी है। इस वन की महाहवेली के बाहर एक तरफ १२००० दरवाजे और २४००० चौरस गुर्ज आये हैं। चारों तरफ ४८००० दरवाजों की कमानें और ९६००० चौरस गुर्ज उपरा-ऊपर १२००० भोम तक चले गये हैं। ऊपर सब एक जैसी चांदनी आयी है।

Nijanand App

१०७. टापू मोहोल, जिमी तथा मोहोलाइत की चांदनी का दृश्य

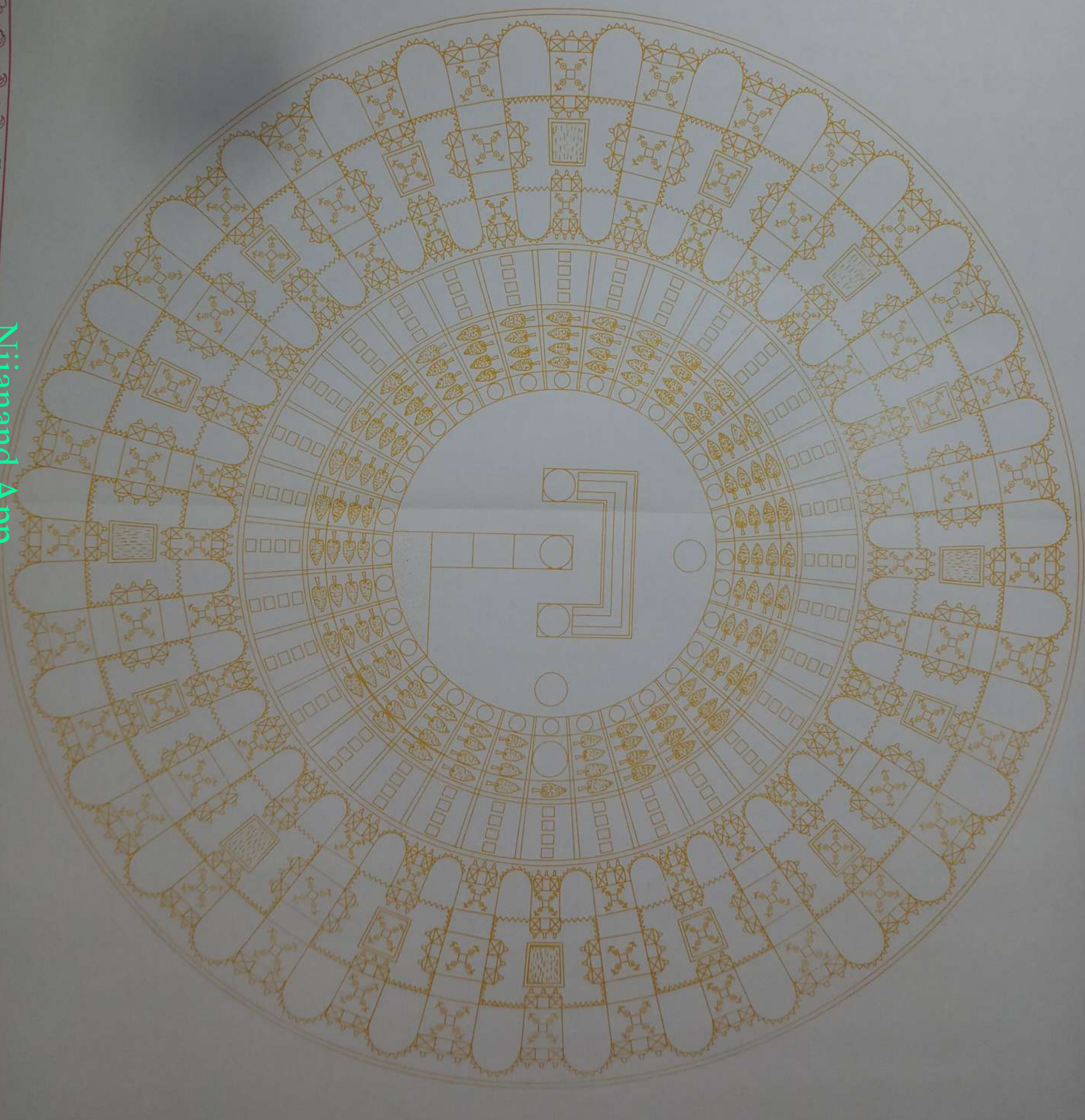

Nijanand App

१०७-टापू मोहल, जिमी तथा मोहलाइत की चांदनी का दृश्य

इस वन की चांदनी पर माणिक पहाड़ की चांदनी तथा आकाशी मोहल की चांदनी की बनक आयी है । चांदनी के तीसरे हिस्से में एक भोम भर ऊंचा चौरस चबूतरा आया है । इस चबूतरे के तीन भाग हुए । पहले हिस्से में देहलान, दूसरे हिस्से में ताल तथा तीसरे हिस्से में मोहल आये हैं । पहले हिस्से में देहलान आयी है जिसमें चार थंभों की हारें आयी हैं । उसके बीच में दो भोम की ऊँचाई आगे-पीछे एक भोम की ऊंचाई आयी है । इस देहलान के पीछे ४००-४०० कोस की रौंस आयी है । रौंस पर कठेड़ा लगा हैं । बाहर वन की तरफ भोम भर की सीढ़ी उतरी है । कई जगह से भीतर ताल तरफ कमर भर की सीढ़ी जल चबूतरे पर उतरी है । दूसरे हिस्से में ताल भोम भर का गहरा आया है । तीसरे हिस्से में टापू मोहोल आया है । मोहलात के दोनों तरफ ४००-४०० कोस की रौंस आयी है । रौंस से सीढ़ी वन चबूतरे पर उतरी है । एक तरफ १२००० हवेली आयी है । चारों तरफ की ४८००० हवेली आयी है । ऊंचाई बीस भोम तक गयी है । हवेलियों के भीतरी तरफ बाग, बगीचे, नहरे, चेहेबच्चे सब आये हैं । मध्य तीसरे हिस्से में चौरस चबूतरा कमर भर का ऊंचा आया है । किनार पर थंभ आये हैं । चबूतरे पर गिलम बिछी है । चबूतरे के मध्य भाग में जल का स्तून आया है । ऐसी बनक उपरा-ऊपर २० भोम तक गयी है । ऊपर सब एक चांदनी हो गयी है । चांदनी के तीसरे हिस्से में एक चौरस चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है, जो नीचे के चबूतरे की चांदनी पर आया है । इस चबूतरे के मध्य भाग में ऊपर आकर स्तून कुण्ड बना हैं । चारों तरफ कठेड़ा चारों दिशा में है तथा सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी है । घेर करके चबूतरा आया है । चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां है । चारों तरफ कठेड़ा आया है । चबूतरे के नीचे चारों तरफ वन-बगीचे नहरें, चेहबच्चे चारों तरफ आये हैं । भोम भर ऊंचे देहलान के चारों तरफ चबूतरे, बाग-बगीचे, चेहबच्चें नहरे, फुहारें सब आये हैं । कई जगह पर बैठने के सुन्दर स्थान आये हैं और चारों तरफ भोम भर की दीवाल ऊपर उठी है । दीवाल चौड़ी परिकरमा के वास्ते आयी है । दीवाल के चारों तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी है । दीवाल की किनार पर भीतरी तरफ कठेड़ा आया है । चौरस चबूतरे तथा दरवाजों की मेहराबें भी यहां तक आयी हैं । दरवाजों पर कमाने आयी हैं । कमानों पर कंगूरे, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं । दो कंगूरों के बीच कांगरी आयी है । कांगरी पर ध्वजा पताका सब आये हैं । चौरस चबूतरों की छत भी इसी दीवाल तक आयी है । चार थंभ उठ कर स्थित हैं जिनके उपर गुम्मट कलश, ध्वजा पताका सब आये हैं । दो गुम्मटों के बीच में त्रिपोलिया की जगह कांगरी आयी है । इसी प्रकार से चारों तरफ बनक आयी है । चारों तरफ ४८००० दरवाजों की कमाने और ९६००० चौखूंटे, गुम्मट, कांगरी चारों तरफ आयी है । यह तो एक जमीन का ब्यान हुआ । यह सब बेवरा वन, वृक्षों, पत्तों, फूलों, डालियों का आया है । अपरम्पार शोभा है ।

एक जमीन के चारों तरफ चार हवेली आयी है, सो उपरा-ऊपर १२००० भोम गयी है । इस जमीन के चारों तरफ ४८००० दरवाजों की कमाने आयी हैं । दरवाजों के कमानों पर कलश ध्वजा पताका सब आये हैं । चारों तरफ ९६००० गुर्ज आये हैं, जिन पर ध्वजा पताकायें फहराती हैं और चारों तरफ जो कांगरी त्रिपोलिया पर आयी है, उस पर भी ध्वजा-पताका फहराती हैं । इस प्रकार अपरम्पार शोभा आयी है । इसी प्रकार आठों जमीन का ब्यान जानना ।

Nijanand App

१०८. पच्चीस पक्ष का चित्र

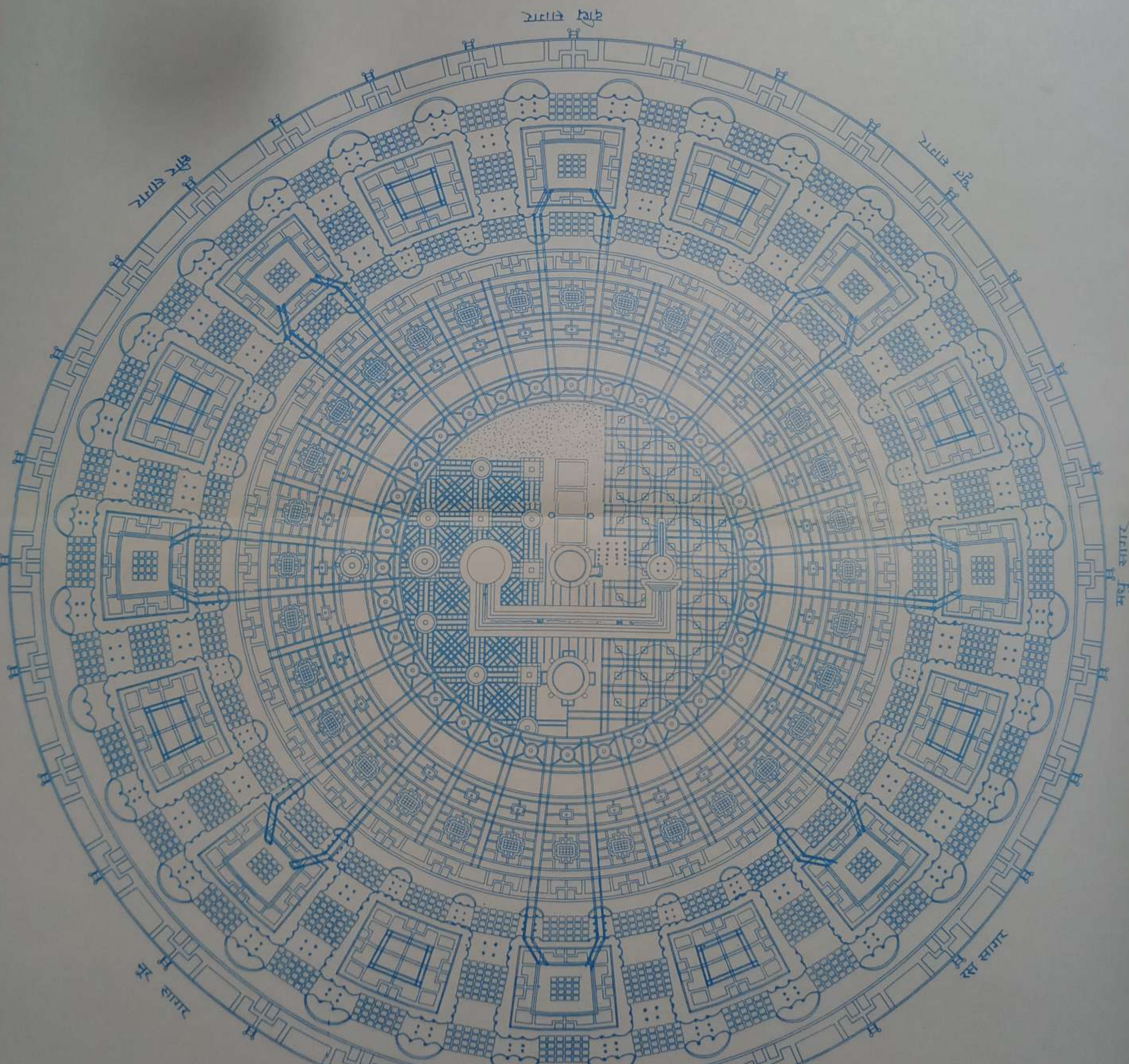

१०८-पच्चीस पक्ष का चित्र

परमधाम २५ पक्षों में विभक्त है -

धाम तालाब कुंजवन जोहें, मानिक नेहरे बन की सोहें।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी के, ये पच्चीस पक्ष श्री धाम धनी के ॥

परमधाम के मध्य में २०१ पहल का गोलाकार, दस भोमें का अनन्त शोभा वाला निजधाम रंगमहल है।

पहली भोम - मुख्य द्वार के अंदर घेरकर ६००० मंदिरों की दो पंक्तियां हैं। दोनों हारों के बीच ६-६ हजार थंभों की दो हारें हैं। मुख्य द्वार के सामने २८ थंभ का चौक है। इसके आगे चार चौरस हवेली आयी हैं। पहली चौरस हवेली में रसोई का चौक है। ४ चौरस हवेलियों के आगे ४ गोल हवेली आयी हैं। पहली गोल हवेली में मूल मिलावा आया है। चौरस गोल हवेलियों के आठ फिरावे हैं। फिर पंच मोहलों का नौवां फिरावा आया है। इसके बाद मध्य में नौ चौक हैं।

दूसरी भोम - उत्तर दिशा में लाल चबूतरे से पूर्व दिशा की ओर बारह हजार मंदिर कांच के हैं। यहां भूलवनी की लीला होती है।

तीसरी भोम - मुख्य द्वार के ऊपर तीसरी भोम में १० मंदिर लंबी और दो मंदिर की चौड़ी पड़साल है। यहां तीन पहर तक की बैठक होती है।

चौथी भोम - २८ थंभ के चौक के आगे चौथी चौरस हवेली निरत की हवेली है। यहां पर रात्रि ७-१/२ से ९.०० बजे तक नृत्य लीला होती है।

पांचवी भोम - मध्य में नौ चौक हैं। उनके मध्य वाले चौक में परवाली रंग का मंदिर है। यहां रात्रि में तीन पहर तक शयन लीला होती है।

छठीं भोम - बाहर की ६००० मंदिरों की भीतरी तरफ देहलानें है, जहां पर ६००१ सुखपाल रहते हैं।

सातवीं भोम - यहां ६-६ हजार थंभों के मध्य में झूलों की दो पंक्तियां है, जिनमें दो-दो हिंडोलों की ताली पड़ती है।

आठवीं भोम - इस भोम में झूलों की तीन हारें आयी हैं। यहां चार-चार हिंडोलों की ताली पड़ती है।

नवमी भोम - यहां बाहरी मंदिरों की हार की जगह तथा आगे छज्जे की जगह में एक हांस लंबी और दो मंदिर की चौड़ी २०१ पड़सालें आयी हैं। प्रत्येक हांस में सिंहासन और कुर्सियां सजी हैं।

दसवीं आकाशी - इसमें बाहर के मंदिरों की जगह में देहलानें आयी है। अंदर अनेक बगीचे तथा चेहेबच्चे हैं। मध्य में सिंहासन हैं तथा इसके चारों ओर कुर्सियां हैं।

हौज कौसर तालाब - रंगमहल से दक्षिण दिशा में है। चारों दिशाओं में चार घाट हैं। क्रम से पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में १६ देहुरी, १३ देहुरी, झुण्ड और ९ देहुरी

Nijanand App

के घाट हैं। चौरस पाल पर १२८ देहुरियां हैं। मध्य में ताल आया है। ताल के मध्य में तीन भोम का टापू महल आया है। श्री यमुना जी पूर्व की ओर से तालाब में मिलती है।

कुंज-निकुंज वन - हौज कौसर तालाब के चारों ओर कुंज-निकुंज वन है। कुंज चौकोर और ऊपर से ढका है। निकुंज गोल और ऊपर खुला है। वन की दो भोम और तीसरी चांदनी है।

माणिक पहाड़ - दक्षिण दिशा में रंग मोहल से १३-१/२ लाख कोस की दूरी पर १२ हजार पहल का १२ हजार भोम का यह पहाड़ है। इसकी सारी जोगबाई लाल रंग की आयी है। प्रत्येक भोम में १२००० हवेलियां हैं। अंदर कमर भर ऊंचा चबूतरा है, जिस पर १२ हजार माणिक के मोहल बने हैं। चांदनी पर जल का तालाब है। वहां से १२००० नहरें निकलकर १२००० जल के कुण्डों में गिरती हैं। यह पानी बगीचों में जाता है। चांदनी से १२००० गुर्जों सें १२ हजार झरने झर रहे हैं। जो पहली भोम पर आकर गिरते हैं। चारों ओर घेरकर महानद आयी है।

वन की नहरें - माणिक पहाड़ के आगे पांचवीं परिकरमा वन की नहरें हैं। इसके ६० हजार भोम वाले वृक्षों की शब्दातीत शोभा है। जमीन पर चारों तरफ बगीचे और नहरें है।

पश्चिम की चौगान - रंगमहल से पश्चिम में ४-१/२ लाख कोस की दूरी पर उत्तर-दक्षिण ९ लाख कोस लंबा और ४-१/२ लाख कोस चौड़ा रंग-बिरंगा रेत का विशाल मैदान है, जहां विभिन्न प्रकार के जानवरों पर सवार होकर श्री राजश्यामाजी और सखियां अद्वैत सुख का आनंद लेती हैं।

बड़ोवन - अन्नवन के उत्तर तरफ २५० भोम का बड़ोवन आया है। बड़ोवन के ५ वृक्ष रंगमोहल के चारों ओर भी आए हैं।

पुखराज पर्वत - रंग महल से ४-१/२ लाख कोस उत्तर की ओर ४ लाख कोस की गृद का १००० गुर्ज और १००० भोम का यह पर्वत है। इसकी तलहटी के मध्य में ताल है, जिसमें पांच पेड़ हैं। चारों दिशा से चार नहरें निकलती हैं। पूर्व की ओर से जो नहर निकलती है, वही जमुना जी का रूप लेती है। इसकी चांदनी पर ४ लाख कोस ऊंचे आकाशी मोहोल आए हैं। इसके पूर्व में बंगला, तथा इसके पूर्व में अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा और मूल कुण्ड आए हैं।

जमुना जी - पुखराज पर्वत से निकलकर जमुना जी पूर्व की ओर ४-१/२ लाख कोस बहती हुई दक्षिण की ओर मुड़कर ९ लाख कोस चलकर पश्चिम की ओर ४-१/२ लाख कोस जाती हुई हौज कौसर तालाब में मिल जाती है।

आठ सागर आठ जिमी - बड़ी रांग में पहले भाग में ३२ हवेलियां है। दूसरे भाग में ८ सागर ८ जिमी और १६ हवेलियां हैं। सागर तथा जिमी के बीच में हवेली है। तीसरे भाग में भी ३२ हवेलियां है। अग्नि कोने में श्वेत रंग का नूर सागर, दक्षिण में लाल रंग का नीर सागर, नैरित्य कोने में पीले रंग का क्षीर सागर, पश्चिम में हरे रंग का दधि सागर, वायव्य कोने में आसमानी रंग का घृत सागर, उत्तर दिशा में श्याम रंग का मधु सागर, ईशान कोने में दस रंग का रस सागर एवं पूर्व में सर्वरस सागर है।

Nijanand App

के घाट हैं। चौरस पाल पर १२८ देहुरियां हैं। मध्य में ताल आया है। ताल के मध्य में तीन भोम का टापू महल आया है। श्री यमुना जी पूर्व की ओर से तालाब में मिलती है।

कुंज-निकुंज वन - हौज कौसर तालाब के चारों ओर कुंज-निकुंज वन है। कुंज चौकोर और ऊपर से ढका है। निकुंज गोल और ऊपर खुला है। वन की दो भोम और तीसरी चांदनी है।

माणिक पहाड़ - दक्षिण दिशा में रंग मोहल से १३-१/२ लाख कोस की दूरी पर १२ हजार पहल का १२ हजार भोम का यह पहाड़ है। इसकी सारी जोगबाई लाल रंग की आयी है। प्रत्येक भोम में १२००० हवेलियां हैं। अंदर कमर भर ऊंचा चबूतरा है, जिस पर १२ हजार माणिक के मोहल बने हैं। चांदनी पर जल का तालाब है। वहां से १२००० नहरें निकलकर १२००० जल के कुण्डों में गिरती हैं। यह पानी बगीचों में जाता है। चांदनी से १२००० गुर्जो सें १२ हजार झरने झर रहे हैं। जो पहली भोम पर आकर गिरते हैं। चारों ओर घेरकर महानद आयी है।

वन की नहरें - माणिक पहाड़ के आगे पांचवीं परिकरमा वन की नहरें हैं। इसके ६० हजार भोम वाले वृक्षों की शब्दातीत शोभा है। जमीन पर चारों तरफ बगीचे और नहरें है।

पश्चिम की चौगान - रंगमहल से पश्चिम में ४-१/२ लाख कोस की दूरी पर उत्तर-दक्षिण ९ लाख कोस लंबा और ४-१/२ लाख कोस चौड़ा रंग-बिरंगा रेत का विशाल मैदान है, जहां विभिन्न प्रकार के जानवरों पर सवार होकर श्री राजश्यामाजी और सखियां अद्वैत सुख का आनंद लेती हैं।

बड़ोवन - अन्नवन के उत्तर तरफ २५० भोम का बड़ोवन आया है। बड़ोवन के ५ वृक्ष रंगमोहल के चारों ओर भी आए हैं।

पुखराज पर्वत - रंग महल से ४-१/२ लाख कोस उत्तर की ओर ४ लाख कोस की गृद का १००० गुर्ज और १००० भोम का यह पर्वत है। इसकी तलहटी के मध्य में ताल है, जिसमें पांच पेड़ हैं। चारों दिशा से चार नहरें निकलती हैं। पूर्व की ओर से जो नहर निकलती है, वही जमुना जी का रूप लेती है। इसकी चांदनी पर ४ लाख कोस ऊंचे आकाशी मोहोल आए हैं। इसके पूर्व में बंगला, तथा इसके पूर्व में अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा और मूल कुण्ड आए हैं।

जमुना जी - पुखराज पर्वत से निकलकर जमुना जी पूर्व की ओर ४-१/२ लाख कोस बहती हुई दक्षिण की ओर मुड़कर ९ लाख कोस चलकर पश्चिम की ओर ४-१/२ लाख कोस जाती हुई हौज कौसर तालाब में मिल जाती है।

आठ सागर आठ जिमी - बड़ी रांग में पहले भाग में ३२ हवेलियां है। दूसरे भाग में ८ सागर ८ जिमी और १६ हवेलियां हैं। सागर तथा जिमी के बीच में हवेली है। तीसरे भाग में भी ३२ हवेलियां है। अग्नि कोने में श्वेत रंग का नूर सागर, दक्षिण में लाल रंग का नीर सागर, नैरित्य कोने में पीले रंग का क्षीर सागर, पश्चिम में हरे रंग का दधि सागर, वायव्य कोने में आसमानी रंग का घृत सागर, उत्तर दिशा में श्याम रंग का मधु सागर, ईशान कोने में दस रंग का रस सागर एवं पूर्व में सर्वरस सागर है।

Nijanand App